धन धन सतगुरु तेरा ही आसरा

सत्संग संग्रह

भाग-2

पूज्य परम संत
गुरबख़्श सिंह 'मैनेजर साहिब'

मस्ताना शाह बलोचिस्तानी आश्रम
जगमालवाली, सिरसा, हरियाणा

प्रकाशक :
सच्चा सौदा रूहानी सत्संग ट्रस्ट (रजि.)
पॉकेट ए-2, केशव पुरम, दिल्ली-110035
दूरभाष : 011-27391133, 27392233

मस्ताना शाह बलोचिस्तानी आश्रम
डाकघर जगमालवाली, वाया कालांवाली,
ज़िला-सिरसा, हरियाणा-125201
दूरभाष : 01696-286507, 286307 पी.सी.ओ.–286300
ई-मेल : mbajagmalwali@gmail.com

प्रेमसर धाम, गाँव बाजीतपुर ठाकरान, दिल्ली-110039
दूरभाष : 011-27753116

सर्वाधिकार © सुरक्षित

द्वितीय संस्करण : जनवरी-2021, 2000 प्रतियाँ

मुद्रण : क्विक ऑफसेट, दिल्ली-110032

पाठको से बेनती

पाठकों से निवेदन है कि इस पुस्तक में संग्रहित सत्संग, इलाकों की आम बोलचाल की भाषा में जनसमुदाय को समझाने के लिए फरमाये गये हैं। इनमें अनेक संतों के द्वारा रचित अनन्य पुस्तकों से व्याख्यान संकलित हैं जिनमें सधुक्कड़ी भाषा का प्रयोग किया गया है।

मुख्यतः गुरूवाणी के शब्दों का प्रयोग है। यहाँ पर पूर्णतः शुद्ध हिन्दी के शब्दों का प्रयोग नहीं है। आप से निवेदन यह है कि मात्राओं की तरफ ज़्यादा ध्यान न दें। खासकर गुरूवाणी के शब्दों का उच्चारण करते समय 'ि' तथा 'ु' की मात्रओं का हिन्दी रूपांतरण न करें। इन शब्दों का 'गुरूवाणी में अपना विशेष महत्व है परन्तु पढ़ते समय इन मात्राओं का उच्चारण नहीं किया जाता तथा हिन्दी में इनका प्रचलन नहीं है।

पूज्य परम संत गुरुबख़्श सिंह 'मैनेजर' साहिब के द्वारा फरमाये गये सत्संगों को यथावत भाषा में लिखा गया है यानि कि जैसा बोला है वैसा लिखा गया है। उसमें कोई तोड़-मरोड़ नहीं की गई है। यह भी कोशिश की गई है कि पुराने धार्मिक ग्रन्थों के विवरण भी यथावत रहें। यदि कहीं भी किसी वाक्य में कोई गलती मिले तो उसके लिए क्षमा प्रार्थी हैं तथा आपसे अनुरोध है कि त्रुटि को दूर करने के लिए सुझाव अवश्य भेजें। आपका सहयोग अपेक्षित रहेगा एवं कथित त्रुटि को अगले संस्करण में दूर करने का प्रयास होगा।

–प्रकाशक

प्रकाशक की ओर से

सन्त + मत 'संतमत' परमपिता परमात्मा से मिलने का सहज मार्ग है जो अनादिकाल से चला आ रहा है। जब से सृष्टि का निर्माण हुआ है तब से ही सन्तमत की शुरुआत हुई है। यह कुल मालिक का अपना बनाया हुआ मानवता के कल्याण का एक सरल मार्ग है। धर्म, सम्प्रदाय, जाति, देश, कौम, छोटा-बड़ा, ऊँच-नीच की सीमाओं से परे एवं सहज योग और चिन्तन का मार्ग है। संसार का हर व्यक्ति, स्त्री-पुरुष, बच्चा, बूढ़ा एवं जवान कोई भी इस मार्ग को अपना सकता है। संतों के बताये हुये मार्ग पर चलकर, उस परम पिता को इस शरीर रुपी मन्दिर में प्राप्त कर सकता है और कोई ज़रिया मालिक से मिलने का नहीं है। सिर्फ संतों के द्वारा बताये गये मार्ग पर चलकर ही उस करुणामय, दीनदयाल परमपिता परमात्मा की प्राप्ति हो सकती हैः

''राम नाम रत्न धन पूंजी, संतन हथ रखी कूंजी''

''जिस वस्तु को लैन तूं आइआ, राम नाम संतन घर पाइआ''

युगों-युग से कुल मालिक संत का चोला पहनकर, जीवों को भवसागर पार कराने के लिए अवतरित होता आया हैः

''हमरा भरता बड़ा विवेकी, आपे संत कहावै''

''साध रुप अपना तन धारया''

"The Word was made flesh and dwelt amongst us."

सन्त सदैव करुणा की मूर्ती रहे हैं एवं हमें धीरज, विवेक, दीनता का मार्ग बताते आये हैं। उनका उपदेश सबके लिए सांझा उपदेश रहा है। संत फरमाते हैं कि मनुष्य किसी कामिल उस्ताद से नाम की दीक्षा लेकर, प्रेम, लग्न, आधीनता से बन्दग़ी करके इसी जीवन में परमात्मा के दर्शन कर सकता है तथा

जन्म-मरण के बन्धन से छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है।

पूज्य परमसंत गुरुबख़्श सिंह 'मैनेजर' साहिब जी को हुज़ूर महाराज परम संत सावन सिंह जी से नाम की दौलत मिली तथा पूज्य परमसंत मस्तानाशाह ब्लोचिस्तानी जी की सोहबत एवं मार्गदर्शन प्राप्त करके लगभग 38 सालों तक संतमत सिद्धांतों को शिरोमणी रखते हुये अपने सत्संगों के द्वारा जन-मानस को सरल एवं स्पष्ट तरीके से समझाया है। जहाँ भी, जिस इलाके में गये, उसी इलाके की बोली में सत्संग करके अपनी मधुर वाणी से जिज्ञासुओं की आत्मा को तृप्त किया है। आपने अपने सत्संगों में उच्च कोटि के संतों, महात्माओं एवं विद्वानों के उपदेशों को सरल, बोलचाल की भाषा में समझाकर जीवों का उद्धार किया है। आपकी नूरी जुबान से निकला हर एक शब्द हृदय को मंत्रमुग्ध करने वाला होता था जो कि हर जीव को अटूट शांती प्रदान करता था।

इस पुस्तक में, उनके द्वारा फरमाये गए कुछ सत्संगों का संग्रह करके दूसरा भाग संगत की सेवा में समर्पित है। आशा है कि संगत इस पुस्तक को पढ़कर, उनके उपदेशों को अमल में लाते हुये जीवन के असली उद्देश्य को प्राप्त करेंगें।

—दास 'वकील'

भूमिका

पूज्य परम संत गुरुबख़्श सिंह 'मैनेजर' साहिब जी ने प्रकाश पुंज की तरह प्रकाशमान होकर, दुनिया को रूहानियत का रास्ता दिखाया है। उनके मुखारबिंद से निकला हुआ प्रत्येक शब्द जीवन का सोमा एवं दिल की गहराईयों को छू लेने वाले अमृत क्लश की तरह है। जो भी जिज्ञासु-आत्मा उनके सत्संग में गई वह यह अनुभव करती कि प्रत्येक वचन उनके लिए ही कहा गया है। उनके सत्संगों में प्यासी आत्माओं को ठंडक पहुँचती थी। हर जीव भाव विभोर होकर सत्संग सुनता एवं अपने रोम-रोम में आत्मीयता के साथ-साथ परमात्मा की अनुभूती करता था।

आप अलौकिक नूर के स्वामी थे। अलौकिंक तेज से खिलखिलाता नूरी स्वरूप सबका मन मोह लेता था। आप सहज ही हर जिज्ञासु को अपनी मध ुर एवं तेजस्वी वाणी से अपनी ओर आकर्षित कर लेते थे। आपके द्वारा हर संदर्भ में उच्चारित 'बे-ईमान! सोचो! बोलो! सोच लो! देखो! हाय-हाय! फिर बोल भई! जैसे मार्मिक शब्द जीव की अर्न्तआत्मा को छू कर रूहानियत के विषय में सोचने एवं समझने के लिए मजबूर कर देते थे।

'सत्संग संग्रह' नामक इस पुस्तक में दिये गये सत्संगों में मैनेजर साहिब जी ने हिन्दी, पंजाबी, उर्दू, अरबी, फारसी एवं अंग्रेजी भाषा का प्रयोग किया है। पूज्य परम संत मस्तानाशाह ब्लोचिस्तानी जी का वचन था कि ''इतना पढ़ा-लिखा, गुणी एवं समझदार ''मैनेजर'' सतगुरु ने बड़ी ताकत खर्च करके पकड़ा है क्योंकि इससे बड़ा काम लेना है''। पूज्य मस्ताना जी के यह वचन सार्थक सिद्ध हुये एवं इन्होंने अपनी मीठी, अलौकिक तेजस्वी वाणी से जीवों के अन्दर नाम का बीज डालकर भवसागर से पार किया है। सभी सत्संग ज्ञान में परिपूर्ण, स्पष्ट, सरल एवं रूहानियत से लबालब हैं। हर सत्संग में उच्च कोटि

के संतों, महात्माओं तथा अन्य धार्मिक ग्रंथों का हवाला देकर सहज तरीके से जीवों को समझाया है।

संसार कभी भी संतों से खाली नहीं रहता। सतगुरु की नूरी किरण हमेशा दुनिया के किसी न किसी कोने से अधिकारी एवं व्याकुल जीवों को प्रकाशमान करती रही है। इस मृतलोक में, भिन्न-भिन्न स्थानों पर रहते हुऐ, पूर्ण कामिल संत या फकीर का सार उद्देश्य हमेशा एक ही रहा है कि जीव अपने निज घर पहुँच जाए। सबने एक ही सत्य, ईश्वर, अल्लाह, वाहेगुरु, शब्द गुरु का उपदेश दिया है। जो महात्मा मंजिले-मकसूद पर पहुँचे हैं उनका एक ही उपदेश, एक ही उसूल एवं एक ही मुददा रहा हैः

जो पहुँचे ते कहि गए तिनकी एकै बात।
सभी सिआने एक मत उनकी एकै जात॥
जो पहुँचे ते पूछिए तिनकी एकै बात।
सब साधुऊँ की एक मत बीच के बाराँ बाट॥

(दादू साहिब)

यह संसार बदलता रहता है और इसकी परिस्थितियां और बोली भी बदलती रहती है। इसी तरह संत भी काल और देश के अनुसार अपना नया रास्ता बना लेते हैं। उनका काम अधिकारी और व्याकुल जीवों को ठीक मार्ग पर डालना है। वे मौके के बादशाह हैं और बादशाह को अधिकार होता है कि जो मर्ज़ी कानून बना ले। लेकिन अन्दर का रास्ता एक ही है जो युगों-युगान्तर से चला आ रहा है और जो मालिक का अपना बनाया हुआ है; वह शब्द की धार या सच्चा नाम है। दृष्टि का एक ही लक्ष्य है शब्द की धार को पकड़कर निजघर पहुँचना। आदमी के दृष्टिकोण अलग हो सकते हैं।

परमपिता परमात्मा ने स्वयं ही संसार सागर की रचना की है। फंसाने वाला भी खुद और निकालने वाला भी खुद ही है। संतों के रूप में आकर खुद ही जीव को अपने घर जाने का तरीका बताता है। यदि वह न आये तो जीव निजघर जा ही नहीं सकता।

संत जीव को समझाते हैं कि परमात्मा शरीर रूपी मन्दिर में निवास करता है। वह बाहर के मन्दिर, मस्जिद, उजाड़, पहाड़ एवं कन्धराओं में नहीं मिलता। वह कौमों मज़हबों तथा बाहर के भेखों से बहुत दूर है। संत समझाते हैं कि किसी कामिल रूहानी दरवेश की शरण में आकर उनसे नाम रूपी उपदेश लेकर,

दीनता से भजन सिमरण करके, इन्द्रियों के भोगों का त्याग करते हुये, सतगुरू की अनुभूति प्राप्त कर सकता है।

संतमत सहज योग का मार्ग है। इसको हर कोई शख्स, स्त्री-पुरूष, बच्चा, बूढ़ा, जवान, बीमार, तन्दुरूस्त चाहे किसी भी जाति, सम्प्रदाय, कौम, मज़हब, देश का हो, अपना सकता है। संतों का उपदेश घर-बार छोड़ने के लिए नहीं कहता बल्कि घर में रहते हुये, प्रारब्ध कर्मों का भुगतान करते हुये, भजन सिमरण के द्वारा अपने मंज़िले मकसूद पर पहुँच सकता है।

पूज्य ''मैनेजर'' साहिब जी ने अपने सत्संगों में बड़ी सरलता और स्पष्टता के साथ-साथ अन्य सन्तों की वाणियों का उल्लेख करते हुए हर एक रूहानी विषय को बाखूबी समझाया है। आशा है संगत इन सत्संगों को पढ़कर एवं उनके द्वारा फरमाये गये वचनों पर अमल करके लाभ उठायेगी।

–दास 'वकील'

अनुक्रम

क्रमांक	सत्संग शब्द	पृष्ठ संख्या
1.	'इक दिन घोघड़ आसी रे'	13
2.	'बिखै बनु फीका तिआगि री सखीए'	36
3.	'सार सबद गहि बाँचि हौ'	70
4.	'लख चौरासी खत्म हुई ना कोट कल्प युग चार गए'	99
5.	'सत्संग/साखियां/पत्र'	130
6.	'हमन है इश्क मस्ताना'	158
7.	'प्रथम बन्दौ सतगुरु स्वामी'	168
8.	'बिनु गुर सबदै मनु नहीं ठउरा'	193
9.	'मूसन मस्कर प्रेम की'	217
10.	'साच धणी जग आए बिनासा'	238
11.	'गुरु का वचनु बसै जिअ नाले'	266
12.	'खास वचन'	286
13.	'किरति करम के बीछुड़े'	299

सत्संग

'इक दिन घोघड़ आसी रे'

सत्संग के वचन

पाठी– इक दिन काल आसी रे, इक दिन घोघड़ आसी रे।
घाल गले में डोर जीवड़ा तनै पकड़ ले जासी रे॥

जल थल जीव सकल में व्यापक इस घोघड़ की घाटां।
अन्त समय में आन मिलैगो फेर करै दो बातां॥
इक दिन घोघड़.....
पांच पच्चीसों मिली छोकरी कहयो किसी को न माने।
इस घोघड़ से डरतां रहियो मन न पड़ियो पाने॥
इक दिन घोघड़.....
तीन लोक और चौदह भवन में इस घोघड़ को राज।
आए अचानक यूं पकड़े ज्यूं चिड़ियाँ नै बाज॥
इक दिन घोघड़.....

मैनेजर साहिब जी–फिर बोल भई! सुनो ग़ौर से क्या कहता है।

पाठी– तीन लोक और चौदह भवन में इस घोघड़ को राज।
आये अचानक यूं पकड़े ज्यूं चिड़ियाँ नै बाज॥
इक दिन घोघड़.....

मैनेजर साहिब जी–घोघड़ कहो, काल कहो, जितने जीव पैदा हुए हैं सबके लिए आता है। कोई उससे नहीं बचा। कोई बचा है? सोच लो! सोच कर देखो!

'तीन लोक और चौदह भवन में इस घोघड़ को राज।'

तीन लोक कह लो, चौदह भवन कह लो, इन्द्रलोक, ब्रह्मलोक, शिवलोक जितने हैं कोई नहीं बचा। त्रिलोकी तक कोई नहीं बचा। यह कबीर साहिब का वचन है और किसी का नहीं।

कबीर सोया क्या करे, सोये हुए अकाज।
ब्रह्मा का आसन डिगा सुनी काल की गाज॥

जब काल आया तो ब्रह्मा भी धड़ाम से गिरा कि यह क्या हो गया। अभी इसने शब्द बोला था।

जाग रे मुसाफिर प्यारे सोवै मत ना

यह सोने का वक्त नहीं है। यह गफलत का वक्त नहीं है। विचारना तो यह है कि इस घोघड़ से बचाव क्या है? सोचो! यह नहीं कि पढ़ लिया, गा लिया, बजा लिया। उसका बचाव भी सोचो। सुनो जब वो आता है तो क्या होता है।

पाठी– कमल द्वार पखुड़ी को रोके। उल्टी सुरत काल मुख सोखे॥

मैनेजर साहिब जी– जब घोघड़ आता है, रूह को खींचता है तो देखते हैं और कहते हैं कि हाथ ठंडे हो गए, पाँव ठंडे हो गये, यहाँ तक कि पूरा शरीर ठंडा हो गया। जब आखों तक आया, यहाँ से सब दरवाज़े बंद हो जाते हैं। आत्मा कहो, रूह कहो सीधी काल के मुंह में जाती है फिर क्या होता है?

पाठी– कमल द्वार पखुड़ी को रोके। उल्टी सुरत काल मुख सोखे॥
काल दाढ़ में आन चबानी। जब ढरके नैनन से पानी॥

मैनेजर साहिब जी– किसी को मरते देखो, क्या होता है? जब वो दाढ़ में चबाता है तो आंखों से पानी निकलता है। टट्टी-पेशाब निकल जाता है। देख लो! मरते हुओं को देखो, क्या हालत होती है? उस वक्त क्या हालत होती है? इधर मोहम्दपुर रोही गाँव है, फतेहाबाद से आगे, वहाँ हिसार की तरफ है। वहाँ बिश्नोइयों का गाँव है, पूज्य मस्ताना जी जाया करते थे। कहा करते थे कि मालिक काल का मुँह न दिखाए तो वो हंसते थे कि ऐसे कहते हैं। यह क्या है? एक दिन एक मोटा आदमी आ गया। किसी का रिश्तेदार था। अचानक उसकी मौत आ गई। उसकी धोती फट गई और टट्टी वो दीवार तक गई। सोच लो! उसका कहाँ विचार है! उस वक्त कौन बचाने वाला है। देखना तो यह है। यह वक्त सब पर आएगा। आप का किसी से झगड़ा हो जाए तो वो यदि अगले दिन अपने जानवरों को पानी पिलाने या खेतों में जाए, इतना सा डंडा उठा ले, तो आप डांग उठाते हैं। आप तलवार उठाते हैं, बन्दूक उठाते हैं, लाठी उठाते हैं। सोच लो! अफसरों से बातचीत करते हैं कि मेरी इसके साथ दुश्मनी है। तो इसका इलाज सोचा है कभी! कि इस घोघड़ ने भी आना है। सोचो! मन्दिरों के पुजारियों को देखो, गुरुद्वारों के भाईयों को देखो, जो पाठ कर-कर के थक गए। उनका भी क्या हाल होता है, कोई बचा है। उनकी हालत

भी ऐसे ही होती है कि नहीं, इसका क्या विचार सोचा है! किसी ने सोचा कि हम गफलत में गुजार रहे हैं। जब मौत आती है उस वक्त बाहर के मन्दिर बाहर, गुरुद्वारे बाहर, तीर्थ व्रत बाहर, माँ, बाप, बहन भाई यार दोस्त सब बाहर, कौन बचाए उस वक्त। मौत भी अन्दर, यमदूत भी अन्दर, घोघड़ भी अन्दर! हम पास बैठे हैं कुछ कर सकते हैं! बचा सकते हैं! घोघड़ भी हमें दिखाई नहीं देता। आत्मा भी हमें दिखाई नहीं देती। वो छुड़ाने वाली शक्ति भी अन्दर है। सतगुरु भी अन्दर है। इसने सबको खुश किया। मन्दिरों के पुजारियों को खुश किया, गुरुद्वारे के भाईयों को खुश किया, तीर्थों वालों को खुश किया, मस्जिदों वालों को खुश किया, बाहर के गुरुओं को खुश किया पर अन्दर वाले गुरु, अन्दर वाले सतगुरु को खुश नहीं किया। कौन छुड़ाए? बोलो! कौन छुड़ाए उस वक्त। अन्दर वाला राम कहो, सतगुरु कहो एक ही है। एक ही गुरु है। ऐसे तो दुनिया भरी पड़ी है गुरुओं से, पर मौत से जो बचाने वाला है वो एक ही है। वो इसके अन्दर है। शब्द गुरु कहो, या राम गुरु कहो, एक ही बात है। राम कहते हैं–

''रमेता सो रामा''

वो रमी हुई ताकत है, सब के अन्दर है। वो सबके अन्दर है। वो शब्द रूप में सब जगह रमा हुआ है।

तिसु रूपु न रेखु अनाहदु बाजै सबदु निरंजनि कीआ॥

जितने रुहानी फकीर सच्चे मालिक की दरगाह में गए हैं। वो हमारी हालत को देखते हैं कि किस तरह यह घोघड़ त्रिलोकी तक सब की मिट्टी पलीत कर रहा है। बड़े-बड़े ऋषि-मुनी, पीर-पैगम्बर सब को खा गया। अभी जो बोला इसने।

'तीन लोक चौदह भवन में इस घोघड़ को राज'
'हाँको पर्वत फाड़ते समुंद्र घूंट कराए'

ऐसे तो कोई थोड़ी सी करामात दिखा दे तो हम कहते हैं कि वह तो राम बन गया, नहीं वो उनको भी खा गया।

हाँको पर्वत फाड़ते समुंद्र घूंट कराए।
ते मुनीवर धरती गले किया को गरभ कराए॥

अगस्त ऋषि हुआ है। उसने विन्ध्याचल पहाड़ को एक दड़का मारा। जो अभी तक गिरा पड़ा है। समुन्दर को घूंट करके पी गया। इतनी बड़ी शक्ति वालों को खा गया। हम सब गफलत में हैं। इसका कभी इलाज सोचा है?

काल न सूझे कंध पर मन चितवे बहु आस।
दादू जीव जाणै नहीं कठिन काल के पास॥

(दादू साहिब)

उसकी फांसे बहुत मजबूत हैं। यह लगा पड़ा है कि यह कर लूँ, वो कर लूँ, वो याद ही नहीं।

काल हमारे कंध चढ़ा सदा बजावै तूर।
काल हरण करता पुरूष क्यों न संवारे सूर॥

सोच लो! वो सतगुरु इसके अन्दर है। वो सतपुरूष इसके अन्दर है। वो अकाल पुरुष इसके अन्दर है। वो छुड़ाने वाला है। बाकी कोई नहीं छुड़ाने वाला। यह किसी से नहीं डरता और किसी से नहीं डरता! अगर डरता है तो शब्द गुरु से डरता है, और किसी से नहीं डरता। जितने रुहानी फकीर अन्दर गए हैं। उन्होंने हमारी हालत को आकर देखा है। उन्होंने आकर बताया कि कोई बचाने वाला नहीं, सिवाय शब्द गुरु के। अभी बताया था कि गुरुनानक साहिब से पूछा कि तेरा गुरु कौन है?

तेरा कवणु गुरु जिस का तू चेला। सबदु गुरु सुरति धुनि चेला॥

(गुरुनानक साहिब)

यही तुलसी साहिब ने कहा हैः

सुरति शिष्य सबदे गुरु मिलि मारग जाना हो।
अलख आकाश ऊँधा कुआँ ता में सुरति समाना हो॥

यहीं कबीर साहिब ने लिखा हैः

शब्द गुरु को कीजिए बहुतक गुरु लबार।
अपने-अपने स्वाद में ठौर-ठौर बटमार॥

सोचो! बाहर हमने कितने गुरु किए। सबको लिआओ, लिआओ लगी पड़ी है। जो रोटी के मोहताज हैं, रोटी के लिए हमारे पास आते हैं। सोच लो! वो हमें क्या देंगे। जिसके राम ने, किसी ने भक्ति की, उसको रोटी न दी, रोटी के लिए हमारे पास भेजा, माँगने के लिए। सोच लो! तो वो हमें क्या देगा? कभी कबीर ने चंदा फंड करवाया? किसी से माँगने गया? दादू साहिब गए किसी से माँगने? पलटू साहिब गए माँगने किसी से? उनका दाता उनके साथ था। गुरु अंगदसाहिब कहते हैंः

निरंकारि जो रहै समाइ॥ काहे भीखिआ मंगणि जाइ॥

(953/6 म.1)

अगर उनके दाता हो, मालिक हो तो वो क्यों मागंने जाएँ। जिस बीबी का पति मौजूद है उसे क्या ज़रूरत है कि बाहर धक्के खाए, बाहर माँगती फिरे। उसको बैठी को मिले। जिस आत्मा ने पति, परमेश्वर सतगुरु को खुश कर लिया हो, उसको क्या ज़रूरत है कि वो बाहर माँगता फिरे। बोलो! सोच लो! बाहर हम सब मँगते हैं। वो सुखों का दाता इसके अन्दर है। उसको तो हमने छोड़ ही दिया है। सोच लो महात्मा चरणदास जी कहते हैं कि –

कन फूंका गुरु जगत का, राम मिलावन और।
सो सतगुरु को जानिये मुक्त दिखावन ठौर॥

वो मुक्ति का दाता इसके अंदर है। वो बे-मोहताज है। हम कहते हैं सतगुरु मुक्ति का दाता है। सोच लो! सब कहते सतगुरू समान कोई दाता नहीं। बाहर तो सब मंगते हैं, फिर दाता कैसे हुआ? वो दोनों हाथों से लिये खड़ा है, कोई अन्दर जाए तो सही। जिस फकीर ने खुश किया है तो यह उसके ज़रिये अंदर जाए। अन्दर जाकर देखे कि वो कैसा है? कैसे दोनों हाथों से लिए खड़ा है। सोचो! यह किसी ने चादर बनाई। किसी ने कपास बोई, किसी ने चुगी, किसी ने बेली, किसी ने सूत बनाया, किसी ने रंग दिया, कितने हाथों से निकली! वो कभी गया कहीं लेने कुछ! वो कभी गया कुछ लेने! लाल रंग अन्दर से लाया, पीला अंदर से लाया, हरा अंदर से लाया, सफेद अंदर से लाया। सोच लो! वो समर्थ सतगुरु है। वो किसी का मोहताज नहीं। देखो! फूलों में कैसे रंग भरता है। वो समर्थ है। गुरु अर्जुन साहिब कहते हैं किः

सतिगुरु मेरा बेमुहताजु, सतिगुरु मेरे सचा साजु॥

वो बे-मोहताज सतगुरु है, वो सच्चा सतगुरु है। वो सबको बनाने वाला है। वो सबके अंदर बैठा है। उसको सबने छोड़ रखा है। सतगुरु इसके अन्दर है, दुनिया भूली पड़ी है। कबीर साहिब कहते हैं कि ऐसे नहीं जिन फकीरों ने अंदर देखा है वो लिखते हैं कि जिनको हम पूजते हैं वो देवी-देवते भी इसके अन्दर हैं। विराट् रूप दिखाया न कृष्ण भगवान ने, देवी-देवते अंदर दिखाए ना?

अवधू अन्धा धुन्ध अँधियारा कोई जानेगा जानन हारा।
या घट भीतर बन और बस्ती, याही में झाड़ पहारा।
या घट भीतर बाग बगीचा, याही में सींचनहारा।

या घट भीतर सोना चांदी, याही में लगी बाजारा।
या घट भीतर हीरा मोती, याही में परखनहारा।
या घट भीतर काशी मथुरा, याही में गढ़ गिरनारा।
या घट भीतर ब्रह्मा विष्णु, शिव सनकादि अपारा।
या घट भीतर आय लेत है, राम कृष्ण अवतारा।
या घट भीतर तीन लोक हैं, याही में सिरजनहारा।
कहैं कबीर सुनो हो अवधू, याही में गुरु हमारा॥

(कबीर साहिब)

वो गुरु भी इसके अन्दर है। यह एक नगरी है ऐसे नहीं। जिस्म पाँच-छः फुट का तो जरूर है पर इसके भीतर बहुत कुछ है। यह सब कुछ इसके अन्दर है। यही गुरुनानक साहिब ने कहा हैः

काइआ अन्दरि सभु किछु वसै खंड मंडल पाताला।
काइआ अन्दरि जगजीवन दाता वसै सभना करे प्रतिपाला।
इसु काइआ अंदरि नउ खंड प्रिथमी हाट पटण बाजारा।
इसु काइआ अंदरि नामु नउ निधि पाईऐ गुर कै सबदि वीचारा।
काइआ अंदरि ब्रहमा बिसनु महेसा सब ओपति जितु संसारा।
सचै आपणा खेलु रचाइआ आवा गउणु पासारा॥

(754/11 म.3)

खेल भी मालिक ने आप ही डाला है। फँसाने वाला भी वही है। निकालने वाला भी वही है। उसके आगे रोज़ फरियाद करे कि ऐ सतगुरु मैं युगों-युगों से तेरे से बिछुड़ा हूँ। कितने युग हो गए दुनिया बनी को, कितनी प्रलय हो चुकी हैं, कितनी महाप्रलय हो चुकी हैं, कितने सतयुग बीत चुके हैं, कितने द्वापर बीत चुके हैं, कितने त्रेते बीत चुके हैं, कितने कलयुग बीत चुके हैं। हम मालिक से बिछुड़े हैं, हमारा छुटकारा नहीं हुआ। क्योंकि अंदर वाले को तो खुश नहीं किया, उसको तो भुला ही दिया। अगर उसके आगे बेनती करे कि तूं मेरा कोई बन्दोबस्त कर तो वो जरूर बंदोबस्त करता है। अगर सच्चे दिल से पुकार करे तो जरूर प्रकट होता है या फिर अपना बख्शा हुआ कोई न कोई फकीर जरूर भेजेगा, जरूर मिलाएगा। फकीरों से तो दुनिया भरी पड़ी है। कामिल फकीर कोई बिरला ही मिलेगा। पूरे हिन्दुस्तान में सिर्फ एक या दो। गद्दीयों पर गद्दीयाँ बन गईं। जब से कोई फकीर आया। हज़ारों

साल हो गए वहीं गद्दी चल रही हैं। गुरु पर गुरु चढ़ गए, पर उस असली को तो छुड़ा ही दिया। वो असली इसके अन्दर है। बाहर कोई गुरु नहीं। इसका गुरु इसके अन्दर है। उस असली को तो छुड़ा ही दिया। वो असली इसके अन्दर है बाहर कोई गुरु नहीं। गुरुनानक साहिब जी ने कहा है, कबीर साहिब ने कहा है कि तेरा गुरु तेरे अन्दर है। अभी जो बोलाः

कहै कबीर सुनो हो अवधू, याही में गुरु हमारा॥

अन्दर वाले को तो छुड़ा ही दिया। आप बन बैठे। जो खुद बन बैठे, सोचो! वहाँ मालिक आएगा उस के पास! जो खुद बन बैठा? जहाँ मैं है, हउमैं है वहाँ मालिक आता ही नहीं। वो तो मैं में फंसा है, सोच लो! वहाँ मालिक कहाँ आए? गुरु गोविन्द सिंह जी कहते हैंः

जो हम कउ परमेसर उचरि है, ते सब नरक कुण्ड महि परि है।
मो को दास तवन का जानो, या महि भेद न रंच पछानो॥

(बचित्र नाटक)

कि जिस किसी ने कहा कि मैं परमेश्वर हूँ, मैं यह हूँ, मैं वो हूँ। मैं यह कर सकता हूँ, वो कर सकता हूँ। वो सीधा नरकों में जाएगा। मैं तो उस मालिक का, उस सतपुरुष का दास हूँ। जितने भी फकीर आए, कबीर साहिब ने कहा है कि मैं दास हूँ। गुरुनानक साहब ने कहा कि मैं नीच हूँ, दास हूँ। क्यों कहते थे? कैसे बने वो दास? उनके सिर पर सतगुरु था। वो कैसे कहते कि मैं कुछ हूँ। अब अफसर बैठा है साथ, कर्लक बैठा है, तो कलर्क अफसर के बैठे कह सकता है कि मैं कुछ हूँ , मैं यह कर सकता हूँ। सोच लो! जिसके सिर पर सतगुरु है, राम है, वो कह सकता है कि वह कुछ करने वाला है? सो उस गुरु को तो भुला ही दिया, खुद बन बैठे। वो धक्के भी तभी खा रहे हैं। उसको तो छुड़ा ही दिया, खुद बन बैठे। उनके संग से हमें क्या मिलेगा? फकीरों ने देखा कि यह घोघड़ सबकी मिट्टी पलीत कर रहा है, सबकी ज़िन्दगी खराब कर रहा है। सब की आत्मा को खराब कर रहा है। कभी नरकों में डालता है, कभी स्वर्गों में डालता है। कभी कीड़ा बनाता है, कभी पतंगा बनाता है, उससे कोई नहीं छूटा। इसको छुड़ाने वाला अन्दर है, उसको तो भुला ही दिया। उन्होंने कहा कि तेरे अंदर तेरा सतगुरु है। तेरे अन्दर तेरा राम है। हमने ऐसे खुश किया है, तू भी कर ले। अगर उसने खुश कर लिया तो काल नजदीक ही नहीं आता। उसके नजदीक ही नहीं आता। तुलसी साहिब कहते हैंः

जो कोई सन्त सरण के दागी, तिन तै काल दूर होई भागी।
जम की जाल निकट नहीं आवे, मारगि छाड़ि अलग हो जावे॥

वो रास्ता ही अलग है:

अफरियो जम मारिया न जाई, गुरु के सबदे नेड़े न आई।
सब्द सुने ते दूरहू भागे मतु मारे हरि जीउ बेपरवाहा हे॥

अगर डरता है तो शब्द गुरु की भक्ति से, बाकी किसी से भी नहीं डरता। उसको तो छुड़ा ही दिया सब ने, सोच लो! कीमती बात है, गफलत में गुजारने वाली नहीं। कौन आएगा काम मौत के समय? आत्मा अन्दर, यमदूत अन्दर, उस वक्त कौन छुड़ाए? अन्दर कोई हो तो छुड़ाए। अन्दर वाले को तो खुश न किया। फिर बोल भई! कमल द्वार,

पाठी– कमल द्वार पखुड़ी को रोके, उलटी सुरति काल मुख सोखे॥
काल दाढ़ में आन चबानी। जब ढ़रके नैनन से पानी॥

मैनेजर साहिब जी–बाहर वाले गुरु ने क्या किया, या तो खुद की पूजा करवाई या मन्दिरों, मस्जिदों में भेजा या तीर्थों पर भेजा। वो तीर्थ इसके अन्दर हैं। अभी कबीर साहिब का सुनाया था।

या घट भीतर काशी मथुरा, याही में गढ़ गिरनारा॥

वो अमृतसर इसके अन्दर है।

काइया अंदरि अंम्रितसरु साचा मनु पीवै भाइ सुभाई हे॥
(1046/3म: 3)

वो पराग इसके अन्दर है। बैणी साहिब कहते हैं:

इड़ा पिंगुला अउर सुखमना तीनि बसहि इक ठाई।
बेणी संगमु तह परागु मनु मजनु करे तिथाई॥ (974/7)

यही महात्मा चरणदास कहते हैं:

अठसठि तीर्थ तो विखे, बाहर क्यों भटकाए।
चरणदास यूं कहत है उल्टा होय घट आए॥

अड़सठ तीर्थ इसके अंदर हैं। इसको पता नहीं, सोचो! बाहर के पानी। सोचो! दो हज़ार साल पहले इसाईयों के तीर्थ नहीं थे। तेरह-चौदह सौ साल पहले मुसलमानों के नहीं थे, पाँच सौ साल पहले सिक्खों के नहीं थे। बोलो! किस तीर्थ में जा कर आत्मा साफ होती है। जो नहा कर आते हैं, देखा है कभी किसी ने मैल उतरते! उनकी आत्मा साफ हुई! काम, क्रोध, मोह, लोभ, अहंकार

घटे! आत्मा को साफ करने वाला तीर्थ इसके अन्दर है। वो नाम का तीर्थ है। वो अमृतसर इसके अन्दर है। वो नाम का तीर्थ है। वो पराग इसके अन्दर है। उसको तो भुला ही दिया। सोच लो! वो तीर्थ भी इसके अन्दर है वो गुरु भी इसके अंदर है। वो नाम भी इसके अंदर है।

अठसठि तीरथ हरिनामु हैं किलविख काटणहारा॥

(1009/3म:1)

हम रोज़ पढ़ते हैं बाणी में:

भरीऐ हथु पैरु तनु देह॥ पाणी धोतै उतरसु खेह।
मूत पलीती कपडु होइ ॥ दे साबूणु लईऐ ओहु धोइ।
भरीऐ मति पापा कै संगि ॥ ओहु धोपै नावै कै रंगि॥

(4/15 जपुजी साहिब)

कि अगर मिट्टी से हाथ-पाँव खराब हो जाएँ तो पानी से धो लो। अगर टट्टी-पेशाब से कपड़े खराब हो जाएं तो साबुन से धो लो। लेकिन जो पापों की मैल उतारने वाला नाम का तीर्थ कह लो वो इसके अंदर है। वो सतगुरु कहो, उसमें धोए जाते हैं पाप। वो पापों को धोने वाला सतगुरु इसके अन्दर है, बाहर नहीं। उसको सब ने भुला दिया है। हाँ जी:

जो उस तीर्थ में नहाया, अभी सुनाया था कि उसकी आत्मा साफ हो गई। वो श्रेष्ठ हो गया, वो आर्य बन गया। तो उसकी आत्मा सत् ताकत से मिलने के काबिल बन गई, वो सनातनी बन गया।

अब मनु उलटि सनातनु हूआ। तब जानिआ जब जीवत मूआ॥

(327/2)

जब उस नाम के तीर्थ में नहाया, जीवित मरा, तब सनातनी बन गया। सोच लो! जब उस नाम को प्रगट किया तो नामधारी बन गया। उस नाम को प्रगट करना ही सच्चा सौदा है, और कोई सच्चा सौदा नहीं। बाकी सब फनाह है। आत्मा और राम के मेल का नाम सत् ताकत है। इसका नाम सच्चा सौदा है। तब यह सच्चे सौदे वाला बन गया। तब यह नामधारी बन गया, खालसा भी बन गया।

पूर्ण जोत जगै घटि में तब खालसा ताहि नखालस जाणै।

(पातशाही 10)

उस नाम में जोत है, तब खालसा भी बन गया। अगर बन जाए तो कुछ है,

नहीं तो कुछ भी नहीं पल्ले! बस डींगें ही डींगें हैं। पल्ले कुछ भी नहीं सोच लो! सोचो! घोघड़ तो दूर पड़ा। बाबर एक बादशाह था गुरु नानक साहिब के समय था। उसने सब फकीरों को चक्कीयों पर बिठा दिया, क्योंकि यह सब पाखंडी हैं वो चक्की पीसते थे। जो मछंदर को मानते थे वो उसको ध्याने लगे। जो गोरख को मानते थे वो उसको ध्याने लगे। जो राम को मानते थे वो उसको ध्याने लगे। जो शिव को मानते थे वो उसको ध्याने लगे। किसी ने मदद की? कोई आया नजदीक उनके? जब गुरु नानक साहिब को बिठाया तो चक्कीयाँ अपने आप चलने लगीं। जिसने इसको खुश किया वो काम करने लग गया। अब डींगों से कुछ नहीं बनता। मैं फलाने का हूँ, मैं फलाने का हूँ, तब वो काम देगा? ऐसे नहीं। अन्दर वाले को तो किसी ने खुश न किया।

पाठी– तीन लोक और चौदह भवन में इस घोघड़ को राज।
आये अचानक यूं पकड़े ज्यूं चिड़ियाँ नै बाज॥
इक दिन घोघड़.....
''मानस जन्म सुधारो साधो धोखे काहे बिगाड़ो हो।
ऐसा समय बहुरि नाहीं पैहो जन्म जुआ मत हारो हो।
गुडा गुड्डी ख्याल तिन भूली मूल तत न लाओ हो।
जब लग घर सो परचे नाहिं तब लग कछु नाहिं पायो हो॥''

मैनेजर साहिब जी–जितने काम कर रहे हैं हम सब गुड्डे गुड़ियों हैं। जैसे बच्चे खेलते हैं गुड्डे-गुड़ियाँ बना कर, वो कहते हैं कि यह हम भी वही कर रहे हैं। जब तक परचा नहीं अन्दर मिला सोचो! या तो सतगुरु अंदर प्रगट हो, अगर सतगुरु प्रगट न हुआ तो उसकी कोई निशानी मिले। कोई अन्दर रोशनी, कोई आवाज़, कोई तसल्ली, अगर वो नहीं तो काम, क्रोध मोह, लोभ अहंकार ही छोड़े। कोई उसका प्रेम उठे। यह नहीं तो फिर करने का क्या फायदा।

पाठी– तीरथ, व्रत, जप, तप, संयम यह करनी मत भूलो।

मैनेजर साहिब जी–इसी में दुनिया उलझी है। यह नहीं कि इसका फल नहीं है, अच्छी जून मिल जाएगी, स्वर्गों तक पहुँच जाएगा, लेकिन छुटकारा नहीं। घोघड़ से छुटकारा नहीं, जन्म-मरण के बन्धन नहीं छूटते। जन्म मरण के बन्धन छुड़ाने वाला सतगुरु इसके अन्दर है।

पाठी– तीरथ, व्रत, जप, तप, संयम यह करनी मत भूलो।
करम फंद में पड़ियो युग-युग फिरि-फिरि जूनी महि भूलो हो।

न कछु नहाए, न कछु धोऐ, न कुछ घंट बजाए हो।
न कछु धोती न कछु नेती न कछु नाचे न गाए हो।
सिंगी सेती बभूत और बटुआ साईं श्वास से न्यारा हो।
कहै कबीर मुक्ति जो चाहो मानो शब्द हमारा हो॥

मैनेजर साहिब जी–भेष बनाए हैं। वो कहता है मैं सन्यासी हूँ। वो कहता है मैं उदासी हूँ, कोई कहता है मैं खालसा हूँ। कोई कहता है कि नामधारी हूँ। इस तरह मर गई सारी दुनिया झगड़-झगड़ कर। मालिक को तो प्रकट नहीं किया। उसको तो खुश नहीं किया। स्वांगों में क्या बना, बोलो! बाहर से नहाने से क्या बना? क्या बना? जब अंदर कोई परचा नहीं मिला, अन्दर शांती न मिली। सोच लो! अगर ठीक फकीर से पूछ कर जपे तो इसको तसल्ली मिलने लग जाए। काम, क्रोध, मोह, लोभ, अहंकार घटने लग जाएँ। अन्दर शांती आने लग जाए। अगर और ठीक करे तो घोघड़ नजदीक ही नहीं आता। अगर ठीक जपे तो घोघड़ नजदीक नहीं आएगा।

'दादू काल ग्रासन का कहिये।'

असली तो अंदर है शब्द गुरु। अगर प्रगट नहीं हुआ तो कम से कम उसका सिमरण हो।

दादू काल ग्रासन का कहिये काल रहित है सोई।
काल रहित सिमरण सदा बिना ग्रासन होई॥

(दादू साहिब)

जब-जब फकीर आए। कबीर ने भी यही कहा है कि तेरा शब्द गुरु तेरे अन्दर है। गुरु नानक ने यही कहा है। जब गुरुनानक साहिब आए तो सब कहते थे कि कुराहिया है। अब नानक-नानक कहते हैं। कबीर साहिब आए तो कहते थे कि जुलाहा उल्टा ज्ञान चला रहा है।

सबसे कहूँ पुकार पुकारी, कोई माने नहीं नर और नारी।
जगत कहे जुलाहा अज्ञानी, हरि हरि का भेद कछु न जानी।
नीच जात और भगत कहाई। हरि का दर्श कबहूँ न पाई॥

(कबीर साहिब)

अब कबीर-कबीर कहते हैं। यही दादू साहिब कहते हैः

दादू कहित पुकारी, कोई माने नाहि हमारी।
पंडित काज़ी वेद कतेबे, पढ़ पढ़ मुए लबारी।

वह तीर्थ वह हज को जाते, बूड़े भवजल धारी।
ईसाई सब धोखा खाया पढ़ अंजील बिचारी।
हिन्दू, तुर्क, ईसाई तीनों, कर्म धर्म पचहारी।
नूर-जहूर खुदा हम पाया, उतरे भवजल पारी॥

कि नूर-जहूर खुदा देखा है। कोई ज्ञानों में पड़ा है, कोई जपों में पड़ा है, कोई तपों में पड़ा है, कोई तीर्थों में, कोई व्रतों में। पर मैं कहता हूँ कि मैंने अंदर नूर-जहूर खुदा देखा है। तुम भी देखो पर कोई नहीं मानता। हाँ जीः

पाठी– सोचा था खाएँगे बहु दिन बहु काल।
धरी धराई रह गई पकड़ ले गया काल॥
इक दिन घोघड़.....

मैनेजर साहिब जी–सुनो भई! यह कीमती बात है। कबीर साहिब का वचन है जो धर्मदास को कहा थाः

पाठी– युगन युगन लीना अवतारा रहूँ निरंतर प्रगट पसारा।
सतयुग सतसुकृत का डेरा त्रेता नाम मुनींदर मेरा।
द्वापर में करुणामय कहाये कलयुग नाम कबीर रखाए।

मैनेजर साहिब जी–कबीर साहिब कहते हैं कि मैं चारों युग में आया हूँ। सतयुग में सत्सुकृत नाम था। त्रेता में मुनींदर और द्वापर में करुणामय था। कलयुग में मैं कबीर। आगे क्या कह रहे हैंः

पाठी– चारों युग के चारों नाऊँ माया रहित रहे तह ठाऊं।
सो जग यह पहुँचे नहीं कोई सुर नर नाम रहे मुख गोई।

मैनेजर साहिब जी–कहते हैं कि बातें बनाते रह गए। वहाँ तक कोई नहीं पहुँचा। जो असली देश है वहाँ मैं पहुँचा हूँ।

पाठी– सब से कहूँ पुकार पुकारी, कोई नहीं माने नर और नारी।
इन का दोष नहीं कछु भाई, धर्मराय राखै अटकाई।

मैनेजर साहिब जी–धर्मराय कहो, काल कहो, घोघड़ कहो, सबको रोके बैठा है।

पाठी– गुप्त पसारा है अति भारी, ताहे न जानी नर और नारी।
शिव गोरख कोई पार न पावें और जीव की कौन चलावै।
नब्बे नाथ चौरासी सिद्धा, समझ बिना जग में रहे अन्धा।

मैनेजर साहिब जी–किसी हद तक जरूर पहुँचे। रिद्धियाँ-सिद्धियाँ उन्होंने हॉसिल की, लेकिन मालिक के दरबार में न पहुँचे। सतगुरु के दरबार में न पहुँचे। काल से न बचे।

पाठी– ऋषि मुनि और असंख्यन भेषा, सत्य ठौर सुपने नहीं देखा।

मैनेजर साहिब जी–कहते हैं कि उन्होंने सत् ताकत को सुपने में भी नहीं देखा।

पाठी– जोर कहें पतियावत नाहीं, बहुत कहूँ समझा मन माहीं।
कोई योग कोई मद के माता, कोई कहे हम लिखे विधाता।
कोई मान दशा मन लावे, मौन होय कर मूल गंवावे।
सत्य पुरुष की युक्ति न पाई, हृदय धरै नहीं सत्य को भाई।
कोई कहे हम हैं भजनीका, काज अकाज लखै नहीं जा का।
कोई कहे हम पढ़े पुराना, तत्व अतत्व सभी कुछ जाना।
कोई कहे विद्या आधीना, सब विचार काया में चीन्हा।
कोई कहे तप वस कर राखा, तप है मूल और सब शाखा।
कोई कहे कर्म अधिकारा, कर्मों सूं उतरे भौ पारा।
कोई कहे भाग्य लिखा सो होई, भाग्य लिखा मेटे नहीं कोई।
कहाँ लग कहूँ यही सब कहहि, भेद हमारा न कोई लहहि।
सब सूं हार मान मैं बैठा, ये सब जीव काल घर पैठा।

(कबीर साहिब)

मैनेजर साहिब जी–कि जो कुछ मैं कह रहा हूँ किसी ने नहीं सुना। कोई विद्या में रह गया, कोई कर्मों के चक्कर में रह गया, कोई किसी में तो कोई किसी में रह गया। आखिर काल का खाजा बना। सोच लो! कबीर साहिब का वचन है, किसी ऐरे-गैरे का नहीं।

पाठी– इस घोघड़ ने सन्तां पकड़ियो करयो भजन से काठो।
कहत कबीर सुनो भाई साधो जब ये घोघड़ नाठो॥

इक दिन घोघड़.....

पाठी– कर ले रे कर ले सौदा पार लँघन दा।
अग्गे-अग्गे हट्टड़ी बाजार भी नहींयों।
आओ मेरे राजा आओ मेरे दाता।
बार बार जग मांही आवणा नहींयों॥

मैनेजर साहिब जी–फिर बोल भईः

पाठी– कर ले रे कर ले सौदा पार लँघन दा।
अग्गे अग्गे हट्टड़ी बाजार भी नहींयों।
आओ मेरे राजा आओ मेरे दाता।

मैनेजर साहिब जी–चौरासी में से कोई बच सकता है तो इसी जन्म में भक्ति करके बच सकता है। चौरासी से अगर कोई बच सकता है तो और कोई जून नहीं। तभी कहते हैं कि:-

अग्गे अग्गे हट्टड़ी बाजार भी नहींयों।

चौरासी लाख जीआ-जून भुगतने के लिए करोड़ों साल बल्कि युग चाहिए। अगर नरकों में चला गया तो युगों के युग पड़ा रहता है। अगर स्वर्गों में चला गया तो वहाँ युगों के युग पड़ा रहता है। सांपों की उमर तीन सौ साल, चार सौ साल पाई जाती है। अफ्रीका में एक वृक्ष खड़ा है चार हज़ार साल का ऐसे कैद खड़ा है। हम तो चलते-फिरते हैं। फिर चौरासी लाख जीआ-जून कब खत्म हुई? फिर आदमी की जूनी मिलती है। ऐसे गफलत में गुजार रहे हैं। अगर अब भी गफलत में गुजार गए तो फिर पता नहीं कब वक्त मिले। सोच लो! कबीर साहिब क्या कहते हैं।

आओ मेरे राजा आओ मेरे दाता।

वो क्या दान माँगते थे। उनको क्या गर्ज़ थी? सोच लो! उन को क्या गर्ज़ थी? उन्होंने तो ताना ही किया। चने मिल गए तो चने खा लिए। भूखे हैं तो भूखे रहे। क्या दान माँगते थे? वो देखते थे कि काल क्या कर रहा है। वो यही दान माँगते थे कि अपने छुटकारे का बंदोबस्त कर लो। उन्होंने कुछ माँगा? वो हमारे भले के लिए कहते थे। फिर भी उनकी किसी ने नहीं मानी। गुरुनानक साहिब ने हमारे भले के लिए कहा। पलटू साहिब, दादू साहिब सबने हमारे भले के लिए कहा। सोच लो! जितने भी फकीर हैं। जो माँगता है वो फकीर नहीं।

दादू साध परीखिये अन्तरि आत्म देख।
मन माहि माया रहे या आपे आप अलेख॥

उसके अन्दर मालिक ही मालिक है या माया के मजूर है। सोच लो! उन्होंने अपना हक हलाल का कमा कर खाया है। फिर उपदेश दिया है। फिर भी किसी ने नहीं माना। अब गुरु आते हैं उनसे खुश हैं। पाँच रुपए दे कर मत्था टेकते हैं और नाम लेते हैं, उनसे खुश हैं। जो नहीं माँगते सही रास्ता बताते हैं उनसे खुश नहीं लोग, मुफ्त में नाम दिया। उससे कुछ लिया भी नहीं। फिर भी नहीं मानी उनकी।

आओ मेरे राजा आओ मेरे दाता

बोलो! मिन्नतें कर-कर के समझाते रहे हैं पर किसी ने सुनी नहीं। और कोई जूनी है जिसमें मालिक मिल सकता है? यही एक जूनी है जिसमें हम मालिक से मिल सकते हैं। इसलिए इसको कहते हैं नर-नारायणी देह, अशरफ-उल-मखलूकात मुसलमानों ने कहा है। गुरु अंगद साहिब ने कहा है कि सारी योनियों की सरदार है। देवी-देवते भी इसको तरस रहे हैं।

मनुष्य रूप को जन्म दुर्लभ जग माहिं है।
देवन हूँ को कठिन प्राप्त नाहिं है।
सकल देवा यही भांति मनोरथ नित करें।
मनुष्य जन्म को पाय के भवसागर तरें॥

(महात्मा चरणदास जी)

यह महात्मा चरणदास का बचन है कि वो तरसते हैं कि हमें मनुष्य का जन्म मिले और भक्ति करके अपने देश पहुँचें।

इस देही कउ सिमरह देव। सो देही भज हरि की सेव।

देवी-देवते भी इसको तरस रहे हैं। यह सब योनियों की सरदार है। सब से ऊँची योनि है। यह वक्त है छुटकारे का और कोई वक्त नहीं।

पाठी– कर ले रे कर ले रे सौदा पार लँघन दा।
अग्गे-अग्गे हट्टड़ी बाजार भी नहींयों।

मैनेजर साहिब जी–काम तो यह करना था। हमने कौन से किये, या ज़मीनें खरीदीं, जायदादें बनाई, कारखाने बनाये, बच्चे किए या कौमों मज़हबों के झगड़े में फँसे या पार्टियाँ बनाईं या देशों के झगड़ों में फँसे। यह तो सौदा किसी ने भी नहीं किया? सोच लो!

पाठी– कच्ची कच्ची ईट बालू का गारा।
पक्का पक्का मंदिर चिनवाये क्यों लिया।
कर ले रे कर ले.....

मैनेजर साहिब जी–फिर बोल भई!

पाठी– कच्ची कच्ची ईट बालू का गारा।
पक्का पक्का मंदिर चिनवाये क्यों लिया।

मैनेजर साहिब जी–किसी प्रेमी ने सुनाया कि हमारे थोड़ी सी बारिश हुई। गाँव में सारे घर गिर पड़े। सोच लो! सब गिर गए। काल आ जाए तो चले जाना है, एक मिंट का भरोसा नहीं यहाँ। लगा पड़ा है कि पक्के मकान बनाने, जायदादें

बनाई थी। पता नहीं काल किस समय आ जाए, बोलो! बस यह गिर गया जैसे, ऐसे ही इसने गिर जाना है। पता नहीं किस वक्त आ जाए।

पाठी– कोई आज गया कोई कल गया कोई जाने को तैयार खड़ा।

मैनेजर साहिब जी–सोच लो! हमारे बाप दादा कहाँ हैं? हमारे दादे-परदादे कहाँ हैं? अब्राहिम बादशाह हुआ है। कबीर साहिब के पास उसने बारह साल गन्दगी उठाई। अच्छी रुह थी। मालिक ने उसको चोट लगानी थी। महलों में बैठा था। कीमती बात है। एक फ़कीर आ गया। वो इधर-उधर देखने लगा। कहने लगा कि क्या देखता है? कि इस सराय में मैंने दो दिन काटने हैं। कि यह तो सराय नहीं, महल हैं। कि किसके? कि मेरे। तुम्हारे से पहले कौन रहता था? कि मेरे बाप दादा। कि उससे पहले? मेरे परदादे। तेरे बाद कौन रहेगा? कि मेरा लड़का। कि फिर सराय न हुई तो क्या हुआ? हम सब सराय में बैठे हैं। सब की तैयारी है। सोचो ! कहाँ दादे-परदादे गए। हमने भी चले जाना है। सोच लो! कोई चीज़ काम देगी? जब पाकिस्तान बना तो उनके काम चीज़ कोई आई? बोलो! इस दुनिया में देख लो! जो इधर से गए, उनके काम आई? तुम्हारे कैसे काम आयेंगी? जो काम आने वाली है, उसका तो बन्दोबस्त किया ना, बोलो! हाँ जीः

पाठी– ठिकाना है नहीं कायम किसी का इस सराय में।
वो ब्रह्मनन्द दिन दिन में सभी चल-चल कर जाते हैं।

मैनेजर साहिब जी–सब ने चले जाना है। जो राम निकाल लेगा, सतगुरु को प्रगट कर लेगा, वो आनन्द लूट लेगा। बाकी इसी तरह चौरासी में धक्के खाता रहेगा। काल इसी तरह पीड़ता रहेगा और कुछ नहीं, देख लो! कभी गधा बनेगा, कभी घोड़ा बनेगा, कभी बैल बनेगा।

कबीर गुरु की भक्ति बिन राजा गधा होय।
माटी लदै कुम्हार की घास न डारे कोय॥

कि राजा भी गधे बने फिरते हैं।

कबीर गुरु की भक्ति बिनु, नारि कुकरी होय।
गली गली भरमत फिरै टुक न डारै कोय॥

यह कुत्ते, बिल्ले फिर रहे हैं। यह सब भक्ति न करने का नतीजा है। और क्या है? उन्होंने आदमी की योनि की कदर न की, तभी तो कुत्ते बिल्ले बने फिर रहे हैं। सोच लो! अगर हम नहीं करेंगे, ऐसे ही गधे घोड़े बनेंगे।

उज्जल पहने कपड़ा, पान सुपारी खाय।
कबीर गुरु की भक्ति बिना बाँधा जमपुर जाय॥

अगर भक्ति नहीं करेगा। अन्दर सतगुरु को प्रगट नहीं करेगा तो यमदूत आएँगे, मारे-पीटेंगे, फिर रोता है, चिल्लाता है। अभी बताया था कि टट्टी पेशाब निकलेगा, बुरा हाल होगा। हाँ जीः

पाठी– दिवाने मन भजन बिना दुख पैहौ।
पहिला जन्म भूत का पैहौ सात जन्म पछितैहो।
कांटे पर लै पानी पैहौ प्यासे ही मर जैहौ॥
दूजा जनम सुहा को पैहौ, बाग बसेरा लैहो।
टूटे पंख बाज मंडराने, अधकड़ प्रान गंवहौ॥
बाजीगर के बानर होइहौ, लकड़िन नाच नचैहौ।
ऊँच नीच से हाथ पसरिहौ, माँगे भीख न पैहौ॥
तेली के घर बैला होइहौ, आँखिन ढाँप ढँपैहौ।
कोस पचास घेरे में चलिहौ, बाहर होन न पैहौ॥
पँचवाँ जन्म ऊँट का पैहौ, बिन तौले बोझ लदैहौ।
बैठे से तो उठै न पैहौ, घुरच घुरच मरि जैहौ॥

मैनेजर साहिब जी–देख लो! हम क्या करते हैं, लद्दे लादते हैं। देखते हैं थोड़ा है या ज़्यादा? उपर से डंडे लगाते हैं कि उठ भई! फिर यही हालत होगी।

पाठी– धोबी घर के गदहा होइहौ, कटी घास न पैहौ।
लादी लादि आपु चढ़ि बैठे, लै घाटे पहुँचैहौ॥
पंछी मां तौ कौवा होइहौ, करर करर गुहरैहो।
उड़ि के जाइ मैला पर बैठौ, गहिरे चोंच लगैहौ॥
सतनाम की टेर न करिहौ, मनहीं मन पछितैहौ।
कहैं कबीर सुनो भाइ साधो नरक निसानी पैहौ॥

मैनेजर साहिब जी–अगर आकर सतगुरु को प्रकट नहीं करता, सच्चे नाम को प्रकट नहीं करता तो फिर यह हालत होगी, और तो कोई नहीं।

पाठी– अब तो तज आलस को मन से कभी करि संग दयाल।
कभी ब्रह्मानंद न देर लगाय जरा तेरे सिर पर काल।
उठ जाग मुसाफिर देख जरा तेरे नैनों में नीद विराज रही है॥
कच्ची कच्ची ईंट बालू का गारा।

पक्का-पक्का मंदिर चिनवाये क्यों लिया॥

कर ले रे कर ले.....

जोगी होके जुगत न जाणी।
कना विच मुंदरा पवाये क्यों लईयों॥

कर ले रे कर ले.....

मैनेजर साहिब जी–कि योग तो इसलिए लिया था कि मालिक को प्रगट करे, पर कानों में मुंदरें डाल कर माँगने चल पड़ा। गुरुनानक साहिब कहते हैंः

जोगी होवा जगि भवा घरि-घरि भीखिया लेउ।
दरगह लेखा मंगिअै किसु किसु उत्तरु देउ॥

जिस-जिस का खाया है उसका लेखा देना पड़ेगा। ऐसे तो हराम का माल नहीं, करनी तो भक्ति थी। मालिक को प्रगट करना था मगर हम रोटी खाने पर बैठ गए। बस इधर गए रोटी खा ली, उधर गए रोटी खा ली। कहीं कुछ मिला तो कहीं कुछ मिला, बस!

पाठी– निकला था भक्ति करने माँग खाई भीख।
जीवरस खाता पड़ा करी न नाम से प्रीत॥
जोगी होके जुगत न जाणी।
कन्नां विच मुंदरां पवाये क्यों लईयों॥

कर ले रे कर ले.....

कहत कबीर सुनो भई साधो।
इस तन का एतबार भी नहींयों॥

कर ले रे कर ले.....

अन्त समय में राम नाम कैसे गाएगा।
किया नहीं अभ्यास याद फिर कैसे आएगा॥
बैठा है कुसंग करता खोटी टोली तूं।
तेरी मेरी बात लावै पोली पोली तूं।
कूप का तो नीर नहीं ले रहा डोली तूं।
नेजू तेरे पास नहीं करता तका तोली तूं।
सीखी न परेड और फौजी बोली तूं।
अन्त समय में कैसे मारे सीधी गोली तूं।
भ्रम का बुर्ज फेर कैसे ढाएगा॥

अन्त समय में.....

मैनेजर साहिब जी–यहाँ रहते हैं न, नजदीक मंडी कलांवाली, वहाँ एक सेठ रहता था। वह पूरी तैयारी करके आया। सुबह सामान लेने जाना था। शाम को रोटी खाने बैठा, बस खत्म! बुरकी ऐसे ही रह गई, रोटी खाने लगा। पता नहीं कब काल आ जाए। अगर अब अभ्यास नहीं किया, मौके पर क्या करेगा? उस अभ्यास ने काम देना है, राम नाम, सिमरण ने काम देना है। अगर अब अभ्यास नहीं किया, अब याद नहीं, तो मौके पर क्या करोगे? बोलो! क्या पता टट्टी पेशाब पर बैठे ही आ जाए। कहते हैं कि एक मिन्ट भी न छोड़ो। अगर अब नहीं किया तो मौके पर क्या करेगा? अभ्यास ही काम आएगा। फिर क्या बचाव है? क्या ढ़ाल है। बोलो!

दादू काल का ग्रासन कहिए काल रहित है सोई।
काल रहित सिमरण सदा बिना ग्रासन होई॥

(दादूसाहिब)

सोच लो! अगर अब अभ्यास नहीं किया। जैसे फौजियों को गोली मारना सिखाते हैं न, ताकि दुश्मन आए तो फौरन निशाना लगे। इस तरह हमें भी सीखना पड़ता है कि मिन्ट भी न छोड़े। क्या पता काल कब आ जाए। उस वक्त क्या ढ़ाल है? कहता है कि खोटी टोली में बैठा है। इधर-उधर की बातें कर रहा है। उस वक्त क्या करोगे? बोलो! कुआँ खोदा नहीं, पास डोल नहीं, पानी पास नहीं, मौके पर कैसे पीओगे। सोच लो! कबीर साहिब का वचन है। यही गुरु अंगद साहिब ने कहा है–

जब लगु जीउ पिंड है साबतु तब लगि किछु न समारे।
जब घर मन्दिर आग लगानी कढि कूपु कढै पनिहारे॥

जब तक जिस्म ठीक था तब तक तो कुछ नहीं किया। अगर यह कहे कि बुढ़ापे में करूँगा तो बुढ़ापे का भजन ऐसे ही है जैसे अगर किसी के मकान को आग लग जाए और वो उसी समय कुआँ खोदे, पानी निकाले, फिर आग बुझाएँ। कभी ऐसा हो सकता है? सोच लो! एक मिनट भी न छोड़ें। जिन फकीरों ने काल से बचाव किया है, उन्होंने एक मिनट भी नहीं छोड़ा। गुरु अमरदास जी कहते हैं कि–

एकु पलु खिनु विसरहि तू सुआमी जाणउ बरस पचासा॥

(601/3 म:3)

अगर एक मिनट भी भूल गया तो मेरे लिए पचास साल का बकफा पड़

गया। जिसने कभी याद ही नहीं किया, उसका क्या हाल होगा? बोलो भई! हमें याद है कभी किसी को? सभी सारा दिन इधर-उधर की बातें करते हैं। कभी कौमों की, कभी मज़हबों की, कभी झगड़ों की, कभी कुछ तो कभी कुछ, मालिक भुला ही दिया। कौन सहाई है उस वक्त, बोलो! हाँ जी, फिर बोल भई!

पाठी– अन्त समय में राम नाम कैसे गाएगा।
किया नहीं अभ्यास याद फिर कैसे आएगा।
बैठा है कुसंग करता खोटी टोली तूं।
तेरी मेरी बात लावै पोली पोली तूं।
कूप का तो नीर नहीं ले रहा डोली तूं।
नेजू तेरे पास नहीं करता तका तोली तूं।
सीखी न परेड और फौजी बोली तूं।
अन्त समय में कैसे मारे सीधी गोली तूं।
भ्रम का बुर्ज फेर कैसे ढ़ायेगा।
अन्त समय में.....
मरा पचा दिन रात तूने माया जोड़ी है।
हाथी, पीनस, पालकी, रथ और घोड़ी है।
भरती नहीं तृष्णा तेरी लम्बी चौड़ी है।
नित नई चाहना तेरे आगे दौड़ी है।
जपा नहीं जिन्दाराम तेरी अक्ल थोड़ी है।
छोड़ के धन माल हाथ खाली जायेगा।
अन्त समय में.....

मैनेजर साहिब जी–सारी उमर माया के पीछे पच-पच कर मर गया। अब ख़्याल तो माया की तरफ है कि इतनी बन गई, इतनी बन गई। सोच लो! जब मौत आई, आगे आ कर खड़ी हो गई माया, फिर क्या बनेगा? साँप की जोनी मिलेगी। माया पर बैठेगा और क्या करेगा। कबीर साहिब ने कहा है–

कबीर उँधी खोपड़ी कबहुँ धापे नाहि।
तीन लोक की सम्पदा कब आवे घर माहि॥

त्रिलोकी की दौलत भी मिल जाए तब भी इसका पेट नहीं भरता। तृष्णा का पेट नहीं भरता। इसने इस माया से काम लेना था। जिस्म को चलाना था रोटी खाकर। जिस्म को ढाँपना था कपड़ा पहन कर या ठिकाना बनाना था। माया

जोड़-जोड़ कर मर गया। ख़्याल माया में रहेगा फिर साँप ही बनेगा और क्या बनेगा? बोलो!

अंति कालि जो लछमी सिमरै। ऐसी चिंता महि जे मरै।
सरप जोनि वलि वलि अउतरै।

(526/7) त्रिलोचन

जिसका ख़्याल मौत के समय माया की तरफ रहेगा। वो फिर साँप की योनि में जाएगा। इसका फिर तन से प्यार है। मरने के वक्त भी कहेगा कि तन न छूटे, मरूँ न। तन का प्यार फिर इसको तन में ही लाएगा।

'जहाँ आसा तहाँ वासा।'

कि अगर माया में प्यार है तो साँप की जूनी मिल जाएगी। कहते हैं कि अगर राम नाम जपेगा तो राम नाम में ही जाएगा। अगर माया में ख़्याल है तो माया में जाएगा। हाँ जीः

पाठी– मरा पचा दिन रात तूने माया जोड़ी है।
हाथी, पीनस, पालकी रथ और घोड़ी है।
भरती नहीं तृष्णा तेरी लम्बी चौड़ी है।

मैनेजर साहिब जी–गोहाना मंडी वहाँ है न उधर बंठिडे से परे, वहाँ से आता था न, दर्शन, उसने बताया कि भाई कन्हैया का गुरुद्वारा है। अब तक भी कुछ फकीर कमाई वाले हैं। उनके पास कुछ फकीर आए। एक कहने लगा कि मैंने हरिद्वार जाना है। यह मेरी गोदड़ी रख लेना। कीमती वचन है। मेरी गोदड़ी रख लेना आ कर ले लूँगा। इस तरह दो तीन साल निकल गए, वो वापिस नहीं आया। एक दिन वो फकीर कहने लगा कि भई, वो गोदड़ी तो लाओ। वो आया नहीं लेने। जब गोदड़ी उठाई, उसमें साँप, वो मारने लगे तो वो कहने लगे कि नहीं मारो नहीं, इस गोदड़ी को फाड़ो। जब गोदड़ी फाड़ी तो उसमें मोहरें पड़ीं। बोलो! वहाँ मरा, और यहाँ साँप बन कर बैठा। यह हाल है माया वालों का। सोच लो! फकीरी भी, आखिर जूनी साँप की मिली। ख़्याल तो उस गोदड़ी में था कि मोहरें पड़ी हैं। कि उसमें मोहरे पड़ी हैं। फिर वहाँ साँप बन कर बैठा। मालिक की तरफ ख़्याल हो तो मालिक के पास जाएगा! हाँ, जीः

पाठी– भरती नहीं तृष्णा तेरी लम्बी चौड़ी है।
नित नई चाहना तेरे आगे दौड़ी है।
जपा नहीं जिन्दाराम तेरी अक्ल थोड़ी है।

छोड़ के धन माल हाथ खाली जाएगा॥

अन्त समय में.....

माता सुत भ्राता जो तेरे घर की नारी है।
स्वार्थी हैं सारे प्यारे झूठी यारी है।
गया मोह में फूल भूल बड़ी भारी है।
किया न विवेक तेरी अक्ल मारी है।
काल का चले है चक्र हरदम जारी है।
करता आवे ग्रास सबको बारी-बारी है।
भोगेगा चौरासी वहाँ पर धक्के खाएगा॥

अन्त समय में.....

मैनेजर साहिब जी–जितने हमारे बच्चे हैं, माँ-बाप, बहन-भाई यह सब लेने देने के सम्बन्ध से इकट्ठे हुए हैं। पता नहीं कितनी माँएं हुई हैं, कितने बाप हुए हैं, कितने बच्चे हुए हैं। कितने भाई और कितने बहनें हुई हैं। सबको भूल गया। वह याद है पर यह छोड़ जाना है। कोई किसी का नहीं। लेकिन यह भी नहीं छोड़ने, इसको भी निभाना है। अगर छोड़ के जाता है तो इस के लेने देने खत्म नहीं होते। यह भी करना है। हमें दुनिया में रहना नहीं आता। बच्चा मर जाए सारी उमर लगा रहता है, हाय मर गया! हाय मर गया। फिर इसके प्यार में जूनि मिलती है। वहाँ जाएगा जहाँ वो जाएगा। इसको चाहिए कि मर गया तो मालिक की मौज़, पैदा हो गया तो मालिक की मौज़। मालिक की मौज़ में रहना नहीं आता। अगर मोह रखेगा तो फिर चौरासी भुगतेगा। इधर-उधर भटकेगा।

पाठी– राम नाम की लूट है लूट सके तो लूट।
अन्त काल पछताएगा जब प्राण जाएँगे छूट॥

मैनेजर साहिब जीः कबीर साहिब कहते हैं कि फकीरों का काम तो यही है कि अन्दर सतगुरु को प्रगट कर ले, राम नाम को प्रगट कर ले और कोई काम नहीं। कबीर साहिब बाहर जाया करते थे। वहाँ एक जमींदार था। उस को कहा करते कि तूं राम नाम जपा कर। वो कहता कि जरा लड़के होशियार हो जाएं, काम संभाल लें। इनकी शादी वगैरह हो जाए तो फिर राम ही जपना है। बच्चे बड़े हो गए, उन की शादी भी हो गई, काम भी संभाल लिया। कबीर साहिब फिर आए। फिर कहने लगे कि राम नाम जपा कर। कहने लगा अभी मैं पोते तो देख लूँ। कभी कुछ तो कभी कुछ आखिर वो मर गया। कबीर साहिब फिर

आए पूछा कि भई बाबा! कि बाबाजी तो मर गया काफी समय हो गया। कबीर साहब ने जब अंतर में ध्यान लगा कर देखा तो क्या देखते हैं। उसका गाय के साथ बड़ा प्यार था। उधर बच्चों की सेवा का ख़्याल था। बोलो! गाय का बच्चा बन कर उनकी सेवा की। जब उनके काम का न रहा तो उन्होंने गड्डे वाले को दे दिया। जब उनके काम का न रहा तो उन्होंने तेली को दे दिया। कोल्हू चलाता रहा जब उनके काम का न रहा तो उसने कसाई को बेच दिया। कसाई ने बोटी-बोटी करके माँस वालों को बेच दिया। जो चमड़ा था वो नगारे वालों को दे दिया। कबीर साहिब कहते हैं–

बैल बने हल में जुते ले गाड़ी में दीन।
तेली के कोल्हू रहे पुनि घेर कसाई लीन।
माँस कटा बोटी बिकी चमड़न मढ़ि नगार।
कुछ कर्म बाकी रहे तिस पर पड़ती मार॥

कबीर साहिब कहते हैं कि मेरी तो न मानी, बैल बना, हल में जुता, तेली का कोल्हू चलाया, सोच लो! अब नगारे वाले डैं-डैं करते फिर रहे हैं। पर मेरी न मानी। फकीरों की किसी ने भी नहीं मानी। समझा बुझा कर चले गए। अगर उसको मानता, राम नाम जपता तो उसका छुटकारा न हो जाता। अब गाय का बच्चा बना, फिर बैल बना। बस यही हाल हमारा है। अगर राम नाम से प्यार करें। सतगुरु से प्यार करें तो वहाँ पहुँच जाएँ। अगर बच्चों से प्यार करेगा या चीज़ों से करेगा तो चौरासी भुगतेगा।

पाठी– माता सुत भ्राता जो तेरे घर की नारी है।
स्वार्थी हैं सारे प्यारे झूठी यारी है।
गया मोह में फूल भूल बड़ी भारी है।
किया न विवेक तेरी अक्ल मारी है।
काल का चले है चक्कर हरदम जारी है।
करता आवे ग्रास सब को बारी-बारी है।
भोगेगा चौरासी वहाँ पर धक्के खाएगा।

अन्त समय में.....

धन धन सतगुरु तेरा ही आसरा

सत्संग

'बिखै बनु फीका तिआगि री सखीए'

सत्संग के वचन

पाठी– बिखै बनु फीका तिआगि री सखीए नाम महारसु पीओ।
बिनु रस चाखे बुडि गई सगली सुखी न होवत जीओ॥

मैनेजर साहिब जी–सारी दुनिया की भागदौड़ इसलिए ही है कि खुशी और शांती नसीब हो। इसलिए भागे दौड़े फिरते हैं। जितनी मेहनत है इसलिए ही है। किसी को मिली शांती। किसी ने विषयों-विकारों में ढूंढ़ी। जितने विषय, उतना दुख, आगे से आगे और दुख सहेड़ता जाता है।

बहु सादहु दुखु परापति होवै। भोगहु रोग सु अंति विगोवै॥

(1034/16 म :1)

गुरु अर्जुन साहिब जी ने यहाँ तक लिखा है:

एक निमख स्वादु कारणि कोट दिवस दुख पाइ॥

एक निमख भर की ली हुई लज़्ज़त का नतीजा करोड़ दिवस, कितने साल हो जाएँगे? 28-30 हज़ार साल हो गए। इतना दुख उठाता है। किसी ने माया में शांती ढूँढी, मिली? **Ford,** फोर्ड अमरीका का सबसे अमीर आदमी, और अमरीका सबसे अमीर देश, यानी कि दुनियॉ का सबसे अमीर आदमी। उसने एक बार लिखा कि कोई मेरी सारी माया ले ले, मगर मुझे शांती दे दे। किसी ने बाल-बच्चों में ढूंढी, सोच लो! किसी को मिली? जिसके पास है वो भी दुखी, जिसके पास नहीं है वो भी दुखी। यह शांती का देश ही नहीं। कैसे फंसे हैं? कैसे इन लज़्ज़तों में फंसे हैं? मालिक ने खेल भी आप ही डाला है और फंसाया भी आप ही है। इससे दो ताकतें पैदा हुईं:

कालु अकालु खसम का कीना एहु परपँचु बधावनु॥

(1104/7)

अकाल–वो ताकत जिसको हम सतपुरूष कहते हैं, सतगुरु कहते हैं,

अकाल पुरख कहते हैं। वो सतूताकत जो हमेशा कायम है। जो मालिक का अपना महकमा है।

दूसरा काल—काल को रचना का हुक्म हुआ।

खंड पाताल दीप सभि लोआ॥ सब कालै वसि आपि प्रभि कीआ॥

(1076/1 मः5)

मालिक ने खेल भी आप ही डाला है। अब उसने तो रचना चलानी है। उसको ताकत भी वहीं से मिलती है। मालिक का रूप क्या है? 'शब्द'

तिसु रूपु न रेख अनाहदु वाजै सबदु निरंजनि कीआ।

(351/3 मः1)

कैसे है? अभी प्राईम मिनिस्टर (Prime Minister) बोले, एक मिनट में सब जगह आवाज़ फैल जाएगी। जिन अफसरों से ताल्लुक है वो काम करने लग जायेंगे, सोचो! उन्होंने तो उसको देखा भी नहीं होगा। किसने काम करवाया? उसके हुक्म ने, शब्द ने, आवाज़ ने। इसी तरह मालिक की आवाज़, हुक्म सब जगह है।

हुकमी होवनि आकार हुकमु न कहिआ जाई॥
हुकमी होवनि जीअ हुकमि मिलै वडिआई॥
हुकमी उतमु नीचु हुकमि लिखि दुख सुख पाईअहि॥
इकना हुकमी बखसीस इकि हुकमी सदा भवाईअहि॥

(आदि ग्रन्थ)

सबदे धरती सबदे आकाश। सबदे सबदु भइया प्रकास॥

(जन्म साखी)

'शब्द' की लय को कहते हैं 'नाम'।

नाम के धारे सगले जंत। नाम के धारे खण्ड ब्रह्मण्ड॥

(284/11 मः5)

पढ़ते भी हैं रोज़, इस तरह मालिक की आवाज़ सब जगह ही है। मुसलमान उसको कलमा कहते हैं; बाँगें आसमानी कहते हैं। ईसा ने Word 'वर्ड' कहा है। सोचो! वो शब्द ही गुरु है। गुरु का लफ्ज़ **'ग्री'** धातु से निकला है। जिसका मतलब है 'सत्त शब्द'। सत्तगुरु का मतलब है 'सत्त शब्द' जो सतलोक से आ रहा है, अकाल पुरुष का है। इसके नीचे भी हैं जैसे यहाँ Prime Minister का है। सूबे में C.M 'सी एम' का है। जिले में डी. सी. का है। इस तरह

अन्दर भी ऐसे ही है। अकाल पुरुष के ज़रिए ही ताकत मिलती है। महकमे तो बना दिए। वो एक किस्म के शरीक बना दिए, निकालने वाला तो वो अकाल पुरुष है। काल ने क्या किया है? जीवों को ले कर तीन शरीरों में कैद किया है। पहले 'कारण' शरीर है, जिसके द्वारा हम कारण मंडलों में काम कर सकते हैं। उसके उपर 'सुक्ष्म' शरीर है, जिसके द्वारा हम सुक्ष्म मण्डलों में काम कर सकते हैं। देवी-देवते, जिन्न-भूत दो शरीर हैं। उसके उपर यह स्थूल शरीर है इस दुनिया में काम करने के लिए। और क्या किया उस ने? इन्द्रीयाँ लगा दीं, विषय लगा दिए, और पाप-पुण्य के जाल में डाल दिया।

'पाप पुण्य बीज की पोट'

यह बीज है, जिससे सारी दुनिया चलती है। पाप को तो सबने बुरा कहा है, किसी ने पुण्य को भी कहा है? अच्छे कर्म और बुरे कर्म दोनों हथकड़ियाँ हैं। सोच लो! कृष्ण भगवान ने कहा है दोनों हथकड़ियां हैं। एक लोहे की समझ लो, एक सोने की समझ लो, है तो हथकड़ी! छुटकारा तो न हुआ?

पुन्य दानु जो बीजदे सब धरमराई कै जाई।
बिनु सतिगुरु जमकालु न छोड़ई दूजै भाइ खुआई॥

यही महात्मा चरणदास जी ने कहा हैः

पाप पुन के सत्य ही ठहर रहा ब्रह्मण्ड॥
इन दोनों के मिटत ही होत खण्डु खण्ड॥
बिरले जन को होत है पाप पुन की सूझ॥
सोई उतरें भवजाल से, बहुते रहे अरुझ॥

सारी दुनिया इसी में उलझी पड़ी है। और क्या किया है उसने, मन अपना एजेन्ट छोड़ दिया। उसका काम क्या है? जीव को भरमाना और भटकाना, और कोई काम नहीं इसको।

मनु मैंगलु साकतु देवाना॥ बन खंडि माया मोहि हैराना॥
इत उत जाहि काल के चापे॥ गुरुमुख खोज लहै घरु आपै॥

मन एक मस्त हाथी की तरह है, जो मोह-माया और विषय-विकारों के जंगलों में भटकता रहता है। कभी स्त्रीयों का प्यार, कभी बच्चों का प्यार, कभी रिश्तेदारों का प्यार, कभी कौमों-मज़हबों के झंझट। कभी नाच, कभी रंग, कभी तमाशों में घूमता है। यह काल का एजेन्ट है। यह उलझाए फिर रहा है। इसका यही काम है। यही कबीर साहिब ने कहा हैः

ऐ जीअरा तू अमरलोक को, आये परे बस काल हो॥

कि ऐ जीव तूं सतलोक का रहने वाला है, अमरलोक का रहने वाला है, सचखंड का रहने वाला है, मुकामे-हक़ीक़ का रहने वाला है। काल के वस में आया हुआ है।

मनहि सरूपी निरंजना तुमहे राखी भरमाई हो॥

तुझे भरमा रहा है, कैसे? पाप-पुण्य का जाल डाल दिया और,

जोग जाप नेम व्रत पूजा, बहु परपंच पसारा हो॥

जैसे बधिक ओट टाटी के, देहि बिसवासे चारा हो॥

'कि जैसे एक शिकारी जाल तान कर दाने नीचे डाल देता है, जानवर आता तो पेट भरने के लिए है उल्टा फँस जाता है। इस तरह सब फँसाने वाले हैं।'

यह सब दिलासे हैं। अट्ठासी-अट्ठासी हज़ार साल तप, पवणाहारी, सोचो! शृंगी ऋषि को मार दिया। विश्वामित्र ने साठ हज़ार साल तप, कह देना आसान है। मन ने मार दिया, पूर्ण योगी होकर आया प्रायशचर जी, मन ने मार दिया। मछंदर इस देह से निकल जाता था। फिर भी मन ने ख़्याल किया कि विषय भोगें, राजपाट करें, देख लो! इतनी बड़ी हस्ती। किसी राजे का देहान्त हुआ, अपनी आत्मा को अपने शरीर से निकाल कर उसके शरीर में प्रवेश कर के विषय भोगे, राजपाट किया, मारा गया न मारा गया, सोचो! यह जितनी भक्ति करते हम सब काल के दायरे की हैं।

नेम धर्म आचार यज्ञ तप ये उरले व्योहारा॥
जा से मिले अखण्ड मोक्ष सुख सो मारग है न्यारा॥
काल जाल से बाँचा चाहो गहो शब्द तत सारा॥
कहहिं कबीर अमर कर राखो जो परखो टकसारा॥

(कबीर साहिब)

यही गुरुनानक साहिब कहते हैं:

सभि जप सभि तप सभ चतुराई॥ ऊझड़ि भरमै राहि न पाई॥

सब उल्टे रास्ते हैं।

बिनु बूझे को थाइ न पाई॥ नाम बिहूणै माथे छाई॥

(412/2 मः 1)

जप करते हैं, कोई काली का करता है, कोई हनुमान का करता है, कोई

भैरों का करता है, कोई कुछ तो कोई कुछ। इसके करने से रिद्धियाँ-सिद्धियाँ आ जाएँगी। उसके साथ आ कर रहने लग जाएँगी, शरीर की रक्षा करने लग जाएँगी। लेकिन जन्म-मरण के बन्धन उनके न छूटे और न वो छुड़ा सकते हैं।

इन्द्रपुरी महि सर पर मरणा॥ ब्रह्मपुरी निहचलु नहीं रहिणा॥
सिवपुरी का होइगा काला॥ त्रैगुण माइआ बिनसि बिताला॥

(237/8 मः 5)

ऐसे धक्के खा रहा है, ऐसे ही फँसाया है काल ने, यह तो राह बना दिए काल ने, चीज़ें जायके हैं। जैसे यहाँ अंग्रेज आए। राजे-महाराजों, सेठ-साहूकारों के लड़कों को अपने साथ ले गए कि आओ भई तुम्हें सैर करवा लाएं। वहाँ ले गए, उनके साथ एक-एक एजेन्ट छोड़ दिया, जाओ भई सैर करवा लाओ। उन्होंने कभी शराबखानों में, जूएखानों में, कबाबखानों में, मेमों में उलझा कर राज खोस लिए, उल्टे करज़ाई कर दिए। इस तरह काल ने किया है कि जा भई सैर करवा ला। मन एजेन्ट छोड़ दिया। माँ के प्यार की लज़्ज़त देख, बीबी के प्यार की लज़्ज़त देख, बालबच्चों के प्यार की देख, फलानी देख, बस इस तरह फँसा रखा है, निकलने का राह नहीं मिलता। सोचो! अब इसको पता ही नहीं बेहोश हो गया, कोशिश करता है। कभी यह कर लो, कभी वो कर लो। कैसे फँसे हैं, क्या कर रहे हैंः

पाठी– इस ग्रिह माहि कोई जागतु रहै। सावतु वसतु ओहु अपनी लहै॥
नैनहु नींद परद्रिसटि विकार। स्रवण सोए सुणि नींद वीचार॥

मैनेजर साहिब जी–इसके अन्दर बढ़िया से बढ़िया नज़ारे हैं। खंड-ब्रह्माण्ड इसके अन्दर हैं।

काइया अंदरि सभु किछु वसै खंड मंडल पाताला॥
काइया अंदरि जग जीवन दाता वसै सभना करे प्रतिपाला॥
काइया अंदरि रतन पदार्थ भगति भरे भँडारा॥
इसु काइया अंदरि नउ खण्ड प्रिथमी हाट पटण बाजारा॥
काइया अंदरि नामु नउ निधि पाइऐ गुर कै सबदि वीचारा॥
काइया अंदरि ब्रह्मा बिसनु महेसा सब ओपति जितु संसारा॥

(754/11 मः 3)

अजीब खेल है इसके अन्दर, बढ़िया से बढ़िया नज़ारे हैं। बाजे बज रहे हैं, कीर्तन हो रहे हैं। लेकिन जब बाहर देखता है, औरतों को देखता है आँखों

के ज़रिये, एक मिंट में फंस जाता है। काम सताता है। बाल-बच्चों को देखता है, मोह सताता है। पैसा देखता है, लोभ सताता है, देख लो! दुश्मन को देखता है, अहंकार और क्रोध सताता है, डंडा उठाने को जाता है। अपना रूप देखता है तो अहंकार सताता है कि मेरे जैसा है कोई। कानों के ज़रिये बालबच्चों के दुख-सुख की सुनता है तो दौड़ता है। बीबीयों की बात सुनता है तो काम की इच्छा भटकती है। चारपाई पे पड़ा है उठ नहीं सकता, दुश्मन की बात करो तो डंडा उठाने को तैयार हो जाता है। देख लो ! रुपए की बात सुनता है कि फलाने ने वहाँ जा कर कमाया है तो सोचता है कि मैं भी वहाँ जा कर कमाऊँ। इसके अन्दर ख़ज़ानों के ख़ज़ाने पड़े हैं, सोच लो! इस तरह ज़ुबान के ज़रिये पहले खट्टे मिट्ठे रसों में, कभी कहता है वह हो, कभी कहता है वो हो।

कुटिल जो इन्द्री जीभ की, चाहै खट रस स्वाद॥
या बस होइ औगुन करै, जन्म जाय बरबाद॥

(महात्मा चरणदास)

उस को क्या? हमारे एक अफसर था किले में, किले का जमादार, कितना बड़ा अफसर। आम उठाया टट्टी खाने में जा कर खाया, बोलो भई! किस ने चोरी करवाई, देख लो! जीभ के स्वाद ने, खट्टे मिठों में, कभी खट्टा, कभी मीठा, कभी इधर, कभी उधर। फिर बातें सुन लो, यह जीभ तो सब से बुरी है। सबको खा गई। जिस ने जीभ का स्वाद छोड़ा, वो सब कुछ हासिल कर सकता है। नहीं तो नहीं जा सकता। कभी कहता है यह दो, कभी वो दो। फिर बातें कर-कर के ज़ुबान से एक दूसरे के संस्कार लेते हैं।

तबही काला होत है हरि बिन चितवत आन॥
क्या कहिऐ समझे नहीं दादू सिखवत ज्ञान॥

(दादू साहिब)

बातें कर कर के दुनिया के संस्कार लेता है। सोचो! मालिक ही विसार दिया। हालाँकि बढ़िया से बढ़िया कीर्तन हो रहे हैं इसके अन्दर। यह बाहर के राग सुन कर मस्त हो गया, बस!

सो दरु तेरा केहा सो घरु केहा जितु बहि सरब समाले॥
वाजे तेरे नाद अनेक असंखा केते तेरे वावणहारे॥
केते तेरे राग परी सिउ कहीअहि केते तेरे गावणहारे॥

(347/4म:1)

पढ़ते भी हैं, वो कब सुनोगे। यह तो सुना दो मिनट, बल्ले-बल्ले, बड़ी मस्ती आई। फिर मस्ती कहाँ गई?

सुखमन कै घरि रागु सुनि सुंनि मंडलि लिव लाइ॥

(1291/2 मः।)

वो इसके अन्दर हैं। मीठे-मीठे राग हो रहे हैं। इन टी. वी. और इधर-उधर की बातों ने सबकी मिट्टी पलीत कर दी। वो तो जो थे, वो थे, इन्होंने और पलीत कर दी, देख लो भई! होश ही नहीं किसी को, इस ग्रिह में जागते रहो, कोई विरला है, जितने स्वास थे सब खत्म कर दिए, सोचो! हाँ जी, हाय! हाय!

पाठी– नैनहु नीद परद्रिसटि विकार। स्रवण सोए सुणि निंद वीचार॥

रसना सोई लोभि मीठै सादि। मनु सोइआ माइआ बिसमादि॥

मैनेजर साहिब जी–

झिमि-झिमि बरसै अंम्रित धारा॥ मनु पीवै सुनि सबदु बीचारा॥

सब के अन्दर रस बरस रहा है। बढ़िया से बढ़िया लज़्ज़त है। बाहर के रसों में पड़ा है। यह छोड़े तो वो आए। यह रस छोड़े तो वो आए।

एहु रसु छोड़े तो वो रसि आवा॥ वोह रसु पीये तो ये नहीं भावा॥

फिर इस तरफ मुँह नहीं करता लेकिन कोई पीने को तैयार नहीं, ऐसे ही लज्जितों में फँसा पड़ा है।

घर-घर घट कोहलू चले, अमीं महारस जाई॥

(दादू साहिब)

अलफ-इह तन रब्ब सच्चे दा हुजरा विच पा फकीरा झाती हू॥

न कर मिन्नत खुआज खिजर दी तेरे अन्दर आबे हयाती हू॥

सब फकीरों ने लिखा है, ऐसा फँसा है।

मनु सोइआ माइआ बिसमादि॥

यह सबसे बड़ी हस्ती है कि यह आत्मा सतपुरुष की अंश है। यह काल कह लो, ब्रह्म कह लो। ब्रह्म किसे कहते हैं? ब्रह्म कहते है जो बनाने वाला है, फैलाव करने वाला है। यह बड़ा धोखेबाज है। उसने चलाना है, मन उसका ऐजन्ट है।

मनु सोइआ माइआ बिसमादि॥

यह मन माया से निकला है।

'इहु मनु पंच ततु ते जनमा॥'

(415/10 मः 1)

जब आत्मा की शक्ति पांच तत्वों पर पड़ती है तो उसे कहते हैं 'मन'। यह बार-बार माया की तरफ जाता है। पहले तो यह माया है। यह रिद्धियाँ-सिद्धियाँ सब माया का खेल है। बड़े-बड़े फकीरों की मिट्टी पलीत कर दी इसने। यह भी भूल गया, भुलाता, भुलाता, सोचो!

मनु माइआ मै रमि रहिओ निकसत नाहिन मीत॥
नानक मूरति चित्र जिउ छाडित नाहिन भीत॥

(1428/5 मः 9)

इस का हाल यह है–

मन माया न तजे, उलट फिर लागता॥
ज्यों जहाज का काग, जहाजे ताकता॥
मारे मिटे न छूटे, टेव है कर्म की॥
अरे हाँ पलटू! मिटे न जीव की खोए परी है जन्म की॥''

(2/86/128)

इसका काम तो यही है, सोच लो!

मन तूं जोति सरुपु है अपणा मूलु पछाणु॥ (441/3 मः 3)

इतनी बड़ी हस्ती है। यह ब्रह्म बन जाता है। यह त्रिलोकी का मालिक बन जाता है। अगर चाहे, मन तो दूर है, उसने घेर रखा है। अब कैसे पीये?

झिम झिम बरसै अंमृतधारा॥
बिखै बनु फीका तिआगि री सखीए, नाम महा रसु पीओ॥

यह तो अन्दर है। जैसे कोई आदमी जंगल में जा रहा है, डाकुओं के हाथ चढ़ जाए। कभी किसी ने पकड़ लिया, कभी किसी ने पकड़ लिया, निकलने का राह न मिले। उनकी गुलामी का आदी बन जाता है। सब कुछ भूल जाता है। देख लो! यही हाल हमारा है। काम, क्रोध के बस में आए हुए हैं। कभी काम ने पकड़ लिया, कभी क्रोध ने पकड़ लिया, कभी लोभ ने पकड़ लिया, कभी मोह ने पकड़ लिया, कभी अहंकार ने पकड़ लिया। होश ही नहीं किसी को।

'झिम झिम वरसै अंमृत धारा'
बिखै बनु फीका तिआगि री सखीए, नाम महा रसु पीओ॥

इस जंगल से निकलो। निकले तो पीये, आज़ाद होवे।

बिखै बनु फीका तिआगि री सखीए, नाम महा रसु पीओ॥

अंदर भी दो प्रकार का रस है। हम ने तो बाहर बना लिया है। गुरुनानक साहिब जी ने फरमाया कि–

नौ दरवाजे कोट दे दसवां नूर महल॥
हौज हयाती पुर भरे तिस विच कमल अचल॥

अन्दर अमृत के हौज़ भरे पड़े हैं। यह नौ दरवाज़े हैं इन्हें बंद करे। यह असली मन्दिर है। यह असली किला है जिसमें मालिक रहता है। इसमें सब कुछ रखा है।

काइया अंदरि सभु किछु वसै खंड मंडल पाताला॥
काइया अंदरि जगजीवन दाता वसै सभना करे प्रतिपाला॥
काइया अंदरि रतन पदार्थ भगति भरे भँडारा॥
इसु काइया अंदरि नउ खण्ड प्रिथमी हाट पटण बाजारा॥
इसु काइया अंदरि नामु नउ निधि पाइअै गुर कै सबदि वीचारा॥
काइया अंदरि ब्रह्मा बिसनु महेसा सब ओपति जितु संसारा॥

(754/11 मः 3)

पढ़ते भी हैंः

अवधु अन्धा-धुन्ध अंधियारा कोई जानेगा जाननहारा॥
या घट भीतर वन और बस्ती, याही में झाड़ पहारा॥
या घट भीतर बाग बगीचा, याही में सींचनहारा॥
या घट भीतर सूरज चन्दा, याही में नौलख तारा॥
या घट भीतर काशी मथुरा, याही में गढ़ गिरनारा॥
या घट भीतर देवी देवा, याही में ठाकुरद्वारा॥
या घट भीतर तीन लोक हैं, याही में सिरजनहारा॥
कहैं कबीर सुनो हो अवधू, याही में गुरु हमारा॥

(कबीर साहिब)

वो मुक्ति वाला गुरु है, देख लो! सब कुछ इसके अन्दर है। अन्दर जाए तो पीये। इन विषय-विकारों ने घेर रखा हैं। इस जंगल से निकलो। मिसाल देते हैं किलों कीः

नौ दरवाजे कोट दे दसवाँ नूर महल॥
हौज हयाती पुर भरे तिस विच कमल अचल॥

अन्दर अमृत के हौज़ भरे पड़े हैं। आला से आला कौन सा है? कमल

का, जिसे दसवां द्वार कहते हैं। नीचे का तो कईयों ने पीया, वो किसी बिरले ने पीया है, जैसे ब्रह्मा, विष्णु, शिव की पूजा है। इस तरह पटवारी की, तहसीलदार की सब की पूजा है। उन्हें मानते भी हैं, क्योंकि उन्होंने तो कुछ हासिल किया है। लेकिन जो असली है वो तो दूर है। वो त्रिलोकी से पार जा कर मिलता है।

ऊपरि आदि सरब तिहु लोई सचु नानक अंम्रित रसु पाइआ॥

(1042/14 मः 1)

क्यों नहीं पीया जाता है।

गिर्द महल दे कोट है बावन किंगरे तिस॥
किंगरे किंगरे तोपची बड़न न दिंदे किस॥

पुराने किलों को देखो, उसमें कीगरें होते हैं। तोपची बिठा देते हैं कि कोई हमलावर आए तो वहाँ से तोपें चलाओ। इर्द-गिर्द खाईयाँ खोद देते थे, सोचो!

गिर्द महल दे कोट है बावन किंगरे तिस॥
किंगरे-किंगरे तोपची बड़न न दिंदे किस॥
सात समुद्र खाइयाँ नदियाँ अन्त न पार॥
कई रखवाले सूरमें प्यादे ते असवार॥

यह बाहर है, इस तरह अन्दर भी हैं।

बारां बुर्ज महल दे नौ दरवाजे नाल॥
पंच ख्वास है पाहरु चौकी देन संभाल॥

पांच ख्वास कौन से? यही काम, क्रोध, मोह, लोभ, अहंकार। इनको सब छोड़े बैठे हैं। इनको मारे अन्दर जाए, तब है।

'जिनि मिली मारे पंच सूरवीर, ऐसो कउनु बली रे।'

बोलो! इनके वस में पड़े हैं, देखो! विषय-विकारों के जंगल से निकलो फिर पी सकते हैं। फिर असली अमृत मिलता है। अन्दर असली अमृत है। मेहनत करता नहीं। मेहनत करे जैसे यहाँ करता है। अगर यहाँ करे तो पता नहीं क्या बन जाए। देख लो! पेपरों के दिनों में बच्चे कितनी मेहनत करते हैं। अच्छी तरह खाना नहीं खाते, रात को सोते नहीं, फिर कामयाब होते हैं। अगर इधर इतनी मेहनत करे तो पता नहीं क्या बन जाए। इतनी मेहनत इधर करता नहीं। उन्होने होके दिये।

'कोई पीयो रे राम रस प्यासा'

प्यास हो तो पीये। दुनिया की चीज़ों की गर्ज़ है, लेकिन इसकी नहीं।

ऐसी दुनिया भई दीवानी, भगती भाव न बूझै जी।
कोई आवे तो बेटा माँगे, यही गौसांई दीजै जी।
कोई आवे दुख का मारा, हम पर किरपा कीजे जी।
कोई करावै बिआह सगाई, भेंट रूपईया लीजे जी।
सांच का कोई ग्राहक नाहिं, झूठे जगत पतीजे जी।
कहें कबीर सुनो भाई साधो, अंधों का किआ कीजे जी॥

(कबीर साहिब)

आगे क्या कहते हैं कबीर साहिब? हाँ जी, सुनो!

पाठी– कबीर साहिब फरमाते हैं कि मेरे अन्दर नाम रत्न धन की खान खुली है जिसको मैं मुफ्त देता हूँ।

मैनेजर साहिब जी–हाँ जी, मुफ्त देता हूँ पर लेता कोई नहीं, देख लो! मुफ्त! बे-गर्ज़ होकर हमारी सेवा करते हैं। जो गर्ज़ रखता है वो फकीर नहीं।

दादू साध परीखिये अन्तरि आत्म देख।
मन माहि माया रहे या आपे आप अलेख॥

उसके अन्दर मालिक ही मालिक या माया-माया लगी है।

''राजा जनक ने ज्ञान मांगा। अष्टावक्र ने कहा कि ज्ञान की दक्षिणा भी होती है। कि क्या? तन, मन और धन। कहने लगा कि मै देने को तैयार हूँ। कि मुश्किल है। कि जी नहीं। संकल्प कर दे। संकल्प कर दिया। कि तन मेरा है? कि जी हाँ। जा फिर जूतियों में बैठ जा। अब एक राजे का रईयत के सामने जूतियों में बैठना कोई आसान बात है! बैठ गया। क्यों बिठाया? लोकलाज निकालने के लिए। यही बड़ी रुकावट है। बड़ों-बड़ों को रोक रखा है, इसने! बड़ों-बड़ों को रोक रखा है इसने। अगर गुरुनानक साहिब आए तो कुराहिया बताया। अगर कबीर साहिब आए तो जुलाहा उल्टा ज्ञान चलाता है। यह लोकलाज निकालने के लिए। फिर उसका ख़्याल महलों में जाए। पूछा कि ख़ज़ाने मेरे हैं? कि हाँ जी। इस तरफ ख़्याल न कर। कि वाक्य ठीक है, मैं दे चुका हूँ। अब मन संकल्प-विकल्प उठाता है। कि मन मेरा है? कि हाँ जी। इसके द्वारा संकल्प-विकल्प न उठा। कि मुश्किल काम है। इसको काबू करना है। कोई पुरानी भक्ति थी, बड़ा जोर लगाया। आखिर मन को काबू कर लिया। रुह अन्दर चली गई। कुछ शांती आई। पूछा कि ज्ञान हो गया? कि जी हो गया। कोई कसर? कोई कसर नहीं। कि संभाल अपना तन, मन और धन। हम ने क्या करना है।''

वो हमारे बन्धन छुड़ाने आते हैं। हम बन्धनों में फँसे पड़े हैं। तन का प्यार इसको खा गया। सारी उमर इसकी सेवा की, इसकी मिट्टी पाली। इसको पाल कर कुछ निकालना था। राम नाम निकालना था।

घटि वसहि चिरणार बिंद, रसना जपै गोपाल।
नानक सो प्रभु सिमिरिअै, तिसु देही कउ पालि॥

(गुरु अर्जुनदेव)

पाल कर इससे यह काम नहीं लिया। और-और काम तो लिए। खिला-खिला कर और-और बीमारियाँ पैदा कर लीं। सोचो! अपने तन के लिए कितना बंदोबस्त करते हैं। उन्होंने पराया लेकर क्या करना है। अपना मन काबू नहीं आता, पराया लेकर क्या करेंगे। सोच लो! उनके पास तो वो धन है जो कभी भी खत्म नहीं होता। जो सब भूखें मिटा देता है।

साचा नामु मेरा आधारो॥
साचु नामु आधारु मेरा जिनि भुखा सभि गवाईआ॥

(917/9 मः3)

पायो रे मैंने नाम रतन धन पायो॥
जिसको पाये दुख सुख भूले मन आनन्द रे समायो॥
जिसकी चोरी कबहुं न होवे ऐसो धन मैंने पायो॥
खरचूँ लाख खत्म न होवे दिन दिन बढ़त सवायो॥

(मीराँ)

उन्होंने क्या करना है, बोलो! कहने लगे कि संभाल अपना तन, मन और धन। अपना न समझना, सेवादार बन कर काम करना, सतगुरु का समझना। यह त्याग है। क्या लिया और क्या छोड़ा? वो हमारे बन्धन छुड़ाने आते हैं।

बंधन मात पिता संसारि॥ बंधन सुत कंनिआ अरु नारि॥
बंधन करम धरम हउ कीआ॥ बंधन पुतु कलतु मनि बीआ॥
बंधन बेदु बादु अहंकार॥ बंधनि बिनसै मोह विकार॥

(416/20 मः1)

कौमों के, देशों के, मज़हबों के अनेकों बन्धन हैं। आगे से और डालता जा रहा है। छुड़ाने तो क्या थे और-और डाले जा रहा है, खामखाह के। जब पढ़ते थे, दो पैसे का कार्ड डालते थे। एक किताब आती थी। उसमें एक लतीफा आया। मुसलमानों का मुर्शिद था कोई। कुछ बात चली। एक लड़का मुसलमानों

का कहने लगा कि वो मेरा रिश्तेदार है। क्या रिश्तेदारी है? कहने लगा कि मेरे चाचे के, साले के, साले के, साले के, चाचे का भाई है। बोलो भई! कौन-सी रिश्तेदारी हुई? कभी देखा भी नहीं। हमारे खानदान का, हमारे गोत का है, वो बना है, बोलो भई! खामखाह के बन्धन हैं, बे-मतलब के हैं। कभी देखा भी उसको? जाए तो वो भला पहचाने भी नहीं। देख लो! इतने बन्धन पड़े हैं। कोई गर्ज़ हो तो बन्धन तोड़े! सुनो! हाफिज़ साहिब क्या फरमाते हैंः

पाठी–हाफिज़ साहिब फरमाते हैं, ''या खुदा! चारों तरफ अँधेरा छा रहा है, सब के सब बिल्कुल कोरे और रुहानियत से बिल्कुल बेखबर नज़र आते हैं और इस धन का कोई ग्राहक नज़र नहीं आता।''

मैनेजर साहिब जी–हाय! हाय! देख लो!

पाठी– जब गर्ज़ होती है किसी काम की तो भागे दौड़े फिरते हैं न! चाहे कितनी ही तकलीफ क्यों न हो। किसी को गर्ज़ हो तो भागदौड़ करें, किसी को है गर्ज़?

दरस तेरे की प्यास मन लागी॥

किसी को लगी प्यास? जिनको लगी वो कहते हैं। क्या?

अब मैं कऊनु उपाउ करउ॥

कौन सा भला? यह बाहर का नहीं, वो तो बन्धन हैं।

जह बिधि मनको संसा चूकै भउ निधि पार परउ॥
जन्म पाइ कछु भलो न कीनो ताते अधिक डरउ॥

आत्मा का कल्याण नहीं किया, आत्मा आज़ाद नहीं हुई! बाहर के भले के लिए सारी दुनिया फिरती है। उन्होंने तन का किया और क्या किया? उनको खिलाओगे तो वापिस उनसे खाओगे। आत्मा का क्या बना? आत्मा का भला करना था, सोचो! वो अमृत पीए तो अन्दर शांती आ जाए, सब भूखें मिट जाएं। उन्होंने होका दिया कि आओ लेकिन किसी ने सुनी नहीं। रो-रो कर गए हैं फकीर। त्रिलोकी तक यही हाल है। सब जीव कर्मों के जाल में फँसे हैं। वो मेहर करे तो करे, तो इस रास्ते जाए, अकाल पुरुष के महकमें में। यह महकमा ही अलग है। काल का अलग है। अगर इस महकमें में आ जाए, तो फिर वो छोड़ता नहीं, धीरे-धीरे ले जाता है। गुरुनानक साहिब का एक जीव था, खोटे कर्म किए, सज़ा तो दिलाई और भुगतनी थी, नरकों में भेजा। फिर भी वहाँ से निकाल कर लाए। यह महकमा ही अलग है। जैसे Center(सेन्टर) का महकमा अलग है, सूबे का महकमा अलग है। यह अकाल पुरुष का महकमा ही अलग

है। देख लो! Center(सेन्टर) का मुलाज़म हो, चाहे चपरासी ही हो, गुनाह करेगा सज़ा तो पाएगा ही, पर सूबे वाले तो कुछ नहीं कर सकते। यह भी इस तरह है। सतपुरुष का, सतगुरु का, अकाल पुरुष का महकमा ही अलग है। होके दिए उन्होंने आकर, पलटू रो-रोकर गया है। कहता है कि कोई नहीं सुनता। जेसे एक भेड़ जिधर जाती है सभी भेड़ें उधर ही जाती हैं। यही हाल हमारा है। कहता है कि मुझे रोना आता है उनको देख कर मगर सुनता ही नहीं कोई।

एक बार सच्चे सौदे में, शुरु-शुरु की बात है। डेरे के पास एक नाला बहता है, पास ही सड़क थी लेकिन कच्ची, बड़ा खड्डों में पानी खड़ा हो गया। उस में एक गड्डा फँस गया। अब माली बैलों के डंडे मारता है। फिर भी गड्डा हिल नहीं सकता। पूज्य मस्ताना जी ने बाड़ के उपर से देखा, ठंडी सांस भरी और कहने लगे कि जब इनको इन्सानी जामा मिला था, अगर कदर करते तो क्यों डंडे खाते। हम मारते भी हैं लेकिन हमें तरस नहीं आता। सोच लो! फकीर हमारी हालत देखते भी हैं, रोते हैं, चिल्लाते हैं, लेकिन कोई मानता ही नहीं। वो कहते हैं कि चलो अपने देश जहाँ से आए हैं।

बेगमपुरा सहर को नाउ ॥ दूखु अंदोहु नही तिहि ठाउ॥
ना तसवीस खिराजु न मालु ॥ खउफु न खता न तरसु जवालु॥

पढ़ते हैं कभी सोचा है? पढ़ लिया बस, देख लो! अगर गर्ज़ हो तो दौड़-भाग करे। जिसे गर्ज़ होती है वही भागदौड़ करते हैं। मीरा को गर्ज़ थी, वह भागी दौड़ी फिरी, कहती है कि सब ठगी निकली। फिर चीज़ रवीदास से मिली। जिसको गर्ज़ हो उसको चीज़ मिलती है दूसरों को नहीं। बे-गर्ज़ हो कर बैठी है सारी दुनिया मालिक की तरफ से। दुनिया की चीज़ों की गर्ज़ है। मालिक की किसी को गर्ज़ नहीं। कोई बिरला है। जिस चीज़ की गर्ज़ होती है जब तक मिल न जाए चैन नहीं आती। कितनी मेहनत की गुरु अमरदास जी ने। बहत्तर साल की उमर तक जप-तप, तीर्थ-व्रत सब कुछ करते रहे। कितनी मेहनत की। तब चीज़ मिली कि ऐसे ही? गर्ज़ वालों को मिलती है। उपर-उपर से पढ़ लिया बस! खुश हो गए। हाँ, जीः

पाठी– बिखै बनु फीका तिआगि री सखीए नामु महा रसु पीओ॥
बिनु रस चाखै बुडि गई सगली सुखी न होवत जीओ॥
मानु महतु न सकति ही काई साधा दासी थीओ॥

मैनेजर साहिब जी–मान वडिआई में सुख नहीं, ओहदों में सुख नहीं, माया में

सुख नहीं, देख लो! खूबसूरतीयाँ बनाने में सुख नहीं, बाहर के खाने-पीने में सुख नहीं, देख लो! जिसमें हम सुख ढूंढते हैं वो इसके अन्दर से निकलती है। इस को पता नहीं, गुम कर रखा है। अब कड़ाह बनाते हैं उस में क्या है? आटा, घी, शक्कर, पानी, आग का सेक। तव्वजों से बनाओगे तो सही बनेगा। नहीं तो कच्चा रह जाएगा या सड़ जाएगा। किस ने बनाया? तवज्जो ने। यह तवज्जों बाहर फैंक दी। तवज्जों मिट्टी में मिला दी। कितनी साईंस ने तरक्की की है। वहाँ हम कप्तान साहिब के बैठे थे। गवार आया था। कप्तान साहिब कहने लगे कि हम ने तो सप्रे कभी बन्द ही नहीं की, अब बन्द करेंगे। बोलो भई! कितना माथा मारते हैं। एक वो भी आए थे कोई लेने। कहने लगे कि कीड़े हैं। एक दूसरे को कहने लगे हैं कि हमें तो कोई भी नहीं मिला। देखो! अन्दर तवज्जो नहीं रख सकते, बाहर कितनी तवज्जो फैंक दी। यह तवज्जो ही है। तवज्जो से अन्दर जाए तो मिले शांती। कहाँ से मिले? जब हमें कोई बात समझ ही नहीं आती तो ऐसे बैठ जाते हैं (माथे पर हाथ रखकर), फिर समझ आती है। यहाँ से मार्ग शुरु होता है, सोच लो! यहाँ से मार्ग शुरु होता है। यह फिरता बाहर है। कहाँ से मिले शांती? शांती अन्दर है।

पाठी– मानु महतु न सकति ही काई साधा दासी थीओ॥

मैनेजर साहिब जी–पहले तो साधू मिलना मुश्किल है। साधू किसे कहते हैं? दुनिया साधुओं से भरी हुई है।

पारब्रहमु साध रिद बसै॥ नानक उधरै साध सुनि रसै॥

(272/मः5)

जो ब्रह्मदेश के पार पारब्रह्म में जाता है, उस अमृतसर में नहाता है, उसका नाम है साधू।

साध सोई जिन इह गढ़ लीना, नौ दरवाजे प्रगट चीन्हा॥
दसवाँ खोल जाए जिन दीना, यहाँ कुफल रहा मारा है॥
आगे सेत सुन्न है भाई, मान सरोवर पैठ नहाई॥
हंसन मिल हंसा हो जाई, मिले जो अमिं आहारा है॥

मानसरोवर कहो, अमृतसर कहो, पराग कहो, तीर्थ कहो। इसके अंदर है।

हंसन मिल हंसा हो जाई, मिले जो अमिं आहारा है॥

वहाँ अमृत का आहार है। वहाँ से मार्ग शुरु होता है। सन्त वो है जिसने अन्दर प्रगट किया है सतगुरु को। वो चौथे लोक में रहता है। जिसके मुतल्लक हम

पढ़ते ही पढ़ते हैं मगर कभी वीचारा नहीं।

अनँदु भइया मेरी माए सतिगुरु मैं पाइआ॥
सतगुरु त पाइआ सहज सेती मनि वजीआ वाधाईआ॥
राग रतन परवार परीआ सबद गावण आईआ॥

आनन्द मिला किसी को बस पढ़ा ही पढ़ा है। उन्होंने तो पाया मेहनत से। वो कहाँ है? वो सहज अवस्था में है। त्रिलोकी से पार चौथे लोक में है।

त्रिहुगुणा विचि सहजु न पाईऐ, त्रैगुणि भरम भुलाइ॥
पढ़ीऐ गुणीऐ किया कथीऐ जा मुन्दहु घुथा जाइ॥
चउथे पद महि सहजु है गुरमुखि पलै पाई॥

वहाँ जाए तो शांती मिले। कैसे मिले? सोच लो! वहाँ जाए तो वो साधू है। सन्त वो है जिस ने अन्दर प्रकट किया है।

जिन कै हीअरे बसिओ मेरा सतिगुरु ते संत भले भल भांति॥

कोई बिरला है, सोच लो! सब ठगीयाँ, सब ठेके हैं। यह दात उसने अपने हाथ में रखी है।

आखण वाला किआ बेचारा॥ सिफती भरे तेरे भंडारा॥
जिसु तूं देहि तिसै किआ चारा॥ नानक सचु सवारणहारा॥

(349/5 मः1)

किस को देता है वो, जिस को सच्ची तड़प होती है, सच्ची लगन होती है। उसका बंदोबस्त करता है बाकी का नहीं।

हेरी! मैं तो प्रेम दीवानी मेरा दर्द न जाणै कोय॥

मीरा को क्या तकलीफ थी, क्या दर्द था? राजपाट उसके पास, गहने-कपड़े उसके पास, हकीम-डॉक्टर उसके पास, क्या कमी थी उसको, क्या दर्द था उसको? मालिक को मिलने का। वो भागी-दौड़ी फिरी, फिर चीज़ मिली। तड़प वालों को मिलती है, दूसरों को नहीं मिलती।

साच कहौं सुन लेहु सभै॥ जिनु प्रेम कीओ तिन ही प्रभु पाइउ॥

(गुरु गोविन्द सिंह)

इतना प्रेम हो, तड़प हो, तब मिले, कैसे मिले? जिसके लिए भागे-भागे फिर रहे हैं। गर्ज़ ही नहीं रही किसी को।

'कोई साधा दासी थीयो'

ऐसा साधू मिले। वो क्या कहता हैः

सत संगति मिलि मति बुधि पाई, हउ छूटे ममता जाल॥
हरि नामा हरि मीठ लगाना गुरु कीए सबदि निहाल॥

कि तेरे यह देश नहीं, तेरे कौम नहीं, तेरे मज़हब नहीं, न मां, न बाप, न बहन, न भाई, न यार दोस्त। यह तन भी तेरा नहीं, यह भी छोड़ जाना है। कहता है कि मेरा तो एक सतगुरु है। बस फिर जैसे वो बताए करे।

मेरे माधो जी सति संगत मिले सु तरिआ॥
गुर परसादि परम पदु पाया सूके कासट हरिआ॥

कि आत्मा खड़सुक हुई पड़ी है कि यह एक ज़िन्दगी का इंजैक्शन देते हैं।

जन्म-मरण दुहहू महि नाही जन परउपकारी आए॥
जीअ दानु दे भगति लाइनि हरि सिउ लैनि मिलाए॥

(749/2मः 5)

वो जो जीयादान देते हैं। Initiation कह लो, बैत होना कह लो। बाद में हमारा नाम बड़ा, हमारा नाम बड़ा, बस यही रह जाता है। यह तो फकीर की Authority (अथॉरटी) पर है। लफ्ज़ तो बदलते रहे हैं, बदलते रहेंगे। डाकू जा रहे हैं, हम भी खड़े पुलिस भी खड़ी है। अगर हम कहें कि गोली चलाओ तो नहीं चलाते न। अगर थानेदार कहे फिर तो चलाएंगे। लफ्ज़ तो वही हैं। जिस फकीर को Authority है, उसका नाम काम करता है बाकी कोई नहीं। बाद में कौम, मज़हब बन जाते हैं। फिर कहते हैं हमारा फिरका बढ़ जाए, हमारा फिरका बढ़ जाए। बना क्या? लेनी तो शांती थी। और-और झगड़ों में पड़ गया, हाँ जीः

'साधा दासी थीयो।'

फिर कहता है कि छोड़ इन चीज़ों को चल अंदर।

पाठी– मानु महतु न साकति ही काई साधा दासी थीयो॥
नानक से दरि सोभावंते जो प्रभु अपुनै कीओ॥
बिखै बनु.....

मनैजर साहिब जी–असली मंदिर यह शरीर है। इसमें मालिक ने मिलना है। यह हमारे लिए स्कूल थे। स्कूल की बिल्डिंगों के पीछे लड़-लड़ कर मर गए। अपनी विद्या ने, अपनी तालीम ने काम देना है जो मास्टर के ज़रिए जगाई जाती है। यह भी संतों के ज़रिए मिलती है, सोच लो! अपने सतगुरु ने काम देना है। बाहर कोई नहीं, सोच लो! बाहर कैसे बने? जैसे किसी ने डॉक्टरी की, उसको हम कहते हैं

डॉक्टर। उस इल्म का नाम है डाक्टर, देह तो नहीं। देह तो एक औज़ार है काम करने के लिए। संतों की देह भी एक औज़ार है।

मन रे किउ छूटहि बिनु पिआर॥
गुरमुखि अंतरि रवि रहिआ बखसे भगति भंडार॥ (60/मः 1)

उनके ज़रिए भक्ति सीखी जाती है। उनके ज़रिए प्रगट किया जाता है। सोचो! यह देह को बना कर बैठ जाते हैं।

गुरु किया है देह को, सतगुरु चीन्हा नाहिं॥
भवसागर की धार में फिर-फिर गोता खाहिं॥

(कबीर साहिब)

वो हमारे समझाने के लिए थे, देह चीज़ तो नहीं। गुरुनानक साहिब का रूप क्या था, 'शब्द'। गुरु अंगदसाहिब का रूप क्या था, 'शब्द'। गुरु अमरदासजी का रूप क्या था, 'शब्द'। गुरु अमरदास जी का रूप क्या था, 'शब्द'।

नानक आदि अंगद अमर सतिगुर सबदि समाइउ॥
धनु धंनु गुरु रामदास गुर जिनि पारसु परसि मिलाइउ॥

(1407/13 मः5)

जैसे फलाना डाक्टर, फलाना डाक्टर इस तरह यह है, सोच लो! देह को पकड़ कर बैठ जाते हैं। असली चीज़ ही छोड़ दी, सोचो! इस तरह दुनिया बाहर ही है। हाय! हाय! इस मिट्टी के लिए लड़-लड़ कर मर गए। यह असली मंदिर है।

हरि मंदरु एहु सरीरु है गिआनि रतनि प्रगटु होइ॥
मनमुख मूलु न जाणनी माणसि हरि मंदरु न होई॥

(आदि ग्रन्थ)

सोचो! आदमीयों का बनाया हुआ नहीं।

मुझको कहाँ ढूँढे तूं बन्दे मैं हूँ तेरे पास में॥
न तीर्थ में न मूर्त में न एकान्त निवास में॥
न मंदिर में न मस्जिद में न काशी कैलाश में॥
खोजी होवे तुरत मिल जाऊँ पल भर की तलाश में॥
कहे कबीर सुनो भाई साधो मैं तो हूँ विश्वास में॥

(कबीर साहिब)

पाठी– मालिक ने दुनिया बनाई है। वह सब का मालिक है। वह इन्सानी हाथों

से बनाए हुए मन्दिरों-मस्जिदों में नहीं बसता। हाफिज़ साहिब फरमाते हैं कि ''सब मंदिरों और मस्जिदों के फाटकों पर लिख दो कि परमात्मा मनुष्य के हृदय रूपी मन्दिर में निवास करता है और वह मज़हबों और फिरकों से बहुत दूर है।''

मैनेजर साहिब जी– हाँ जी! मज़हबों और फिरकों से बहुत दूर है। हाल क्या है फिर?

पाठी– दादू साहिब फरमाते हैं कि, ''ऐ मूर्ख! जिस मन्दिर को तूने आप बना के खड़ा किया है, उस मन्दिर की तो बड़े यत्न से संभाल करता है। और जिस रत्न जैसे प्रत्यक्ष प्राणी को प्रभु ने रचा है, उसको ऐ मूर्ख! तू नष्ट कर रहा है।''

आपे बिणावे देहुरा, तिस का करहि जतन॥
परतखि परमेसुर किया, से भानै जीव रत्न॥

(दादू साहिब)

महात्मा मलूकदास जी फरमाते हैं कि ''मनुष्य की बनाई हुई मस्जिद को तू झुक-झुक कर सलाम करता है। जिस को स्वयं खुदा ने खड़ा किया है उसको ऐ मुसलमान! तू ढ़ा रहा है।''

मैनेजर साहिब जी–असली तालीम उनकी क्या है? यह स्कूल थे। अगर स्कूल नहीं हों तो बच्चे कहाँ पढ़ेंगे। डेरे न बने तो संगत कहाँ बैठे? यह तालीम देनी थी उन्होंने। वो कहते है पढ़ पहली कलास, दूसरी कलास, चौथी कलास, दसवीं कलास, तेरे काम यह आएगी। स्कूल तो नहीं आएगा। वो समझाते हैं कि चल अंदर अमृत पी, सिमरण कर, चल अंदर। बिल्डिंगों के पीछे लड़-लड़ कर मर गए बस। असली चीज़ ही छुड़ा दी।

पाठी– मान महतु न साकति ही काई साधा दासी थीओ॥
नानक से दरि सोभावंते जो प्रभि अपुनै कीओ॥
बिखै बनु.....

मैनेजर साहिब जी–मालिक असली राह पावे तो पावे बाकी सब इस तरह धक्के खा रहे हैं।

पाठी– बिखै बनु फीका तिआगि री सखीए नाम महा रसु पीओ।
हरि चंदउरी चितु भ्रमु सखीए म्रिग त्रिसना द्रमु छाइआ॥

मैनेजर साहिब जी–राजस्थान में जाओ वहाँ टिब्बे हैं। गर्मी का मौसम है, जेठ का महीना है, दोपहर का वक्त है। मृग है उसको प्यास लगी है। वो सोचता है कि पानी है, आगे जाता है कुछ नहीं होता। आगे फिर जाता है, फिर कुछ

नहीं होता। इस तरह दौड़-दौड़ कर मर जाता है। हमारा भी यही हाल है। यह कर लो सुख हो जाएगा, वो कर लो सुख हो जाएगा। यह मृग तृष्णा है। मिट्टी पलीत कर दी सब की, किसी को मिली शांती! मिली?

पाठी– हरि चंदउरी चितु भ्रमु सखीए म्रिग त्रिसना द्रमु छाइआ॥
चंचलि संगि न चालती सखीए अंति तजि जावत माइआ॥

मैनेजर साहिब जी–सब माया का खेल चल रहा है। सब को चक्कर में डाल रखा है।

पाठी– बिखे बनु फीका तिआगि री सखीए नाम महारसु पीओ॥
बिनु रसु चाखे बुडि गई सगली सुखी न होवत जीओ॥
रसि भोगण अति रूप रस माते इन संगि सुखु न पाइआ॥

मैनेजर साहिब जी–बाहर के रसों में सुख नहीं। 'रस भोगण', खूबसूरतियों में सुख नहीं। कहीं भी सुख नहीं दुनिया में देखो। फिर आगे से आगे यह तृष्णा बढ़ती जाती है।

एक दिल लाखों तमन्ना और इस पर ज्यादा हवस॥
फिर ठिकाना है कहाँ उसको बिठाने के लिए॥

(तुलसी साहिब)

देख लो! एक दिल है, उसमें लाखों तमन्नाएँ हैं। मालिक को बसाना था। फिर आगे और-और बढ़ता ही जाता है। एक आदमी ने सुनाया कि एक आदमी के पास इतनी दौलत थी कि उसकी दस पुश्तें बैठ कर खा सकती थीं। उसको कहा कि यार तू पैसे के लिए ऐसे ही मरता है, तेरी दस पुश्तें बैठ कर खा सकती हैं। वो कहने लगा कि ग्यारवीं पुश्त क्या करेगी? वो अफसोस करने लगा! बोलो! ऐसे ठेके लिए बैठा है। किसी को मिला? बल्कि और दूर होते जा रहे हैं मालिक से। रोज़ पढ़ते हैं हमः

रसु सोइना, रसु रुपा कामणि रसु परमल की वासु॥
रसु घोड़े रसु सेजा मंदिर रसु मीठा रसु मासु॥
एते रस सरीर के कै घटि नाम निवासु॥

(15/12 मः 1)

रस सोइनाः क्या? दौलत इकट्ठी करनी, अच्छे-अच्छे मकान, अच्छे-अच्छे इत्र। उन दिनों में घोड़े होते थे आजकल मोटरें, गाड़ियां, हवाई जहाज़।

रसु घोड़े, रसु सेजा मंदरः अच्छे-अच्छे मकान हों, सोचो! अच्छे-अच्छे खाने हों,

तरह-तरह के माँस पका कर खाए। इतने रसों में फँसा पड़ा है। मालिक कहाँ से आए, बोलो! नाम कहाँ से प्रगट हो। रोज़ पढ़ते हैं:

नामु मिलै मनु त्रिपतीए बिनु नामै ध्रिगु जीवासु॥
कोई गुरमुखि सजणु जे मिलै मैं दसे प्रभ गुणतासु॥
हउ तिसु विटहु चउखंनीऐ मै नाम करे प्रगासु॥

(गुरु रामदास जी)

वो नाम का अमृत इसके अन्दर है। कौन पीवे? यह सौदा करना था आ कर। और-और सौदों में उलझ गए।

काइआ नगर नगर है नीको विचि सउदा हरि रसु कीजै॥

(1328/13 मः 4)

बोलो भई! बाकी सौदे किए लेकिन हरि रस का नहीं किया। किसी को ख़्याल है, सोचो! वो रस ले तो मन भी काबू आ जाए।

'बिनु गुरु शब्दे मन नाहिं ठउरा॥'
'हरि हरि नामु अंम्रितु रसु मीठा गुरमति सहजे पीजै॥'

सोचो! काल ने ऐसा खेल डाला है। साथ में मन ऐजेन्ट लगाया है। किसी का ख़्याल इधर आने ही नहीं देता। सोच लो! अगर कोई आ भी जाए तो उसको भी करने नहीं देता, सौ बहाने लगाता है। ऐसे कर लो, ऐसे कर लो, दिलासों में निकाल देता है। इसका काम ही यही है बस! कहता है लड़के बड़े हो जाएं तब करूँगा। कभी कहता है यह हो जाए, कभी कहता है वो हो जाए, बस!

पाठी– रसि भोगण अति रूप रस माते इन संगि सुख न पाइआ।
धंनि-धंनि हरि साध जन सखीए नानक जिनि नामु धिआइआ॥

मैनेजर साहिब जी–वो साधू मुबारक हैं, जिन्होंने नाम का रस लिया। वह असली रस है।

हरि हरि नामु अंम्रितु रसु मीठा गुरमति सहजे पीजै॥
नउ निधि अंम्रितु प्रभ का नामु॥ देही महि इसका विस्रामु॥

(293/15 मः5)

इसके अन्दर है अमृत। 'पूज्य मस्ताना' जी कहा करते थे कि देखो भाई! लड्डू का रस लिया, जलेबी का रस लिया, अंगूरों का लिया लेकिन जो रस मालिक ने तुम्हारे अन्दर रखा है वो तो न लिया। असली रस वो है। उसको तो सभी छोड़े बैठे हैं। सोच लो! बाहर किसी को शांती मिली? चीज़ तो अन्दर है यह

फिरता है बाहर। फिर कहाँ से मिले? सारी उमर हाय, हाय में निकल गई। बड़ों-बड़ों को देखता है, उसके पास यह है, उसके पास वो है। अपने से गरीब को देखे फिर तो पता चले। ऐसे ही एक दूसरे को देख कर फँसते जा रहे हैं। उसके पास यह है, उसके पास वो है। लोग क्या कहेंगे, हाँ जीः

पाठी– धंनि धंनि हरि साध जन सखीए नानक जिनि नामु धिआइआ॥
बिखै बनु फीका.....
जाइ बसहु बडभागणी सखीए संता संगि समाईऐ॥
तह दूख न भूख न रोगु विआपै चरण कमल लिव लाईऐ॥

मैनेजर साहिब जी–वो उपदेश करते हैं अगर रस लेना है तो तू भी वहाँ जा, जहाँ वो जाते हैं, कोशिश कर। वहाँ न दुख, न भूख है, न कोई रोग है। वो शांती का देश है। उनकी सोहब्बत कर, चल अन्दर, हाय! हाय!

पाठी–जाइ बसहु बडभागणी सखीए.....

मैनेजर साहिब जी–कोई भागों वाला हो तो जाए। गुरुनानक साहिब सबको ले जाते, कबीर साहिब सबको ले जाते पर कोई गया, कोई सुनता ही नहीं। रो-रो कर गए हैं फकीर! हाँ जीः

पाठी– जाइ बसहु बडभागणी सखीए संता संगि समाईऐ॥
तह दूख न भूख न रोगु विआपै चरण कमल लिव लाईऐ॥

मनैजर साहिब जीः त्रिलोकी तक यही हाल है। कबीर साहिब कहते हैं कि मुझे इनकी हालत पर रोना आता है।

पाठी– जगत कहे जुलाहा अज्ञानी, हर हर का कुछ भेद न जानी॥
नीच जात और भगत कहाई, हर का दरस कबहुं न पाई॥

मैनेजर साहिब जी–बोलो! हाय! हाय!

पाठी– सब से कहुं पुकार पुकारी, कोई नहीं मानै नर और नारी॥
इन का दोष नहीं कुछ भाई, धर्मराय राखै अटकाई॥
गुप्त पसारा है अति भारी, ताहे न जानी नर और नारी॥
शिव गोरख कोई पार न पावे, और जीव की कौन चलावे॥
नब्बै नाथ चौरासी सिद्धा, समझ बिना जग में रहे अन्धा॥
ऋषि मुनि और असंख्यन भेषा, सत्य ठौर सुपने नाहिं देखा॥

मैनेजर साहिब जी– सुपने में नहीं देखा, बस बातें ही करते हैं। रिद्धियाँ, सिद्धियाँ आ जाती हैं।

पाठी– जोर कहें पतियावत नाहीं, बहुत कहूँ समझा मन माहिं॥
कोई योग कोई मद के माता, कोई कहे हम लिखे विधाता॥
कोई मान दशा मन लावे, मौन होय कर मूल गंवावे॥
सत्य पुरुष की युक्ति न पाई, हृदय धरै नहीं सत्य को भाई॥
कोई कहे हम हैं भजनीका, काज अकाज लखै नहीं जी का॥
कोई कहे हम पढ़े पुराना, तत्व अतत्व सभी कुछ जाना॥
कोई कहे विद्या आधीना, सब विचार काया में चीन्हा॥
कोई कहे तप बस कर राखा, तप है मूल और सब शाखा॥
कोई कहे कर्म अधिकारा, कर्मों सूं उतरें भौ पारा॥
कोई कहे भाग्य लिखा सो होय, भाग्य लिखा मेटे नाहीं कोई॥
कहाँ लग कहूँ यही सब कहही, भेद हमारा न कोई लहहि॥
सब सूं हार मान मैं बैठा, ये सब जीव काल घर पैठा॥

(कबीर साहित्य)

मैनेजर साहिब जी–यह काल का खाजा बना बैठा है, सुना ही नहीं किसी ने। पूज्य मस्ताना जी कहा करते थे कि दो पाई का आदमी कह दे, उसकी मान लेते हैं, हमारी कोई नहीं मानता। वो कहते हैं कि चल अंदर। कैसे ले कर जाते हैं? गुरु नानक साहिब कहते हैं कि अगर तूने मालिक को मिलना है, रस लेना है तो क्या कर?

कामु क्रोधु परहरु पर निंदा, लबु लोभु तजि होहु निचिन्दा॥
भ्रम का संगलु तोड़ि निराला, हरि अंतरि हरि रसु पाइआ॥

काम छोड़ दे। जितनी कल्पनाएँ, सब काम की हैं।

काम काम सब कोई कहे, काम न चीन्हें कोय॥
जेत्ती मन की कल्पना, काम कहावे सोय॥

(कबीर साहिब)

हम ने अन्दर जाना है, ख़्याल को आँखों के पीछे इकट्ठा करे। यहाँ से मार्ग शुरु होता है। जैसे टंकी को एक पाइप पानी डालने के लिए लगी होती है, एक निकालने के लिए। सिमरण करके यहाँ तक आना है। जब बाहर की चीज़ों का ख़्याल आता है तो यह नीचे गिरता है। सोच लो! काम, क्रोध छोड़ दे। एक बार झगड़े में पड़ गया, बस खत्म। लड़-लड़ कर मर गई सारी दुनिया। चैन ही नहीं किसी को। घर-घर में यही हाल है। रोज़ हमारे पास आते हैं, घर में चैन नहीं किसी

को। बर्दाश्त करो भई! घर-घर में यही हाल है। जरा सा झगड़ा हुआ बस! कुलों के कुल खत्म। काफी समय की बात है। यह जगदीश भी वहीं था। हनुमानगढ़ में एक जगह है। बारिश होने से वहाँ खड्डों में पानी इकट्ठा हो जाता है। रात को मियाँ-बीबी में झगड़ा हुआ। वो ड्राइवर था। शराब बहुत पीता था। वो रोकती थी पर वो मानता नहीं था। सुबह हुई, बच्चों को लेकर वहाँ चली गई। एक उठाया खड्डे में फेंक दिया। दूसरा उठाया खड्डे में फेंक दिया और खुद भी छलाँग लगा दी। सब खत्म, बोलो!

क्रोध भूत जब ता पर आवै॥ तन मन की सुध बिसरावै॥
वो आत्मघाती जानौ॥ वो महामूढ़ पहिचानौ॥

पराई निन्दा छोड़ दो। एक दूसरे की निन्दा में लगे पड़े हैं। एक साधू दूसरे की, एक कौम दूसरे की, बस ऐसे ही लड़ रहे हैं। जिसका सिमरण करोगे वही बसेगा। निन्दक का करोगे तो वही बसेगा। उसके पाप तुम्हारे अन्दर आने लग जाएँगे।

निंदा भली काहूं की नाहीं मनमुख मुगध करंनि॥
मुंह काले तिन निंदका नरके घोरि पवंनि॥

पढ़ते भी हैं–

जो ओहु अठसठि तीरथ नावै॥ जे ओहु दुआदस सिला पूजावै॥
जो ओहु ग्रहन करै कुलखेति॥ अरपै नारि सीगार समेति॥

लम्बा सारा लिखा है, आखिर क्या कहता है–

निन्दक सोधि साधि वीचारिआ॥ कहु रविदासु पापी नरकि सिधारिआ॥

बोलो! लबु लोभ छोड़ दो। हाय! हाय! करता पत्थर दिल बन जाता है। लोगों का खून चूसने लग जाता है। बाहर सारा भ्रम है, सब कुछ कूड़ है, आगे क्या गया? न इसके कौम हैं, न मज़हब हैं, न देश हैं। ऐसे ही ठेके लिए बैठा है। कितना बड़ा हिन्दुस्तान था। तिब्बत गया, बर्मा गया, मलाया गया, और-और भी गए। यह भी ऐसे है। पता नहीं किस-किस देश में पैदा हुए, देख लो! कौन सी जात है इसकी? जब कीड़े-पतंगे बने, फिर कौन सी जात हुई, जिसके लिए ठेके लिए बैठा है। जो असली चीज़ है वो छोड़े बैठे हैं। बाहर के ठेके ले लिए। यह सब छोड़। यह सारा भ्रम है।

कूड़ु राजा कूड़ु परजा कूड़ु सभु संसारु॥
कुड़ु मंडप कूड़ु माड़ी कूड़ु बैसणहारु॥

यह पोथी पढ़ते है, कोई चढ़ा है कि सब पढ़ने-पढ़ने में रह गए।

हउ विचि आइआ हउ विचि गइआ॥

हउ विचि जंमिआ हउ विचि मुआ॥

हउमै छोड़ी किसी ने!

पड़ि पड़ि गडी लदीअहि, पड़ि पड़ि भरीअहि साथ॥

जो पढ़ने का मतलब था वो तो लिया ही नहीं।

होर कूड़ु पढ़णा कूड़ु बोलणा माइआ नालि पिआरु॥

नानक बिणु नावै को थिरु नहीं पड़ि पड़ि होई खुआरु॥

(84/14 मः 3)

नाम को प्रगट नहीं किया तो फिर क्या किया? खाना बनाने वाली किताब पड़ी है। कड़ाह ऐसे बनता है, जलेबी ऐसे बनती है, फलानी चीज़ ऐसे बनती है। बनाए तब न? सोच लो! अमल तो किया ही नहीं किसी ने। जो वाणी कहती है वो तो सुना ही नहीं। वो तो कहते हैं कि अंदर चल। यह सब छोड़े तो न?

हरि अंतरि हरि रसु पाइआ॥

ख़्याल निकालने पर है। इसको ख़्याल ही लिए घूम रहे हैं और क्या है अच्छे या बुरे। कहते हैं कि मैं तो शुभ कर्म करता हूँ। मेरे तो अच्छे विचार हैं। फिर भी बना कुछ? बोलो! अन्दर जाए तो रस ले, कहाँ से ले? वहाँ पहुँचे तो। यहाँ से शुरु होता है मार्ग। मन्दिरों में जाओ, गुरुद्वारों में जाओ, मसीतों में जाओ, गिरजों में जाओ। कीमती बात है समझने की। आपको दो तरह की शक्लें मिलेंगी। या तो गुम्बद होगी या लम्बूतरी शक्ल होगी। सबके अन्दर घंटे शंख बज रहे हैं, सबके अंदर जोतें जग रही हैं। यह है क्या? यह हमारे समझाने के लिए थे। जैसे बच्चों को मिट्टी की चीज़ें बना कर समझाते हैं। यह क्या है? केला, लेकिन है तो नहीं, है तो मिट्टी। यह क्या है? संतरा। है तो नहीं, है तो मिट्टी। यह हमारे समझाने के लिए थे। असली मन्दिर यह शरीर है। यह गुम्बद है (सिर की तरफ इशारा करते हुये)। यह लम्बूतरी शक्ल है (नाक की तरफ इशारा करते हैं) जिसको कृष्ण भगवान ने कहा हैः

'नासिका के अग्र भाव आओ'

यहाँ आए तो वहाँ जोतें जग रही हैं। घंटे शंख बज रहे हैं। यह हमारे समझाने के लिए थे। ईसाईयों के (Candle) कैंडल जलाते हैं। यह हमारे समझाने के लिए थे। हमारे अंदर कुदरती जोतें जग रही हैं। इधर राजस्थान में एक फकीर हुआ है। उसने कहा हैः

माई मेरे मन्दिर में जोति जगे॥
बिनु दीपक बिन बाती घृत के, झिलमिल जोत जगे॥
इस जोति का सकल उजारा, देखत तिमर भगे॥

वो राम नाम की जोत है।

राम नामु है जोति सबाई ततु गुरमति कढ़ि लईजै॥

यहाँ तो कभी तेल खत्म हो गया, कभी दीया टूट गया, कभी बाती टूट गई।

उलटा कूआं गगन में तिस में जरै चिराग॥
तिस में जरै चिराग बिन रोगन बिन बाती॥
छः रितु बारह मास रहत जरत दिन राती॥
सतगुरु मिला जो होय ताही की नजर में आवै॥
बिनु सतगुरु कोऊ होये नहीं वा को दरसावै॥
निकसै एक आवाज चिराग की जोतिहिं माहीं॥

उसमें से आवाज़ भी आती है। गुरुनानक साहिब ने कहा है।

'अन्तरि जोति निरन्तरि बाणी॥'

सोचो! वो जोत देखनी थी बाहर ही बाहर बना ली। आप ही बना ली और आप ही मत्था टेक लिया।

पूर्ण जोत जगै घट में तब खालसा ताहि नखालस जाणै॥

तब खालसा बनता है।

अब मनु उलटि सनातन हुआ॥ तब जानिआ जब जीवित मूआ॥

जीवित मरना क्या? जड़ चेतन की गाँठ खोलना, ख़्याल को आँखों के पीछे इकट्ठा करना। जब सतूताकत से ताल्लुक पड़ जाता है फिर सनातनी बन जाता है। यहाँ आ कर ही निरंकारी बनता है। यहीं आर्य बनता है।

गुरमुखि राग सुआद अन तिआगे॥ गुरमुखि इहु मन भक्ति जागे॥
अनहद सुणि मन मानिआ सबदु वीचारी॥ आतमु चीनि भए निरंकारी॥

यही सच्चा सौदा है, बिल्डिंगों का नाम सच्चा सौदा नहीं। बाहर तो सब कूड़ है। काम तो यह करना था आ कर।

इका बाणी इकु गुर इको सबदु वीचारि॥
सचा सउदा हटु सचु रतनी भरे भंडार॥

(646/8 मः3)

सचा सउदा हरिनामु है सच वापारा राम॥
गुरमती हरि नामु वणजीअै अति मोलु अफारा राम॥

(570/13 म:3)

फिर सब कुछ बन जाता है। कोर्स किसी ने किया? ऊपर-ऊपर से तो सभी बन गए, देख लो! चार किताबें डाक्टरी की घर में रख कर, मैं डॉक्टर हूँ, कोर्स तो किया नहीं, बन जाएगा डॉक्टर। यही हाल हमारा है। वो जोत देखनी थी। यहाँ से तो मार्ग शुरु होता है। शम्मस तबरेज़ ने लिखा है–

''कि बंदे को इन्सान बनने के लिए सैकड़ों साल चाहिए। फिर इन्सान से मुसलमान बनने के लिए सैकड़ों साल फिर चाहिएँ।''

ऐसे बने फिरते हैं सभी, देख लो भई! वो कहता है चलो अपने देश। वहाँ खुशी ही खुशी है, आनन्द ही आनन्द है, हाँ जी!

पाठी– तह दूख न भूख न रोगु बिआपै चरण कवल लिव लाईअै।

मैनेजर साहिब जी–कभी सोचा है कि इतने पाठ किए हैं, इतने जप किए हैं, क्या शांती आई मन में? काम घटा, क्रोध घटा, लोभ घटा, मोह घटा, अहंकार घटा, कोई शांती, कोई तसल्ली कि ऐसे ही हमारा रास्ता ठीक है। बस ठेके ले लिए। जिसको पूछो मैं सब कुछ जानता हूँ। जानता हो तो शांती न आ जाय। जैसे मीरां ने कहा है:

पायो रे मैंने नाम रत्न धन पायो॥
जिस को पाये दुख सुख भूले मन आनन्द रे समायो॥
जिस की चोरी कबहूं नहीं होवे ऐसो धन मैंने पायो॥
खरचूं लाख खत्म नहीं होये दिन दिन बढ़त सवायो॥ (मीरां)

ऐसे ही मैं जानता हूँ।

साँकड़ी गली में मेरा सतिगुरु मिलिया किस विधि फिरूं अपूठी॥

(मीरां)

सांकड़ी गली में जाए तो मिले।

राह खुदा भीहावला बालों दसवें भाइ॥ (गुरुनानक साहिब)
'कबीर मुक्ति दुआरा संकुरा राई दसएं भाई' (आदि ग्रन्थ)

कभी ख़्याल किया किसी ने?

माई मैं धन पाइउ हरिनामु॥
मन मेरो धावन ते छुटकिउ कर बैठिउ बिसराम॥

माया ममता तन ते भागी उपजिउ निरमल गिआन॥
काम क्रोध परस नहीं सके गही भगति भगवान॥

(गुरु तेगबहादुर जी)

इस का नाम ज्ञान है।

सो गिआनी जिनि सबदि लिव लाई॥ (831/15 मः1)

बाहर के ज्ञानों ने मिट्टी पलीत कर दी। डंडे खड़कते हैं आपस में।

जह जह देखउ तह-तह साचा॥ बिनु बूझे झगरत जगु काचा॥

(224/7 मः1)

मुसलमानों के बहत्तर फिरके आपस में झगड़ रहे हैं। एक मुहम्मद, एक कुरान, शिया और सुन्नीयों के तो हर साल डंडे खड़कते हैं। वो कहते हैं ऐसे ठीक है, वो कहते हैं ऐसे ठीक है। देखा किसी ने भी नहीं। हाँ जी। वही हैं जो दीनता से गुज़ार गए। कहते हैं न जी क्या करें घर में कलेश रहता है, भजन नहीं बनता। इन कलेशों में गुज़ारना है। जिसको सुख दिया उससे सुख लेना है। जिसको दुख दिया उससे दुख लेना है। दीनता से गुज़ारा कर अपना वक्त गुज़ारे। फकीरों को धक्के पड़े हैं, वे दीनता से गुज़ार कर परे हो गए। हाँ जीः

यह जन्म ही इसलिए मिला है। जन्म मरण खत्म करने के लिए, शांती लेने के लिए, अमृत लेने के लिए। जिसने फायदा उठा लिया, उठा लिया, नहीं तो चौरासी तैयार है इसके लिए। हाँ जी!

पाठी– तह जनम न मरणु न आवण जाणा निहचलु-सरणी पाईऐ॥

मैनेजर साहिब जी–देख लो! ना जन्म ना मरण। निहचल जगह मिल जाएगी। हमेशा का सुख हो जाएगा।

पाठी– यह जनम न मरणु न आवण जाणा निहचलु सरणी पाईऐ॥
प्रेम विछोहु न मोह विआपै नानक हरि एकु धिआईऐ॥

मैनेजर साहिब जी–वो हमेशा मस्त रहते हैं। बच्चों में भी गुज़ारते हैं। कैसे फँसे हैं हम? पहले तो तन का प्यार है। मरने पर बैठा है, खुल-खुल करता है, कोई रोटी नहीं देता, सेवा नहीं करता फिर भी कहता है कि मरुँ न। चूँकि तन चाहता है इसलिए इसको तन मिलता है, ख़्यालों के अनुसार।

अँतिकालि जो लछमी सिमरै ऐसी चिंता महि जे मरै॥
सरप जोनि वलि वलि अउतरै॥ (526/7 त्रिलोचन)

अगर माया जोड़ी है, उसमें ख़्याल है, साँप की योनी बैठ जा भई! पेट भर ले।

द्रिव्य जो मर जाए ता हो बैठे नाग।
नारी में चित रहे होय कुक्कर काग॥ (चरणदास जी)

चरणदास जी ने कहा है, और फकीरों ने भी कहा है। देख कर लिखा उन्होंने।

अँतिकालि जो लड़िके सिमरै अैसी चिंता महि जे मरै॥
सूकर जोनि वलि वलि अउतरै॥ (526/10 त्रिलोचन)

सूअर की योनि।

तन छूटे सुत महि रहे एक नर तेरी आस॥
जन्म जो सूकर को लहै मूए नरक निवास॥

देखो! सब ने अपनी-अपनी जगह लिखा है।

अँतिकालि जो मंदर सिमरै अैसी चिंता महि जे मरै॥
प्रेत जोनि वलि वलि अउत्तरै॥ (526/11 त्रिलोचन)

घर-घर बाबे की मढ़ियाँ हैं। खेतों में भी मढ़ियाँ हैं। सोचो! वो साधू दुनिया में रहता है, देख लो! बच्चा पैदा हो गया, उसकी मौज़। बीमार हो गया उसकी मौज़। राज़ी हो गया उसकी मौज़। लेने देने भी खत्म करने हैं। दुख दे तो उसकी मौज़, सुख दे तो उसकी मौज़। दुनिया में भी रहता है। बाल बच्चों में भी रहता है। यह असली त्याग है।

तिआगना तिआगनु नीका कामु, क्रोधु, लोभु तिआगना॥

घरबार नहीं छोड़ना, यह त्यागना था। यह त्याग है। हाय! हाय! यह लेने देने भी खत्म करने हैं। जब तक लेने देने खत्म नहीं होते, आगे जा ही नहीं सकता। जिसके खत्म करावे, जो मर्ज़ी कराए॥

'जिउ भावै तिउ राखि लै।'

पाठी– प्रेम बिछोहु न मोहु बिआपै नानक हरि एकु धिआईअै॥
द्रिसटि धारि मनु बेधिआ पिआरे रत्तड़े सहजि सुभाए॥

मैनेजर साहिब जी–वो कहते हैं, अब कैसे करें? हाय! हाय!

पाठी– द्रिसटि धारि मनु बेधिया पिआरे रतड़े, सहजि सुभाए॥
सेज सुहावी संगि मिलि प्रीतम अनद मंगल गुण गाए॥

मनैजर साहिब जीः क्या? *''द्रिसटी धारि मनु बेधिया पिआरे''* आँखों के पीछे ख़्याल को इकट्ठा करे और सिमरण करे। जड़ चेतन की गाँठ खोले, तुझे एक नई ज़िन्दगी

मिल जाएगी। इसे कहते हैं जीवित मरना और कबरों में जाना नहीं।

मुइआ जितु घरि जाईऐ तितु जीवदिआ मरु मारि॥ (आदि ग्रन्थ)

सोचो!

मौतोवा किबल अनत मौतोवा॥ (हजरत मुहम्मद साहिब)

अर्थात् मरने से पहले मर।

दादू पहले मर रिहो पाछे मरे सब कोय॥ (दादू साहिब)

सोचो! यह सिमरण करके यहाँ ख़्याल को टिका, अगर यहाँ ख़्याल टिक जाए।

एक निमख जो सिमरन महि जीआ॥
कोटि दिनस लाख सदा थिरु थीआ॥ (239/2 म:5)

सदा की ज़िन्दगी मिल जाएगी।

एक चित्त जिन इक छिणु धिआइउ॥ काल फास के बीच न आइउ॥
(अकाल उसतत)

काल नज़दीक नहीं आता, प्रेम से तवज्जो से सिमरण करे। फिर एक नई ज़िन्दगी मिल जाएगी।

बमीर ऐ दोस्त पेश अज़ मर्ग गर में ख़ुआही ज़िन्दगी॥

कहते हैं, ''कि ऐ दोस्त! तू मरने से पहले मरना सीख ताकि तुझे एक नई ज़िन्दगी प्राप्त हो जाए॥'' जैसे गन्दगी से निकल कर बग़ीचे में चला जाए। यही गुरुनानक साहिब कहते हैं:

मरणै ते जगतु डरै जीविआ लोड़ै सभु कोइ॥
गुरपरसादी जीवतु मरै हुकमै बूझै सोइ॥
नानक ऐसी मरनी जो मरै ता सद जीवणु होइ॥ (555/5 म. 3)

सदा की ज़िन्दगी मिल जाए। यह काम करना था आ कर। यह तवज्जो से सिमरण करे।

पाठी– द्रिसटि धार मनु बेधिआ पिआरे रतड़े सहजि सुभाइ॥

मैनेजर साहिब जी–इस मन से लड़ाई करनी पड़ती है। किल्ली से केश इसलिए बाँधे थे। किसलिए बाँधे? सोच लो! बाकी पातशाहियाँ तो बाद में बनी। गुरुनानक साहिब खुद अकाल-पुरख आए। तेरह साल रोड़ियों पर बिस्तर रखा, किसलिए? हमारे समझाने के लिए कि इस तरह फँसा है, ऐसे निकलोगे। तन का प्यार सब को खा गया।

सुखिया सब संसार है जो खावे और सोवे॥
दुखिया दास कबीर है जो जागे और रोवे॥ (कबीर साहिब)

तब पाया है, सोच लो!

हम घर जारा अपना, ले मिसाल निज हाथ॥
अब घर जारुं तासों का जो चले हमारे साथ॥ (कबीर साहिब)

कौन सा? यह सभी बन्धन तोड़े।

ऐसा कोई न मिला, घर दे आग लगाय॥
पाँचों लड़के पटक के, रहे नाम लिव लाय॥ (कबीर साहिब)

पाँच लड़के कौन से? यह काम, क्रोध, मोह, लोभ, अहंकार। इनका ख़्याल छोड़े तो जाये। कभी किसी ने पकड़ लिया, कभी काम ने, कभी क्रोध ने, कभी मोह ने, कभी लोभ ने, कभी अहंकार ने। मिट्टी पलीत कर दी सब ने। सोच लो! इन सबका ख़्याल छोड़े तब है।

दस इन्द्री करि राखै वासि॥ ता कै आतमै होइ परगासु॥

पढ़ते भी हैं, हाय! हाय!

जब तलक विषयों से ये मन विरक्त हो जाता नहीं॥
तब तलक साधक विचारा सच्चा सुख पाता नहीं॥
(कबीर साहिब)

पाठी– द्रिसटि धारि मनु बेधिआ पिआरे रतड़े सहजि सुभाइ।

मैनेजर साहिब जी–''सहज सुभाए'' सहज अवस्था में पहुँचते हैं, हाँ जी।

पाठी– सेज सुहावी संगि मिल प्रीतम अनद मंगल गुण गाए॥
बिखै बनु.....
सखी सहेली राम रंगि राती मन तन इछ पुजाए॥

मैनेजर साहिब जी–कहते हैं कि जिन रुहों ने हमारा साथ दिया, यह काम किया, सखी सहेलियों ने, उनकी सब इच्छाऐं पूरी हो गईं। जब मालिक मिल गया, तो सब कुछ मिल गया।

एक बादशाह था, वो बाहर गया हुआ था। जब वो वापिस आने लगा तो उसने अपनी सभी रानियों को पूछा कि उन को क्या-क्या चीज़ें चाहिए, वो बताएँ। उन सब ने जो-जो चाहिए था बता दिया लेकिन जो सब से छोटी थी, उसने कुछ नहीं मंगवाया। वो कहने लगी कि मुझे कुछ नहीं चाहिए। मुझे आप चाहिएँ। जब राजा घर पहुँचा वो सब को जो-जो उन्होंने मंगवाया था, दे दिया

गया और खुद छोटी के पास चला गया। उसको सब कुछ मिल गया। मालिक के मिलने पर सब इच्छाएँ पूरी हो गईं, लेकिन उसको कोई माँगता नहीं। रोज़ पढ़ते भी हैं:

बिनु तेरे होर की मंगणा सिर दुखां के दुख॥

हाय! हाय!

क्या माँगौं कछु थिर न रहाई॥ देखत नैन चल्यो जग जाई॥

(कबीर साहिब)

पाठी– सखी सहेली राम रंगि राती मन तन इछ पुजाए॥
नानक अचरजु अचरज सिउ मिलिआ कहणा कछु न जाए॥

मैनेजर साहिब जी–अचरज में आया था। अचरज मालिक की अंश है। रुह अचरज में मिल गई, एक रूप हो गई। फकीर आते ही इसलिए हैं। जो फायदा उठा गया, उठा गया। उनको क्या? यह काल का देश है। उन्होंने काम लिया और चले गए। देह भी काल की है। सब काल का माल है। काल से उधार ले कर काम करते हैं।

'बुलबुल ने जब चमन से आशियाँ उठा लिया'

उन्होंने अपना काम किया और चले गए। किसी ने माना, माना नहीं तो फिर जो मर्ज़ी हो। फिर मिट्टी के लिए लड़ते हैं। लड़-लड़कर मर गए। काम यह करना था आ कर, शांती लेनी थी, यह रस लेना था। हाँ जी:

पाठी– नानक अचरजु अचरज सिउ मिलिआ कहणा कछु न जाए।

मैनेजर साहिब जी–फकीरों ने आकर होके मारे हैं। तन का प्यार कौन छोड़े? खाना पीना कौन छोड़े? विषय विकार कौन छोड़े? हाय! हाय! हाँ, जी:

पाठी– पीयो राम रस प्यासा कोई जन पीयो राम रस प्यासा।
गगन मंडल में अमृत बरसै उनमन के घर वासा॥

मैनेजर साहिब जी–पलटू साहिब कहते हैं यह सच्चा नाम है। यह एक शक्ति है जो सतलोक से आ रही है। यह कुदरती ज़र्रे-ज़र्रे में है। सब रचना उसी ने की है।

नाम के धारे सगले जन्त॥ नाम के धारे खण्ड ब्रह्मण्ड।

(284/11 म:5)

वो निकल जाए तो बस, सबके अन्दर है।

रोमि रोमि रविआ हरिनामु॥ (1144/4 म: 5)

क्या कहते हैं, सच्चा नाम।

लहना है सतनाम का जो चाहै सो लेय।
जो चाहै सो लेय जायगी लूट ओराई।
तुम का लुटिहौ यार गाँव जब दहिहै लाई॥

मैनेजर साहिब जी–पलटू साहिब कहते हैं कि फिर क्या करोगे जब आग लग जाएगी जिस्म को। वो होका देते हैं, यह वक्त है। हाय! हाय! बाज़ार में जाओ, जो मर्ज़ी सौदा करो। वो भी कहते हैं कि बाहर के काम किए और रस भी लिया। अन्दर की रिद्धियॉ-सिद्धियॉ भी लीं। यह न लिया, यह सच्चा सौदा है। सच्चे नाम को प्रगट करना, जो चौथे लोक से आ रहा है। बाणी कहो, सच्चा नाम कहो।

कहे कबीर जन गाइके सुनो जगत एह ज्ञान।
नीचे त्रिलोकी रहे उपर सतगुरु नाम॥ (कबीर साहिब)
बांधित तीन लोक बापुरा कैसे दरस लहै।
नाम निशान सकल जग उपर दादू देखत है॥ (दादू साहिब)

वो त्रिलोकी से पार है। जिसके मुतल्लक रोज़ पढ़ते हैं:

अनदु सुणहु वडभागीहो सगल मनोरथ पूरे॥

कब हुये?

पारब्रहमु प्रभु पाइआ उतरे सगल बिसूरै॥

वो ब्रह्मदेश से पार जा कर है। वो गये हैं वहाँ।

दूख रोग संताप उतरे सुणी सची बाणी॥

वहाँ से सच्ची बाणी आ रही है, नीचे भी है, अनहद बाणी फनाह के दायरे तक है।

जाप मरे अजपा मरे, अनहद भी मर जाए।
सुर्त समानी शब्द में ताको काल न खाय॥ (कबीर साहिब)
त्रैगुण बाणी ब्रह्म जंजाला॥ (230/18 म:3)

जो युगों-युगों से आ रही है।

बाणी वजी चहु जुगी सचो सचु सुणाइ॥ (35/8 म:3)

सोचो! वो युगों-युग से आ रही है। लिखने पढ़ने की चीज़ नहीं। मिलती कैसे है?

सँत साजन भए सरसे पूरे गुर ते जाणी॥ (922/16 म:3)

सरसे का मतलब शहर या इलाका नहीं। गुरु रामदास जी का वचन है। जब संतो की शरण में जाकर तन मन के बन्धन तोड़े। उनको खुश किया, सरसे का मतलब खुश किया। फिर भी हम इसका मतलब सरसा बना लेंगे। बस इस तरह दुनिया फँसी पड़ी है। यह बन्धन तोड़े तो मिले, कहाँ से मिले?

पाठी– जो चाहै सो लेय जायगी लूट ओराई॥
तुम को लुटिहौ यार गाँव जब दहिहै लाई॥
ताकै कहा गँवार मोट भर बाँध सिताबी॥

मैनेजर साहिब जी–यह तुझे एक चान्स मिला है कि खट ले जो खट सकता है। हाय! हाय! यह मौका है।

पाठी– ताकै कहाँ गँवार मोट भर बाँध सिताबी॥
लूट में देरी करै ताहि की होय खराबी॥

मैनेजर साहिब जी–जल्दी कर? क्या पता कब मौत आ जाए। हाँ, जीः

पाठी– बहुरि न ऐसा दाँव नहीं फिर मानुष होना॥

मैनेजर साहिब जी–यह तो नहीं कि फिर मानुष जन्म मिल जाएगा।

धन धन सतगुरु तेरा ही आसरा

सत्संग

'सार सबद गहि बाँचि हौ'

सत्संग के वचन

मैनेजर साहिब जी–ऐसे ही ठेके लिए बैठे हैं। सब ठगी है। उसके अपने हाथ में है। रात भी अर्ज़ की थी कि काल को रचना का हुक्म दिया है। उसने ऐसे फँसाया कि निकलने का राह नहीं छोड़ा बल्कि उन संतों को जो मालिक के हुक्म से आते हैं, उनको भी काम करने नहीं देता। दुनिया में सबको तकलीफें दी हैं। गुरु अर्जुन साहिब को गर्म तवे पर बिठाया। शम्मस तबरेज़ की खाल उतार दी उसके लड़के ने, बोलो! सब के साथ ऐसे ही करता आया। तभी दादू साहिब ने लिखा है–

जीव जंजालों पड़ गया उलझा नौ मन सूत॥
कोई इक उभरे सावधान गुरु बाचक अवधूत॥

जैसे नौ मन सूत उलझ जाता है। इस तरह यह भी उलझा पड़ा है। साथ में मन एजेंट है। कभी कहता है यह कर ले, कभी कहता है वो कर लो। निकलने का राह नहीं छोड़ा। यही गुरुनानक साहिब ने लिखा है:

बिख बोहिथा लादिआ दीआ समुंद मंझारि॥
कंधी दिस न आवई ना उरवार न पार॥
वंझी हाथ न खेवटु जल सागर असराल॥
बाबा जग फाथा महा जाल॥

पाठी– बिख बोहिथा लादिआ दीआ समुंद मंझारि॥
कंधी दिस न आवई ना उरवार न पार॥

मैनेजर साहिब जी–ऐसा फँसा है कि निकलने का राह नहीं। हर समुंद्र में जहाज़ होते हैं। उनके साथ कप्तान होते हैं। जहाज़ को पार लगा देते हैं। दरिया में किश्तीयाँ होती हैं, साथ मल्लाह होते हैं। मल्लाह के हाथ में बाँस होता है। वो साथ-साथ पार लँघा देता है। सोच लो! यहाँ पर न किश्ती है, न जहाज़ है।

बस ऐसे ही रूड़े जा रहे हैं। न किनारे का पता है, न पता है कि दुनिया कब बनी है।

बिख बोहिथा लादिआ दीआ समुंद मंझारि॥
कंधी दिस न आवई ना उरवार न पार॥
वंझी हाथ न खेवटु जल सागर असराल॥
बाबा जग फाथा महा जाल॥

हाय! हाय!

गुर परसादी उबरे सचा नाम समाल॥

(गुरुनानक साहिब)

वो खुद निकाले तो निकाले। कभी कोई रूप धारता है, कभी कोई रूप धारता है। ऐसे फँसाया है जीव को। गर्ज़ ही नहीं किसी को! मालिक तो भुला ही दिया, सोच लो! आप बन बैठा, हाय! हाय! कई युग बीत गए। मालिक ने देखा कि जीव तो आया ही नहीं। कबीर साहिब कहते हैं कि फिर मुझे भेजा। संतों से कुछ डरता है, बाकी किसी से भी नहीं डरता। हाँ जीः

पाठी– काल जीवों को वापिस अपने देश जाने नहीं देता :–

यह देश काल के आधीन है और वह किसी जीव को इस से बाहर निकलने नहीं देना चाहता क्योंकि जीवों के बिना उसके देश की रौनक खत्म हो जाएगी। इसलिए वो जीव अपनी आज़ादी चाहता है और अपने देश को वापिस जाना चाहता है। उसको तरह-तरह के दुख देता है। यहाँ तक कि जो फकीर मालिके कुल या सच्चे राम की तरफ से जीवों को लेने आते हैं, उनके रास्ते में सैकड़ों रुकावटें डालता है। इतिहास से प्रकट है कि गुरु अर्जुन साहिब को गर्म कड़ाहों में बैठा कर उपर गर्म रेत डलवाई। गुरु तेगबहादुर साहिब को शीश देना पड़ा! शम्मस तबरेज़ की खाल उतार दी। मंसूर को सूली पर चढ़ाया गया। काल और तो कुछ नहीं कर सकता। सिर्फ चोला उसका माल है, जो फकीर लोग उससे उधार लेकर आते हैं, उसके उतारने तक जाता है। बल्कि उनको अपने देश में आने ही नहीं देता। कबीर साहिब जब उसके देश में आए तो उन के साथ बड़ा झगड़ा किया। जिस का ज़िक्र उन्होंने अपनी किताब 'अनुराग सागर' में किया है।

'निरन्जन बोध' में कबीर साहिब फरमाते हैं कि काल या निरंजन को इस दुनिया का कारख़ाना चलाने का हुक्म दिया था। मगर उसने सब जीवों को काबू

में करके सतपुरुष या सच्चे राम का नाम ही खत्म कर दिया और खुद मालिक बन बैठा। सत्तर युगों के गुज़र जाने पर सतपुरुष ने फिर मुझे जीवों के काज के लिए इस देश में भेजा।

ज्ञानी (एक शक्ति जो कबीर का रूप धार कर आई)

काल निरंजन निर्गुण राई॥ तीन लोक जिहिं फिरे दुहाई॥
सात द्वीप पृथ्वी नौ खण्डा॥ सप्त पाताल इक्कीस ब्रह्मांडा॥
सहज सुन्न में कीन्हे ठिकाना॥ काल निरंजन सबही ने माना॥
ब्रह्मा विष्णु और शिव देवा॥ सब मिल करें काल की सेवा॥
चित्र गुप्त धर्म वरियारा॥ लिखनी लिखें सकल संसारा॥

मैनेजर साहिब जीः रात भी सुनाया था।

खंड पताल-दीप सभि लोआ॥ सभि कालै वसि आपि प्रभि कीया॥
निहचलु एकु आपि अबिनासी॥ सो निहचलु जो तिसहि धिआइदा॥

(1076/1 मः 5)

मालिक ही भुला दिया। उस निश्चल ताकत को ही भुला दिया। ताकत भी वही से मिलती है उस को। मालिक खेल भी तो बंद नहीं करता। करना चाहे तो अभी Switch बंद करे तो सारा खेल ही बंद हो जाए। हाँ जीः

पाठी– चौरासी लाख और चारों खानी॥ लिखनी लिखे सकल सब जानी॥
पशु पक्षी जल थल विस्तारा॥ बन पर्वत जल जीव विचारा॥
काल निरंजन सब पर छाया॥ पुरुष नाम को चिन्ह मिटाया॥
सत्तर युग ऐसे हि चलि गयेऊ॥ पुर्ष शब्द इक चित में ठयेऊ॥

''पुरुष वचन''

तबहीं पुरुष ज्ञानी सो कहऊ॥ धर्मराय अति प्रबल जो भयऊ॥
एह तो अंश भया बरियारा॥ तीन लोक जीव कीन्हें अहारा॥
ताहिं मारकै देव उठाई॥ जग जीवन को लेव छुड़ाईं॥

(कबीर साहिब)

काल पुरख सिर्फ सन्तों से डरता है। ऐसे सन्तों के द्वारा ही जीव का उद्धार हो सकता है।–

यह काल पुरुख या धर्मराय सिर्फ पूर्ण सन्तों से डरता है। सन्त अगर चाहें तो एक मिन्ट में उसका देश उजाड़ कर सब जीवों को अपने घर पहुँचा दें। मगर

वह सच्चे मालिक के वचनों की लाज रखते हैं।

मैनेजर साहिब जी–हाँ, लक्कड़वाली में वचन किए थे। लक्कड़वाली में वचन कर दिए। माफी वाले आ गए, यह माफी, वो माफी, अच्छा भई गरीब मस्ताना के लिए भी नारा लगा दो। यह कह दिया कि जो प्रेमी हैं उनके रिश्तेदारों की संभाल, पशुओं की भी संभाल जिन का दूध पीते हैं, उनकी भी संभाल। काल कहने लगा कि तैतीस करोड़ से उपर चला गया।

''गुरुमुखि तेतीस करोड़''

यह वचन तो अब वापिस ले लो। पूज्य मस्ताना जी कहते हैं कि मस्ती में वचन निकल गए कि माफ कर। काल कहने लगा कि नहीं चोला छोड़ना पड़ेगा। पूज्य मस्ताना जी कहने लगे कि चोला छोड़ देते हैं और क्या, बोलो! अब देखते हैं जो खास प्रेमी है। सिमरण करते हैं। उनके पशु भी आराम से जाते हैं। उनका चेहरा पहले से अच्छा होता है, वचन पूरा हुआ न? रिश्तेदार जिसको ज़रा सा विश्वास हुआ। नाम तो आगे मिलेगा मगर संभाल होती है। हाँ जी, हाय! हाय!

पाठी–क्योंकि वह काल को वचन दे चुका है और जीवों को समझा बुझा कर ही ले जाते हैं। किसी से ज़बरदस्ती नहीं करते।

मैनेजर साहिब जी–पूज्य मस्ताना जी एक बार बागड़ में गए। सब टिब्बे पर बैठे थे। कहने लगे कि दिल तो करता है, जैसे गुरुनानक साहिब ने पत्थर रोका था कि ऐसे ही टिब्बा उठा कर ले जाएँ सच्चे सौदे। पर चोला छोड़ना पड़ेगा। फकीरों को करामात दिखाने का हुक्म नहीं, हाँ जी। यह नीचे दर्जे के फकीर करामात दिखाते हैं। जो फकीर करामात दिखाते हैं उनका बुरा हाल होता है।

पंखी होइ कै जे भवा सै असमानी जाउ॥
नदरी किसै न आवऊ ना किछु पीआ न खाऊ॥
भी तेरी कीमती ना पवै हऊ केवडु आखा नाउ॥

वो नाम इतनी बड़ी चीज़ है। यही मुसलमान फकीर कहते हैंः

'अगर दर हवा परी मगसेबाशी॥'

अगर तूने हवा में उड़ना सीख लिया तो क्या हुआ, वह तो एक मक्खी भी कर रही है।

'अगर बर आब रवी खसे बाशी॥'

अगर पानी पर बैठ कर चलना सीख लिया तो क्या हुआ वह तो एक तिनका भी कर रहा है। रिद्धियाँ-सिद्धियाँ प्राप्त कर ली। डूबता नहीं।

'दिल बदसता कि कसे बाशी॥'

कि इस मन को काबू कर। हाँ जीः

पाठी–इस मन को काबू करना सब से बड़ी करामात है। करामातें सब मन का खेल हैं। जब मन की ताकत जाग पड़ती है तो ऐसी शक्तियाँ पैदा हो जाती है। जो हर काम कर सकती हैं। जैसे चलती गाड़ी को खड़ा कर दे, बरसात करवा दे, किसी को लड़का दे दे, किसी को मार दे, किसी बीमार को अच्छा कर दे, किसी को बीमार कर दे, आसमान में उड़ जाए इत्यादि। यह सभी चमत्कार हैं और करामातें सब मन के खेल हैं। जिस तरह गरीब को अनायास ही पद व धन प्राप्त हो जाए।

मैनेजर साहिब जी–जो यह करामातें करेगा या देख लेगा वो तो कहेगा कि मैं तो सब कुछ बन गया। कुछ लोग उन को पूजते भी हैं। उन का क्या हाल होता है। हाँ, जीः

पाठी– तो वह अपनी मान-बड़ाई, शोभा बढ़ाने व दूसरों पर अपना प्रभाव डाल कर, किसी पर अत्याचार करने लगता है तो किसी को अनुचित रियायत देने लगता है और इस प्रकार कानून की हद को तोड़ कर नुकसान उठाता है। इस तरह कुदरत की ताकतों का अनुचित प्रयोग ही चमत्कार और करामाते हैं। यह जुल्म और कहर है जिसकी सज़ा भुगतनी पड़ती है और मन की यह शक्ति नष्ट हो जाती है। अकसर निचले दर्जे के फकीर या तो माया इकट्ठी करने के लिए या अपनी मान प्रतिष्ठा बढ़ाने के लिए इन का प्रयोग करते हैं। बम्बई के एक प्रसिद्ध फकीर श्री मेहरबाबा लिखते हैं कि जो योगी अपनी ताकत का प्रयोग लोगों या शासकों को खुश करने के लिए करते हैं, वे मौत के बाद पत्थर या धातुओं की योनियों में जाते हैं।

मैनेजर साहिब जी–अच्छी मुक्ति हासिल की है, हाँ जीः

पाठी– विकासक्रम में तरक्की करते करते, लाखों वर्ष बाद फिर यह इन्सान बन पाते हैं। सच्चे सन्त या फकीर अगर करामात दिखा कर लोगों को शिष्य बनाना चाहें तो सारी दुनिया ही उनके पीछे भागने लगेगी।

मैनेजर साहिब जी–आज दुनिया सब करामातें माँगती है। कोई कहता है मेरे बच्चा हो जाए। यह हो जाए, वो हो जाए और कुछ नहीं।

पाठी– उनके लिए करामातें दिखाना कोई मुश्किल काम नहीं है। लेकिन यह

सच्चे संतों का मार्ग नहीं। उनको न तो माया एकत्रित करने की ज़रूरत होती है और न ही अपनी मान प्रतिष्ठा बढ़ाने की। वह तो मालिक के नाम के रंग में मस्त रहते हैं और मालिक की तरफ से बख़्शी हुई किसी ताकत को अपना नहीं समझते। उसे उसी को समर्पित करते हुए उसी की रज़ा में राज़ी रहते हैं। उनके पास तो केवल राम नाम का सौदा है। स्वयं नाम का रस लेते हैं और दूसरों को भी ऐसा करने का उपदेश देते हैं।

तीन लोक से जुदा है उन संतन की चाल॥
रिद्धि सिद्धि को देख देत है खाक उड़ाई॥
माया से निरवृत भजन की करे बड़ाई॥ (पलटू साहिब)

वे मालिक के हुक्म से केवल ऐसे व्यक्तियों को अपनाते हैं जो वास्तव में मालिक से मिलने का शौक रखते हैं।

मैनेजर साहिब जी– उन्होंने कोई फौज तो नहीं भर्ती करनी। यह बाद में बनते हैं। हमारी कौम बढ़ जाए, हमारा मज़हब बन जाए। सोच लो! सारी दुनिया में अगर हिन्दु बन जाएं तो फिर क्या बन जाएगा? अगर सभी सिक्ख बन जाएं तो क्या बन जाएगा? मुसलमान बन जाएं तो फिर क्या होगा? ईसाइयों का राज था पहले तो क्या बना? सोच लो! लड़-लड़ कर मर गई दुनिया। काम तो यह करना था छुटकारे का। छुटकारे का तो किसी को पता ही नहीं, हाँ जी।

पाठी– जिन लोगों की चाह दुनिया या दुनिया के पदार्थों की तरफ है, उन की संगत उनको पसंद नहीं होती। इसी कारण वे कोई शक्ति या करामात नहीं दिखाते। ताकि दुनियादारों की भीड़ भाड़ उन के तथा अन्य परमार्थियों के काम में बाधा न डाले। लेकिन मालिक स्वयं सन्तों व उन के प्रेमी सेवकों की विशेष रूप से सम्भाल करता है।

मैनेजर साहिब जी– सतगुरु ही संभाल करता है। देखो! जिस से काम लेता है, उसी का रूप धार कर काम करता है। कहाँ गुरु गोबिन्दसिंह और कहाँ भाई जोगा सिंह, देह तो वहीं थी। वो शक्ति थी जो काम कर रही थी। वही पहरेदार बनी। कौन बना? हम देह को पकड़े बैठे हैं। देह नहीं, वो तो हमारे समझाने के लिए एक बढ़िया चीज़ है। सोच लो! देह तो ज़रिया है। मास्टर के साथ जितना प्यार करोगे उतनी ही विद्या आएगी। उन के साथ प्यार भी करना पड़ता

है। उनके वचनों को भी मानना पड़ता है। लेकिन काम तो अपने सतगुरु ने देना है। अपनी ही विद्या ने देना है। उन्होंने प्रगट किया है। वो कहते हैं कि तुम भी प्रगट करो, सोचो! यहाँ तो तजरबे करवा पूज्य मस्ताना जी। यहाँ एक प्रेमी है। शायद आया तो नहीं बाकी तो हैं। गदराणे में नाहरसिंह के घर गए थे फिर वहाँ डेरा बना, वहाँ रहे। कहने लगे कि भई हक्क हलाल का कमा कर खाओ। बिना हक्क हलाल की कमाई के भजन नहीं बनता। उनके लड़कों की रोटी घर से आती थी वो बंद कर दी। सारी रात जगाते थे। एक दिन मुझे, उसको लिया, दो और लिए साथ, खुले खेतों में ले जाकर कहने लगे वहाँ से लेडे, गोहे, लकड़ियाँ इकट्ठी करवाईं और कहने लगे कि इन को बेच आओ। कालांवाली में जा कर होका दे कर बेचो जिस ने लेनी हो। फिर जो कम से कम पैसे दे उसको दो। उसका राशन लाओ, बोलो! हमें सिखाया। शुरु-शुरु में काम भी थोड़ा होता था और सभी काम करते थे। मुझे साथ ले जाते बाहर। डेरे के इर्द गिर्द ऐसे ही था। लेडे वगैरह पड़े होते मुझे कहते उठा कर ला। सिखाते थे कि ऐसे है, सोच लो! बिना हक्क हलाल की कमाई के किसी का भजन नहीं बना। फिर उसको तजुर्बा करवा दिया, क्या? उस को पहरे पर बिठा लेते, सोने नहीं देते, बाकियों को भी उठाते थे। एक दिन पहरे पर बैठा क्या देखता है कि पूज्य मस्ताना जी उससे बातें करके गए। दो मिन्ट के बाद अन्दर गुफा से आ गए। वो बड़ा हैरान हुआ कि जी अभी तो आप बातें करके गए हो। उस को तजुर्बा करवा दिया कि वो ताकत आती है। सोचो भई! वो हैरान कि जी अभी तो आप बातें करके गए। उसको तजुर्बा करवा दिया कि वो ताकत आती है। वो सम्भाल करती है। तुम्हारे अन्दर भी है उसे प्रगट करो। हाय! हाय! देखो! उस ताकत को प्रकट करो। विद्या सबके अन्दर है। इस तरह यह है उस का रूप क्या है? शब्द या नाम।

तिसु रूपु न रेख अनाहदु वाजै सबदु निरंजनि कीआ॥'(351/3 मः1)

कि ज़र्रे-ज़र्रे में है। Radiowaves (रेडियो वेव्ज) की तरह है सब जगह है।

चहु दिसि हुकमु बरतै प्रभ तेरा चहु दिसि नाम पतालँ॥
सभ महि सबदु वरतै प्रभ साचा करमि मिलै बेआलँ॥

(1275/13 मः1)

अगर रेडियो सुनना हो तो स्विच लगाते हैं न, यह भी स्विच है। वो सुक्ष्म से सुक्ष्म आवाज़ है। सूक्ष्म से सूक्ष्म आवाज़ को कैसे सुनते हैं। हम कहते हैं

न चुप करो भई। वो भी कहते हैं चुप करो। हम ऐसे ख़्याल में बैठ जाते हैं, देख लो! हाथ-पाँव सुन्न हो जाते हैं, सोच लो! फिर यह आवाज़ सुन सकते हैं।

नउ दर ठाके धावतु रहाए॥ दसवै निज घरि वासा पाए॥
ओथे अनहद सबद बजहि दिनु राती॥ गुरमती सब्द सुणावणिआ॥

(124/13 मः 4)

इस काया के नौ दरवाज़े हैं। दो आंखों के, दो कानों के, दो नाक के, एक मुँह का, दो टट्टी पेशाब के। इनको बंद करके बैठ जाओ। मन भागता है, कभी इधर ख़्याल, कभी उधर ख़्याल, ख़्याल ही ख़्याल हैं, उनको रोक, ख़्याल को टिकाओ। फिर दसवाँ अन्दर खुलता है। सोचो! वो खोले, यहाँ ख़्याल को टिकाए।

ओथे अनहद सबद बजहि दिनु राती॥

दिन भर रात आवाज़ आ रही है। वो इन कानों से सुनी नहीं जाती। इन आँखों से देखी नहीं जाती। इन आँखों से देखी नहीं जा सकती।

अखी बाझहु वेखणा बिणु कंना सुनणा॥
पैरा बाझहु चलणा बिणु हथा करणा॥
जीभै बाझहु बोलणा इउ जीवत मरणा॥
नानक हुक्मु पछाणि कै तउ खसमै मिलणा॥ **(139/2 मः 2)**

यही तुलसी साहिब ने कहा है–

बिन पग चले सुने बिन काना॥ कर बिन करम करे विधि नाना॥

यही ईसा ने कहा है–

"Have you eyes you see not. Have you ears you hear not."

यही मुहम्मद साहिब ने कहा है–

गुफ्त पैगम्बर के आवाजे खुदा॥
मे रस्सद दर गोशे मन हम चूं सदा॥

''कि खुदा की आवाज़ मेरे कानों में आम आवाज़ की तरह आ रही है। तुम्हारे कानों पर मोहरें लगी हुई हैं। इसलिए नहीं सुन सकते।''

कि मोहरें तोड़ो। वो कहता है कि इन आँखों से देखा नहीं जाता। इन कानों से सुना नहीं जा सकता। वो आंखें और हैं। वो कान और हैं। सोचो! यह सिमरण इसलिए है कि ख़्याल निकल जाएं। जितना सिमरण करोगे उतने

ही हाथ-पाँव सोएँगे। जितना जिस्म सोएगा उतना ही समझो हम अपने घर की तरफ जा रहे हैं। सारे ख़्याल निकल जाएँगे, अन्दर ख़्याल टिक जाएगा, फिर अन्दर सभी आवाज़ें सुनने लगेंगी। अन्दर कितनी ही आवाज़ें हैं। आगे भी बिखड़े दाव हैं। रेडियो में अब कितनी आवाज़ें हैं। कलकत्ते की, बम्बई, इंग्लैंड की। इस तरह अन्दर भी हैं– शिव लोक की, ब्रह्मलोक की, इन्द्रलोक की। जो असली हैं वो जिस रूप में फकीर काम करता है, उसी रूप में आ कर मिलता है। फिर इसको शब्द पकड़ाता है कि पकड़ भई! अन्दर धोखे ही धोखे है। सोच लो! पढ़ते हैं न–

बिखड़े दाउ लंघावै मेरा सतिगुरु सुख सहज सेती घरि जाते॥

(1185/13म : 5)

गुरुनानक साहिब खुद अकाल पुरुष आए। मिसालें कायम कर गए। जब वापिस जाने लगे तो रिद्धियों-सिद्धियों ने घेर लिया। वो तो उनकी चाल से वाकिफ थे, निकल गए और किसी की क्या ताकत है कि निकल जाए?

बड़े-बड़े रुके बैठे हैं, सोच लो! वो खुद रास्ता बताता है कि ऐसे चल भई। कदम-कदम पर सम्भाल करता है। यह काम करना था। यह रास्ता है।

सबदि मिलहि ता हरि मिलै सेवा पवै सभ थाइ॥ (27/9 मः 3)
सुरत शब्द में राखिए तब पहुचे दरबार॥
कहैं कबीर तहां देखीये बैठा पुरुष हमार॥
सबद बिना सुरत आंधरी, कहो कहाँ को जाय॥
द्वार न पावे शब्द का, फिर-फिर भटका खाय॥ (कबीर साहिब)

मुसलमान बाँग कहते हैं, बाँग देते हैं, बाँगे दे रहे थे। गुरुनानक साहिब ने कहा है–

उपर खासे महल पर देवे बाँग खुदाय॥
सुते बाँग न सुन सकन रहिया खुदाये जगाये॥
सुत्ती पई निभाग सब सुने न बाँगा कोई॥
जो जागे सोई सुणे साईं सदी सोई॥

(गुरुनानक साहिब)

यह बाँग है, वो सुने। वो कलमां है, बाणी है। यह असली घर का रास्ता है। क्या कहते हैं कबीर साहिब। हाँ जीः

पाठी– ''धन-धन सतगुरु तेरा ही आसरा''
सार सबद गहि बाँचिहौं, माना इतबारा ॥

सतपुरुष अच्छे बिरिछ, निरंजन डारा ॥
तीन देव शाखा भये, पाती संसारा ॥

मैनेजर साहिब जी–फकीरों ने तरह-तरह की मिसालें दे कर समझाया है। मिसाल देते हैं कि 'सार शब्द' जो सतलोक से आ रहा है। सच्ची बाणी कहो, सच्चा शब्द कहो, सच्चा नाम कहो। जब तक उस को नहीं पकड़ते, तब तक चौरासी में से छुटकारा नहीं। आगे नहीं जा सकते। निरंजन जो काल है। कितनी त्रिलोकीयाँ हैं, कितने त्रिलोकीनाथ हैं। यह शाखाएँ हैं चलाने के लिए निरंजन शाखा, ब्रह्मा, विष्णु, महेश, यह सब टहनियाँ हैं। संसार पत्ते हैं। मिसालें दे-दे कर समझाते हैं। सुनो! हाँ जीः

पाठी– सतपुरुष अच्छे बिरिछ, निरंजन डारा।

मैनेजर साहिब जी–वहाँ से हुकम हुआ। कोई प्राइम मिनिस्टर (Prime-Minister) बोले। देखो भई! वो असली हुकम है। नीचे चीफ मिनिस्टर (Chief-Minister) उस में कोई रद्दोबदल कर देते हैं। उस के नीचे तहसीलदार है, पटवारी और कितने महकमे हैं। सब की हकूमत चलती है। मालिक का हुक्म है तो वह है जो उपर से आया है, वो पकड़। उस हुक्म को जानना ही असली भक्ति है। सोचो! नीचे भी कई हैं। सब धोखे हैं। कई नीचे के पकड़ कर बैठे हैं। धोखे ही धोखे हैं। बुल्लेशाह ने कहा है–

बजदे नाद हजार।
अनिक अनाहद आनंद झुनकार॥ (1236/10 मः 5)

सब के अन्दर है, धोखे ही धोखे हैं। बड़ा चालबाज़ है काल। इसलिए जल्दी-जल्दी निकलने नहीं देता। कोई तो योगों में फँस गया। कितने तो महकमे बना दिए उस ने, यह कर ले, वो कर ले। जैसे कई पटवारी की नौकरी में खुश हैं, सोच लो! इस तरह यह है ज़रा सी शक्ति मिल जाए तो बस पता नहीं मैं क्या बन गया। हमारे लिए तो यह छोटे-छोटे ही बड़े हैं जैसे पटवारी ही बड़ा है। एक मिसाल है, तहसीलदार ने किसी बुढ़िया का काम कर दिया। अब वो उस का शुकराना करती है। क्या? कि पुत्र! रब्ब तेनूँ पटवारी बना दे। उस के लिए पटवारी ही बहुत बड़ा है। वो कहने लगा कि नहीं मैं तो तहसीलदार हूँ। वो कहने लगी कि नहीं पुत्र! पटवारी बड़ा होता है। यह हाल है हमारा। हाँ जीः

पाठी– सत् पुरुष अच्छे बिरिछ, निरंजन डारा॥
तीन देव शाखा भये, पाती संसारा॥
सार सबद गहि.....
ब्रह्मा वेद सही किया, सिव योग पसारा॥

मैनेजर साहिब जी–यह सब ठग्गियां हैं।

पाठी– ब्रह्मा वेद सही किया, सिव योग पसारा॥
बिस्नु माया प्रगट किया, उरले व्योहारा॥

मैनेजर साहिब जी–शास्त्रों में कितने जप लिखे हैं– इन्द्र कवच है, काली कवच है, भैरों कवच है, हनुमान कवच है। उनके करने से रिद्धियाँ-सिद्धियाँ आ जाती हैं, देखो! रिद्धिया-सिद्धियाँ प्राप्त हो जाएँगी। वो शक्तियाँ इन के अन्दर आ कर काम करने लग जाएँगी। शरीर की रक्षा करने लग जाएँगी, लेकिन जन्म मरण के बन्धन नहीं छूटेंगे। न उनके छूटे हैं, सोचो! बड़ी-बड़ी ताकतों को खा गया काल। ''तीन लोक और चौदह भवन में इस घोघड़ का राज॥''

कोई विचारता नहीं। क्या लिखते हैं गुरुगोविन्दसिंह जी; देखो! बड़ी-बड़ी ताकतों के पास नाम नहीं आया।

कहूँ कहाँ लग नाम बड़ाई ॥ राम न सकें नाम गुण गाई॥

(तुलसीदास)

वो त्रिलोकी की हद तक रह गए, हाँ जी॥

पाठी– विचित्र नाटक में श्री गुरुगोविन्द सिंह साहिब फरमाते हैं कि सब भवन (चौदह लोक या चौदह तबक) पर काल का हुक्म है। क्या राम, क्या कृष्ण, क्या चाँद, क्या सूरज सब ही काल की हजूरी में हाथ बांधे खड़े हैं।

मैनेजर साहिब जी–इतनी बड़ी हस्ती है वो।

खंड पताल दीप सभि लोआ, सब कालै वसि आपि प्रभि कीआ॥
निहचलु एकु आपि अबिनासी सो निहचलु जो तिसहि धिआइंदा॥

(1076/1म : 5)

वो निहचल ताकत सब को ताकत दे रही है। जिसके मतल्लक गुरुगोविन्द सिंह जी ने कहा है–

जागति जोत जपै निस बासुर एक बिना मन नैक न आने॥
पूरण प्रेम प्रतीत सजै ब्रत गोर मड़ी मठ भूलि न माने॥
तीरथि दान, दइआ, तप, संजम एक बिना नहि एक पछानै॥

सब खंडन कर दिए। सब खत्म कर दिए।

पूर्ण जोति जगै घट में तब खालसा ताहि नखालस जानै॥

ऐसे ही खालसा बन बैठे। उस जोत को अन्दर प्रगट करे। यह जोत हमारे समझाने के लिए है जो मन्दिरों में, गुरुद्वारों में, बाहर बनी थीं। सोच लो! ईसाई Candle (कैंडल) जलाते हैं। मुसलमान भी दीए जलाते हैं। यह हमारे समझाने के लिए थे कि ऐसे ही हमारे अन्दर हैं। इसे प्रगट करो। वो जोत बिन दीये-बाती जलती है। सोच लो! यह जिन्दा मरने का सवाल है। ख़्याल को आँखों के पीछे इकट्ठा करे। इसे कहते हैं– ज़िन्दा मरना।

अब मनु उलटि सनातनु हूआ ॥ तब जानिआ जब जीवित मूआ॥

(कबीर साहिब)

जब ज़िन्दा मरा, सत् ताकत से ताल्लुक पड़ा तो मैं सनातनी बन गया। यहाँ रूह काफी साफ हो जाती है। फिर यह पाक बन गया, श्रेष्ठ बन गया, आर्य बन गया। यह राम की जोत है।

राम नामु है जोति सबाई ततु गुरमति काढि लईजै॥

फिर यह नामधारी बन गया। यही सच्चा सौदा है। बिल्डिगों का नाम सच्चा सौदा नहीं। बाहर तो कूड़ है।

कूड़ु राजा कूड़ु परजा कूड़ु सभु संसारु॥

यह सब कूड़ है। यह हमारे समझाने के लिए थे।

सचा सउदा हरि नामु है सचा वापारा राम॥
गुरमती हरिनामु बणजीऐ अति मोलु अफारा राम॥

(570/13 मः 3)

इका बाणी इकु गुरु इको सबदु वीचारि॥
सचा सउदा हटु सचु रतनी भरे भंडार॥

(646/8 मः 3)

यहाँ से निरंकारी बनता है।

गुरमुखि राग सुआद अन तिआगे। गुरमुखि इहु मनु भगती जागे॥
अनहद सुणि मनिआ सबदु विचारी॥ आतमु चीनि भए निरंकारी॥

बाहर के छोड़े फिर निरंकारी बनता है। ऐसे बने फिरते हैं। उपर-उपर से तो सब बन गए। शम्मस तवरेज ने लिखा है–

"कि बंदो को इंसान बनने के लिए सैकड़ों साल चाहिए। यह इतना बड़ा

कोर्स है। फिर इन्सान को मुसलमान बनने के लिए फिर सैकड़ों साल चाहिए''

फिर मुसलमान बनता है, बोलो भाई! ऐसे ही दुनिया लड़-लड़ कर मर गई। बना ही कोई भी नहीं। कोर्स किसी ने भी नहीं किया, सोच लो! हाँ जी।

पाठी– काल के संकेत से ही भगवान विष्णु बना है, जिस की शक्ति इस जगत में प्रगट हो रही है। काल के संकेत ही ब्रह्मा और शिव पैदा हुए ओर योगियों के आदि।

मैनेजर साहिब जी–जैसे यहाँ महकमे हैं और हुक्म अनुसार काम करते हैं। इस तरह अन्दर भी हैं, हाँ जी।

पाठी– आदि मछन्दर नाथ की पैदायश हुई। काल के संकेत से ही देवते, द्वैत, गन्धर्व, जच्छ, सर्प, दिशा और कोने बने। जितने नाशवान पदार्थ हैं, सब काल के वश में हैं। सिर्फ एक अकाल पुरुष सदा अकाल है जो काल से रहित है।

मैनेजर साहिब जी–त्रिलोकी तक कोई जीव सुखी नहीं, महात्मा जगजीवनदास फरमाते हैं:

पपीहा जाये पुकारिउ पँछीअन आगे रोय॥
तीन लोक फिर आइयो हूँ बिन दुख लखिउ न कोय॥

(जगजीवनदास)

यही कबीर साहिब ने लिखा है:

तीन लोक का पिंजरा भया, पाप पुण्य दोउ जाल॥
सकल जीव सावज भए, एक अहेरी काल॥

(कबीर साहिब)

बोलो! सब को खा गया यह। पाप पुण्य तो जाल हैं। यही एक मुसलमान फकीर ने लिखा है:

आवारगी नविश्त शुदा खाना फरामोश शुदा॥
आं गन्दा पीरे काबली बस सहर करदत्त अज़ दगा॥

(शम्मश तबरेज़)

''हमारे कर्मों की अवारगी क्या? दर-दर भटकना लिखा है। उस जादूगर ने ऐसा जादू डाला है कि निकलने का राह नहीं छोड़ा।'' कोई कहता है यह कर लो, वो कर लो। ऐसे ही फँसी पड़ी है दुनिया बस। पता ही नहीं किसी को। यह नसीबों से चीज़ मिलती है। यह सब मालिक के हाथ में है और किसी के नहीं, पढ़ते हैं न–

वडे मेरे साहिबा गहिर गंभीरा गुणी गहीरा॥
कोइ न जाणै तेरा केता केवडु चीरा॥
सभि सुरती मिलि सुरति कमाई॥ सभि कीमति मिलि कीमति पाई॥
गिआनी धिआनी गुर गुरहाई॥ कहणु न जाई तेरी तिलु वडिआई॥

किस को मिला?

आखण वाला किआ बेचारा॥ सिफती भरे तेरे भंडारा॥
जिसु तू देहि तिसै किआ चारा॥ नानक सचु सवारणहारा॥

(348/28 मः1)

जिस को वो बख़्शे बाकी सब ठगी है। सब ऐसे ही ठेके लिए बैठे हैं। उस के आगे प्रार्थना करे। जो सच्चे दिल से पुकार करता है, रोता है, चिल्लाता है, उसकी सुनता है, उसका बन्दोबस्त करता है। गुरुनानक साहिब लिखते हैं–

सरणि परे गुरदेव तुमारी॥ तू समरथु दइआलु मुरारी॥

कि ऐ सतगुरु! सतगुरु तो एक ही है। रात भी सुनाया था। गुरु कह लो, शब्द कह लो। उसका रूप शब्द गुरु है।

जुगा जुगंतर सतिगुरु दूसर हुआ न होग॥
चौरासी जामे पहन के पाछे हुआ अलोप॥
सत्तर जामे भगतजन चौदह सतगुरु राए॥

गुरुनानक साहिब ने लिखा है कि कलयुग में संतों ने सत्तर जामे पहनने हैं। चौदह में वो आप आएगा।

गुरुमुखि होई सो मिल रहे मनमुख मिलहि सजाइ॥
भर बेड़े लै जाहिंगे संत जना के पूर॥
बेमुख तुटे तुट मुए मनमुख न भए कबूल॥

जन्मसाखी में लिखा पड़ा है। पुरानी साखी में देख लो सत्तर जामे संतजन चौदह सतगुरुराए और जो नई साखी है उस में चौहत्तर जामे संतजन दस सतगुरुराए, बोलो भई। जब तक वो खुद न आए छुटकारा नहीं, बाकी सब कुछ उस के हाथ में है। वो कभी कोई रूप धारता है तो कभी कोई। जो तड़पते हैं उनके लिए है, बाकियों के लिए नहीं। किसी को गर्ज़ ही नहीं। मालिक ही भुला दिया। अपना घर ही भूल गए। प्रेमियों से पूछो करने देता है किसी को? जिन को नाम मिला है बैठो ज़रूर, चाहे मन लगे या न लगे। मन बैठने ही नहीं देता। सैकड़ों रुकावटें डालता है। कई बार ऐसा रस लेता है, कहता कि

बस भई! अपना तो रस हो गया। फिर ऐसा धोखा देता है कि पलटा कर मारता है। बड़ा धोखेबाज़ है यह मन। सबसे बड़ा बदमाश यही है। सब का दुश्मन भी यही है। सोच लो! पूज्य मस्ताना जी कहा करते थे कि देखो भई, कितने वकील हैं हिन्दुस्तान में? कि सैकड़ों, करोड़ों हैं पर यहाँ तो एक ही वकील है। सबकी मिट्टी पलीत कर रहा है। सबको नचा रहा मन, हाँ जीः

पाठी– ब्रह्म वेद सही किया, सिव जोग पसारा॥
बिस्नु माया परगट किया, उरले व्योहारा॥
तिर देवा ब्याधा भये, लिये विष का चारा॥
कर्म की फाँसी डारि कै, फांसा संसारा॥

मैनेजर साहिब जी–सोचो! कहता है कि मैं तो अच्छे कर्म करता हूँ, शुभ कर्म करता हूँ, देखो! जितने कर्म-धर्म हैं सब ठगी है।

करम धरम सभि बंधना पाप पुन सनबंधु॥
ममता मोहु सु बंधना पुत्र कलत्र सु धंधु॥
जह देखा तह जेवरी माइआ का सनबंधु॥
नानक सचे नाम बिनु वरतणि वरतै अंधु॥

सब अंधेर खाता है। हाँ जीः

पाठी– कर्म की फाँसी डारि कै, फांसा संसारा॥
सार शब्द.....

मैनेजर साहिब जी–अन्दर वाले के आगे प्रार्थना करे, बस।

सरणि परे गुरदेव तुमारी॥ तूं समरथु दइआलु मुरारी॥

कि ऐ सतगुरु मैं तेरी शरण आया हूँ। तू समरथ है। वो सतगुरु तो सदा दयाल है। सुखों-दुखों में डालने वाला काल है। किस पर दया करता है, सोचो! यह दीन बने तो वो दयाल बने। यह गरीब बने तो वो गरीब निवाज़ बने। सब अहंकार में भरे पड़े हैं। जिसको पूछो सब कुछ जानता हूँ। जानता हो तो शांती न मिल जाए। काम क्रोध की अग्नि न बुझ जाए, कि ऐसे ही जानता है। दीनता से पुकारे।

हरि के भगत सदा सुखवासी, बाल सुभाइ अतीत उदासी॥

कि मासूम बच्चों की तरह बन जाओ कि मालिक मैं तो कुछ जानता नहीं, तेरी मेहर ही है। यही ईसा ने लिखा है–

"Be like children for shall enter into the kingdom of heaven."

कि मासूम बच्चों की तरह बन जाओ फिर पुकार करो। उस पर दया करता है। इतनी हस्ती को मिटाए उस पर दया करता है। अगर जरा-सा भी अहंकार आया बस। कबीर साहिब ने लिखा है कि तूने अगर मालिक को प्राप्त करना है तो क्या कर–

कबीर रोड़ा होइ रहु बाट का तजि मन का अभिमानु॥
अैसा कोई दासु होइ ताहि मिलै भगवानु॥

कि रास्ते का रोड़ा हो जा। हरेक की ठोकर खा। फिर कहते हैं, कि यह भी नहीं रोड़े से किसी को चोट लगेगी। तू खेह बन जा। फिर कहते हैं, कि यह भी नहीं कि खेह से किसी के कपड़े खराब होंगे। हाथ-पाँव खराब होंगे। तू साफ पानी की तरह बन जा। फिर कहते हैं यह भी नहीं। आप ही जबाब दे रहे हैं कि ठंडे पानी की ज़रूरत हो तो गर्म मिल गया, गर्म की ज़रूरत हो तो ठंडा मिल गया, फिर दुख।

कबीर पानी हूआ त किआ भइआ सीरा ताता होइ॥
हरिजनु अैसा चाहीअै जैसा हरि ही होइ॥

(1372/8)

कि अपनी हस्ती को ऐसे मिटा जैसे मालिक ने मिटाई हुई है। वो सब का मालिक है। उस की निशानी है कोई? कोई गालियाँ निकाले किसी की रोटी बंद की? सोच लो! इतनी हस्ती को मिटाए जैसे मालिक ने मिटाई हुई है। तब मालिक का रूप बन सकता है। दीनता से पुकारे। दयाल मुरारी क्या? राक्षसों को मारने वाला। जेसे रामचन्द्र ने बाहर राक्षसों को मारा। वो क्या करते थे? हमारे तन को खराब करत थे, पकाते थे, खाते थे। अंदर वाला सतगुरु, अंदर वाला राम, अंदर वाले राक्षसों को मारने वाला है। कौन से? यह काल, महाकाल, काम, क्रोध, मोह, अहंकार, मन, माया। इसके हाथ में चढ़े हुए हैं। वो बचाए तो बचाए, सोच लो! कर लो कोशिश अगर किसी से होती है, कोई बच सकता है? ऋषि-मुनी सबको खा गया, देख लो! रिद्धिओं-सिद्धिओं वालों को सबको खा गया। सबको देख लो! वो बचाए तो बचाए। सब उसके हाथ में है, बाकी सब ठगी है। सिमरण करें, प्रार्थना करें कि सतगुरु तू बिठाए तो बैठ सकता हूँ। और कहे कि तेरी मेहर से बैठा हूँ। तेरी मर्ज़ी है जैसे रखें। कुछ माँगे न। तेरी मौज़ है। मैं ने तो तेरी सेवा और सिमरण करना है। वो फायदा उठाता

है। चार दिन बैठता है नहीं, मैं इतना करता हूँ। मैं तीर्थ कर आया हूँ बस! मैं और अहंकार बढ़ गया। हाय! हाय! मैं तीर्थ कर आया हूँ। बस! वो तीर्थ इसके अंदर है। बाहर नहा-नहा कर थके मैले साफ हुई? क्या काम घटा? क्या मोह घटा? क्या क्रोध घटा? क्या लोभ घटा? क्या अहंकार घटा? वो अमृतसर अन्दर है। वो पराग अंदर है। यह समझाने के लिए है। मीराँ कहती है कि मैं ने गंगा-यमुना अंदर देखी है।

इड़ा पिंगुला अउर सुखमना तीनि बसहि इक ठाई॥
बैणी संगमु तह परागु मनु मजनु करे तिथाई॥

(974/6)

वहाँ तो जाते हैं। इस में कब नहाओगे? यह तो नमूने हैं।

अंतरु निरमलु अंमृत सरि नाए॥ सदा सूचे साचि समाए॥

(363/16मः5)

काइआ अंदरि अमृतसरु साचा मनु पीवै भाइ सुभाई हो॥

(1046/3 मः3)

यह वहम तो जाते नहीं, वो नया देश बना देते हैं, आएँगे सुनेंगे, उपदेश ले-ले, मान जाए। इसलिए कहा उन्होंने। इस में रह गई सारी दुनिया। बाहर ही बाहर रह गए। कबीर को कहता है काल कि कैसे ले जाएगा तू।

पाठी– तवै काल अस बानी सकल जीव बस हमारे ज्ञानी॥

मैनेजर साहिब जी–ज्ञानी कबीर को कहता हैः

पाठी– तीन सौ साठ पैठ उरझेरा॥ कैसे हंसन लेव उबेरा॥
गंगा यमुना सरसती ज्ञानी॥ पुष्कर गोदावरी कुत का मानी॥

मैनेजर साहिब जी–कहता है यह सब मेरे अड्डे हैं।

पाठी– बद्री केदार हम का ठाऊँ॥

मैनेजर साहिब जी–लोग तो कहते हैं कि वहाँ मुक्ति मिलेगी। वो कहता है कि यह सब मेरे अड्डे हैं। तौबा है।

पाठी– बद्री केदार हम का ठाँऊ यहाँ तहाँ हम तीर्थ लगाऊँ॥

मैनेजर साहिब जी–वो तीर्थ अन्दर हैं।

अड़सठि तीरथ हरिनामु है किलविख काटणहारा॥''

(1009/3 मः1)

पाठी– मथुरा नगर उत्तम जो जानी॥ जगन्नाथ जस बैठे ध्यानी॥
सेत बन्ध पुनः किया ठिकाना॥ पुष्कर क्षेत्र आए यम थाना॥
हिंग लाज जीव यह सोई॥ काल का नगर कोट महि होई॥

मैनेजर साहिब जी–यहीं मुक्ति तलाश करते हैं सभी, देख लो, क्या? कहता है कि फिर और मुक्ति बना लेते हैंः

पाठी– गढ़ गिरनार दंत्त को थाना॥ ताहिं घेर यम बैठ निदाना॥
कमरु माह कमी इच्छा देवी॥ नीम खार मिशरी चख लेवी॥
नगर अजुध्या रामहिं राजा॥ ठहर रहा बांध हम सब साजा॥
यही बैठ जग जीव भुलाई॥ किह विधि हंसन लेव मुकताई॥

मैनेजर साहिब जी–कि मैं ऐसी बला हूँ कैसे ले जाएगा। काफी झगड़ा किया। जब फिर पेश न गई फिर उन को डराता है। क्या रूप धारता है? हाँ जीः

पाठी– 'निरंजन वचन'
तुम को काल निरंजन राई॥ हे ज्ञानी का क्या करो बड़ाई॥

मैनेजर साहिब जी–उसने कहा कि जिस को मैं नाम दूँगा वो जरूर जाएगा। कि क्या बड़ाई करता है। हाँ जीः

पाठी– पाँव पाताल शीश अकाशा॥ सौ जोजन अलख प्रकाशा॥
गरजै काल महा बिकरारा॥ सत्रह लाख लो पाँव पसारा॥

मैनेजर साहिब जी–इतना रुप धारण करता है सत्तर लाख दूर तक हाय! हाय!

पाठी– लपकै जीव जीमे टूटे तारा॥ जिमि बिजली चमकै अँधियारा॥
सूंड बढाए दंत अति बाढा॥ मध्य घेर ज्ञानी कहै ठाढा॥
हमरे पौरूष हम बरियारा॥ तुम ज्ञानी का करो हमारा॥

मैनेजर साहिब जी–उसको अब घेर लिया। अब वो क्या करता है?

पाठी– ज्ञानी पुरुष शब्द कीऔ जोरा॥ पकड़ सूंढ दांत गहि मोरा॥

मैनेजर साहिब जी–सत्तपुरुष खुद आया था। उस ने वो रुप धारा कि उस को, हाँ जीः

पाठी– मारो शब्द पांव कर पेली॥ तोर सूंढ समुद्र गहि मेली॥
पुरुष रुप तब ही पुनः धारा॥ जौन सरूप काल औतारा॥

मैनेजर साहिब जी–जिस रूप में उस को शक्ति दी थी, वो रूप धार लिया, हाँ जीः

पाठी– निरंजन वचन–

भया अधीन दोइ कर जोरी॥

मैनेजर साहिब जी–अब आगे देखो क्या करता है। हाँ जीः

पाठी– भया अधीन दोइ कर जोरी॥ तुम सतपुरुष सरन हम तोरी॥
तुम सों बाल बुद्धि हम धारा ॥ अब तुम करो मोर उद्धारा॥
बालक कोट भाँति गरियावत ॥ माता पिता मन एक नहीं आवत॥
तुम ही पुरुष दीन्ह मोहे राजू॥ औ पुन दीन सकल मोहि साजू॥
तिहि पर हमने गाऊँ बसावा॥ लीन्ह सुन्न ठिकान बनावा॥
तहँ हम साहब जाय रहाई॥ बिन आज्ञा कछु नाहीं कराई॥
अब लग साहेब में नाहिं चीन्हा॥ सतपुरुष तुम दर्शन दीन्हा॥
दोइ कर जोरि चरण चित लावा॥ धन्यभाग हम दर्शन पावा॥
हम मोहिं साहेब भेद बतावो॥ पाओं चीन्ह हंस पहुँचाओ॥

'ज्ञानी वचन'

सुन रे काल निरंजन राई॥ पुरुष नाम है बीरा भाई ॥
जो हंसा चित भगति समोई॥

मैनेजर साहिब जी–कि सतगुरु के नाम की भक्ति सिखाता हूँ। जो यह करेगा उसको रोकना नहीं हाँ, जीः

पाठी– ताको खूट गहै मत कोई॥

मैनेजर साहिब जी–जैसे सेंटर का महकमा अलग है, सूबे का अलग है। सेन्टर वालों का सूबे वाले कुछ नहीं कर सकते। लेने देने तो खत्म करने पड़ेंगे। सब के होंगे। कर तो कुछ नहीं सकते, पर सतगुरु का महकमा अलग है, काल का अलग है।

पाठी– जो निज बीरा पाइ है आवै लोग हमार॥
ताको खूंट गहो मत सुनो काल वटमार॥

मैनेजर साहिब जी–अब फिर सवाल करता है। क्या?

पाठी– 'निरंजन वचन'

सुनो गुसांई बिनती मोरी॥ बीरा पाय करै कछु औरी॥

मैनेजर साहिब जी–नाम भी ले-ले, करता और और है। जप-तप पुराने वहम जाते नहीं। ऐसे डाले हैं उसने। गुरुनानक साहिब ने लिखा है–

एतु मोहि डूबा संसारु॥ गुरमुखि कोई उत्तरै पारि॥
एतु मोहि फिरि जूनी पाहि॥ मोहे लागा जमपुरि जाहि॥

गुरु दीखिआ ले जपु तपु कमाहि॥ ना मोहु तूटै न थाइ पाहि॥
नदरि करे ता एहु मोहु जाइ॥ नानक हरि सिउ रहै समाइ॥

(356/7 म: 1)

नाम लेकर भी इधर-उधर भटकता है। यह वहम निकलते नहीं जल्दी। हमारी यह रीत है, वो रीत है। हाँ जीः

पाठी– सुनो गुसांई बिनती मोरी॥ बीरा पाय करै कछु औरी॥
ज्ञान कहो अन्त चित वासा॥ आवागवन की राखों आसा॥

मैनेजर साहिब जी–कहता है कि करता तो है नहीं कुछ, ज्ञान छाँटता फिरता है कि ऐसे है, ऐसे है। कि फिर तो मेरा ही जीव हुआ न। हाँ जीः

पाठी– ज्ञानी वचन–

सुनो निरंजन वचन हमारा॥ नहीं वह सत जीव तुम्हारा॥

मैनेजर साहिब जी–कि नहीं, वो जीव तुम्हारा नहीं, उसे छोड़ूँगा नहीं ले कर जाऊँगा। कोर्स करवा कर। तभी टाइम लगता है। इसलिए कई-कई जन्म लग जाते हैं। कुछ तो कर्म हैं और कुछ यह करता ही नहीं। पुराने वहम छूटते नहीं, बस! उसकी रज़ा में रहे। दुख हो, सुख हो, अमीरी हो, गरीबी हो। हिसाब से कर्म कटवाने हैं। काल के कर्ज़े खत्म करने हैं। फिर ले कर जाना है।

दुखु सुखु करतै धुरि लिखि पाइआ, दूजा भाउ आपि वरताइआ॥
गुरमुखि होवै सु अलिपतो वरतै मनमुख का किआ वेसाहा रे॥

(गुरु अमरदास जी)

दुख-सुख अमीरी-गरीबी, तंदरुस्ती-बीमारी अपने कर्मों अनुसार लिखवा कर लाए हैं। उस के हिसाब से काम चलने हैं। पता है कितना संचित कर्मों का स्टोर पड़ा है। आगे वो भी खत्म करने हैं। वो कई बार तो ऐसे ही कटवा देते हैं। वो समझता है कि दुख है मगर यह एक किस्म का आपरेशन है। दुख हो, सुख हो, अमीरी हो, गरीबी हो, हक हलाल की कमाई करे और सिमरण करे और उसकी रज़ा में रहे। किसी को ज़्यादा दे किसी को कम दे, किसी को मारे, किसी को रखे। बच्चा पैदा हो गया लड़का या लड़की उसकी मौज़। बीमार हो गया उसकी मौज़, राज़ी हो गया उसकी मौज़, मर गया उसकी मौज़। थोड़ा दे दिया उसकी मौज़, ज़्यादा दे दिया उसकी मौज़, उसी की रज़ा में रहे।

जिउं भावै तिउं राखि लै॥

जो करता है, ठीक करता, बस हम यह चीज़ें माँगते हैं– जी बीमारी है,

लड़काा ऐसा है, पैसा नहीं है। यह है, वो है। जिसको सुख दिया उससे सुख लेना है। जिसको दुख दिया उससे दुख लेना है।

सुखु दुखु पूरब जन्म के किए॥ सो जाणै जिनि दातै दीए॥
किस कउ दोसु देहि तू प्राणी सहु अपणा कीआ करारा हे॥

देख लो! रामचन्द्र ने बाली को मारा और उसी बालि ने कृष्ण रूप में राम को मारा। उनको भी बदला लेना पड़ा। हम कौन है? यह कर्म भी काटने हैं, जब तक यह कर्म खत्म नहीं होते। कर्मों के जाल में पहले ही फँसे पड़े हैं। सतगुरु निकाले तो निकाले। पता नहीं कितना कर्मों का स्टोर पड़ा है। धृतराष्ट्र को पूछा गया कि "तू अन्धा क्यों हुआ? वो कहने लगा कि मुझे सौ जन्म की खबर है। मैंने ऐसा कोई कर्म नहीं किया जिस से मै अन्धा हूँगा। जब कृष्ण भगवान ने तव्वजो दी तो पता चला कि एक सौ छः जन्म पहले कोई ऐसा कर्म किया था जिसका बदला आज दे रहा है। देखो! इतना स्टोर पड़ा है। अगर अच्छी तरह सिमरण करे।

प्रभ कै सिमरनि मन की मलु जाइ॥ अंम्रित नामु रिद माहि समाइ॥

(263/3 मः 5)

सिमरत नामु किलबिख सभि काटे॥ धरम राइ के कागर फाटे॥

(1348/12 मः 5)

जब कर्म खत्म होते हैं फिर नशा आता है, फिर रस आता है। बोलो! मीरा क्या कहती है कि मैंने ऐसे जपा है।

पाठी– मीरा रो मन राम ही राम रटै।
दासी रो मन राम ही राम रटै।
मीरां रो.....

मैनेजर साहिब जी–राम-राम का मतलब यह नहीं कि राम-राम करना। वो सिमरन जो रविदास ने बताया, वो किया।

पाठी– राम जी रटै कोई भगवान रटै।
दासी रो मन राम ही राम रटै।
मीरा रो.....

मैनेजर साहिब जी–वो कहती है कि मैं फलानी जगह गई, फलानी जगह गई। सब ठगी निकली। हम ने समझा बड़ा फकीर है लेकिन सब ठगी निकली। वो तड़पती रही, कहती है अब छुटकारा हुआ।

पाठी– राम नाम तू जप ले प्राणी कोटकि पाप कटै।

मीरां रो.....

जन्म जन्म की खता पुरानी नाम ही लेत फटै।

मैनेजर साहिब जी–जन्म जन्म की खता पुरानी;

संचित कर्मों का store पड़ा है। काल ने रचना ही ऐसी की है। कोई कारखाना चलाते हैं तो Reserve Fund रख लेते हैं कि मौके पर काम आ जाए। घर में माया संभाल कर रखते हैं कि मौके पर काम आ जाएँगे। काल ने भी कर्मों का Store स्टोर रख छोड़ा, स्टोर! जो प्रालब्ध लिखवा कर लाए हैं वो तो भुगत जाएँगे। अब आगे ऐसे कर्म करे जिस का कोई बन्धन न हो, उस से उस का छुटकारा हो जाएगा। नहीं तो उस ने संचित कर्मों का store स्टोर रख छोड़ा है और वो आगे पेश कर देता है कि यह पड़े हैं, बोलो! ''जन्म-जन्म की खता पुरानी'' वो भी इस से कट जाते हैं। हाँ, जीः

पाठी– नाम ही लेत फटै।

मीरा रो.....

मैनेजर साहिब जी–आसान से आसान रास्ता है। न यह घरबार छोड़ना है, न बालबच्चे छोड़ने हैं, देख लो! न जंगलों में जाना है। फिर भी करता नहीं।

सिमरण मार्ग सहज का सतगुरु दिया बताए॥

स्वांस-स्वांस सिमरण करो इक दिन गुरु मिल जाए॥

(कबीर साहिब)

ख़्याल निकालने की ज़रूरत है। यह भी काम करे, रात को ज़रूर समय दे। उठते-बैठते, चलते-फिरते लगा रहे। रोटी बनाते भी लगा रहे। छोड़ना क्या था? यह घर-बार, बाल बच्चे नहीं छोड़ने थे। क्या छोड़ना था?

तिआगना तिआगनु नीका कामु, क्रोध, लोभु, तिआगना॥

यह काम, क्रोध, मोह, लोभ, अहंकार त्यागने थे॥''

यह छोड़ना था। घर बार छोड़कर गया, क्या बना?

राजा जड़ भरत राजपाट छोड़ कर जंगलों में गया तपस्या करने। अब तो जंगल और तो कोई नहीं। एक मृगणी आने लग गई। उस से प्यार पड़ गया। उस से तो मुहब्बत पड़ गई, बोलो! उसका ख़्याल रहने लगा। मृगणी मर गई। उसके वियोग में वो भी मर गया। मृग की योनी मिली। क्या फायदा हुआ?, सोचो! घर बार छोड़ कर गया। इससे तो घर अच्छा था। सोचो! यह ऐसे ही

है, यह दिखावा है। काल ने रचना ही ऐसी की है। यह धोखा है। कह देते हैं कि बड़ा भक्त, बस!

पाठी– राम नाम तू जप ले प्राणी कोटिक पाप कटै॥
मीरा रो मन.....
कनक कटोरे अमृत भरियो, पीवत कौन हटै॥
मीरा रो मन.....

मैनेजर साहिब जी–ख़्याल निकले तो यह रूह अन्दर जाने लगी। फिर अमृत आने लगेगा। सोच लो! फिर उस को कौन छोड़े? दुनिया की तरफ फिर मुँह नहीं करता। यह काम करना था।

काइआ नगरु नगरु है नीको विचि सउदा हरि रसु कीजै॥
(1323/13 मः4)

यह सौदा आकर करना था। यह सबसे आला सौदा है। सोच लो!

काइआ नगरु नगरु है नीको विचि सउदा हरि रसु कीजै॥
(1323/13 मः4)

अगर और अच्छी तरह से करे, जैसे पहाड़ की तरफ ठंड और आगे जाओ तो और ठंड, चोटी पर जाओ तो और ठंड। इस तरह ज्यों-ज्यों आगे जाएगा। बढ़िया से बढ़िया अमृत है। असली त्रिलोकी से पार जा कर मिलता है।

ऊपरि आदि सरब तिहु लोई सचु नानक अंमृत रसु पाइआ॥
(1042/14 मः 1)

वहाँ मिलता है असली।

पाठी– कनक कटोरे अमृत भरियो पीवत कौन हटै॥
मीरा रो मन.....
राम जी रटै कोई भगवान रटै रे।
मीरा रो मन.....

मैनेजर साहिब जी–जिन को पूछो वक्त नहीं। जिस को पूछो वक्त नहीं। वक्त सबके पास है मगर ऐसे ही बर्बाद कर रहा है। इधर-उधर गपौड़े मारेगा, अखबार पढ़ेगा, और और है, सोच लो! देख लो भई! बीमार पड़ा है खाट पे, उठ नहीं सकता। फिर बच्चे को बुलाता है कि फलाने खेत का काम कर आ, फलाने खेत का काम कर आ। वो याद है लेकिन सिमरण याद नहीं। कहता है सिमरण नहीं बनता, बोलो भई! उस चीज़ का सिमरण है मगर यह नहीं। जिसको पूछो

वक्त नहीं, वक्त तो बहुत है– रोटी खाते, हल चलाते, काम करते। कभी कोई ख़्याल आता है, कभी कोई, सिमरण करो बस!

पाठी– कनक कटोरे अमृत भरियो पीवत कौन हटै॥

मीरा रो मन.....

मीरा के प्रभ हरि अविनाशी तन मन ताई पटै॥

मीरा रो मन.....

मैनेजर साहिब जी–सब दुनिया उल्टे रास्ते पड़ी है। गुरुनानक साहिब जी ने लिखा है:

सभि जप सभि तप सभि चतुराई॥ उझड़ि भरमै राहि न पाई॥

सब उल्टे रास्ते हैं।

बिनु बूझे को थाह न पाई॥ नाम बिहूणै माथै छाई॥

एक सच्चे नाम की भक्ति है जो असली है। बस सिमरण करो वह असली चीज़ है, जपो! बैठ कर तो देखो, तजुर्बे करते हैं। महीना दो महीना 'अच्छा समय दो। दुनिया के काम भी करो। फिर देखो शांती आती है कि नहीं, रस आता है कि नहीं। यह कीमती वक्त है। बहुमूल्य जन्म है, ऐसे ही बर्बाद करके चला गया। बाहर से तो ज्ञानी भी है, गुणी भी है। देख लो! बाहर से सब कुछ बन जाता है। भेष बना लिए। किसी ने कुछ कर लिया, किसी ने कुछ कर लिया। अन्दर ज़रा भी ख़्याल नहीं।

बाहरों हउमे कहे कहाय अंदरों मुक्त लिव कदे न लाय॥

बाहर से सब कुछ बन जाता है, देख लो! बस अहंकार में फिरती है दुनिया, सोच लो!

माइआ मोहु गुरु सब्द जलाय, निर्मल नाम हृदय सत पाय॥

अन्दर शब्द गुरु को प्रगट करे, नाम से ताल्लुक जोड़े। उस में अमृत है। मोह माया का ख़्याल निकल जाता है। नहीं तो बस। मन काबू में आता है यह। नहीं तो किसी के बस में नहीं आता।

बिनु गुर सबदे मन नाहि ठउरा॥

मन मूसा पिंगल भिआपी पारा हरिनामु॥

हज़ारों यत्न कर लो, उल्टे लटक लो। मन काबू नहीं आएगा। आएगा तो नाम के रस से। हाँ जीः

पाठी– सार शब्द गह बांचिहों मानो इतबारा॥
सतपुरूष अच्छे बिरछ निरंजन डारा।
तीन देव शाखा भये पाती संसारा॥
सार शब्द.....
तिर देव ब्याधा भये, लिए विष का चारा।
कर्म की फाँसी डारि के फांसा संसारा॥
सार शब्द.....
जोति सरूपी हाकिम, जिन अमल पसारा॥
तीन लोक दसहुं दिसा, जम रोके द्वारा॥

मैनेजर साहिब जी–काल भी दूर, मालिक भी दूर, नीचे एक ताकत बैठी है जो सब को रोके बैठी है। हाँ जीः

पाठी– तीन लोक दसहुं दिसा, जम रोके द्वारा॥
सार शब्द.....
अमल मिटावौं ताहि का पढ़वौं भव पारा॥
कहैं कबीर अमर करौ जो होय हमारा॥

मैनेजर साहिब जी–जिनका हमसे ताल्लुक पड़ा है। यह काम करो। यह छुटकारे वाला रास्ता है जो मैं तुम्हें बताता हूँ।

पाठी– कहैं कबीर अमर करौ जो होय हमारा॥
सार शब्द.....

मैनेजर साहिब जी–वो शब्द बोल भई। कोई बोले राम-राम। छोटा सा शब्द है। गुरु अंगद साहिब का सुनो! कोई कुछ करता है, कोई कुछ करता है। अपने नाम का सिमरण करने से भी अंदर शांती आ जाती है। देखो भई! असली चीज़ तो कुछ और है। कोई करके तो देखे। एक अंग्रेज़ ने लिखा है कि अपने नाम का सिमरण करने से अंदर शांती आने लग जाती है। देखो भई! असली चीज़ तो फकीरों से मिलती है।

प्रभ का सिमरणु साध कै संगि॥ सरब निधान नानक हरि रंगि॥
(262 मः 5)

रामु नाम गुरवचनी बोलहु॥

उन का वचन कहाँ है? जिस फकीर से काम लेता है, सोचो!

प्रभ जी बसहिं साध की रसना॥

(263/4मः)

राम नामु गुरबचनी बोलहु॥ सन्त सभा महि इहु रसु टोलहु॥
गुरमति खोजि लहहु घरु अपना,
जो तरीका वो बताते हैं:
बहुड़ि न गरभ मझारा हे॥

(1030/6 म. 1)

पाठी– कारण करण करीम ॥ किरपा धारि रहीम॥
कोई बोलै राम-राम कोई खुदाइ॥
कोई सेवै गुसईआ कोई अलाहि॥
कारण करण....

मैनेजर साहिब जी–कितने नाम हैं, देखो! कोई खुदा बोलता है। कोई-राम-राम करता है, कोई अल्लाह-अल्लाह करता है। चीज़ तो न मिली। रोटी-रोटी कहने से तो कुछ नहीं बनता। उस को प्रकट करे तब है। सोच लो!

नानक बुझे एह विधि गुरमति हरिनामु लिव लाया॥

लिव तो न लगी, सोचो! बना क्या? सारी उमर यह करते रहे, अंदर जाने की कोशिश तो न की! किसी ने माला पकड़ ली। किसी ने कुछ कर लिया। बातें भी करते जाते हैं, देखो! यह हाल है। चीज़ अंदर है। अन्दर अभ्यास करे फिर चीज़ मिलेगी। फिर रस आएगा।

कोई बोलै राम-राम॥ कोई खुदाइ॥

लफ्ज़ बदलते रहे हैं बदलते रहेंगे। लफ्ज़ों पर नहीं। फकीर को अगर Authority है, अगर नहीं तो नहीं। दो लफ्ज़ तो हर कोई बता देता है। दो लफ्ज़ों का क्या है? उसका नाम भी आगे दर्ज हो। जैसे यहाँ अफसर भर्ती करने आते हैं। अन्दर ऐसे भी है। काल के फकीर भी आते हैं। सतगुरु के भी आते हैं। यह भक्ति पर है, लफ्ज़ों पर नहीं। मौका देखते हैं कि कैसे चलाना है काम। नई बादशाही है वो अपने हिसाब से हुक्म चलाएगा। इस तरह संत भी मौके के बादशाह हैं। वो अपना हुक्म चलाते हैं। उन्होंने तो हिसाब से ले कर जाना है।

पाठी– कोई नावै तीरथ कोई हज जाइ॥
कोई करे पूजा कोई सिरु निवाइ॥

कारण करण.....

कोइ पढ़ै वेद कोई कतेब॥

कोई ओढ़ै नील कोई सुफेद॥

मैनेजर साहिब जी–पढ़ने-पढ़ाने में रह गए मतलब तो लिया ही नहीं।

तब ते जीव भया संसारी॥ छूटे न ग्रन्थ न होये सुखारी॥

सुरती पूरान सब कहियो उपाये॥ छूटे न अधिक अधिक उरझाये॥

(तुलसी साहिब)

पढ़ने-पढ़ने में रह गए। जो उपाय थे वो तो किए ही नहीं।

रतन रतन पदार्थ बहु सागरु भरिआ राम॥

वाणी गुरबाणी लागे तिन हथि चढ़िया राम॥

(442/15 मः 4)

बाणी तो हीरे जबाहरात का समुद्र है, सोच लो! हाय! हाय!

पाठी– कोई पढ़े वेद कोई कतेब॥

कोई ओढ़े नील कोई सुफेद॥

कारण करण.....

मैनेजर साहिब जी–वेदों में किसी ने कुछ बनाया, किसी ने कुछ बनाया।

पाठी– ''जितने बड़े-बड़े सच्चे ज्ञानी और महात्मा हुए हैं, सब ने इन पाखंडियों की असलियत को जाना परंतु प्रकट न किया और उन का पर्दा न उठाया, परन्तु अब हम साफतौर से कहते हैं कि ऐसे दिखावे के कामों में भूलकर भी मन को न लगाओ। इनसे मालिक नहीं मिलता। फिर विचित्र नाटक में लोगों को हिदायत करते हैं कि ऐ लोगो! यह बात अच्छी तरह समझ लो कि जो लोग शरीर पर बनावटी भेष धारते हैं, ऐसे पाखंडियों को मालिक नहीं मिलता। जो लोग पाखंड रचाते हैं, उनको प्रलोक में मुक्ति नहीं मिलती। इसमें कोई शक नहीं कि इस दुनिया में उनकी ज़िन्दगी के दिन अच्छे गुज़र जाते हैं। क्योंकि उनके बहुमुखी स्वांग को देख कर बड़े-बड़े राजा महाराजा भी उन्हें पूजने लग जाते हैं। इन स्वाँगों में परमेश्वर नहीं मिलता, चाहे कोई कहीं खोजता फिरे। जिन लोगों ने अपने मन को काबू में किया है, उन्होंने ही सच्चे सतगुरु पारब्रह्म को जाना है।

जे-जे भेख सु तन मैं धारै॥ ते प्रभु जन कछु कै न विचारै॥

समझ लेहु सभ जन मन माहिं॥ डिंभन मैं परमेसुर नाहिं॥

जे जे करम कर डिंभ दिखाई॥ तिन परलोभन मैं गति नाही॥
जीवत चलत जगत के काजा॥ सुआंगन देखि करि पूजत राजा॥
सुआँगन मैं परमेसुर नाहि॥ खोजि फिरै सभही को काही॥
अपने मनु कर मैं जिहआना॥ पारब्रह्म को तिनी पछाना॥''

मैनेजर साहिब जी–हाँ जी, हाय! हाय! मन को काबू करना था। हाँ, जीः

पाठी– कोई कहै तुरक कोई कहै हिन्दु॥
कोई बाछै भिसतु कोई सुरगिंदू॥
कारण करण.....
कहु नानक जिनि हुक्मु पछाता॥

मैनेजर साहिब जी–आखीर में फैसला देते हैं, क्या?

पाठी– कहु नानक जिनि हुक्मु पछाता॥
प्रभ साहिब का तिनि भेदु जाता॥

मैनेजर साहिब जी–जिस हुक्म से यह दुनिया बनी है।

हुकमी होवनि आकार हुक्मु न कहिआ जाई॥
हुकमी होवनि जीअ हुकमि मिलै वडिआई॥
हुकमी उतमु नीचु हुकमि लिखि दुख सुख पाईअहि॥

जिस ने हुकम बनाया उस को जानना यही भक्ति है। हुक्म कब ज़ाहिर होता है, जब बोले शब्द।

सबदे धरती सबदे आकास॥ सबदे सबद भया प्रकास॥

शब्द की लय को कहते हैं 'नाम'।

नाम के धारे सगले जन्त॥ नाम के धारे खण्ड ब्रह्मँड॥
(284/11 मः5)

रोमि रोमि रविआ हरिनामु॥ (1144/4 मः 5)

उस नाम को प्रगट करना यह असली भक्ति है। यह शांती देने वाली है। यह जन्म मरण के बन्धन छुड़ाने वाली है। नाम इस के अन्दर है। लफ्ज़ नहीं, सोचो!

नउ निधि अंम्रितु प्रभ का नामु॥ देही महि इस का विसरामु॥
(293/15 मः 5)

काइआ नगरी महि मंगणि चड़हि जोगी ता नामु पलै पाई॥
(908/14 मः 3)

वो इस के अन्दर है। गुरु साहिब मिठुन कोट गए। वहाँ मियाँ मिट्ठा मिला।गुरुनानक साहिब ने फरमाया "मिया मिट्ठे! सच्चे नाम के बिना इन्सान का कल्याण नहीं। कि सच्चा नाम क्या चीज़ है? कि सच्चा नाम एक अमोलक वस्तु है। कि जी फिर भी कुछ तो बताओ, कैसे पता चले। एक तरफ ले गए। पूछा कि सुन तुझे कुछ सुनाई देता है? कि नहीं। हृदय साफ था, बीज डालने की ज़रूरत थी। उन्होंने तव्वजो दी। कहने लगा कि मुझे ऐसा मालूम होता है कि मेरे रोम रोम में नाम की लहरें चल रही हैं।"

रोमि रोमि रविआ हरिनामु ॥ सतिगुर पूरै कीनो दानु॥

(1144/3 मः 5)

वो रोम-रोम में है, ज़र्रे-ज़र्रे में है। उसको प्रगट करना यही असली भक्ति है।

पाठी– कहु नानक जिनि हुक्मु पछाता॥
प्रभ साहिब का तिनि भेदु जाता॥
कारण कारण....

मैनेजर साहिब जी–सब ज्ञानों-ध्यानों का, और पढ़ने-पढ़ाने का मतलब है, नाम को प्रगट करना।

नानक पढ़णा गुनणा इकु नाउ है बूझै को बीचारी॥

(1246/17 मः 3)

होरु कूडु पड़णा कूडु बोलणा माइआ नालि पिआरु॥
नानक बिणु नावै को थिरु नहीं पड़ि-पड़ि होई खुआरु॥

(84/14 मः 3)

हाँ जी, बस भई! चलो बोल भई!

पाठी– कारण करण करीम, किरपा धारि रहीम॥

धन धन सतगुरु तेरा ही आसरा

सत्संग

'लख चौरासी खत्म हुई ना कोट कल्प युग चार गए'

सत्संग के वचन

पाठी– लख चौरासी खत्म हुई ना कोट कल्प युग चार गए।

मैनेजर साहिब जी–चौरासी में कैसे धक्के खा रहे हैं, बोलो! कभी कीड़े बनते हैं, कभी पतंगे बनते हैं, कभी घोड़े बनते हैं, कभी बैल बनते हैं। कभी नरकों के दुख उठाते हैं। कभी स्वर्गों के सुख उठाते हैं। कैसे फंसे हैं? फिर बोल भई!

पाठी– लख चौरासी खत्म हुई ना कोट कल्प युग चार गए॥
नाक में दम आ गया अब तो मरते मरते हार गए॥
कई बार जन्म लिया पृथ्वी पर कोई दाद फरियाद नहीं॥
कितनी मां के पड़े पेट में एक पेट दर याद नहीं॥
कितने हुए भाई बहन हम भूल गए हमें याद नहीं॥
कितनी हुई सन्तान हमारे कोई मेंढ़ मरियाद नहीं॥
शुभ अशुभ कर्म करने से नरक स्वर्ग कई बार गए॥

नाक में दम.....

मैनेजर साहिब जी–कैसे फंसे हैं? सुनो! समझने की बात है। पहले वो मालिक अपनी मस्ती में आप मस्त था। न खण्ड-ब्रह्माण्ड थे, न त्रिलोकी थी, न त्रिलोकी नाथ था, न बह्मा था, न विष्णु था, न शिव था, न गोरख था, न नाथ था। गुरुनानक साहिब फरमाते हैं।

अरबद नरबद धुधुकारा॥

पहले धुंधुकारा ही था। फिर उस की कोई मौज़ हुई कि मैं एक ऐसी रचना करूं। एक हिलोर हुई, एक आवाज़ हुई। हम तो कहते हैं कि जो कुछ हुआ है मालिक के हुक्म से हुआ है।

हुकमी होवनि आकार हुक्मु न कहिआ जाई॥

मुसलमान भी यहीं कहते हैं कि अल्ला ने कहा फीकन हो जा। सारी दुनिया

बन गई। यही ईसाई कहते हैं कि शुरू में वर्ड था। वर्ड खुदा के साथ था। वर्ड ने ही सब कुछ बनाया, बिना वर्ड के कुछ भी नहीं था। वर्ड कहो, कलमा कहो, शब्द कहो, कलामे इलाही कहो। यही शम्मस साहिब ने कहा हैः

आलम अज़ सौत ज़हूर गरिफ्त। अज़ हजूरश बसात नूर गरिफ्त॥

कि सारी दुनिया एक नूर से पैदा हुई है। उसमें नूर है। पहले आवाज़ से दो ताकतें पैदा हुई। अनमोल बात है समझने की हम बता दें। काल, अकाल।

कालु अकालु खसम का कीना एहु परपंचु वधावनु॥

(1104/7)

अकाल– वो ताकत है जिसको अकाल पुरुष कहते हैं, सतपुरुष कहते हैं। शब्द रूप में वो ज़र्रे-ज़र्रे में रमी हुई है। कैसे रमी है? ताकत वहीं से मिलती है। कैसे? अभी प्राइम मिनिस्टर बोले, सब जगह आवाज़ फैल जाएगी। जिन अफसरों से ताल्लुक है वो काम करने लगे जाएंगे। किसने काम करवाया? उसकी आवाज़ ने, हुक्म ने, सोच लो! इसी मालिक की आवाज़ को कहते हैं, हुक्म, जो ज़र्रे-ज़र्रे में हैं। वो आवाज़ सब जगह फैल गई। प्राइम मिनिस्टर का रूप क्या हुआ, शब्द। उन अफसरों ने तो पहले देखा भी नहीं होगा। उस का रूप क्या हुआ- शब्द, आवाज़, हुक्म। इस तरह मालिक का रूप क्या है? वो शब्द रूप में, हुक्म रूप में सब जगह है। ज़र्रे-ज़र्रे में है। इस का रूप क्या है? इस का रूप शब्द, नाम, बाणी है। वो कुदरती है। लिखने पढ़ने से परे है। यह तो बाद में बनी है लेकिन वो अलग चीज़ है। यही मुसलमान कहते हैं। यही ईसा ने कहा है। दूसरा काल।

कालु अकालु खसम का कीना एहु परपंचु वधावनु॥

(1104/7)

अकाल पुरुष का जो महकमा है यह मालिक का अपना महकमा है। दूसरा काल। काल को रचना का हुक्म दिया।

खण्ड पाताल दीप सभि लोआ॥ सभि कालै वसि आपि प्रभि किया॥

(1076/1 मः 5)

उसने अब दुनिया चलानी है। चलाने के लिए उसने क्या किया है। जीवों को लेकर कैद किया है तीन शरीरों में। पहले कारण शरीर है। उसके साथ हम कारण मण्डलों में काम कर सकते हैं। उसके ऊपर सुक्ष्म शरीर है। उसके साथ हम सुक्ष्म मण्डलों में काम कर सकते हैं। यहाँ देवी-देवते जिन्न, भूत, किन्नर

रहते हैं। दो शरीर हैं। तीसरा यह शरीर है जो हम देख रहे हैं। और क्या किया है? उसने इन्द्रीयाँ लगा दीं, विषय लगा दिए। बात समझने वाली है। और क्या किया? पाप पुण्य का जाल डाल दिया।

पाप पुन बीज की पोट॥

चाहे पाप है, चाहे पुण्य है। यह दुनिया को चलाने के लिए हैं। महात्मा चरणदास फरमाते हैं:

पाप पुन के सत्य ही ठहर रहा ब्रह्मण्ड॥
इन दोनों के मिटत ही होत खण्डु खण्ड॥
विरले जन को होत है पाप पुण्य की सूझ॥
सोई उतरे भवजाल से, बहुते रहे आरुझ॥

पाप को तो सब ने बुरा कहा है। किसी ने पुण्य को भी कहा? बोलो भई! सोच लो! किसी ने पुण्य को भी कहा है? अच्छे कर्म, बुरे कर्म दोनों हथकड़ियां हैं। एक लोहे की समझ लो, एक सोने की समझ लो। जेल तो न छूटी। किसी को फर्स्ट क्लास जेल मिल गई। किसी को सैकण्ड क्लास जेल मिल गई। किसी को थर्ड क्लास जेल मिल गई। रहा तो जेली का जेली। स्वर्गों में कौन सा सुख हैं? वहाँ कौन सा सुख है? यह पढ़ भई!

पाठी– स्वर्गों का हाल

वशिष्ट योग, वैराग। प्रकरण प्रथम सर्ग में श्लोक 36 से 39 गीता अध्याय। श्लोक 20-21 में स्वर्गों का वर्णन इस प्रकार किया गया है।

हर जीव अपने किए गए अच्छे कर्मों के अनुसार सुख व भोग भोगता है। यह भोग और सुख इस संसार के सुखों व भोगों से हज़ारों गुणा अधिक है। जिन लोगों ने बहुत उत्तम पुण्य किए हैं। उनको उत्तम सुख मिलते हैं। जिन्होंने मध्यम पुण्य किए हैं, उनको मध्यम सुख व भोग मिलते हैं। जो कनिष्ठ पुण्य वाले हैं वह कनिष्ठ सुख और भोग पाते हैं। वहाँ के भोगों की मियाद इस दुनिया के भोगों के अनुपात में अधिक है। लेकिन वहाँ पर भी काम, क्रोध व ईर्ष्या, द्वेष मौजूद है। जो अपने से ऊपर बैठे नज़र आते हैं।

मैनेजर साहिब जी–शांती वहाँ भी नहीं, कहते तो हैं स्वर्ग हैं, स्वर्ग हैं। हाय! हाय!

पाठी– जो अपने से ऊपर बैठे हैं वे उत्तम सुख भोगते हैं। उनको देखकर ईर्ष्या उत्पन्न होती है। उनकी श्रेष्ठता सहन नहीं होती। जो अपने समान हैं और अपने

बराबर बैठे हैं। उन को देखकर क्रोध उत्पन्न होता है कि मेरे बराबर क्यों बैठा है। और जो अपने से नीचे बैठे हैं। उनको देखकर अभिमान पैदा होता है, कि मैं इतना श्रेष्ठ हूँ। जब किए गए पुण्य के फल का भुगतान हो जाता है तो एक क्षण भी वहाँ रहने नहीं देते और इसे मृत्युलोक में गिरा देते हैं।

मैनेजर साहिब जी–कृष्ण भगवान ने लिखा हैः

हे उधो! यह जो कीड़ा जा रहा है, कई दफा स्वर्गों का राजा इन्द्र बना। कई दफा सृष्टि का कर्त्ता बना। आज यह कीड़ा है। क्या फायदा?

इन्द्रपुरी महि सर पर मरणा॥ ब्रह्मपुरी निहचलु नहीं रहणा॥
सिवपुरी का होइगा काला, त्रैगुण माइया बिनसि बिताला॥

(237/8 मः 5)

और उसने क्या किया है? कर्म-धर्म जितने हैं सब उसके हैं। यह नहीं कि इनका फल नहीं, फल है लेकिन जन्म मरण से नहीं छूट सकता। उस के दायरे से बाहर नहीं निकल सकता। अच्छी जूनी मिल जाएगी और सुख मिल जाएंगे, मगर जन्म मरण के बन्धन नहीं छूटते हैं। सवाल तो जन्म मरण के बन्धन छुड़ाने का है। सोच लो! और उसने क्या किया? मन लगा दिया। यह उस का एजेण्ट है। इस का काम क्या है? जीव को भरमाना और भटकाना ताकि कोई जीवन निकल न जाए। इस को और कोई काम नहीं। यह जितने कर्म-धर्म हैं सब दिलासे हैं उसके। श्रृंगी ऋषि ने 88 हज़ार साल तप किया, पौणाहारी! वृक्ष पर एक बार जीभ मारता था पानी पी लेता था। अट्ठासी हज़ार साल तप! हम तो कहेंगे कि उसने मन काबू कर लिया। सोच लो! मारा गया न! मन ने मार दिया।

विश्वामित्र ने साठ हज़ार साल तप किया। कह देना आसान है। मेनका परी पर मारा गया।

ऋषि प्राश्चर जी पूर्ण योगी होकर आए। योग करना सबसे कठिन है। इसमें एक ऐसी जगह है। अगर इसमें प्राण फंस जाएं तो निकलना बड़ा मुश्किल है। पूर्ण योगी! मछोधरी पर मारे गए। सोच लो! हम तो कहेंगे कि बड़े भक्ति वाले हैं, धोखे हुए न फिर? जो असली रास्ता है वो छुड़ा ही दिया उसने। फिर कैसे फंसाया है? जैसे यहाँ अग्रेज़ आए, सेठों, शाहूकारों के लड़कों को साथ इंग्लैण्ड ले गए। आओ भाई! तुम्हें सैर करवा लाएं। वहाँ जाकर उन के साथ एक-एक एजेण्ट छोड़ दिया। वो शराबखानों में, मेमों में, शबाबखानों में, विषय-विकारों

में फंसा कर करज़ाई कर दिए, राजपाट खोस लिए। फिर अपना राज संभालना मुश्किल हो गया। आज़ादी लेनी मुश्किल हो गई। इस तरह उसने किया है। मन को काल ने एजेण्ट के रूप में छोड़ रखा है। जा इसको सैर करवा ला। जैसे कि मां के प्यार की लज़्ज़त देख, फलानी लज़्ज़त देख, औरत के प्यार की लज़्ज़त देख, बच्चों के प्यार को देख। बस इसी में फंस गया। निकलने का राह ही नहीं छोड़ा। और यह साथ है काम, क्रोध और मन। जितना काम कर रहे हैं इनका कर रहे हैं। इनकी गुलामी कर रहे हैं। अब निकलने का राह ही नहीं छोड़ा। कोशिश बहुत की। योग जाप इसलिए किए उन्होंने, सोच लो! कि छुटकारा हो जाए, पर धोखे हुए न? जितने कर्म-धर्म, जप-तप, पाठ-पूजा सब धोखे हैं। असली रास्ता क्या है? जिस हुक्म से दुनिया बनी है उससे ताल्लुक जोड़ना, उसको प्रगट करना, यह असली रास्ता है। शब्द कहो, नाम कहो वही गुरु है। गुरु का लफ्ज़ 'ग्री' धातु से निकला है। उसका मतलब है सतगुरु, सत्शब्द जो सतलोक से आ रहा है। जो फकीर मालिक की दरगाह में गए हैं उन्होंने एक ही गुरु बताया है। जो मुक्ति का दाता है। गुरुनानक साहिब कहते हैं:

तेरा कवणु गुरु जिस का तू चेला॥
सबदु गुरु सुरति धुनि चेला॥

यही कबीर साहिब कहते हैं:

सबदु गुरु को कीजिए, बहुतक गुरु लबार॥
अपने-अपने स्वाद में, ठौर-ठौर बटमार॥

(कबीर साहिब)

यही तुलसी ने लिखा है:

सुरत शिश सबदे गुरु मिलि मारग जाना हो॥
अलख आकास उधाँ कुआं ता में सुरति समाना हो॥

यही पलटू साहिब ने कहा है:

धुन आने जो गगन की, सो मेरा गुरुदेव॥

वो असली भक्ति है। उस काम को जो सबको ज़िन्दगी और ताकत दे रहा है। काल को भी वही ताकत दे रहा है। उसको प्रकट करना ही असली भक्ति है। अमूल्य बात है समझने की। मन्दिरों में जाओ, गुरुद्वारों में जाओ, मसीतों में जाओ, शिवदयालों में जाओ, गिरजों में जाओ, आप को दो तरह की

शक्लें मिलेंगी। या तो गुम्बद होगी या लम्बूतरी शक्ल होगी। जैसे शिवदयालों की हैं। वहाँ जोते जग रही हैं। मुसलमानों के चिराग जलाते हैं। ईसाईयों के कैंडल जलाते हैं। यह है क्या? यह हमारे समझाने के लिए थे। जैसे बच्चों को मिट्टी की चीज़ें बनाकर समझाते हैं। यह केला है लेकिन है तो नहीं, यह क्या है? यह संतरा है मगर है तो नहीं। इस तरह यह हमारे समझाने के लिए है। असली मन्दिर यह शरीर है।

हरि मंदरु एहु सरीरु है गिआनि रतनि परगटु होइ॥

(1346/4 मः 3)

"Body is the Temple of God."

आदमियों का बनाया हुआ नहीं, यह असली मन्दिर है। गुम्बद कौन सी है? यह तो स्कूल हैं हमारे समझाने के लिए। यह नमूना बनाया है। गुम्बद कौन सी? यह सिर गुम्बद है। यह लम्बोतरी शक्ल है। जैसे कृष्ण भगवान ने लिखा है–

नासिका के अग्र भाव आओ॥

यहाँ आए तो यहाँ कुदरती जोतें जग रही हैं। यह हमारे समझाने के लिए हैं, जोते जगाते हैं। जैसे बच्चे को समझाते हैं। कि यह संतरा है, यह केला है मगर है तो नहीं। इस तरह यह जोत है। हमने बाहर बना ली। आप ही बनाकर आप ही मत्था टेक लिया। वो जोत सब के अन्दर है। जो काम कर रही है। वो जोत देखनी थी। इधर एक फकीर हुआ है उसने लिखा हैः

पाठी– माई मेरे मन्दिर में जोत जगे॥
बिन दीपक बिन बाती घृत के झिलमिल जोत जगे॥

मैनेजर साहिब जी–बिन दीपक बिना बाती घृत के हाय! हाय! हाँ जी।

पाठी– बिन दीपक बिन बाती घृत के झिलमिल जोत जगे॥
माई मेरे.....
इस जोति का सकल उजारा।

मैनेजर साहिब जी–सकल उजारा, बोलो भई! यह कमरे में पूरी रोशनी नहीं देती। हाँ जीः

पाठी– इस जोति का सकल उजारा, देखत, तिमर भगे॥
माई मेरे.....
अनहद बाजे बजे कुदरत से,

मैनेजर साहिब जी–वहाँ बाजे बज रहे हैं अनहद के, जैसा कि मन्दिरों में बजाते हैं। यह बाहर नकल है।

पाठी–अनहद बाजे बजे कुदरत से, बिन कर ताल बजे॥

मैनेजर साहिब जी–'बिन कर ताल बजे'। बिन हाथों पांवों के। यही गुरुनानक साहिब ने लिखा है कि इस काया मन्दिर में है! सोच लो! वो जोत सबके अन्दर जग रही है।

पलटू साहिब कहते हैं:

उल्टा कूआं गगन में तिस में जरै चिराग॥
तिस महि जरै चिराग बिन रोगन बिन बाती॥
छः ऋतु बारह मास रहत जरत दिन राती॥
सतगुरु मिला जो होय ताही की नजर में आवै॥
बिन सतगुरु कोउ होय नहीं वा को दरसावै॥
निकसे एक आवाज चिराग की जोतिहिं माहिं॥

उसमें से आवाज़ आ रही है। गुरुनानक साहिब ने लिखा है:

अन्तरि जोति निरन्तरि बाणी॥

सोच लो! उसमें से आवाज़ें आ रही है। वो जोत देखनी थी। वो सब के अन्दर है। वो एक करंट है। जो सबको ज़िन्दगी और ताकत दे रही है। चूंकि वो एक रमी हुई ताकत है इसलिए उसे राम कहते हैं। राम कहते हैं, ''रमेता सो रामा।''

जो ज़र्रे-ज़र्रे में रमी हुई है। जब मौत आती है, कहते हैं न राम निकल गया। वो चीज़ निकल गई, वो करंट निकल गई। सोच लो! वो देखनी थी। वो करंट क्या है? उस करंट को देखना, उस शब्द को सुनना असली भक्ति है। इसको सब छोड़े बैठे हैं। काल ने बाहर ही बाहर भरमा रखा है। असली चीज़ ही छुड़ा दी। हम शब्द कहते हैं, नाम कहते हैं, बाणी कहते हैं, बांगे असमानी कहते हैं मुसलमान बांग कहते हैं, कलमा इलाही कहते हैं। वो कुदरती आवाज़ है। वो देखनी थी, वो सुननी थी। कैसे सुनी जाती है? तो ज़र्रे-ज़र्रे में। यह करंट है, आपको गवर्नमैंट ने दे दी। इससे बल्ब जला लो सुख ले लो, ट्यूबे जला लो सुख ले लो, पंखे चला लो सुख ले लो, कारखाने चला लो सुख ले लो। अगर हाथ लगाओ! तो साड़ेगी भी, सोच लो। इस तरह वो करंट सब के अन्दर है। हम ने उसे कहाँ लगाया, काम, क्रोध, मोह, लोभ, अहंकार पर। इसी का काम कर रहे है। या लोभ का, या अहंकार का। आत्मा का कौन सा काम है? विषयों के काम हैं। सोच लो! इसी तरह से सड़ रहे हैं। अगर शील, क्षमा, सन्तोष, धीरज, विवेक, गरीबी, दीनता पर लगाएं तो शांती आ जाए। फिर जैसे उन्होंने कारखाने चलाए, किसी ने रूई का, किसी ने प्लास्टिक का, किसी

ने कपड़े का, बिना करंट के तो नहीं चलता। जो भक्ति करो, कृष्ण भगवान ने लिखा है ''जो भूतों की पूजा करता है, वो भूतों के पास जाता है। पितरों की करता है वो पितरों के पास जाता है। देवी देवताओं की करता है तो उनकी योनियों में जाता है। छुटकारा तो न हुआ॥'' अगर कोई ऐसा मकैनिक मिल जाए। हमें करंट को पकड़ना सिखाए। हम उस करंट को पकड़ें। जिस तरफ से आ रही है उस तरफ चल पड़ें तो कहाँ पहुँचेंगे? हैडक्वाटर पर। फिर जो मर्ज़ी करो। इस तरह कोई ऐसा फकीर मिले जो राम नाम की करंट को पकड़ना सिखाए। यह अन्दर जाए उस करंट को पकड़े। वो सीधी सड़क है जो मर्ज़ी करे।

गुरमुखा नो पंथु परगटा दरि ठाक न कोई पाइ॥
हरि नामु सलाहनि नामु मनि नामि रहनि लिव लाइ॥
अनहद धुनी दरि वजदे दरि सचै सोभा पाइ॥

(42/2 मः 4)

वो जोत देखनी थी, उस करंट में जोत है।

राम नामु है जोति सवाई ततु गुरमति काढि लईजै॥

सोचो! यह नकल है सब। वो कब दिखाई देती है? कहते हैं जड़ चेतन की गांठ है, सोच लो! कहते हैं शिव नेत्र है, देख ले! करंट तो सब जगह है। हम बाहर ही बाहर फिर रहे हैं। जब हमें कोई बात समझ नहीं आती तो हम ऐसे बैठ जाते हैं(माथे पर हाथ लगा कर)। हर तरफ से ख़्याल हटा देते हैं। बारीक से बारीक आवाज़ जो हुई। उस समय हाथ पांव सो जाते हैं। काम नहीं करते। फिर उस की तरफ तव्वजो दो। फर्क तो नहीं पड़ा। इस तरह ख़्याल को आंखों के पीछे इकट्ठा करे। यहाँ तक तो आप किसी भी सिमरण से आ सकते हैं। लेकिन आगे रास्ता नहीं मिलता। ठीक फकीर हो, सिमरण करे, आंखों तक आए। इसे कहते हैं जीवित मरना। कबरों में जाना नहीं, जब मर्ज़ी आए जब मर्ज़ी जाए।

जीवतु मरै मरै फुनि जीवै तां मोखंतरु पाए॥''

(550/3 मः 3)

दादू पहले मर रिहो पाछे मरे सब कोय॥

(दादू साहिब)

'मौतोवो किबलअनत मौतोवा'

अर्थात मरने से पहले मर। मुसलमानों में कहते हैं।

बमीर ऐ दोस्त पेश अज़ मर्ग गर में खुआही जिन्दगी॥

''ऐ दोस्त! मर कर कब्रों में जाना नहीं। तू मरने से पहले मर। तुझे एक नई ज़िन्दगी मिल जाएगी।''

मौत की घाटी आबूर करके आए। जब मर्ज़ी आए जब मर्ज़ी चला जाए। यह आज़ादी लेनी थी। जड़ चेतन की गांठ खोलनी थी। कहते तो सभी हैं लेकिन किसी ने खोली नहीं। कहते हैं शिव नेत्र है। किसी ने खोली, देखे कैसे? यह सब तो फनाह है। यह बाहर दुनिया के काम करने के लिए है, देखने के लिए है। वो आंख और जो मालिक को देखने वाली है। मीरा कहती है मैंने देखा है।

सांकड़ी गली में मेरा सतगुरु मिलिया किस विधि फिरूं अपूठी॥

सांकड़ी गली में आए। यहाँ आंखों के पीछे आए।

राह खुदा भीहावला राई दसवें भाइ॥

सारी दुनिया बाहर ही बाहर फिरती है। काल ने धोखा दिया है। वो जोत देखे फिर यह खालसा बनता है।

पूरण जोत जगै घट महि तब खालसा ताहि नखालस जाणै॥

फिर यह सनातनी बनता है।

अब मनु उलटि सनातन हूआ। तब जानिआ जब जीवत मूआ॥

कब्रों में जाना नहीं, देखो। ऐसे किसी ख़्याल में बैठे हैं। हाथ पांव सो जाते हैं। मुर्दा जैसे हो जाते हैं। जिस्म सारा सो जाए इसे कहते हैं जीवत मरना।

मरता मरता जग मूआ साचा मूआ न कोय॥
दास कबीरा यूं मूआ बहुर न मरना होय॥

(कबीर साहिब)

फिर सनातनी बन गया।

अब मनु उलटि सनातन हूआ। तब जानिआ जब जीवत मूआ॥

यहाँ रूह काफी साफ हो जाती है। फिर पाक बन गया, आर्य बन गया। वो राम नाम की जोत है। फिर यह नामधारी बन गया। यही सच्चा सौदा है। बिल्डिंगों का नाम सच्चा सौदा नहीं। वो तो स्कूल थे हमारे लिए। देखो! इन स्कूलों की बिल्डिगों के लिए लड़-लड़ कर मर गया। मालिक का बनाया हुआ मन्दिर तो गिराते हैं। अपने बनाए हुओं को बचाते हैं। यह दुनिया का हाल है, देखो! काल ने ऐसा धोखा दिया है। यहीं से मुसलमान बनता है। शम्मस तबरेज़ ने लिखा है ''कि बंदे को इन्सान बनने के लिए सैकड़ों साल चाहिएं।

बना कोई भी नहीं। फिर मुसलमान बनने के लिए सैकड़ों साल चाहिएं। कोर्स किसी ने भी नहीं किया। ऊपर-ऊपर से तो सभी बन गए। न कोई मुसलमान बना, न कोई खालसा बना, देखो भई! ऐसे ही सभी बने फिरते हैं। यह काम करना था। यह हाल है, यहाँ से तो मार्ग शुरू होता है। यहाँ आए देखो! कोई सुक्ष्म से सुक्ष्म आवाज़ है। बड़े गौर से सुनते हैं। वहाँ कितनी आवाज़ें हैं। बुल्लेशाह ने कहा हैः

बजदे नाद हज़ार।
अनिक अनाहद आनंद झुनकार।

(1236/11 मः5)

यहाँ बहुत आवाज़े हैं, धोखे वाली हैं। मगर वहाँ से मार्ग शुरू होता है। जब यहाँ ख़्याल टिक जाता है तो वो सुनाई देता है। वो इसके घर का रास्ता है। मुहम्मद साहिब ने लिखा हैः

गुफ्त पैगम्बर के आवाजे खुदा॥ में रसद्द दर गोशे मन हम चू सदा॥
मोहर बर गोशे शुमां बनिहाद हक्क॥ ता बा आवाज़े खुदा नारद सबक॥
गोशे रा नज़दीक कुन दूर नेस्त॥ लेक इ गुफतन दस्तूर नेस्त॥

कि खुदा की आवाज़ मेरे कानों में आम आवाज़ की तरह आ रही है। तुम्हारे कानों पर मोहरे लगी हुई हैं। वो आंख और है, वो कान भी और हैं।

अखी बाझहु वेखणा विणु कंना सुनणा॥
पैरा बाझहु चलणा विणु हथा करणा॥
जीभै बाझहु बोलणा इउ जीवत मरणा॥
नानक हुकमु पछाणि कै तउ खसमै मिलणा॥

(गुरुनानक साहिब)

यही ईसा ने कहा हैः

"Have you eyes you see not. Have you ears you hear not."

वो आंखे खोले तो देखे, सोचो! वो कान खोले तो सुने। ऐसे बाहर ही बाहर सारी दुनिया फिर रही है। मिले क्या? सोच लो! इस तरह चौरासी में धक्के खा रहे हैं। कभी कीड़ा बनता है। कैसे फंसे हैं? कोई किसी का नहीं। न मां, न बाप, न भाई, न बहन। सब कर्मों के जाल से आए हैं, बस!

कोई फौजी थे वो रिटायर्ड होकर हरिद्वार गए। वापिसी पर रास्ते में सहारनपुर

ठहरे। वहाँ पुराना दुकानदार मिल गया। वो कहने लगा आज आप लोग यहीं रूक जाओ। शहर घूमकर देख लो और रात को बैठकर बातें करेंगे। वो मान गए। कहने लगे कि अच्छा। रात को उसने खूब अच्छे-अच्छे खाने बनवाए और उनके आगे परोस दिए। अभी खाना शुरू भी नहीं किया कि एक औरत की चीख की आवाज़ आई। पूछा कि यह क्या है? कहने लगा कुछ नहीं आप खाना खाओ। आपने क्या लेना इन बातों से। उन्होंने बहुत मजबूर किया। कहने लगा कि यह मेरी विधवा बहू है। एक महीना हो गया मेरा जवान लड़का मर गया और यह उसको याद करके रोती है। वो कहने लगे कि तेरा जवान लड़का था। वो मर गया और तू ऐसे खाने बनाता है, बात क्या है। वो बताए न। उन्होंने फिर पूछा तो कहने लगा कि जब मैं वहाँ दुकान करता था, एक घुड़सवार लड़ाई में गया। घोड़ी मुंहज़ोर होकर दुश्मनों में ले गई और दुश्मनों ने दोनों को मार दिया। जो गवर्नमेंट का हिसाब था, वो तो घर वाले ले गए। कुछ मेरे पास जमा था मैंने अपने खाते में डाल लिया। वहाँ से आकर शादी करवाई। लड़का हो गया। फिर उसको पढ़ाया, लिखाया और बड़ा हो गया। उसकी शादी कर दी और वो बीमार हो गया। बड़ा इलाज करवाया पर ठीक नहीं हुआ। आखिर एक मुल्ला बुलाया। उसने दम डाला। कहने लगा ठीक हो जाएगा। जब मैंने उस को अढ़ाई रुपये दिए तो लड़का हंस पड़ा। मुल्ला कहने लगा कि देखा मेरे एक दम डालने से यह ठीक हो गया। जब वो चला गया तो पूछा कि बेटा अब ठीक हो गया? कि बिल्कुल ठीक हो गया। कि कैसे? कि मैं वही घुड़सवार हूँ। यह अढ़ाई रुपये रहते थे वसूल लिए। यह घोड़ी थी जो मुंहजोर हो कर दुश्मनों में ले गई और मरवाया। अब इसको सारी उमर के लिए विधवा छोड़े जा रहा हूँ। इस तरह कर्मों के जाल में फंसे हुए हैं। जिसको दुख दिया है उससे दुख लेना है। जिसको सुख दिया है उससे सुख लेना है। यह भी गुज़ारना है, छोड़ना नहीं। छोड़ने से कुछ नहीं बनता। धोखे खा गए। उनके साथ दीनता से गुज़ारे। फकीर घर बार नहीं छुड़ाते। छुड़ाते भी हैं, नहीं भी, कैसे छुड़ाते हैं? हाय! हाय!

पाठी– हजरत ईसा मसीह साहिब फरमाते हैं कि तुम यह न समझो कि मैं दुनिया को सुख की नगरी बनाने आया हूँ, बल्कि तलवार चलाने आया हूँ।

मैनेजर साहिब जी– किसी से बनी सुख की नगरी? बनी ही नहीं, हाँ जी।

पाठी– क्योंकि मैं बेटे को उसके बाप, बेटी को उसकी मां और बहू को उस की सास से जुदा करने आया हूँ अर्थात दुनिया के अन्दर तुम्हारी फैलाई हुई गहरी जड़ों को और इस दुनिया के साथ तुम्हारे प्यार जो बार-बार तुम्हें इस देह के बन्धनों में बांध कर यहाँ ले आता है, भक्ति की तलवार से कटवाने के लिए आया हूँ।

मैनेजर साहिब जी–भक्ति की तलवार से बाहर तलवार से नहीं, सोचो! कैसे गुजारे? अभी सुनाया था। जिसको दुख दिया है उससे दुख लेना है। जिसको सुख दिया है, उससे सुख लेना है। सबके साथ दीनता से गुज़ारे। यह लेने देने भी खत्म करने हैं। यह लेने देने भी खत्म करने हैं। अगर लेने देने खत्म नहीं हुए तो आगे नहीं चल सकते। अगर बच्चा पैदा हो गया लड़का या लड़की, उसकी मौज़। बीमार हो गया उसकी मौज़, राज़ी हो गया उसकी मौज़। थोड़ा दे दिया उसकी मौज़, ज़्यादा दे दिया उसकी मौज़। और कर भी क्या सकता है? सबके साथ दीनता से गुज़ारें। साथ भजन सिमरण करे और साथ छुटकारे का बंदोबसत करे। छोड़ने से कुछ नहीं बनता, देखो! रामचन्द्र ने बाली को मारा। उसी बाली ने अगले जन्म में भील बनकर मारा। जब उनको बदला देना पड़ा तो हम कौन हैं? यह भी गुज़ारना है। दीनता से गुजारें और भजन सिमरण करे। अपने छुटकारे का बंदोबसत करे। यह तरीका है रहने का और कर भी क्या सकता है? छोड़ने से कुछ नहीं बनता। नुकसान हो गया उस की मौज़, लाभ हो गया उसकी मौज़। यह है रहने का तरीका। ''ज्यों भावै तिओं राखि लै।''

दीनता से गुज़ारें। अगर ठीक फकीर मिले थोड़ा भी जपे तो एक न एक दिन ज़रूर कुछ हासिल कर लेता है। फकीर भी बहुत हैं। कोई कर्मों-धर्मों में फंसाता है, कोई कहीं फंसाता है। कोई कहीं फंसाता है। जो अन्दर शब्द या नाम प्रगट करावे। वो बांग है, कलमा है, कुदरती आवाज़ है। अभी सुनाया था कि पैग़म्बर साहब ने लिखा है कि–''खुदा की आवाज़ मेरे कानों में आम आवाज़ की तरह आ रही है। तुम्हारे कानों पर मोहरें लगी हुई हैं।'' सोचो! वो शब्द की धार सब के अन्दर है। जो कोई सुने। यहाँ आए तो सुने। कहते हैं जड़ चेतन की गांठ को खोले तो सुने। किसी ने खोली? कहते हैं कि शिवनेत्र है, तीसरी आंख है, ''थर्ड आई'' है। किसी ने खोलने का यत्न किया? फिर कैसे देखे? बातों-बातों में गुज़ार गया। सोच लो! फकीर आते हैं इसी काम के लिए जो मालिक की दरगाह से आते हैं। काल के भी आते हैं। वो कर्मों धर्मों में

फंसाते हैं। जो मालिक की दरगाह से आते हैं, सतलोक से आते हैं। वो कहते हैं चल अन्दर, उस आवाज़ को सुन, चल अपने घर। वो बोल भई!

पाठी– सतगुरु आये बंजारा आज म्हारे॥
ऐसो अवसर फेर नहीं आवे, मिले न दूजी वारा रे॥

मैनेजर साहिब जी– बाहर कोई सतगुरु नहीं। एक ही सतगुरु है जो मुक्ति का दाता है। वो शब्द गुरु है। बाहर कैसे बने? जैसे किसी ने डाक्टरी की उसे हम कहते हैं डाक्टर। उस इल्म का नाम डाक्टर है। वो है तो हमारे जैसा ही। यहाँ शब्द गुरु आता है। उस को गुरु कहते हैं। बाद में नकलें चल पड़ीं। इतने गुरु हो गए कि इतने चेले नहीं रहे। महात्मा चरणदास जी कहते हैं:

गलियारे गुरु फिरत हैं घर-घर कन्ठी देत॥
और काज उन को नहीं द्रव्य कमावन हेत॥
कन फूंका गुरु जगत का राम मिलावन और॥
सो सतगुरु को जानिये मुक्त दिखावन ठौर॥

वो मुक्ति वाला और है। तुलसी साहिब के पास कोई प्रेमी आया। उसने गुरु चेले के मुतल्लक पूछा तो तुलसी साहिब ने समझाया:

रेवतीदास सुनो तुम भाई॥ याकी विधि कहौं समझाई॥
नहिं कोई गुरु नहीं कोई चेला॥ बोले सब में एक अकेला॥
जो कोई गुरु चेला कर जाना॥ सोई सोई परे नरक की खाना॥
एक बोल सब माहिं बिराजा॥ गुरु चेला द्वैत विधि साजा॥

दुई तो पहले आ गई।

चेला होय नीकि विधि भाई॥ गुरु होए चौरासी जाई॥

चेले का तो फिर भी छुटकारा है। उस में नम्रता तो आई, दीनता तो आई। गुरु तो अहंकार में भर गया कि मैं गुरु हूँ। बेड़ा गर्क! देखो! उल्टा काम हुआ पड़ा है। जितने फकीर मालिक की दरगाह से आए हैं। उन्होंने कभी नहीं कहा कि हम गुरु हैं। वो तो कहते हैं कि तेरा गुरु तेरे अन्दर है। मास्टर के पास जाते हैं, विद्या सीखने। अपनी विद्या ने काम देना है। इस तरह उन सन्तों से सीख कर अपने शब्द गुरु को प्रगट करे। अपने गुरु ने काम देना है। सोच लो! जैसे विद्या बसने लग जाती है। राम भी बसने लग जाता है। काम देने लग जाता है।

जिउ जिउ भगति कबीर की, तिउ तिउ राम निवास॥

(कबीर साहिब)

कैसे काम करता है? मीरां को ज़हर भेजा अमृत बन गया। सांप भेजा हार बन गया, सोचो! प्रहलाद की संभाल की। जैसे विद्या काम देने लग जाती है– दो क्लास पढ़ा उतनी, चार पढ़ा उतनी, आठ पढ़ा उतनी, दस पढ़ा उतनी। काम देने लग जाती है। उस शब्द को, नाम को प्रगट करे, खज़ानों के खज़ाने हो जाते हैं इसके पास। फिर किसी चीज़ की ज़रूरत नहीं रहती।

पायो रे मैंने नाम रत्न धन पाइयो॥
जिसको पाये दुख सुख भूले मन आनन्द रे समाइयो॥
जिसकी चोरी कबहूं नहीं होवै ऐसो धन मैंने पाइयो॥
खरचूं लाख खत्म न होये दिन-दिन बढ़त सवाइयो॥ **(मीरां)**

यह खज़ाना सब के अन्दर है, जो निकाले। यह खज़ाना निकालना था।

खरचु खजाना नाम धन एहु भक्तन की रासि॥

यह गवर्नमेंट अफसरों को कागज, पैंसिल, दफ्तर बना कर देती है। सब कुछ देती है। वो कंगाल गवर्नमेंट है? जिसने काम करवाना है, वो खुद ही दे। क्यों मांगता फिरे? यही चंदे फण्ड सिखाए हैं और तो कुछ नहीं। यह प्रेम का मार्ग है। प्रेम से भजन करे, प्रेम से गुज़ारे। फिर हासिल करता है।

साच कहौं सुन लेहो सभै। जिनु प्रेम कीओ तिनहि प्रभु पाइओ॥

(गुरुगोविन्द सिंह जी)

प्रेम बराबर योग, न प्रेम बराबर ज्ञान॥
प्रेम भक्ति बिन साधुआ, सब ही थोथा ध्यान॥
प्रेम छुड़ावे जगत को, प्रेम मिलावे राम॥
प्रेम करे गति और ही, ले पहुंचे हरि धाम॥

(चरणदास जी)

कर्मों-धर्मों में फंसे हैं। प्रेम से खाली हैं सब। जिसको गर्ज़ होती है वो भागता दौड़ता है। जिसको प्यास लगी हो, वो भागता दौड़ता फिरता है। हाय पानी! हाय पानी करता है। जिस को गर्ज़ हो। मीरां को गर्ज़ थी, कैसे भागती दौड़ती फिरती थी कि कहीं से मालिक मिले। जिस ने पाया मेहनत से पाया। सच्ची तड़प से मिलता है॥ दुनिया बेगर्ज़ हुई बैठी है। दुनिया की चीज़ें मांगते हैं। उसको कोई नहीं मांगता।

हाफिज़ साहिब लिखते हैं–

''या खुदा! चारों तरफ अंधेरा छा रहा है। सब के सब कोरे और रूहानियत से बिल्कुल बेख़बर नजर आते हैं और इस धन का कोई ग्राहक नहीं नज़र आता।''

हाय! हाय! हाँ, जीः

पाठी– सतगुरु आये बंजारा आज म्हारे॥
ऐसो अवसर फेर नहीं आवे, मिले न दूजी वारा॥
सतगुरु आये.....

मैनेजर साहिब जी– वह धर्मदास का शब्द है। कबीर साहिब आए वो उनको कह रहे थे, क्या?

पाठी– ज्ञान गुणां री बालद लाया, हीरा लाया अपारा रे।
मंहगी चीज अमोलक लाया, ऐसा है दातारा रे।
सतगुरु आये.....

मैनेजर साहिब जी– कौन सी मंहगी चीज़ है? नाम या शब्द जिसने सारी रचना रची है, सबको ज़िन्दगी और ताकत दे रहा है।

पायो रे मैंने नाम रत्न धन पाइयो॥
जिस को पाये दुख सुख भूले मन आनंद रे समायो॥
जिस की चोरी कबहूं न होये ऐसो धन मैंने पाइयो॥
खरचूं लाख खत्म न होये दिन दिन बढ़त सवायो॥

(मीरां)

वो ख़ज़ाना साथ लेकर आते हैं पर कोई लेने वाला नहीं। कबीर साहिब कहते हैंः

नाम रत्न धन मुझ में खान खुली घट माहिं॥
सीत मीत ही देत हूँ ग्राहक कोई नांहि॥

मुफ्त में देते हैं पर लेने वाला कोई, कैसे? संत लेते भी कुछ नहीं और छोड़ते भी कुछ नहीं।

जब राजा जनक ने ज्ञान मांगा तो अष्टावक्र ने कहा कि ज्ञान की दक्षिणा भी होती है। कि क्या? कि तन, मन और धन। राजा ने कहा कि मैं देने को तैयार हूँ। कि मुश्किल है। कि जी नहीं मैं तैयार हूँ। कि संकल्प कर दे। राजा ने संकल्प कर दिया। पूछा कि तन मेरा है? कि हाँ जी। फिर जा जूतियों में बैठ जा। क्यों बिठाया? एक राजा का रईयत के सामने जूतियों में बैठना कोई

आसान है? क्यों बिठाया? लोकलाज निकालने के लिए। अब उसका मन महलों में जाए, ख़ज़ानों में जाए। पूछा कि महल मेरे हैं, ख़ज़ाने मेरे हैं? कि हाँ जी। अब इनकी तरफ ख़्याल न कर। कि जी ठीक है मैं दे चुका हूँ। अब मन संकल्प विकल्प उठाता है। पूछा कि मन मेरा है? कि हाँ जी। इससे संकल्प विकल्प न उठा। यह सब से मुश्किल काम है। मन काल का एजेण्ट है। यह जल्दी छोड़ता नहीं। मन के साथ लड़ाई की और रूह अन्दर चली गई। ज्ञान हो गया। पूछा कि ज्ञान हो गया? कि जी हो गया। कोई कसर? कि कोई कसर नहीं। फिर संभाल अपना तन मन और धन। उन्होंने क्या करना है? इसके लिए कितना बंदोबस्त करते हैं। यह लेकर क्या करेंगे? अपने तन का कितना बंदोबस्त करते हैं, पराया लेकर क्या करेंगे? अपना मन काबू नहीं आता, पराया लेकर क्या करेंगे? बड़े-बड़े ऋषि मुनी मारे गए। वो क्या करेंगे? उनके पास वो धन है जो कभी भी खत्म न हो।

पायो रे मैंने नाम रत्न धन पाइयो॥
जिस को पाये दुख सुख भूले मन आनंद रे समायो॥
जिसकी चोरी कबहूं न होये ऐसो धन मैंने पाइयो॥
खरचूं लाख खत्म न होये दिन-दिन बढ़त सवाइयो॥

(मीरां)

हमारे बन्धन छुड़ाने आते हैं। इन्हीं बन्धनों में फंसे पड़े हैं। मन के पीछे लगे हुए हैं। लोक लाज के पीछे लगे हुए हैं। यह सब छोड़े तो मालिक दूर है क्या? आंखों के पीछे आए तो सब कुछ है। वहाँ से तो मार्ग शुरू होता है। क्या छोड़ा? क्या लिया? बोलो! हाँ, जीः

पाठी– प्रेम भक्ति की हाट खोल दी।

मैनेजर साहिब जी–अगर वो न आए तो हम जा ही नहीं सकते। ऐसे भुलाया है काल ने। मुसलमान फकीर भी यही कहते हैं–

आं पातशाहे आज़म दर बस्ता बूद मोहकम॥
पोशीदा दिल के आदम यानि कि बरदर आमद॥

(शम्मस तबरेज़)

शम्मस तबरेज़ साहिब फरमाते हैं कि वह पातशाहों का पातशाह द्वार बन्द करके बैठा है और खुद ही आदमी का चोला पहनकर दरवाज़ा खोलने के लिए आता है।

साध रूप अपना तनु धारिआ॥ (1005/मः 5)
हमरो भरता बडो बिबेकी आपे संतु कहावै॥ (476/14 कबीर)
मौला आदमी बन आया॥ उह आया जग जगाया॥ (बुल्लेशाह)

एक बादशाह था पीटर। हालैण्ड में वह जहाज़रानी का काम सीखने गया। मज़दूरों का भेष बना लिया। कुछ वहाँ के ही आदमी थे। कुछ जिला वतन लोग थे। सभी वहाँ काम कर रहे थे। अब राजा उनके साथ घुल मिल गया। उनके देश की बातें करे। यह नहीं बताया कि मैं बड़ा बादशाह हूँ, मज़दूर जो बना हुआ। उसकी बातों पर किसी ने इतबार किया, किसी ने नहीं किया। जब वापिस आने लगा तो कहने लगा कि आओ भई! मेरे राजा से अच्छे ताल्लुकात हैं। मैं तुम्हें छुड़वा दूंगा। अब इतनी जल्दी कौन इतबार करे। जिसने इतबार किया वो साथ चल पड़े। जब बन्दरगाह पर आकर उतरे तो जो गवर्नमेंट के आदमी खड़े थे, उन्होंने तो इज़्ज़त करनी थी। वो हैरान हो गए कि ज़रूर इसके ताल्लुकात राजा के साथ हैं। कहने लगे कि बादशाह मज़दूरों का भेष बदल कर आया और हमें छुड़ा लाया। इस तरह वो भी मज़दूर बनकर आता है हमारे लिए और हमें ले जाता है। नहीं तो कोई तैयार ही नहीं जाने को। सब के साथ दीनता से गुज़ारता है।

कि चलो भई अपने देश।

कर ले रे कर ले सौदा पार लंघण दा॥
अग्गे अग्गे हटड़ी बाजार भी नहियों॥
आओ मेरे राजा आओ मेरे दाता॥

बोलो! कबीर को क्या गर्ज़ थी, कि किसी तरह मान जाए। काल के देश से निकल जाएँ ।

पाठी– प्रेम भक्ति की हाट खोल दी, लाला मोती जवाहरा रे।
गुरुमुख होय सौ सौदा करसी, भटक मरे संसारा रे।
साहिब आए.....

मैनेजर साहिब जी–जो मालिक की दरगाह में गए हैं। वो यहाँ रहना नहीं चाहते। हम इसके ठेके लिए बैठे हैं।

पाठी– गुरु गोविन्द सिंह फरमाते हैं कि हम भक्ति करके मालिक का एक रूप बन चुके थे। हमारा दिल मालिक की खुशी और आनन्द को छोड़ना नहीं चाहता था। अब भी हमारी सुरत प्रभु के चरणों के लिए तड़प रही है। और हमारा

ध्यान उसी तरफ लगा रहता है। मालिक ने अपनी कारवाई के लिए ज्यों-त्यों करके समझा बुझाकर भेजा है।

मैनेजर साहिब जी–कि तेरा काम तो बन गया। उनको भी समझा शायद कोई मान जाए। बोलो भई! शम्मस तबरेज़ साहिब क्या कहते हैं–

पाठी– ''शम्मस तबरेज़ साहिब फरमाते हैं कि तुम क्या जानो हम कैसे मुर्ग हैं? अन्दर ही अन्दर हर लम्हा, हर पल हम क्या इच्छा रखते हैं। बाहर से देखने में चाहे हम इस दुनिया में फकीर मालूम होते हैं। तुम हमारी अन्दर जाकर बड़ाई देखो कि हम कैसे बादशाह हैं। बाहर से चाहे हम कंगाल मालूम होते हैं। तुम हमारे अन्दर झांक कर देखो कि हम कैसी खान हैं। हम खुद खण्डों-ब्रह्माण्डों के बादशाह हैं, हमें क्या गम है। अगर हम आज इस शरीर रूपी कैदखाने में कैद हैं तो कब तक रहेंगे। हम यहाँ सभी मेहमान हैं। हमारा इस जगह, इस दुनिया में आना अपने बादशाह के साथ एक इकरार की वजह से है, जिसे हम निभा रहे हैं।''

मैनेजर साहिब जी–जिसे हम निभा रहे हैं। वो रहना नहीं चाहते। हम जाना नहीं चाहते। हम ठेके लिए बैठे हैं, देखो! यह गन्दा देश है। उस देश को तो भूले बैठे हैं। अति खुशी और शांती का देश है वो, बेगमपुरा का देश है हमारा। हमेशा खुशी और शांती का। वहाँ चलो अपने देश। जब तक वहाँ नहीं पहुँचते, कहते हैं न कि अपने घर में शांती है, खुशी है। वो देश है हमारा। सोचो! मिट्टी के देशों के पीछे लड़-लड़कर मर गए। देखो! कभी हिन्दुस्तान में, कभी इंग्लैण्ड में पैदा हो गया। कभी कीड़ा बन गया, कभी पतंगा बन गया। कौन सा देश हुआ? कौन सी कौम हुई? कौन सा मज़हब हुआ? सभी ठेके लिए बैठे हैं, हाय! हाय!

पाठी– बेगम पुरा सहर को नाउ॥ दुख अंदोहु नहीं तिहि ठाउ॥

मैनेजर साहिब जी–यही रविदास कह रहा है। जहाँ मैं पहुँचा हूँ, बेगमपुर शहर का नाम है। वहाँ कोई गम नहीं। दुख सुख का लेश ही नहीं वहाँ। वो ऐसा देश है। हमारे समझाने के लिए है। तुम भी चलो। क्या ज़रूरत थी उनको लिखने की? वो देश हमारा है। हाँ जीः

पाठी– बेगमपुरा सहर को नाउ॥ दुख अंदोहु नहीं तिहि ठाउ॥
ना तसवीस खिराजु न माल॥ खउफु न खता न तरसु जवाल॥

मैनेजर साहिब जी–हाँ वहाँ कोई चिन्ता फिकर नहीं। न कोई गुनाह करता है,

न गुनाह की सज़ा है। हाय! हाय! ऐसा देश है वो, हाँ जीः

पाठी– अब मोहि खूब वतन गह पाई॥ उहां खैरि सदा मेरे भाई॥
काइमु दाइमु सदा पातिशाही॥ दोम न सेम एक सो आही॥

मैनेजर साहिब जी–यहाँ तो दूसरे दिन गवर्नमेंट बदल जाती है। वहाँ बदलने का सवाल ही नहीं। एक ही पातशाही है, बस! हाँ जीः

पाठी– आबादानु सदा मसहूर॥ उहां गनी बसहि मामूर॥

मैनेजर साहिब जी–वो सदा आबाद है। यहाँ तो कभी बाढ़ आ जाता है, भूचाल आ जाता है। कभी कुछ हो जाता है, कभी कुछ हो जाता है। उस मालिक के ख़ज़ाने भरपूर हैं। कमी हो तो टैक्स लगाए। हाय! हाय!

पाठी– तिउ तिउ सैल करहि जिउ भावै॥ महरम महल न को अटकावै॥

मनैजर साहिब जी–जहाँ जहाँ जाओ कोई पूछने वाला नहीं। जब मर्ज़ी आए जब मर्ज़ी जाए। कोई रोकने वाला नहीं। यहाँ चुंगी पर जाओ, बार्डर पर जाओ, टैक्स देखते हैं। वहाँ पूछने वाला नहीं। यह आज़ादी लेनी थी। बाहर तो विषय विकारों की आज़ादी है, बस। हाँ जीः

पाठी– कहि रविदास खलास चमारा॥ जो हम सहरी सु मीत हमारा॥

मैनेजर साहिब जी–कहता है कि हूँ तो चमार, मगर मेरी भी खुलासी हो गई। हाय! हाय! देखो भई! वहाँ कौम मज़हब का सवाल है? उल्टे-उल्टे रास्ते पड़ी है दुनिया।

पाठी– जो हम सहरी सु मीत हमारा॥
बेगमपुरा.....

मैनेजर साहिब जी–हाँ जी, देखो भई! गुरु नानक साहिब को कुराहिया बताते थे। कबीर साहिब को जुलाहा कहा कि उल्टा ज्ञान चलाता है। किसी ने सुनी नहीं। नहीं तो सबको न ले जाते? क्या कहते हैं कबीर साहिब–

पाठी– जगत कहे जुलाहा अज्ञानी, हर हर का कुछ भेद न जानी
नीच जात और भगत कहाई, हर का दरस कबहूं न पाई॥

मैनेजर साहिब जी–दादू साहिब फरमाया करते थेः–

दादू कहत पुकारी कोई माने नहिं हमारी॥
पण्डित काज़ी वेद कतेबे पढ़-पढ़ मुये लबारी॥
वह तीरथ वह हज को जाते, बूढ़े भवजल धारी॥
ईसाई सब धोखा खाया पढ अंजील बीचारी॥

हिन्दु तुरक ईसाई तीनों करम धरम पचहारी॥
नूर जहूर खुदा हम पाया उतरै भवजल पारी॥

कहते हैं कि मैंने नूर ज़हूर खुदा देखा है, तुम भी देखो। सुनी ही नहीं किसी ने। पूज्य मस्ताना जी फरमाया करते थे कि देखो भई! जब उनकी नहीं सुनी तो हमारी कौन सुनेगा? कबीर साहिब रो-रोकर गए हैं, क्या?

पाठी– जगत कहे जुलाहा अज्ञानी, हर हर का कुछ भेद न जानी॥
नीच जात और भगत कहाई, हर का दरस कबहूं न पाई॥
सब से कहुं पुकार पुकारी, कोई नहीं माने नर और नारी॥
इन का दोष नहीं कुछ भाई, धर्मराय राखै अटकाई॥
गुप्त पसारा है अति भारी, ताहे न जानी नर और नारी॥
शिव गोरख कोई पार न पावे, और जीव की कौन चलावे॥
नब्बै नाथ चौरासी सिद्धा, समझ बिना जग में रहा अन्धा॥
ऋषि मुनि और असंख्य भेषा, सत्य ठौर सुपने नहिं देखा।
जोर कहें पतिवावत नाहीं, बहुत कहूं समझा मन माहिं॥
कोई योग कोई मद के माता, कोई कहे हम लिखे विधाता॥
कोई मान दशा मन लावे, मौन होय कर भूल गवावे॥
सत्य पुरुष की युक्ति न पाई, हृदय धरै नहीं सत्य को भाई॥

मैनेजर साहिब जी–हमारे पास एक प्रेमी आया करता था। पहले वो एक मोनी के पास जाया करता था, देखो! धोखे बताते हैं। उसको घी की ज़रूरत थी। अब वो इशारों से बताए पर पता न चले। फिर उसने मधाणी मंगवाई। रिड़का फिर बताया। देखों भाई! मौन किसलिए रखा? कि मालिक के सिवा और कोई ख़्याल ही न आए। देखो घी के लिए उसने कितना वक्त खराब किया। दो लफ्ज़ कह देता, एक मिनट में काम हो जाता। यह सब धोखे हैं। दुनिया में तो बल्ले बल्ले है कि यह बोलता नहीं। बड़ा मोनी है, देख लो भई! हाँ जीः

पाठी– कोई कहे हम है भजनीका, काज अकाज लखै नहीं जी का॥
कोई कहे हम पढ़े पुराणा, तत्व अतत्व सभी कुछ जाना॥
कोई कहे विद्या आधीना, सब विचार काया में चीन्हा॥
कोई कहे तप वस कर राखा, तप है मूल और सब शाखा॥
कोई कहे कर्म अधिकारा, कर्मों सूं उतरे भौ पारा॥
कोई कहे भाग्य लिखा सो होई, भाग्य लिखा मेटे नहीं कोई॥

कहां लग कहूं यही सब कहही, भेद हमरा न कोई लहहि॥
सब सूं हार मान मैं बैठा, यह सब जीव काल घर पैठा॥

मैनेजर साहिब जी– यह काल का खाजा बना बैठा है। वो आते हैं हमें निकालने के लिए लेकिन यह उल्टा फकीरों को दुख देते हैं। कबीर साहिब को बहुत दुख दिए हैं। कभी दरिया में फैंक दिया, कभी हाथी को शराब पिला कर उसके आगे डाल दिया। कभी कुछ तो कभी कुछ। हाय! हाय! तौबा है। बोल भई! इसलिए आते हैं फकीर चलो अपने देश! असली रास्ता यही है कि जड़ चेतन की गांठ खोले। यहाँ से तो मार्ग शुरू होता है। कम से कम यह तो हो, कुछ तो हो कि ऐसे ही। यह करते जाओ मुक्ति हो जाएगी। क्या पता हो न हो। अभी दो चार जमात नहीं पढ़ा तो मर कर बी.ए., एम.ए. हो जाएगा? कुछ तो शांती हो? यह रास्ता है अन्दर जाने का। चाहे छोटे दर्जे के फकीर हों, चाहे बड़े दर्जे के। किसी बिरले को पता चलता है। लेकिन यह चीज़ अन्दर है। वह फिरता है बाहर। सब के अन्दर अमृत बरस रहा है। उन्होंने होका दिया, देखो! किसलिए फिर रहे हैं? शांती के लिए। किसी को मिली? माया में मिली? बोलो! विषय विकारों में मिली? बादशाही में मिली? बाल बच्चों में मिली? किसी को तो बताओ कि उसे मिली है? सोचो! वो शांती के ख़ज़ाने इसके अन्दर हैं। सबके अन्दर अमृत बरस रहा है। कोई पीने वाला हो। उन्होंने होका दिया। कोई पीयो रे।

पाठी– पीयो राम रस प्यासा कोई जन पीयो राम रस प्यासा॥
गगन मण्डल में अमृत बरसै, उनमन के घर बासा॥

मैनेजर साहिब जी–अमृत उसे कहते हैं जिस को पीने से, लज्जित लेने से अन्दर शांती आ जाए। मन काबू आ जाए। हमेशा के लिए अमर पद प्राप्त हो जाए। कि ऐसे ही अमृत है? कुछ तो हो, सोच लो! सब के अन्दर अमृत है। अन्दर जाए तो पीए। बाहर जिन चीज़ों में तलाश करते हैं वो कहाँ से आई? वो भी अन्दर से आती हैं। कोई चीज़ बनाते हैं जैसे हलवा बनाते हैं। उसमें क्या है? आटा, घी, चीनी, पानी, आग का सेक। अगर तवजों से बनाओ तो ठीक बनेगा। नहीं तो कच्चा रह जाएगा। किसने बनाया? तव्वजो ने। वो तव्वजो बाहर फैंक दी सबने, वो तव्वजों बाहर फैंक दी सबने। अन्दर जाए तो वहाँ से शुरू होता है मारग। गुरुनानक साहिब ने काज़ी रूकनदीन को कहा कि–

नौ दरवाज़े कोट दे दसवां नूर महल॥
हौज़ हयाती पुर भरे तिस विच कमल अचल॥

दसवां अन्दर खुलता है। यह सब, बन्द करे तो आए। यहाँ अमृत के हौज़ भरे पड़े हैं। यहाँ से शुरू होता है मार्ग। कबीर साहिब ने लिखा है–

तेरी काया रहे अलमस्त नाम की पीले रे बूटी॥

आखिर में क्या कहते हैं:

ब्रह्मा पी, विष्णु पी और पी शक्ति।
दास कबीरा ऐसी पी, आवागमन छूटी॥

लेकिन मेरा आवागमन का चक्र खत्म हो गया है। उन्होंने कुछ न कुछ तो हासिल किया है। ऐसे तो पूजा चपरासी की भी है और पटवारी की भी। लेकिन ऐसे नहीं वो चीज़ ही और है। उन का आवागमन का चक्र नहीं मिटा। यह अमृत सब के अन्दर कोई पीए तब है। बाहर कोई चीज़ नहीं। थोड़ा-थोड़ा भी अभ्यास करे तो इस को पता लगने लग जाता है कि कोई चीज़ है। मीरां भागती दौड़ाती फिरती थी। फिर उसको रविदास मिल गया। उसने सब कुछ बताया कि तीर्थ वगैरह सब कुछ तेरे अन्दर हैं। मैंने देखे हैं, गंगा-यमुना देखी है। अमृत अन्दर देखा है। कहती है कि मैंने खूब जपा, सुनो कैसे जपा? हाँ जी!

पाठी– मीरां रो मन राम ही राम रटै।

मैनेजर साहिब जी–राम राम जपने का मतलब क्या? जो रास्ता उन्होंने बताया, वो जपा, सिमरण।

पाठी– राम जी रटै कोई भगवान रटै।
मीरां रो मन राम ही राम रटै।

मैनेजर साहिब जी–भागो बाला जपे, हाँ जी।

पाठी– राम नाम तू जप ले प्राणी कोटिक पाप कटै॥
मीरा रो.....
जन्म जन्म की खता पुरानी नाम ही लेत फटै
राम जी रटै कोई भगवान रटै, मीरा रो.....

मैनेजर साहिब जी–उसने ऐसा जपा सब ख़्याल निकाल दिए, बस! एक राम ही राम रह गया। सतगुरु ही सतगुरु रह गया। बस सिमरण ही सिमरण रह गया। चारों तरफ से ख़्याल हटने लग जाता है। फिर क्या हुआ? हाँ जी।

पाठी– कनक कटोरे अमृत भरियो पीवत कौन हटै॥
मीरां रो.....

मैनेजर साहिब जी–सिमरण करके, आधा शरीर भी सो जाए। हाथ पांव सोने

लग जाते हैं न? ऐसे बैठे तो इस को पता लगने लग जाता है कि अन्दर शांती है। यहाँ से शुरू हो जाता है। अगर आंखों के पीछे आ जाए तो इसका कोई ठिकाना नहीं। गुरुनानक साहिब कहते हैंः

नौ दरवाजे कोट दे दसवां नूर महल॥
हौज हयाती पुर भरे तिस विच कमल अचल॥

सोचो! इस महल के नौ दरवाज़े हैं। दो आंखों के, दो कानों के चार, दो नाक के छः, एक मुँह सात, दो टट्टी पेशाब के नौ। यहाँ आए दसवां अन्दर खुलता है। यहाँ अमृत के हौज़ भरे हैं। आला से आला कमल का जो दसवां द्वार कहते हैं। ज्यों-ज्यों आगे जाए, नई-नई लज्जित, नए-नए आनन्द फकीरों ने देखा और होका दिया कि चलो अन्दर चीज़ अन्दर है, फिरता बाहर है, कैसे मिले? कहती है अमृत अन्दर है।

प्रभ कै सिमरनि मन की मलु जाइ॥ अम्रिंत नाम रिद माहि समाइ॥

(368/3 मः 5)

वो जपे फिर देखे।

पाठी– कनक कटोरे अमृत भरिया पीवत कौन हटै।
मीरा रो.....
मीरां के प्रभु हरि अविनाशी, तन मन ताही पटै।
मीरां रो.....

मैनेजर साहिब जी–जितना समय मिले जपे। जितना गुड़ डालोगे उतना ही मीठा होगा। चीज़ अन्दर है। दुनिया के काम भी करने हैं। यह लेने देने भी खत्म करने हैं। तन के काम भी करने हैं। इन का गुज़ारा भी करना है। यह भी करता रहे फिर देखो क्या नज़ारा है। यह करना था आकर सबने। सबके अन्दर अमृत बरस रहा है। आगे दसवें द्वार में कोई और अमृत है। इससे आगे जाए तो कुछ और अमृत है। असली तो वो है।

ऊपरि आदि सरब तिहु लोई सचु नानक अंम्रित रसु पाइआ॥

(1042/14 मः 1)

त्रिलोकी से पार जाकर आला से आला है। उसके मु काबले में कोई अमृत नहीं। वो लेना था। बस फकीर आते ही इसलिए हैं। उनको और कोई काम नहीं, कोई गर्ज़ नहीं रखते। कहते हैं कि चल भई अन्दर, चल अपने देश। वहाँ अमृत पीयो, शांती लो। बेगर्ज़ होकर हमारी सेवा करते हैं, जैसे भी है।

पाठी– गगन मण्डल में अमृत बरसै उनमन के घर वासा।

मैनेजर साहिब जी–वो गुरुनानक साहिब ने कहा है। यही मीरां ने कहा है। यह पलटू साहिब कह रहे हैं, सोचो! हाँ जीः

पाठी– शीश उतार धरै गुरु चरनी, करे न तन की आसा॥
ऐसा महंगा अमि बिकत है, छः ऋतु बारह मासा॥

मैनेजर साहिब जी–कोई बी.ए, एम.ए. करता है। कोई डाक्टरी करता है। कितनी मेहनत करता है। मौके पर खाना पीना भी कम कर देता है। यह भी इस तरह ही है। अगर इतनी मेहनत यहाँ करे तो पता नहीं क्या हासिल हो जाए! कोई करता ही नहीं। टाइम दे। क्यों डाक्टर साहिब? कितनी मेहनत की। यह हड्डियों के डाक्टर हैं। हाय! हाय! बाणी कोई भी ले लो। कामिल सन्तों का उपदेश सबका एक ही है कि चलो अन्दर। दुनिया बाहर ही बाहर रह गई। लोग पढ़ने-पढ़ने में रह गए। बस बातों बातों में रह गए। बस प्रैक्टिकली निल है। हाँ जीः

पाठी– ऐसा महंगा अमि बिकत है, छः ऋतु बारह मासा॥
पीयो राम रस.....

मैनेजर साहिब जी–बाहर के काम का ख़्याल है। लेकिन इस का ख़्याल ही नहीं किसी को, बोलो भई! गर्ज़ हो तो करे। गर्ज़ ही नहीं रखी किसी ने। हाफिज़ साहिब फरमाते हैं–

या खुदा! चारों तरफ अंधेरा छा रहा है।

यह रूहानियत का कोई ग्राहक ही नहीं मिलता। हाय! हाय!

ऐसी दुनिया भई दिवानी, भगती भाव न बूझै जी॥
कोई आवे तो बेटा मांगे, यहीं गोसाईं दीजे जी॥
कोई आवे है दुख का मारा, हम पर किरपा कीजै जी॥
कोई आवे तो दौलत मांगे, भेंट रूपईया लीजे जी॥
कोई करावै ब्याह सगाई, सुनत गोसाईं रीझे जी॥
सांच का कोई ग्राहक नाही, झूठे जगत पतीजे जी॥
कहे कबीर सुनो भाई साधो, अंधो का किआ कीजै जी॥

(कबीर साहिब)

फकीर रो-रोकर गए हैं। यह थोड़ा भी करता रहे तो पता नहीं यह क्या हासिल कर ले! हाँ जी। अब तो निशानीयां भी मिलती हैं। फिर भी परवाह नहीं करता। देखो! आम दुनिया को मरते हुए। जिस्म अकड़ जाता है, चेहरा

काला पड़ जाता है, देख लो! लेकिन जो इस भक्ति में लगा है, ठीक फकीर हो, वह जपे, कोई कर्म होगा तो सतगुरु पहले कटवा लेगा लेकिन मौत के वक्त आराम से जाएगा। काल नहीं आएगा, यमदूत नहीं आएंगे। जिस्म नहीं अकड़ेगा, चेहरा काला नहीं होगा, टट्टी पेशाब नहीं निकलेगा। चेहरा पहले से अच्छा होगा। बोलो! यह निशानी है। हाय! हाय! बांग देते हैं न? यह असली बांग है। यह बांग अन्दर है:

बांगे अजब अज आसमाँ दर में रस्सद हर सायते॥
में नशनूद आं बांग रा इल्लाके साहिब दौलते॥

(शम्मस तबरेज़)

शम्मस तबरेज़ फरमाते हैं कि हर घड़ी आसमान से एक कुदरती आवाज़ आ रही है। कोई भाग्यशाली ही उस को सुनता है।

गुफ्त पैग़म्बर के आवाज़े खुदा॥ में रस्सद दर गोशे मन हम चू सदा॥
मोहर बर गोशे शुमां बानिहाद हक्क। ता वा आवाज़े खुदा नारद सबक॥

"कि खुदा की आवाज़ मेरे कानों में आम आवाज़ की तरह आ रही है। तुम्हारे कानों पर मोहरे लगी हुई हैं इसलिए सुन नहीं सकते।"

वो बांग सुननी थी, वो कलमा सुनना था। वो इसके घर का रास्ता है। वो इस शरीर रूपी मस्जिद में है। यह असली मस्जिद है जिस्म।

मसजिदे कोरां जे आबो गिल बवद॥ मस्जिदे साहिब दिलां दर दिल बवद॥

(मौलाना रूम)

फरमाते हैं कि "अन्धों की मस्जिद मिट्टी और पानी से बनी होती है मगर साहिब दिलों की मस्जिद यह दिल है।" यह बढ़िया से बड़िया है। इस मन को काबू कर फिर देख क्या मज़ा आता है। यह निशानी है। क्या हिन्दू, क्या मुसलमान सबका एक ही रास्ता है। एक ही रास्ते आए हैं और एक ही रास्ते जाना है। ऐसे ही झगड़ों में पड़ी है दुनियाँ। हाय! हाय! बनना कोई आसान है? अभी सुनाया था न कि कोई खालसा बना, कोई मुसलमान बना है, देख लो। कोर्स किसी ने भी न किया। शम्मस तबरेज़ ने लिखा है कि–

"बंदे को इंसान बनने के लिए सैकड़ों साल चाहिए और फिर मुसलमान बनने के लिए फिर सैकड़ों साल चाहिएं"

बोलो भई! कैसे बन जाता?

पाठी– शम्मस तबरेज़ साहिब अभ्यासी की मृत्यु के समय मुर्शिद के आने का

जिक्र करते हुए फरमाते हैं कि मालिक के प्रेमी तो बाख़बर मरते हैं। उनको अपनी मौत की पहले से ही ख़बर हो जाती है। वे अपने प्रीतम के सामने एक मीठी मौत मरते हैं। मुर्शिद उन की गुप्त आंख खोल देता है। और मुर्शिदहीन मनुष्य अंधेरे में मरते हैं। आरिफ यानी गुरुमुख लोग मरकर अपने सच्चे मालिक की तरफ रवाना होते हैं। और बिना मुर्शिद वाले लोगों की जान ख़्वार होकर बेख़बरी में निकलती है।

जब वे चोला छोड़ते हैं तो सतगुरु उन के सामने होता है। उस समय उन को इतनी खुशी होती है कि अपनी शादी के मौके पर भी न हुई होगी। उन का सब से मोह टूट जाता है। मां अपने गोद के बच्चे का मुंह भी देखना नहीं चाहती। उन के दिल में कोई डर वा चिन्ता फ़िक्र नहीं होता। उन को घर बार छोड़ने का कोई रंज नहीं होता और न ही आम जीवों की तरह उन की आंखों से आंसू निकलते हैं। ना ही मलमूत्र निकलता है। न ही उनके चेहरे पर किसी प्रकार का मलाल होता है और न ही वह काला पड़ता है। बल्कि पहले से भी अच्छा और तेजस्वी होता है।

मैनेजर साहिब जी–देखो! कोई गमी की बात आ जाए चेहरा मुरझा जाता है। खुशी की आ जाए चेहरा खिल जाता है। जब यमदूत आते हैं टट्टी पेशाब निकल जाता है, बुरा हाल होता है, चेहरा काला पड़ जाता है, जिस्म अकड़ जाता है। जिसकी संभाल होती है, चेहरा खिल जाता है। खुशी-खुशी जाता है। हाँ जी।

पाठी– उन का शरीर भी जल्दी नहीं अकड़ता। काल व उस के दूत उनके समीप नहीं फटकते। बल्कि अगर कहीं आ जाए तो उन में इतनी ताकत आ जाती है कि दहाड़ मारकर उन को भगा देते हैं। तुलसी साहिब लिखते हैं–

जो कोई संत शरण के दागी॥ तिन तै काल दूर होई भागी॥

मैनेजर साहिब जी–दागी क्या? जिन पर उन की मोहर लगी है। यह भी नाम रजिस्टर्ड करवाना पड़ता है, ऐसे नहीं। ऐसे बाद में रीतें बन जाती हैं। जिस फकीर को मालिक की दरगाह से अथॉरिटी है, उसका नाम रजीस्टर्ड हो जाता है, आम नहीं। बाद में वो ही लफ्ज़, वो ही बातें। जैसे डाकू जा रहे हैं, हम भी खड़े हैं, सिपाही भी खड़े हैं। अगर हम कहें कि गोलियां चलाओ तो चलाएंगे?, नहीं चलाते न! अगर थानेदार कहे तब चलाते हैं। लफ्ज़ तो वही हैं। यह अथॉरिटी पर है। उसका बताया हुआ लफ्ज़ काम करता है, बाकी बस। बैत होना, जीयादान इनीशियेशन (Initiation).

पाठी– जो कोई सन्त सरण के दागी, तिन तै काल दूर होई भागी॥
जम की जाल निकटि नहि आवे, मारगि छाड़ि अलग हो जावे॥

यही गुरु अमरदास जी फरमाते हैं कि जो लोग सतगुरु की भक्ति में लगे हुए हैं, उन के पास यमदूत नहीं फटकते व न ही उन्हें धर्मराज के पास जाना पड़ता है।

जिना सतगुर सिउ चितु लाइआ सु खाली कोई नाहि॥
तिन जम की तलब न होवई न ओइ दुख सहाहि॥

(516/4म : 3)

फिर फरमाते हैं कि जहाँ पापी मनुष्य को काल दूध की तरह मथनी से मथता है, वहाँ सन्तों के चिताए हुए जीवों का, जो नाम प्रकट कर लेते हैं या प्रकट करने का यत्न करते हैं, धर्मराज स्वागत करता है और उन को नमस्कार करता है।

पापी करम कमावदे करदे हाइ हाइ॥
नानक जिउ मथनि मधाणीआ तिउ मथे धर्मराइ॥
नामु धिआइनि साजना जनम पदारथ जीति॥
नानक धर्म ऐसे चवहि कीतो भवनु पुनीत॥

(गुरुनानक साहिब)

मैनेजर साहिब जी–वो भी नमस्कार करता है। सेंटर का मुलाज़म हो, सूबे में गुनाह करे, सज़ा तो पाएगा लेकिन यह तो कुछ नहीं कर सकते सूबे वाले। इस तरह यह महकमा ही अलग है।

पाठी– यदि किसी ऐसे सत्संगी का कोई कर्म बाकी रहता हो तो मौत से पूर्व सतगुरु इस कर्म के बदले में कष्ट देकर भुगता देता है। परन्तु मृत्यु के वक्त जीव खुशी-खुशी जाता है।

मैनेजर साहिब जी–हाय! हाय! इसमें सब कुछ आ जाता है कि ऐसे काज़ी बनता है, ऐसे ही मुल्ला बनता है, मुसलमान बनता है, खालसा बनता है, ऐसे ही ब्राह्मण बनता है।

ब्राह्मन सो जो ब्रह्म पछाने। बाहर जाता भीतर आनै॥
पांचों बस करि झूठ न भाखै। दया जनेऊ हिरदे राखै॥
आत्म विद्या पढ़ै पढ़ावै। परमात्म का ध्यान लगावै॥
काम, क्रोध, मद, लोभ न होई। चरणदास कहै ब्राह्मन सोई॥

(चरणदास जी)

फिर ब्राह्मण बनता है। हाय! हाय! सभी इस में दिए हैं। सभी फकीरों की बाणी छांट-छांटकर दी है। पता ही नहीं किसी को। बस ऐसे ही रीतों-रीतों में रह गए सभी। एक जगह बागड़ में गए हम। वहाँ एक चौबारे पर ठहरे आराम के लिए। आगे फिर सत्संग देना था। वहाँ एक पण्डित आ गया। वो कहने लगा कि कुछ सुनाओ। हमने कहा कि भई वहाँ सत्संग होगा सुन लेना। वो तो पीछे पड़ गया। उसके माथे पर बिन्दी लगी हुई यानी कि तिलक लगा रखा था। हमने पूछा कि यह क्या है? कहने लगा कि हम ब्राह्मण होते हैं। कि कुछ तो बात होगी? क्यों लगाया तिलक? बोलो भई! कि यहाँ ख़्याल रखो। आगे तीन लकीरे निकालते हैं न, यह रास्ते हैं। वहाँ एक स्टेज है। अपने हिन्दुओं में बोदी (चोटी) रखते हैं। मुसलमानों के यहाँ तक पट्टी लेकर जाते हैं। यह लास्ट स्टेज है। उसके मतलब का किसी को भी पता नहीं। किसी ने भी नहीं समझा। सब भूल गए। हाय! हाय! आखिर तक जाते हैं। यह लास्ट स्टेज है। मीरां क्या कहती है कि मैंने अन्दर पाया है। यह बाहर फिरता है। अन्दर बड़े धोखे हैं। सब कुछ अन्दर है। बड़े-बड़े बीयाबान जंगल, पहाड़ जिन के बारे में हम ख़्याल भी नहीं कर सकते। धोखे भी बहुत हैं।

बिखड़े दाउ लंघावै मेरा सतिगुरु॥ सुख सहज सेती धरि जाते॥

(1185/13मः 5)

अन्दर आं बहरो बिआबां व जबाल॥ सकता मे गरदद ओहामो ख्याल॥
ई बिआबां दर बिआबां हाए ऊ हम चू अन्दर बहरे पुर यक तारे मू॥

''मौलवी रूम फरमाते हैं कि अन्दर इतने बड़े-बड़े समुद्र, सुनसान बीयाबान और पहाड़ हैं, जिनके बारे में कल्पना और विचार नहीं कर सकते। उनकी तुलना में यह दुनिया ऐसे हैं जैसे समुद्र में एक बाल''

सारी दुनिया बाल जितनी है, जिसके अन्दर इतना बड़ा खेल है, बोलो! रोम-रोम में त्रिलोकी की रचना है। करो बात! हाय! हाय! जैसे गांव में भले मानस भी हैं, बदमाश भी हैं। इसके अन्दर भी ऐसे ही हैं। भले मानस भी हैं, बदमाश भी हैं। बदमाश कौन से हैं? काम, क्रोध, मोह, लोभ, अहंकार। भले मानस शील, क्षमा, सन्तोष, धीरज, विवेक, दीनता और गरीबी। देख लो। बदमाशों के हाथ चढ़े हुए हैं। इन का काम कर रहे हैं। या काम का, या क्रोध का, या मोह का, या लोभ का, या अहंकार का। आत्मा का कौन सा काम है? जब तक इन से परे नहीं होता।

जब तलक विषयों से ये मन विरक्त हो जाता नहीं।
तब तक साधक विचारा सुख सच्चा पाता नहीं॥

(कबीर साहिब)

चूं जे हिस बैंरू ने आमद आदमी॥ बाशिद अज़ तसवीरे गैबी आज़मी॥

''जब तक इन्दियों के भोगों से दूर नहीं होता ग़ैब की तस्वीर को नहीं देख सकता॥'' क्या कहती है मीरांः

पाठी– झिना झिना चोला पहर रखी रे। मैं चिरमिट विखे लड़ जाती।
होरां का पीया प्रदेश बसत है, लिख लिख भेते पाती।
म्हारो पीया म्हारे घट में बसत है दर्शन करूं दिन राती।
साँवरिया मीरा हरी चरणा री दासी।

मैनेजर साहिब जी–आपने देख लिया न, वह बाहर फिरता है। बाहर कैसे मिले?

पाठी– भोली भोली दुनियां द्वारका में जाती तीर्थ कर कर आती।
गंगा रे यमुना म्हारे घट में बसत है नावण करूँ दिन राती।
साँवरिया मीरा हरी.....

मैनेजर साहिब जी–काल ने राह नहीं छोड़ा निकलने का। प्रयाग पर जाते हैं! वहाँ क्या है? तीन नदियों का संगम। यह नमूना है। असली अंदर है।

इड़ा पिंगुला अउर सुखमना तीनि वसहि इक ठाइ॥
बेणी संगमु तह परागु मन मंजनु करे तिथाई॥

(974/6)

उसमें नहाए तब है। बाहर-बाहर नहा कर थके, बना क्या? अमृत इसके अन्दर है।

काइआ अंदरि अंम्रित सरु साचा मनु पीवै भाइ सुभाई हे॥

(1046/3 मः 3)

अंतरु निरमलु अंम्रितसर नाए॥ सदा सूचे साचि समाए॥

(363/16 मः5)

गुरु साहिबान ने देखा कि यह हटते तो नहीं, वहाँ अमृतसर बना दिया कि जब आएंगे तो बतांएगे कि वो अमृतसर ऐसे है। बस! दुनिया बाहर ही बाहर रह गई।

अलफ–इह तन सच्चे दा हुजरा विच पा फकीरा झाती हू॥
न कर मिन्नत खुआज खिजर दी तेरे अन्दर आबे हयाती हू॥

तेरे अंदर आबे हयात है। वो आबे हयात इसके अंदर है। अमृत का चश्मा अंदर है। उसमें कब नहाओगे? सोच लो! सब फकीरों की एक तालीम है। अन्दर कोई नहीं गया। सब ऐसे ही लड़-लड़ कर मर गए। हाँ जीः

पाठी– भोली भोली दुनियां द्वारका में जाती तीर्थ कर कर आती॥
गंगा रे यमुना म्हारे घट में बसत है नावण करूँ दिन राती॥
साँवरिया मीरा हरी.....
भोली भोली दुनियां मद पीवण जाती, मै बिन पीये मदमाती॥
मैं मद पीयो म्हारो प्रेम वटी रो छकी फिरूँ दिन राती॥
साँवरिया मीरा हरी.....

मैनेजर साहिब जी–देख लो! ऐसे खुशी-खुशी जाते हैं। फिर उनके पास कोई नहीं आता, न यमदूत, न काल। यह भक्ति ही ऐसी है। यही नहीं मिसालें मिलती हैं। हम वहाँ से आए तो बाद में चिट्ठी आई थी। यह पढ़ भई! वहाँ बीबी ने चोला छोड़ा देखो! यह महकमा ही अलग है।

पाठी– ''धन धन सतगुरु तेरा ही आसरा''

धन धन सतगुरु के बाद अर्ज़ है कि मेरी माता का 17.02.1997 सुबह आठ बजे देहान्त हो गया है। मेरे दो जहान के मालिक आप ने बहुत संभाल की है।

मैनेजर साहिब जी–हाय! हाय! संभालने वाला तो उसके अन्दर है, बस!

पाठी– माता का शरीर नरम था। टट्टी-पेशाब नहीं निकला। जबकि तीन दिन पहले भी टट्टी-पेशाब नहीं किया था।

मैनेजर साहिब जी–बोलो भई! तीन-चार दिन पहले भी टट्टी-पेशाब नहीं किया और मौत के समय भी नहीं निकला!

पाठी– चेहरे का रंग पहले पीला था। एक बार बीच में काला हुआ। लेकिन मौत से आठ घंटे पहले चेहरा खिल गया। माता ने कहा कि आने जाने वाले मेरे से बात न करें। केवल तूं ही पास बैठा रह।

मैनेजर साहिब जी–उस समय कुछ भी अच्छा नहीं लगता।

पाठी– छः दिन पहले ही कह दिया था कि मैं छः दिन की मेहमान हूँ।

मैनेजर साहिब जी–बोलो भई! हाय! हाय!

पाठी– इस तरह माता जी रोज़ हमें बताती एक दिन घटा कर कि मैं पाँच दिन की मेहमान हूँ।

मैनेजर साहिब जी–बोलो भई! हाय! हाय! फिर क्या कहती?

पाठी– इस तरह माता जी रोज़ हमें बताती थी। मेरे सच्चे पातशाह, सभी प्रमीयों।

मैनेजर साहिब जी–जिन को नाम मिला है सब ऐसे ही जाओगे लेकिन सिमरण करो। खुशाी-खुशी जाओगे। बुढ्ढों के झुरियां होती हैं मुंह पे, वो भी जवान होकर जाते हैं। यह लाइन ही ऐसी है। देख लो! यह महकमा ही ऐसा है। हाय! हाय! हाँ जीः

पाठी– गगन मण्डल में अमृत वरसै उनमन के घर वासा।

मैनेजर साहिब जी–बाहर की लज़्ज़ितों के लिए भागा दौड़ा फिरता है। चीज़ इसके अंदर है। वो हासिल नहीं करता। किसी चीज़ की ज़रूरत नहीं रहती। वो ऐसा अमृत है। सब चीज़ें फीकी लगने लग जाती हैं। हाय! हाय! यह विषय छोड़े तो अंदर जाए।

जब तलक विषयों से यह मन दूर हो जाता नहीं।
तब तलक साधक विचारा सच्चा सुख पाता नहीं।

(कबीर साहिब)

चू जै हिस बैयं ने आमद आदमी॥
वाशिद अज तसबीरे ग़ैबी आजमी॥

''जब तक इन्द्रियों के भोगों से दूर नहीं होता तब तक ग़ैब की तस्वीर को नहीं देख सकता''

पाठी– ऐसा महंगा अमि बिकत है, छः ऋतु बारह मासा॥
मोल करे सो छके दूर से, तोलत छूटे पासा॥
जो पीवे सो युग युग जीवै, कबहूं न होत बिनाशा॥

मैनेजर साहिब जी–कैसे? वो नाम का अमृत, वो आबे हयात अन्दर है। हाय! हाय!

मीठ बहुत सतनाम है, पियत निकारे जान॥

यह पढ़ भई! तन का प्यार छोड़े तब है। हाँ जी

पाठी–''सच्चा नाम इस दुनिया की चीज़ ही नहीं। वह सूक्ष्म मण्डलों में जाकर मिलता है।

मैनेजर साहिब जी–जिसने रचना रची है, नाम कहो, कलमा कहो, बांग कहो। हाँ जी।

पाठी–किसी बिरले गुरुमुख ने प्राप्त किया है। इस नाम को प्रगट करने से सब

इच्छाएं पूर्ण होती हैं। सच्ची और सदैव रहने वाली मुक्ति मिलती है। इस नाम को वह आदमी प्रगट कर सकता है जो किसी गुरुमुख की शरण में जाकर, अहंकार छोड़कर सेवा, सिमरण करता है और तन मन और धन सभी बन्धनों से आज़ाद होता है। जीव अनेक बन्धनों में बंधा पड़ा है। जैसे, मां, बाप, बहन-भाई, पुत्र-स्त्री और रिश्तेदारों की मोहब्बत, दुश्मनों की दुश्मनी, कबीला, खानदान, जात-पात, हकूमत, औहदे की इज़्ज़त, मान, नेक नामी, बदनामी का ख़्याल और भोग विलासों के सामानों को जमा करने की आशा-तृष्णा आादि।

मैनेजर साहिब जी–देख लो! यही रस्से हैं जो पड़े हुए हैं इन चीज़ों का ही ख़्याल है। अन्दर कैसे जाए? क्यों भई! यह ख़्याल ही अन्दर नहीं जाने देते।

पाठी– यह बन्धन इतने प्राचीन हो चुके हैं कि किसी जीव को इसका ख़्याल ही नहीं।

धन धन सतगुरु तेरा ही आसरा

सत्संग/साखियां/पत्र

'जिसु जल निधि कारणि तुम जगि आए'

जुबानी मीरां, बीवी झण्डा सिंह पीपली।

''दूध का फटना बन्द होना, सतगुरु की मेहर से''

धन धन सतगुरु तेरा ही आसरा।

अर्ज़ है कि पूज्य मैनेजर साहिब के इस जगह पर डेरा बनाने के दो साल बाद हमारे घर के चार आदमियों ने पूज्य मैनेजर साहिब से नाम लिया था।

नाम लेने के बाद हमारे घर में दूध फटने लगा था। दो तीन भैंसों का दूध हर रोज़ फट जाता था। हमने इधर उधर से बहुत टूने तावीज़ करवाये मगर कोई फायदा ना हुआ। वो फटा हुआ दूध हमने अपने ऊंट को पिलाना शुरू कर दिया। आखिर हमारा ऊंट भी मर गया। इस पर भी हम देवी देवतेः मढ़ी मसानी पहले की तरह से पूजते रहे। आखिर तंग आने के बाद चेलों को भी घर बुलाकर उनको खूब देसी घी का हलवा और खीर खिलाते। पर कोई फायदा ना हुआ। झन्डा सिंह की बुआ आई और कहने लगी कि मैं सुख बोल कर आई हूँ। तुम खीर लखी सर जाकर चढ़ा आना। तब मैं (मीरां) ने कहा कि अगर दूध फटना बन्द हो जाए तो मैं लखी सर दो बार खीर चढ़ा दूंगी। उसके बाद दूध पतीले में गरम किया। तो दूध फट गया। खीर कैसे बने। आखिर झन्डा सिंह का पिता मलोट से पूछ देने वालों से पूछकर आया। उसने कहा कि हमारे घर में तीन प्रेत रहते हैं। एक तो मंडी वाला है। उसको पांच दिन तक कंवारी लड़कियों को दूध में पताशे घोल कर पिलाओ। वह मान जाएगा। बाकी दो प्रेत जो हैं उनका बन्दोबस्त हम आकर कर देंगे। उनकी गति करवा देंगे। उसके बाद आप के घर में कोई नुकसान नहीं होगा।

उसके बाद एक दिन एक चेला मलोट से आ गया। वह हमारे घर पर आठ दिन रहा। वह खूब देसी घी का हलवा और खीर खाता था। और सारा दिन सोता था। वह रात को ना तो खुद ही सोता और ना ही हमें सोने देता।

आग कड़छी में डालकर कभी दरख्त की तरफ करता और कभी हमारे घर की तरफ इधर उधर करता। फिर वो कहने लगा कि यह प्रेत पांच दिन के करार करते हैं कि तू अब चला जा। और घर जाकर आपने बाल बच्चों को संभाल कर आ जा। मैं अपने बाल बच्चों को खर्च बगैरा देकर आ जाऊंगा। मेरे सुसर (झन्डा सिंह के पिता) ने उसको 50 रुपये खर्च के लिए दे दिये। फिर उसने कहा कि आप लोग फिकर ना करना। मैं आकर प्रेत को कोठे पर से घड़े के अन्दर बन्द करके कच्चे धागे से नीचे उतार दूंगा। तब आप लोग समझ लेना कि प्रेत की गति हो गई है। वो तो 50 रुपये लेकर चला गया। उसके बाद वो तो आया ही नहीं।

उसके बाद एक दिन रात को झन्डा सिंह और जंग सिंह और मेरा भाई खेत में पानी लगाने गए। पानी लगाकर जब रात के तीन बजे घर को आए, चूंकि मैंने सुन रखा था कि घर में तीन प्रेत रहते हैं। इसीलिए वो डरती रात को घर से बाहर ना निकलती थी। उस दिन रात को जब मैंने उन तीनों को देखा तो मेरे दिल को यकीन हो गया कि यही वो तीन प्रेत हैं। मैं उनको देखकर एकदम से चिल्लाई। तब मेरा भाई बोला। मीरां तुझे क्या हो गया है? यहाँ बाहर तो हम तीनों खड़े हैं। पानी लगाकर आए हैं तू डर मत। दरवाज़ा खोल। तब मेरे को यकीन हो गया कि कोई प्रेत नहीं है और दरवाज़ा खोल दिया मगर उसके बाद कई दिन डर के मारे मेरे को बुखार चढ़ता रहा।

एक दिन झन्डा सिंह की बुआ कहने लगी कि अगर तुम्हारे घर में कोई बला या प्रेत है तो आप सन्तों के पास जाकर बात क्यों नहीं करते। तब मैंने कहा कि डेरा तो हम हर रोज़ जाते हैं। मगर सन्तों के आगे बात करने की हमारी हिम्मत नहीं होती। हमें सन्तों के आगे यह बात करने से डर लगता है। तब बुआ जी ने कहा कि आज ही चलो। मैं सन्तों से बात करूंगी।

तब हम फटा हुआ दूध लेकर, मैं, झन्डा सिंह और बुआ, तीनों ही डेरा गए। उस वक्त मैनेजर साहिब अन्दर अनामी में जा चुके थे। तब हमने राजा जी से पूछा जो मैनेजर साहिब की हाज़री में रहते थे कि मैनेजर साहिब कब बाहर आएंगे? तब राजा जी ने कहा कि अभी अन्दर गए हैं। वो अपनी मर्ज़ी के मालिक हैं अभी आ जावें या देर से आवें। यह तो वो ही जानते हैं। अभी हम राजा जी से बातें कर ही रहे थे कि पूज्य मैनेजर साहिब हंसते हुए बाहर आ गए और नूरी मुख से फरमाने लगे कि पिपली वाले क्या बला लाए हैं।

हम सबने उनको धन धन सतगुरु बुलाई और अर्ज़ की कि जी आप तो जानी जान है। हमारा डेढ़ साल से दूध फट रहा है और बच्चे दूध घी खाने को तरसते हैं। आप हम पर दया मेहर करने की कृपा करें। तब उन्होंने फरमाया कि तुम अपनी बला अपने अन्दर से निकालो। तब हमने अर्ज़ की कि जी हम कुछ समझे नहीं। फिर दुबारा फरमाया कि आज तक जो भी तावीज़, टूने, वगैरा करवाए हैं सब बाहर निकाल कर के फैंक दो। हमारा घर तो तावीज़ों से भरा पड़ा था। यहाँ तक कि बाल-बच्चों के गले के अन्दर तावीज़, भैंसों के गले में तावीज़, रिड़कने पर भी तावीज़। सारे घर में अन्दर बाहर तावीज़ ही तावीज़ रखे हुए थे। एक राम पुरा फूल का पंड़ित आज ही 50/- रुपये और एक खेस लेकर गया था। तब पूज्य मैनेजर साहिब ने फरमाया कि सब तावीज़ों को निकाल कर, बाहर नहर में फैंक दो। हम डरते भी थे कि अगर सब बाहर फैंक दिए तो कहीं सारे देवी देवते नाराज़ ना हो जावें।

आखिर सतगुरु का आसरा लेकर हमने सारे तावीज़ एक मटके में बाहर डरते-डरते वहीं नहर में डाल दिये। मैनेजर साहिब ने फरमाया कि तुम्हारा कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकेगा। सतगुरु पर भरोसा रखो। आपके पास जो नाम है, आप सिमरण करें उसके आगे कोई बला नहीं ठहर सकती।

फिर हम लोग धन धन सतगुरु बुला कर डेरा से घर आ गए। और डरते-डरते दूध को गर्म करने के लिए चूल्हे पर रखा। थोड़ी देर के बाद देखा कि दूध खूब गर्म हो रहा है और दूध फटा नहीं। थोड़ी देर के बाद देखा कि उसके ऊपर मलाई भी आ गई है। यह देखकर सारे घर वाले बहुत खुश थे। फिर हमने सुबह और शाम का दूध मिलाकर रात को जमाने के लिए रख दिया।

दूसरे दिन रिड़कने के बाद देखा तो उसमें से तीन पाओ मक्खन निकला। सारे बच्चे बहुत खुश हुए और कहने लगे कि आज तो हम मक्खन से ही रोटी खाऐंगे। फिर हमने मैनेजर साहिब से घर पर (पीपली) सत्संग करने के लिए अर्ज़ की। हमारा सत्संग मंजूर हो गया।

उसके बाद सत्संग पर मेरे मायके से मेरी मां, बहन और भाई सत्संग सुनने आए। और यह भी देखने आए कि वो ऐसा कौन सा सन्त है जिन्होंने दूध फटने से बन्द कर दिया है।

जब सत्संग हुआ तो वो सारे सत्संग सुनकर बहुत खुश हुए। और उन तीनों ने पूज्य मैनेजर साहिब से नाम भी ले लिया। फिर उन्होंने (मेरे मां बाप)

चाहला गांव में मैनेजर साहिब का सत्संग रखवाया क्योंकि उनको यह यकीन (भरोसा) हो गया था कि मैनेजर साहिब ही पूरे कामिल सन्त हैं।

पहले मेरे और मेरी बहन के पैरों में लोहे के कड़े खेतपाल को खुश करने के लिये पहने हुए थे। इसके बाद नाम लेने से हमने वो कडे उतार कर फैंक दिए। सब लोगों ने मुझे बहुत डराया धमकाया कि तेरे एक ही लड़का है। देवी देवतों को मत छोड़। तब मैंने कहा कि हमने बहुत दिनों तक उनकी गुलामी की है। अब वो हमारे गुलाम हैं।

सतगुरु ने दया मेहर करके हम सबका भ्रम निकाल दिया है। अब हम उनसे नहीं डरते। अब हम हर वक्त-बेवक्त, रात हो या दिन हो हर वक्त बगैर डर के डेरा आते हैं और हमको डर लगने की बजाए खुशी मिलती है।

धन धन सगुरु तेरा ही आसरा

आपकी बेटी
मीरां, बीवी इन्डा सिंह पीपली

पूज्य मैनेजर साहिब का सत्संग 1971 में

''जुबानी महंत कल्याण सिंह रौड़ावाली''

धन धन सतगुरु तेरा ही आसरा।

पूज्य मैनेजर साहिब ने 1971 में गांव रौड़ावली में सत्संग फरमाया था सरदार गुरुदयाल सिंह के घर पर। वहाँ पर सरदार हरमिन्दर सिंह ने मैनेजर साहिब से अरदास की कि वापिस जाते वक्त आप और सारी संगत सैहना खेड़ा हमारे घर चरण डालें। तब उन्होंने कहा कि हमारे पास वक्त नहीं है। हम ने जल्दी डेरा जगमालवाली पहुँचना है। तो सरदार हरमिन्दर सिंह ने दो-तीन दफा बिनती की कि जी आप जरूर चलो। कोई 8 बजे पूज्य मैनेजर साहिब जब चलने के लिये तैयार हो गए तो फिर एक दफा कहा कि हमको सीधे जाने दो मगर हरमिन्दर सिंह बिनती करता ही रहा कि हजूर चाहे संगत सिर्फ चाय ही पीकर चली जाए। जब सब चलने के लिए तैयार हुए तो थोड़ी-थोड़ी बारिश होने लगी। तब उन्होंने हुक्म दिया कि जल्दी बैठो जीप में और चलें। तब मैंने (कल्याण सिंह ने) अर्ज़ की कि आप थोड़ी देर और ठहर जाओ। रास्ते में भीग जावेंगे। तब उन्होंने कहा कि अच्छा धूक्कड दो शब्द बोल। फिर आधा घण्टा लगा दिया। जब चलने लगे तो उन्होंने फरमाया कि भई क्या करें बदो बदी (जबरदस्ती) ले जाता है। यह मानता ही नहीं है। फिर हरमिन्दर सिंह कहने लगा कि आप नहर के रास्ते से चलो और मैं संगत को ट्रेक्टर पर लेकर आता हूँ। जब चले तो देखा कि नहर पर पट्टी में फौजियों ने नई-नई मिट्टी डाली हुई थी। हमारी जीप बहुत तेज़ चल रही थी। बारिश भी बहुत हो रही थी। जीप का एक पहीया नहर के किनारे पानी में जा लगा। तब नम्बरदार ने कहा संभल क्या बात हुई। गुरदास को कोई पता न लगा और जीप वहीं रुक गई और मैनेजर साहिब नीचे उतर गये। सभी आदमी जहाँ पर मैनेजर साहिब बैठे थे, वहीं से नीचे उतरे। सारा सामान भी उतार लिया। बारिश में ही सब खड़े रहे। उसके बाद ट्रेक्टर आया और यह वाकिया देखकर सरदार हरमिन्दर सिंह का रंग ज़रद हो गया और कहने लगा कि ट्राली से ट्रेक्टर अलग

करो। मैं सिख वाला गांव जाता हूँ वहाँ से आदमी और टोचन का सामान लेकर आता हूँ। उस के बाद कोई 15-20 मिनट के अन्दर ही वो सामान और आदमियों के साथ आ गया और उनके साथ सरदार मोहन सिंह भी आया। ट्रेक्टर जोड़कर जीप बाहर निकाली। और फिर हम सब सरदार हरमिन्दर सिंह के घर पहुँचे और वहाँ जाकर संगत को खूब चाय, मिठाई और फल फ्रूट बड़े प्रेम से खिलाए। सब की खूब सेवा की। वहाँ पर फिर मैनेजर साहिब ने मजलिस भी की और उसी दिन वहाँ से चलकर 11 बजे डेरा पहुँच गये।

उसी रात को मेरे घर पर मेरी पत्नी को सुपना आया कि मैंने चोला छोड़ दिया है और उसकी लाश कार में घर पर आ गई है। जब अचानक उसकी आंख खुली तो उसी वक्त उसने देखा कि एक कार आकर बाहर रुकी है। तब मेरी औरत ने मेरे भाई को भेजा कि देख कहीं इस कार में सरदार की लाश तो नहीं है। जब उसने कार वाले से पूछा तो कार वाले ने कहा कि मैं तो किसी आदमी को छोड़ने आया था।

उसके बाद जब मैं (कल्याण सिंह) अपने घर पहुँचा तो मेरी औरत ने पूछा कि आप ठीक ठीक तो रहे हो ना? तो मैंने जवाब दिया कि हाँ, मैं वहाँ पर राज़ी खुशी रहा हूँ। मेरी औरत ने दुबारा फिर वही सवाल किया। क्या वाक्य ही आप वहाँ पर राज़ी खुशी रहे? तब मैंने हैरान होकर मेरी औरत से पूछा, क्यों क्या बात है? हम वैसे तो ठीक ही रहे। मगर आज रास्ते में जीप उलट जानी थी पर सतगुरु की दया मेहर से बच गए हैं। उसके बाद फिर मेरी औरत ने कहा कि मुझे सपना आया था कि आप चोला छोड़ गए हो और आपकी लाश घर पर कार में लेकर आए हैं। फिर सारे सपने की बात बताई कि मैं पानी का घड़ा लेकर आई तो देखा कि मस्ताना जी घड़े में से अपने जोड़े और पैर धो रहे हैं। तो मैंने कहा कि लाओ मैं धो दूं। तो मस्ताना जी ने कहा ले धो ले। मगर मेरे पैर धोना घड़े के अन्दर ही। उसके बाद मैंने उनके पैर और जोड़े धो दिए। फिर मेरी औरत ने उनसे पूछा कि जी क्या हुआ था? तब मस्ताना जी ने जवाब दिया कि बीबी मेरे पैर गारे में धंस गए थे और फिर मैंने पूछा कि यह कौन हैं तो संगत ने कहा कि यह मस्ताना जी थे।

धन धन सतगुरु तेरा ही आसरा।

दासः

कल्याण सिंह, रौड़ा वाली।

''बीमार लड़की का ठीक हो जाना''

''जुबानी पण्डित विद्या प्रकाश, मुण्डका, दिल्ली वाले''

धन धन सतगुरु तेरा ही आसरा।

अर्ज़ है कि मैं, विद्या प्रकाश वल्द निहाल सिंह, गांव मुण्डका दिल्ली का रहने वाला हूँ। मैंने तकरीबन दो साल हुए, मार्च 1977 को पूज्य मैनेजर साहिब से नाम लिया था। मेरी एक लड़की जिसका नाम किशनकान्ता है और रोहतक में सांपला मंडी में ब्याही है। उसकी सास गुज़रने के बाद पांच साल हुए, उसको हिचकियों की बीमारी लग गई। नाम लेने के बाद मेरे मन को बड़ी शांती मिली। मैने सोचा कि सब दुःखों की दवा नाम है। अगर उसको नाम दिलवा दिया जाए तो शायद सतगुरु की कृपा से ठीक हो जाए। लिहाजा लड़की को मैं सत्संग मई, 1977 पर डेरा जगमालवाली उसको नाम के वास्ते ले आया। लड़की ने सत्संग बड़े प्रेम से सुना और सत्संग में हिचकी आनी शुरू हो गई। नाम लेने के वासते लड़की कमरे में चली गई और जब मैनेजर साहिब नाम की बख्शीश करने के लिए कमरे में आए तो लड़की को हिचकी लग गई। उन्होंने लड़की को बाहर निकालने को कहा। आखिर लड़की बाहर आ गई। लड़की ने उनसे (मैनेजर साहिब से) कहा कि मुझे पांच साल से यह हिचकी की बीमारी लगी है। तब उन्होंने फरमाया कि बीबी इस जगह पर बीमारी का इलाज नहीं होता। किसी डाक्टर से इलाज करा लो। लड़की ने मेरे से कहा कि मुझे नाम नहीं दिया और बाहर निकाल दिया है। तब लड़की कहने लगी कि अगर मुझे नाम मिल जाए तो मैं ज़रूर ठीक हो जाऊंगी। मुझे पक्का यकीन है।

दूसरे दिन मैंने लड़की को साथ लेकर पूज्य मैनेजर साहिब से अपनी लड़की के बारे में अर्ज़ की और सारा हाल बयान कर दिया। तब उन्होंने कहा, क्या यह आपकी लड़की है? और लड़की की तरफ तवज्जो से देखा तब मैंने अर्ज़ की कि हम आप के पास इलाज के लिये नहीं आए। आप इसको नाम की बखशिश कर दें। मुझे पक्की तसल्ली है कि वो ठीक हो जाएगी। और फिर

एक दफा लड़की को ग़ौर से देखा। नूरी मुख से फरमाया कि अच्छा अगर यह आपकी लड़की है तो कल दिन के सत्संग के बाद इसको नाम दे देंगे। हम कमरे से बाहर आ गये। तब लड़की ने कहा कि पिता जी अब मुझे हिचकी नहीं आएगी। तब मैंने कहा कि यह तुझे कैसे पता लगा या कैसे मालूम हो गया कि तुमको अब हिचकी नहीं आएगी? तब लड़की ने बताया कि अब मेरा सारा बदन हल्का फुल्का हो गया है और मेरे अन्दर शांती आ गई है। नाम मिलने के बाद मेरे को हिचकी बिल्कुल नहीं आएगी। हिचकी तो नाम लेने से पहले ही बन्द हो गई थी। उसको नाम मिल गया उसके बाद तो बिल्कुल ही हिचकी बन्द हो गई।

नाम लेने से पहले मेरी लड़की के तीन लड़कियाँ थी। लड़का कोई ना था। नाम लेने के पूरे 11 महीने बाद लड़का हुआ। अब लड़की के ससुराल वालों की भी तसल्ली हो गई है और नाम लेने के वास्ते कह रहे थे। अब मेरी लड़की पर सतगुरु की पूरी दया मेहर है।

धन धन सतगुरु तेरा ही आसरा

दास

विद्या प्रकाश, मुन्डका, दिल्ली वाला।

''जुबानी चौ खियाली राम''

सत्संग कालावाली

''धन धन सतगुरु तेरा ही आसरा''

अर्ज़ है कि ता. 23-24/6/1973 को कालांवाली मण्डी में पूज्य मैनेजर साहिब जी का सत्संग बड़ी धूमधाम से हुआ। सत्संग का इन्तज़ाम बाजार के बीच में किया गया था। गर्मी की वजह से सब लोग बहुत बेचैन थे। हवा बिल्कुल बन्द थी। छोटे-छोटे बच्चे तो अपनी मां की गोद में रो रहे थे। सब लोग इधर उधर बिखरे हुए खड़े थे और चारों तरफ शोर हो रहा था। कुछ आदमी जिन की सत्संग में कोई दिलचस्पी नहीं थी वो तो इसको बिगाड़ने की कोशिश कर रहे थे। वह सारे इधर उधर फिर रहे थे। एक जगह पर टिक कर नहीं बैठते थे। मेरे दिल में ख़्याल आया कि इस तरह आज सत्संग कैसा होगा। जिस तरह लुधियाना मस्ताना जी के सत्संग के टाईम पर लोग शोर मचाते थे। बावजूद पुलिस होने के आदमी चुप नहीं हो रहे थे। जैसे ही पूज्य मस्ताना जी स्टेज पर आए और सत्संग शुरू किया तो लोग सत्संग सुनकर मस्त होकर बैठ गए। इसी तरह से कालांवाली में भी हुआ। जब रात के 10 बजे पूज्य मैनेजर साहिब स्टेज पर तशरीफ ले आए। तो उसी वक्त काफी लोग तो बैठ गए और तकरीबन आधे आदमी खड़े रहे। पूज्य मैनेजर साहब ने शुरू-शुरू में तो अहिस्ता-अहिस्ता बोलकर लोगों को बड़ी नम्रता और दीनता से समझाया। बाद में कुछ इस तरह का वातावरण हो गया कि उन्होंने जो जोशिले वचन सत्संग पर सुनाए कि हर आदमी मस्त हो गया। वो आदमी जो खड़े थे वो सारे बैठ गए। जो पहले कहने पर भी ना बैठते थे। उन लोगों पर कुछ ऐसा असर हुआ जैसे बीन को सुनकर सांप मस्त हो जाता है।

वो आदमी कहने लगे कि सत्संग तो पहले भी हमने सुने हैं। मगर आज जैसा सत्संग पहले कभी नहीं सुना। पूज्य मैनेजर साहब ने हर एक रूहानी फकीर की दलीलें, मौका के मुताबिक पेश कीं कि किसी को शक-ओ-शुबाह की गुंजाइश ही

ना रही। हर एक आदमी रात के 2 बजे तक सत्संग में मस्त होकर बैठा रहा। सब आदमी गर्मी बगैरा भी भूल गए। खासकर सिख लोग बहुत मतासुर हुए। क्योंकि सत्संग ज़्यादा गुरु ग्रन्थ साहिब में लिखी हुई बातों से मिलता जुलता था। उन्होंने मिसालें भी वक्त के मुताबिक और ठोस दी थीं। किसी को भी बोलने की गुंजाइश ना थी। वो आपस में बाते करते थे कि ऐसा सत्संग पूरी दलीलों के साथ और पुराने फकीरों की मौके के मुताबिक गवाही देकर किसी ने आज तक नहीं सुनाया था। हर एक को खूब रस आया और मस्ती में बैठे रहे। अगर कोई पास वाला आदमी खांसता तो उसको कहते कि भाई उठकर चला जा। हमको सत्संग सुनने दे।

इसी तरह सब आदमी मस्त होकर सत्संग सुनते रहे। किसी किस्म का शोर नहीं हुआ। इसी मस्ती में लोगों को वक्त का भी पता नहीं लगा और रात के दो बज गए। इतना टाईम देखकर लोग हैरान हुए कि दो बज गये और हमें वक्त का पता ही नहीं लगा। सत्संग बहुत अच्छा हुआ।

धन धन सतगुरु तेरा ही आसरा।

दास खियाली राम।

पुज्य मैनेजर साहिब का सत्संग डेरे में

''चौधरी खोता बन जा''

धन धन सतगुरु तेरा ही आसरा।

अर्ज़ है कि गांव धांगड़ तहसील फतेहाबाद में तारीख 5/7/75 के माहवारी सत्संग पर चौ. मनी राम और उसका छोटा भाई शिवनारायण और उसके बड़े भाई राम नारायण का लड़का जगदीश सत्संग पर डेरा जगमालवाली आए। गांव धांगड़ का नया नम्बरदार बनने का चौ. मनी राम का लड़का ख़बाहिशमन्द था। मगर पूज्य मैनेजर साहिब जी ने उससे कहा तुम (मनी राम) इस झगड़े में मत पड़ो। उसकी मर्ज़ी थी कि नम्बरदारी हमारे घर में ही रह जाए। तब उसने रामनारायण के लड़के जगदीश को नम्बरदारी के लिए उकसाया। आखिर जगदीश नम्बरदार बन गया। जब वो सत्संग पर डेरा आया तो पूज्य मैनेजर साहिब ने फरमाया कि ले लिया ना पंगा तूने।

अच्छा सुन! एक बड़े आदमी को एक कामल फकीर ने श्राप दे दिया। और कहा कि तू इन दो बातों में से बात कबूल कर(मान ले)। तब उस फकीर ने कहा कि ''या तो खोता बन जा या गांव का चौधरी बन जा।'' दोनों में से एक। जो तेरी मर्ज़ी हो कबूल कर ले। आखिरकार उस आदमी ने अर्ज़ की कि मैं घर जाकर आपनी औरत से सलाह मशवरा करके आप को बताऊंगा। उसकी औरत फकीरों की सोहबत करती थी और वो फकीर के राज़ को अच्छी तरह से समझती थी। उसकी औरत ने अपने पति से कहा कि अगर तू गांव का चौधरी बन गया तो कर्मों का बोझ और ज़्यादा हो जाएगा। सब के बुरे भले काम करने पडेंगे। तेरे को जायज़-नाजायज़ काम भी करने पड़ेंगे। उन सारे बुरे कर्मों की सज़ा भुगतनी पड़ेगी और चौरासी के चक्कर से निकलना बहुत मुश्किल हो जाएगा। सो बेहतर यही होगा कि खोता बन जाना कबूल कर ले। इससे तूं कोई कर्म तो इस जूनी में कर नहीं सकेगा। मैं जाकर मिन्नत-समाजत करके इस फकीर को खुश करके आप को इस जूनी से आज़ाद करा लूंगी।

सो उसने फकीर के पास जाकर खोते की जूनी बनना कबूल कर लिया। देखो सारी दुनिया मान बड़ाई की भूखी बुरे कर्मों में फंस जाती है और चौरासी उनकी कभी खत्म नहीं होती। इसलिये गांव का चौधरी बनने से खोता बन जाना अच्छा है।

''धन धन सतगुरु तेरा ही आसरा''

बाबत मैनेजर साहिब

''अमृतसर की बूढ़ी औरत की मुराद पूरी हुई''

''धन धन सतगुरु तेरा ही आसरा''

एक औरत अमृतसर की रहने वाली थी। उसकी दिली मुराद थी कि कोई कामल फकीर खुद मेरे को बुलाए और मैं उसके बुलाने पर उसके दर्शन करूं। उसका एक लड़का एम.ए. पास था। उसको दिल की बीमारी थी। वो इलाज के वास्ते घर से आ गया था। मगर वह अपनी माता जी को कुछ बता कर ना गया और ना ही उसने अपनी माता जी को कोई अपनी राज़ी-खुशी का पत्र ही लिखा।

उसकी माता को बहुत फिकर हुआ कि मेरा लड़का कहाँ है और किस हाल में है? जब उससे ना रहा गया तो अपने लड़के की तलाश में इधर उधर तलाशती हुई सिरसा की तरफ आ गई। वहाँ से किसी तरह औढ़ां गांव में आ गई। बूढ़ी के भाई वगैरा सब शराबी थे और वह घर से भी तंग थी। जब इतफाकिया बूढ़ी औढ़ा पहुँच गई तो उसने टैक्सी वाले से कहा कि तू मुझे कालांवाली छोड़ दे। वहाँ से मैं गाड़ी पर सवार होकर बठिन्डा चली जाऊंगी। जब टैक्सी कालांवाली आई तो बठिन्डा जाने वाली गाड़ी निकल गई थी और शाम का वक्त हो गया था। तब वह बूढ़ी सोचने लगी कि मैं क्या करूं और कहाँ जाऊं? इतफाकिया उसी टैक्सी में जिसमें वह औरत आई थी, गांव धांगड़ का चौधरी मनी राम वगैरा सत्संग पर डेरा जगमालवाली आ रहे थे। तब चौधरी ने उस बूढ़ी औरत से कहा कि माता तूं हमारे साथ चल। हम डेरे सत्संग पर जा रहे हैं। तूं भी वहाँ डेरे में सत्संग सुनना और फकीर के दर्शन भी करना। आराम से रात वहीं गुज़ारना और सुबह चली जाना। वहाँ पर बहुत सारे लोग इकट्ठे होगें। बूढ़ी के दिल में तसल्ली हो गई और ख़्याल किया कि मालिक ने खुद ही इन को भेजा होगा मुझे बुलाने के लिये। तब वह बूढ़ी औरत उनके साथ शाम को डेरे आ गई। लोगों की भीड़ और शाही दरबार की रौनक देखकर

बहुत खुश हो गई। जब डेरे आकर पूज्य मैनेजर साहिब के दर्शन किये तो उसके मन को बहुत खुशी महसूस हुई। और इस खुशी के अन्दर वह यह भी भूल गई कि वह तो अपने लड़के को तलाश करने के वास्ते आई है।

तब पूज्य मैनेजर साहिब ने पूछा कि यह बूढ़ी कौन है? तो उस औरत ने कहा कि मैं अमृतसर से आई हूँ। तो मैनेजर साहब ने फौरन कहा कि छड लड़के का ख़्याल। तेरे मन का ख़्याल पूरा हुआ कि नहीं। तो उस औरत ने कहा कि हाँ हजूर मेरा ख़्याल पूरा हुआ। बल्कि मेरे दिल की मुराद भी पूरी हो गई। फिर बूढ़ी को पूरा भरोसा हो गया कि इन सन्तों ने खुद ही मुझे यहाँ बुलाया है और दर्शन दिये हैं। वह बहुत खुश हुई और नाम भी ले लिया और बहुत खुश थी।

धन धन सतगुरु तेरा ही आसरा।

जुबानी जज साहिब

''टयूबवैल के बारे में''

धन धन सतगुरु तेरा ही आसरा।

एक दफा का ज़िक्र है कि किताब छपवाने के वास्ते अहमदगढ़, ज़िला लुधियाना गये तो वहाँ पर जगह-जगह पर टयूबवैल बहुत थे। क्योंकि वहाँ पर पानी बहुत ऊँचा है। वहाँ पर सारा-सारा दिन टयूबवैल चलते रहते हैं। हम वहाँ पर सुबह टयूबवैल पर नहाने के वास्ते जाते थे। महात्मा रणजोध ने पूछा कि पानी इन कुओं में कैसे डालते हैं? उसने पहले कभी इस तरह का टयूबवैल देखा नहीं था। वह यह देखकर बड़ा हैरान हुआ कि जब मर्ज़ी हो पानी को टयूबवैल से निकाल लेते हैं। फिर उसको बताया गया और समझाया गया कि कुएं के अन्दर ही पानी होता है। उसके अन्दर कहीं से पानी लाकर डालना नहीं पड़ता। ज़मीन को खोदकर देखो हर जगह पानी ही निकलेगा। पर इसके अन्दर एक जरूर है कि कहीं पर पानी ऊँचा निकल पड़ता है और कहीं पर पानी बहुत गहराई में खोदने से निकलता है। यह सिर्फ ज़मीन की किस्म पर निर्भर है। महात्मा रणजोध मैट्रिक पास था। उसने यह सारी बात मस्ती के अन्दर ही कही थी।

धन धन सतगुरु तेरा ही आसरा।

''बाबत मैनेजर साहिब''

''सतगुरु ने सपने में दवाई बताना''

धन धन सतगुरु तेरा ही आसरा''

अर्ज़ है कि मेरे पेट में कोई 14-15 साल से तकलीफ थी जो धीरे-धीरे काफी बड़ी गांठ की शक्ल अख्तयार कर गई थी। मैंने कोई 4-5 डाक्टरों को दिखाया और उनकी राय ली तो उन्होंने ने कहा कि इसका कोई इलाज नहीं सिवाए ऑपरेशन के।

इसके बाद मेरे को ख़्याल आया कि डेरे जाकर पूज्य मैनेजर साहिब से इस बीमारी के बारे पूछना चाहिए। मैं जब भी डेरे सत्संग पर आता, शर्म के मारे पूज्य मैनेजर साहिब के सामने ना जाता। अपने दिल में ही विचार करता कि पूज्य मैनेजर साहिब किस-किस की बीमारी दूर करेंगे। एक दिन मेरे को तकलीफ ज़्यादा हो गई तो मैने डेरा आने का विचार पक्का बना लिया। चाहे पूज्य मैनेजर साहिब कुछ भी कहें, मैं उनसे ज़रूर पूछंगा। रात को मैं इसी ख़्याल में सो गया।

तब सुपने में पूज्य मेनैजर साहिब का सरूप नज़र आया और उन्होंने अपने नूरी मुख से फरमाया कि भई अगर किसी आदमी को ऐसी तकलीफ हो जाए तो उसको भूने हुए चनें लेकर उसके अन्दर शक्कर मिलाकर चबाकर खाने चाहिए तो वो ठीक हो जाएगा।

उसके बाद मैंने उसी तरह से भुने हुए चने शक्कर में मिलाकर चबाना शुरू किए। 4-5 दिन चबाने के बाद मुझे फायदा होना शुरू हो गया। अब मेरे पेट के अन्दर छोटी सी गांठ बाकी रहती है। मेरे को पूरा भरोसा है कि वो गांठ भी सतगुरु की दया मेहर से ठीक हो जाएगी।

सतगुरु सब की संभाल करता है।

धन धन सतगुरु तेरा ही आसरा।

''जुबानी हरमेल सिंह गांव ढ़हपई तारीख 21/3/1978''

''बाबत पुज्य मैनेजर साहिब''

''जुबानी महात्मा तेजराम देहली''

''सपने के अन्दर सेवा बता देनी''

धन धन सतगुरु तेरा ही आसरा

मेरे को पिछले सत्संग पर पूज्य मैनेजर साहिब ने फरमाया कि किया तू चौटाला चलेगा? मैंने अर्ज़ की कि नहीं जी। मैं किशन चन्द के बच्चों के साथ दिल्ली वापस चला गया।

दिल्ली मेरे को सुपने में पूज्य मैनेजर साहिब ने दर्शन दिए। मैंने देखा कि आप सिमरण से ईंटें जोड़ रहे हैं। तब मैंने उनसे पूछा कि यह ईंटे कैसे जोड़ते हो। तब मैनेजर साहिब ने फरमाया कि सिमरन करने से यह जुड़ जाती हैं। मैंने फिर उनसे पूछा, क्या मैं भी जोड़ सकता हूँ? तो फरमाया कि हाँ क्यों नहीं? यह सिमरन से जुड़ सकती हैं। और मैंने सिमरन किया तो ईंटे जुड़ गई। मेरे से वो बात हज़म न हुई।

मैंने लाला रतन चन्द और डुंगर चौधरी को बता दिया। फिर मैं 18 मार्च को दिल्ली से डेरा आया और दोपहर बाद चौटाला चले गए। जब चौटाला जाकर नारा लगाया तो पूज्य मैनेजर साहिब ने फरमाया कि पंछी का ख़्याल रखना, इसको सर्दी ना लग जावे। बाद में पूज्य मैनेजर साहिब ने चौटाला के प्रेमीयों के आगे फरमाया कि सांस वाले मरीज़ों से भण्डारे पर जलेबीयां बनवायेगें।

जब हम सब डेरा पहुँचे तो वे ही इंटे जोड़नी पड़ीं।

सतगुरु, बेपरवाह और सब के दिलों की जानने वाला है। वो हाज़िर नाज़िर है।

दास गुनाहगार तेज राम, डेरा जगमाल वाली,

धन धन सतगुरु तेरा ही आसरा

सत्संग

शब्द सोरठि महला 1 (598)

पाठी– जिसु जल निधि कारणि तुम जगि आए सो अंम्रितु गुर पाही जीउ।
छोडहु वेसु भेख चतुराई दुबिधा इहु फलु नाही जीउ॥1॥
मन रे थिरु रहु मतु कत जाही जीउ॥
बाहरि ढूंढत बहुतु दुःखु पावहि घरि अंम्रितु घट माही जीउ॥रहाउ॥
अवगुण छोडि गुणा कउ धावहु करि अवगुण पछुताही जीउ॥
सर अपसर की सार न जाणहि फिरि फिरि कीच बुडाही जीउ॥2॥
अन्तरि मैलु लोभ बहु झूठे बाहरि नावहु काही जीउ॥
निरमल नामु जपहु सद गुरमुखि अंतर की गति ताही जीउ॥3॥
परहरि लोभु निंदा कूडु तिआगहु सचु गुर बचनी फलु पाही जीउ॥
जिउ भावै तिउ राखहु हरि जीउ जन नानक सबदि सलाही जीउ॥4॥9॥

मैनेजर साहिब जी–श्री गुरुनानक साहिब का शब्द है कि हम इस दुनिया में क्यों आये? क्यों हम को इन्सानी जामा दिया? बाकी सब रूहें भी उसी ने बनाई हैं। चौरासी लाख जून हैं। जिसमें तीस लाख किस्म के दरखत (सजर) हैं। 27 लाख किस्म के कीड़े पतंगे हैं। चौदह लाख किस्म के पंछी हैं। नौ लाख किस्म के पानी के जीव हैं। चार लाख किस्म के भूत, प्रेत, जिन, जछ, किन्नर, पिशाच, देवी-देवते, गन्धर्व और इन्सान और हैवान हैं। इनमें से अगर कोई ऊँचे से ऊँचा जन्म है तो वो आदमी का है। यह जन्म क्यों ऊँचे से ऊँचा है? इसमें ही मालिक मिल सकता है और इस जूनी में अपना छुटकारा कर सकता है। और कोई जन्म ऐसा नहीं है कि जिसमें रहकर अपना छुटकारा कर सके। सिर्फ इन्सानी जन्म से ही शांती मिल सकती है। हम सब जुगों जुगों से काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार की आग में सड़ रहे हैं और पीछे भी सड़ते रहे हैं। हम लोग जुगों-जुगों से चौरासी के अन्दर धक्के खा रहे हैं। कभी ऊंट, कभी बैल बन के गड्डों में जुते हैं। सोच लो! कभी बकरे बने हैं, कभी कुछ बनते हैं। कभी

देवी देवते बनते हैं। कभी नरकों में, कभी स्वर्गों में पड़ते हैं, लेकिन हमारा छुटकारा तो नहीं हुआ। इसी तरह धक्के खाते फिरते हैं। एक यही मनुष्य जन्म है, जिसके अन्दर रहकर अपने छुटकारे का बन्दोबस्त कर सकते हैं। देवी-देवते भी इस जन्म को पाने के लिये तरसते हैं।

महात्मा चरण दास जी फरमाते हैं–

मनुष्य रूप को जन्म दुर्लभ जग माहि है।
देवन हूं को कठिन प्राप्त नाहिं है।
सकल देवा यही भांति मनोरथ नित करें।
मनुष्य जन्म को पाए के भवसागर तरें।

फरिश्ते भी तरसते हैं, और हम लोग इस की कदर नहीं करते। ऐसे ही बर्बाद कर देते हैं। हम को इन्सानी जामा क्यों मिला है? इसलिए मिला है कि हम शांती लें। इस जन्म के अन्दर रहकर ही जन्म मरण के बन्धन काट लें। सारी दुनिया इस शांती की तलाश में इधर-उधर मारी-मारी फिरती है। किसी ने इसको विषय-विकारों में रह कर तलाश किया। जितने ज़्यादा विषय विकार भोगे, बजाए शांती मिलने के दुःख ही उठाए हैं। इसने चन्द मिनटों की खुशी के लिए हज़ारों साल दुःख उठाया।

बहु सवादों दूखु परापति होवै। भोगहु रोग सु अंति विगोवै॥

कोई शांती लेने के लिये गृहस्थ छोड़कर जंगलों में गया। वहाँ जाकर भी हमें कपड़े, मकान और रोटी की ज़रूरत है। आदमी को हर चीज़ की जरुरत पड़ती है। महात्मा ने लिखा हैः-

ना सुख विच गृहस्थ दे ना विच छड गयां।
ना सुख विच पांधी पंड़िती ना सुख भूप भइयो॥

ना सुख पढ़ने में, ना सुख गरीबी में, और न ही बादशाहीयों में है। बड़े-बड़े अमीर आदमियों को देखो, वो भी सुखी नहीं हैं। और गरीबों को देखो वो तो सुखी हैं ही नहीं।

अगर किसी के औलाद नहीं, वो भी दुःखी है कि उसके औलाद नहीं है। कोई औलाद के होते हुए भी दुःखी है कि उसका लड़का उससे अलग रहता है और उसकी सेवा नहीं करता। इसी तरह सारी दुनिया ही दुःखी है। जैसे महात्मा ने कहा हैः-

सुख है विच विचार दे सन्तां सरण पयां।

सुख कहाँ पर है? सुख अगर मिल सकता है तो सिर्फ सन्तों की सोहबत करने से ही मिल सकता है। वो हम को प्रेम, प्यार, दीनता और नम्रता सिखाते हैं। यह भी फरमाते हैं कि असली सुख तेरे अन्दर है। लोग इसे बाहर तलाश करते हैं। सच्चा सुख नाम को प्रगट करने में है। सुख को देने वाला सतगुरु और सच्चा नाम है, जो तेरे अन्दर है।

नामु मिलै मनु त्रिपतीए, बिनु नामै ध्रिग जीवासु (मः4)

गुरु राम दास जी फरमाते हैं- अगर तेरे को शांती की तलाश है, तो किसी कामिल सन्त से सच्चा नाम हासिल कर। क्योंकि सच्ची खुशी और शांती सिर्फ नाम के अन्दर है।

नाम क्या चीज़ है? कहाँ से मिल सकता है? नाम बहुत बड़ी ताकत है। जो खण्डों, ब्रह्माण्डों को रच रही है। यह लिखने पढ़ने की चीज़ नहीं है। यह एक अलग ही किस्म की बोली है। यह, न हिन्दी, न संस्कृत, न फारसी, न अरबी, न उर्दू, न अंग्रेजी, न पंजाबी की ज़ुबान है, बल्कि यह एक अलग ही ज़ुबान है जो सबके अन्दर है। चाहे वो हिन्दू है या सिख, या मुसलमान, या ईसाई है। यह शांती और अमृत इन सबके अन्दर है।

अगर इसको कोई ऐसा फकीर मिले, जिसको अपने अन्दर शांती मिली हो और उसने अपने अन्दर 'नाम' को प्रगट किया हो। उस सन्त या फकीर से पूछकर सख़्त मेहनत करे और अपने अन्दर ही सतगुरु और 'नाम' को प्रगट करके शांती हासिल करे। यह सच्ची शांती उसके अपने ही अन्दर है। बाहर कहीं नहीं और किसी चीज़ में नहीं है।

गुरु नानक साहिब ने फरमाया हैः-

घर ही महि अंम्रितु भरपूर है, मनमुखा सादु ना पाया।
जिउ कसतूरी मिरगु ना जाणे भरमदा भरमि भुलाया॥ (मः3)

आदमी बाहर ही दौड़ता फिरता है। उसको बाहर कहीं भी शांती नहीं मिलती। क्योंकि शांती उसके अन्दर ही है। बाहर जिन चीज़ों में शांती है, वह थोड़ी देर बराए नाम की चीज़ है। बाहर वाली शांती भी अन्दर से ही निकली है। जिस चीज़ के ऊपर अपनी तवज्जो डालता है उसको भी खूबसूरत बना देता है। उसमें ही शांती प्रतीत करता है। यह करके उसने अपनी तवज्जो मिट्टी के अन्दर मिला दी। जैसे कोई खाना या हलवा बनाना चाहते हैं। उसके अन्दर क्या होता है? सिर्फ आटा, घी, चीनी, पानी और आग का सेक। अगर आपने

तवज्जो से आटा भूना तो अच्छी तरह से भूना जाएगा, नहीं तो या कच्चा रह जाएगा या ज़्यादा सड़ जाएगा। अगर खाते वक्त भी आपने तवज्जो यानी ख़्याल से खाया तो मज़ा आयेगा, नहीं तो कुछ रस नहीं आएगा। इसी तरह अगर कारीगर ने तवज्जो से कपड़ा बनाया, तो अच्छा बन जाएगा और अच्छा लगेगा।

दूसरा जिस तरह मृग, कस्तूरी की खुशबू खातिर उस खुशबू को ढूंढ़ता हुआ बुरी तरह भागता फिरता है, पर वह यह नहीं जानता कि यह खुशबू उसके अपने अन्दर ही है। वह ढूंढ़ता-ढूंढ़ता आखिर थक जाता है और थक कर गिर पड़ता है। इसी तरह आदमी भी शांती पाने के लिए बाहर ही हज़ारों तरीके अपनाता है।

हज़ारों जप तप करता हुआ अपनी ज़िन्दगी बर्बाद कर लेता है, पर अपने छुटकारे का बन्दोबस्त नहीं करता।

छोड्हु वेस भेख चतुराई दुबिधा इहु फल नाही जीउ

महात्मा लोग या सन्त (कामल सन्त) फरमाते हैं कि अगर तूने सच्ची शांती लेनी है तो दुविधा छोड़ दे। अपने दिल में पक्का यकीन या विश्वास रख कि शांती बाहर नहीं है। सच्ची शांती सिर्फ तेरे को तेरे अन्दर से ही मिल सकती है। जो तेरे मन को हमेशा-हमेशा के लिये शान्त कर देगी, और तू सदा के लिये ज़िन्दगी में अपने अन्दर सुख, शांती और मस्ती अनुभव करेगा। अपनी अक्ल पर भरोसा ना कर। यह अक्ल ही है जो तेरे को भागे दौड़ाए फिरती है और तेरे को धोखा देती है।

धन धन सतगुरु तेरा ही आसरा।

'पत्र'

''पत्र पूज्य मैनेजर साहिब का''

धन धन सतगुरु तेरा ही आसरा।

आपका दुःख भरा ख़त मिला। आपका कोई इम्तिहान नहीं लिया जा रहा। सिर्फ कर्म हैं जो सबको भुगतने पड़ते हैं। श्री रामचन्द्र जी को भी भुगतने पड़े थे। बल्कि प्रेमीयों को तो पाँचवां, छटा हिस्सा ही भुगताया जाता है। घबराना नहीं चाहिये। ज़िन्दगी में दुख-सुख कर्मों के हिसाब से आते रहते हैं। सब काम उचित समय पर अपने आप होते जाते हैं।

आप अन्दर सतगुरु से बेनती करते रहें। सिमरन भजन में लगे रहें। सतगुरु को सब फिकर है। सबको धन धन सतगुरु।

दास- गुरबख़्श सिंह

***

''पुज्य मैनेजर साहिब का पत्र''

''चौधरी दलबीर सिंह जी''

धन धन सतगुरु तेरा ही आसरा।

आपका ख़त मिला। सन्तों का असली काम तो नाम जपा कर जन्म-मरण के बन्धन छुड़ाना है। वो सब प्रेमीयों को मालिक की रज़ा में रहते हुए नाम जपने का उपदेश देते हैं। दुनिया के काम दुनियावीं तौर पर चलते हैं। फकीरों से ऐसी बातें नहीं पूछनी चाहिएँ। अगर वो बताएंगें तो अपने हिसाब से, जिसमें आत्मा का कल्याण हो। उसमें दुनियावीं तौर पर नुकसान भी हो सकता है। सन्त हमेशा आत्मा के कल्याण का फिकर रखते हैं। नुकसान होने पर मन अभाव ले आता है।

आप सतगुरु का आसरा रखकर जो मर्ज़ी काम करें, मगर ये देख लें कि

किस काम की आपको जानकारी है और किस में ज़्यादा उलझाओ नहीं है। आजकल मज़दूरों से काम लेना बड़ा मुश्किल है। जिस काम में आपको ज़्यादा मुहारत हो, वो कर लें। काम वही आदमी चला सकता है जो खुद माहिर हो। आपको वो सतगुरु बताया है, जो सदा साथ है। अंगसंग होकर संभाल कर रहा है। सब काम उसके आसरे करें।

मजलिस करके भजन पर बैठ जायें फिर काम शुरू कर दें। सबको धन धन सतगुरु। सबसे बेनती है कि भजन सिमरन करते रहे।

दास- गुरबख़्श सिंह

***

''पुज्य मैनेजर साहिब का पत्र''

''राज बाला, कसौली''

आप का ख़त मिला। दुख-सुख कर्मों के हिसाब से आते रहते हैं। उनसे घबराना नहीं चाहिए। सबको भोगने पड़ते हैं। बाकी हमारे रिश्ते भी कर्मों के हिसाब से पड़ते हैं। आपस के लेने-देने हैं। जो जो किसी की किस्मत में लिखा है, वही होता है। नाम भी भागों वाले को मिलता है जिस पर सतगुरु की मेहर हो। आप भजन सिमरन करते रहें। अपने छुटकारे का फिकर करें, बाकी सतगुरु की मौज़ पर छोड़ दें। थोड़ा बहुत समझाना हमारा फर्ज है। बाकी सतगुरु की मौज़ पर रखें। सब को धन धन सतगुरु।

दास- गुरबख़्श सिंह

***

''पुज्य मैनेजर साहिब का पत्र''

इज़ीज़म महिन्दर सिंह जी''

धन धन सतगुरु।

तुम्हारा ख़त मिला। जिससे मालूम हुआ कि डेढ़ महीने से बुखार आ रहा है। हर वक्त थोड़ा-थोड़ा रहता है। आज कल का मौसम ही ऐसा है। बहुत लोगों को बुखार आ रहा है। मुझे भी 29/8 से जुकाम खांसी वगैरहा है और साथ बुखार भी हो जाता है।

भण्डारा पर संगत बहुत थी। बैठने के लिए तो जगह दरकिनार, खड़ने

के लिए भी ना थी। इसलिए काफी मकान बनाने पड़े और पड़ रहे हैं। जगह खुली हो रही है।

11/12 नवम्बर का भण्डारा है। आप बमय मास्टर 15-20 दिन रह सकते हैं। उनके बच्चे भी नवम्बर में रह सकते हैं। शायद हमें 20/11 के बाद बाहर जाना पड़े। यह देख लें। बाकी सब ठीक है। मेरी तरफ से बलबीर, दलबीर को धन धन सतगुरु कह दें। भजन सिमरन करते रहें। गुरमीत और उर्मिला दो दिन रहकर चले गए हैं।

दास- गुरबख़्श सिंह

***

''पुज्य मैनेजर साहिब का पत्र''

''करनैल सिंह सलाना''

धन धन सतगुरु। आप का खत मिला और अजीत सिंह का भी। और सरबण सिंह के लड़के ने भी बात की थी। जुगों-जुग्ग से हम पापों की मैलों से भरे पड़े हैं। सिमरन से यह मैलें उतरती हैं। जिसको सिमरन मिला है, अगर फिर भी ऐसे कर्म करे तो मैलें ही चढ़नी हैं। उसको कहें कि सिमरन करे और आइँदा के लिए तौबा करे और अन्दर सतगुरु से बेनती करता जावे। वही माफी देने वाला है और सिमरन से ही मैलें साफ होती हैं। सत्संग पर आता रहे। सत्संग पर ना आने से ही आदमी बुरी सोहबत में फंसकर ऐसे कर्म करता है। सब को धन धन सतगुरु।

दास- गुरबख़्श सिंह

***

पुज्य मैनेजर साहिब का पत्र

''महात्मा मदन मोहन शर्मा''

धन धन सतगुरु तेरा ही आसरा

आप का दुख भरा पत्र मिला। दुख-सुख, अमीरी-गरीबी, तन्दरूस्ती-बीमारी हमारे प्रालब्ध कर्मों के हिसाब से आते हैं जो सबको भोगने पड़ते हैं। हमारे ही किए हुए कर्म हैं। जिसको कभी दुख दिया है उससे दुख लेना है। जिसको सुख दिया है उससे सुख। जो देह से कर्म किये हैं वो देह ने भुगतने हैं। यह

कर्म भूमि है घबराना नहीं चाहिए। सिमरन-भजन करते रहें। प्रालब्ध कर्म तो श्री रामचन्द्र जी महाराज को भी भुगतने पड़े हैं।

जैसे आपने लिखा है कि यह दुनिया भुल-भुलईयां का तमाशा है। मगर इस भुल-भुलईयां में लेने-देने खत्म करने के लिए गुज़रना भी है। सब काम सतगुरु के आसरे करते रहें। उसकी रज़ा में राज़ी रहें।

सब को धन धन सतगुरु।

दास- गुरबख़्श सिंह

***

पुज्य मैनेजर साहिब का पत्र

''महात्मा भवंर लाल पुत्र नथूराम सैनी''

नजदीक चुंगी चौकी,
जिला छछरोली, झुंझून फोन न. 333503

धन धन सतगुरु तेरा ही आसारा

आपका ख़त मिला कि आपकी माता बीमार है। दुख-सुख कर्मों के हिसाब से आते रहते हैं। जो सबको भुगतने पड़ते हैं। आप सिमरन भजन करते रहें। आप ने लिखा कि मन सिमरन में नहीं लगता। यह जल्दी नहीं लगा करता। आप इसको बिठाते रहें। सतगुरु आपको मज़दूरी देगा। मन को बिठायें, लगे या ना लगे। इससे मुकाबला रखें। चलते फिरते सिमरन करते रहें। खेड़ीयों वालों के साथ भण्डारे पर दर्शन दें। भण्डारा 11-12 नवम्बर का है।

दास- गुरबख़्श सिंह

***

पुज्य मैनेजर साहिब का पत्र

''गुरबचन सिंह मिस्त्री सन्धवां''

धन धन सतगुरु। आप का ख़त मिला। हमेशा से ही सारी दुनिया प्रेमीयों के खिलाफ रही है। उनको तंग करती है। यहाँ तक कि गुरु साहिबान को भी तंग किया है। प्रेमीयों को खुद संभलना चाहिए। अपने असूल ठीक रखने चाहिएं। अगर नहीं तो जरूर सज़ा पाओगे। सज़ा तो दूसरों को भी मिलती है, मगर बहुत देर बाद। प्रेमीयों को इस जन्म में मिलनी शुरू हो जाती है।

बाकी भजन सिमरन करते रहें। सबको समझाते रहें। अगर कोई ना माने तो उसकी मर्ज़ी।

दास- गुबखश सिंह

***

पत्र पुज्य मैनेजर साहिब का

''महात्मा बलबीर सिंह

बाडोपई डाकखाना बहबलपुर, जिला हिसार''

धन धन सतगुरु।

आपका प्रेम भरा ख़त मिला। हम तो सब खतों का जवाब दे देते हैं। पता नहीं आपको क्यों किसी ख़त का जवाब नहीं मिला। भजन सिमरन से ही खुशी मिलती है। मैं आपके भजन सिमरन से बहुत खुश हूँ। जितना करोगे उतनी ही खुशी बढ़ती जाएगी। सबको धन धन सतगुरु।

दास- गुरबख़्श सिंह

***

''दुनिया के उपर लिखी नजम''

1. यह दुनिया मुकाम-ए-फानी, हर चीज़ आनी जानी॥
   जो भी यहाँ है आता, एक रोज़ चला जाता।
   रहती नहीं निशानी।
   यह दुनिया मुकाम-ए-फानी, हर चीज़ आनी जानी॥
2. जुलम तू जो करता, नाहक में ही मरता।
   फिर देना हिसाब होगा, अटल इसे तू जानी।
   यह दुनिया मुकाम-ए-फानी, हर चीज़ आनी जानी॥
3. जो मुर्शिद-ए कामिल है, महबूबे खुदा वो है।
   एक जान दो कालब है, इसमें भेद ना जानी।
   यह दुनिया मुकाम-ए-फानी, हर चीज़ आनी जानी॥
4. दुनिया और सतगुरु में से, तूं एक को ही चुन ले।
   सतगुरु बचन गुरु से, धर कान तू सुन ले।
   निगाहें करम जो करदे, हो जाए खतम आनी जानी।
   यह दुनिया मुकाम-ए-फानी, हर चीज़ आनी जानी॥

5. ज़ालिम यह दुनिया वाले, तन के उजले मन के काले।
वक्त-ए-मरग-ए प्रेमी, मांगे ना देंगे पानी।
यह दुनिया मुकाम-ए-फानी, हर चीज़ आनी जानी॥
6. सोहबत फकीर कर ले, सिमरन से झोली भर ले।
दया मेहर जो करदे, जाए बदल ज़िन्दगानी।
यह दुनिया मुकाम-ए-फानी, हर चीज़ आनी जानी॥
7. सतगुरु जी माफ करना, औगन चित्त ना धरना।
हिसाबे गुनाह ना करना, होगी बड़ी मेहरबानी।
यह दुनिया मुकाम-ए-फानी, हर चीज़ आनी जानी॥

धन धन सतगुरु तेरा ही आसरा

सत्संग

'हमन है इश्क मस्ताना'

सत्संग के वचन

मैनेजर साहिब जी–गिरही का टुकड़ा बुरा नौ नौ उंगल दांत।
भजन करे तां उबरे नातर काड़े आंत॥

(कबीर साहिब)

पराया माल खाकर किसी ने भजन नहीं किया। पूज्य मस्ताना जी फरमाया करते थे कि पराया माल तो लोहे के चने हैं। इतनी कदर करते थे। जब आगरे गए। इस तरह बाबा जी के गांव घमाणी जाते थे। उन्होंने भी चूंकि बाबा जी के गांव थे। बेतकलुफी से पेश आते थे। उन्होंने कहना भी कि देखो जी सभी राजे महाराजे आप के चरणों में गिरते हैं। यह आप से बेतकलुफी से पेश आते हैं। सच्चे पातशाह जी ने फरमाया कि जो मर्ज़ी करें यहाँ इनका सब कुछ कबूल है। क्योंकि यह बाबा जी का गांव है। हमारे लिए यह इज़्ज़त के काबिल है। फिर भी जितने फकीर हुए हैं सब ने कमाई वालों की इज़्ज़त की है। बाबा जी के मतल्लक एक मिसाल है। किसी गांव में गए, वहाँ एक बीबी लेटी हुई थी। उसके एक बच्चा साथ पड़ा था और एक पेट में था। बाबा जी ने उसको माथा टेका और आगे चले गए। अब पड़ोसियों ने देख लिया। उन्होंने उसको जगाया और कहा कि बाबा जी ऐसे आप के चरणों में माथा टेक कर चले गए। वो बहुत हैरान हुई और दुख भी बड़ा हुआ। जब वापिस आए तो वो औरत पूछने लगी कि आप ने मेरे चरणों पर माथा क्यों टेका? कहने लगे कि काको! हमने तुझे माथा नहीं टेका। तेरी कमाई को माथा टेका क्योंकि दो बच्चों की मां होकर तेरा ख़्याल अन्दर मालिक से जुड़ा हुआ था। उस कमाई को माथा टेका, बाकी नहीं। इतनी इज़्ज़त देते थे कमाई को। पूज्य मस्ताना जी फरमाया करे थे कि कोई करने वाला मिले। हम उसकी गन्दगी उठाने को तैयार हैं। लेकिन भजन सिमरण करने वाला कोई मिलता नहीं, बातें करने वाले तो बहुत मिलते

हैं पर भजन सिमरण करने वाला कोई नहीं मिलता। सो जितने फकीर आए हैं, सब ने इतनी दीनता अख़्त्यार की है। जो थोड़ा सा भी भजन करता है उसकी भी कदर करते रहे हैं। ये गुण थे दीनता के, नम्रता के अपनी हस्ती को मिटाने के। यह गुरु भक्ति है। नहीं तो किसी की ताकत है जो मुर्शिद के आगे सारी तनख़्वाह दे दे? अफसर होते हुए वहाँ नौकरी में अपनी पोज़ीशन भी रखते थे। हाँ जीः

पाठी– यह बाते केवल आप को आदर्श की महानता समझाने के लिए कही गई हैं। सन्त अपने आप को किस्मत वाला समझता है अगर वो अपने जीवन काल में एक या दो सिक्ख ले जाए।

मैनेजर साहिब जी–हम तो कहते हैं कि हज़ारों सिक्ख हैं। लेकिन वो क्या कहते हैं? अब यह सच्चे पातशाह के वचन है कि वो महात्मा अपने आप को किस्मत वाला समझता है अगर अपने जीवन काल में उसे एक या दो सिक्ख मिल जाएँ। एक दो मिलने भी बहुत कठिन हैं। असली भक्ति वाले, असली कमाई वाले, असली मेहनत वाले एक दो मिलने भी कठिन हैं। हज़ारों लाखों में से एक दो भी मुश्किल हैं। तब उन्होंने देख देखकर नाम दिया है कि कोई अधिकारी ही नहीं। जिसके अन्दर नाम का बीज डाल दिया या जिसने दर्शन भी कर लिए वो आगे का अधिकारी बन गए। उनको आहिस्ता आहिस्ता खींच कर ले जाते हैं, अपनी कमाई के बल पर वरना सच्चा सिक्ख मिलना बड़ा ही कठिन है। गुरु अंगद साहिब एक बार गुरुनानक साहिब जी के साथ जा रहे थे। अब ये तो पीछे ही थे। जैसे चलते चलते बांह हिलती है तो वो गुरुनानक साहिब के आगे निकल गई। कितनी मुदत तक बांह को छुपा कर रखते रहे, ताला लगाकर रखे रहे कि तू आगे क्यों निकल गई। इतनी इज़्ज़त करते थे। यह गुरु भक्ति है कि तूने यह गुनाह क्यों किया। आगे क्यों निकली। कहते हैं कि एक या दो सिक्ख भी मिल जाएँ तो गनीमत है।

पाठी– सन्त अपने आप को किस्मत वाला समझते हैं अगर अपने जीवनकाल में एक या दो सिक्ख मिल जाएं। लेकिन नाम देते समय गुरु को सिक्ख के कुछ कर्म जरूर उठाने पड़ते हैं।

मैनेजर साहिब जी–बस, जोड़े झाड़ने से भी ज़्यादा काम हो गया। हाँ जी।

पाठी– नाम देते समय गुरु को सिक्ख के कुछ कर्म जरूर उठाने पड़ते हैं। लोग सोचते हैं कि सन्तों का जीवन बड़ा ही आराम का जीवन होता है। उनके पीछे

सेवक दौड़े रहते हैं, और भी इस तरह की बातें लोग सोचते रहते हैं। लेकिन सन्तों के कर्तव्य बड़े ही कठिन होते हैं। जैसे तूफान में फंसे जहाज़ की ज़िम्मेवारी कप्तान पर होती है, उससे अधिक ज़िम्मेवारी सन्त अपने सिर पर लेकर चलते है। संसारी समुद्रों का धरातल और किनारा नीचे होते हैं पर इसकी तुलना सृष्टि के समुद्र से कीजिए। जिसमें से होकर सन्तजन आत्मा को लेकर उपर चलते हैं। तथा उसके साथ एकाकार करवा देते हैं। आत्मा की चढ़ाई जितनी ऊंची होती है गुरु के प्रति उतनी ही सेवा भी अधिक होती है। इसमें कोई शक नहीं कि साधू के भेष में कई धोखे बढ़ते जाते हैं। किन्तु ऐसी बातें जीवन के अन्य क्षेत्र में भी होती हैं।

मैनेजर साहिब जी–बल्कि, पहले तो साधू मिलना ही कठिन है। अगर पूरा साधू है तो उस को जरूर उठाना पड़ता है। उसका काम बड़ी ही ज़िम्मेवारी का होता है।

पाठी– इस का कोई उपाय नहीं है।

मैनेजर साहिब जी–हम नकलें करते हैं बाहर। एक बार मैं तो डेरे में ही था। शायद राम साथ गया था। नारायणसर भी साथ और भी थे। वहाँ सिकन्दर पुर गए। आकर पूज्य मस्ताना जी मुझे कहने लगे कि देख मैनेजर! हमने वहाँ क्या देखा कि साधुओं के ठाठ-बाठ के बिस्तरे। सच्चे पातशाह की नकल करते थे कि वो ठाठ से रहते हैं। उन्होंने इतनी मेहनत करके शाही ठाठ रखे। पर वो भी करते नहीं। अन्दर का तो हमें पता था। हम कई बार अन्दर जाते थे तो देखते थे कि कैसे रहते हैं। बस नीचे ऊपर से तो शाही ठाठ, कारों में जाना, रोज़ कपड़े बदलना, पर अन्दर दिन पर रात मेहनत, सोए तो कभी हम ने देखे नहीं थे। हम अपने सामने पूज्य मस्ताना जी को देखते रहे हैं। कभी सोए नहीं देखे। बीमारी में भी नीचे लेटकर भजन करते थे। किसी मौके चारपाई पर लेटते थे। वरना लेटते ही नहीं थे। तो वहाँ बड़ी सख़्त ज़िम्मेवारी होती है। अगर वह मेहनत न करें तो जीवों को ले जा ही नहीं सकते। तभी उन्होंने कहा हैः–

''गुरुमुखि कोटि उधारदा भाई दे नावै एक कणी॥''

(608/16 मः 5)

वो मेहनत करके, नाम की दौलत पैदा करके जीवों के लिए, तब ले जाते थे। आखिरी दम तक मेहनतें करते रहे हैं। हम अपने सामने देखते रहे हैं। चौबीस घण्टे पूज्य मस्ताना जी लगे रहते थे। दिन पर रात सिखाते थे कि ऐसे मेहनत

करनी पड़ती है। दिन पर रात सेवा में लगाए रखते थे। चलो ऐसे नहीं तो ऐसे ही सही। कोई भी काम है बिना मेहनत के नहीं होता। पहले भी एक दो बार अर्ज़ कर चुके हैं कि गंगानगर का बलवीर सिंह आता है। वो कहने लगा कि एक बार कैरों के साथ चला गया। अब वो जगमालवाली आया। वो उठ खड़ा। पिपली तक उसने नींद कर फिर उठ खड़ा, आगे गए फिर उठ खड़ा, फिर पाने पहुँचे फिर उठ खड़ा। दिन पर रात ऐसे नहीं मिनिस्ट्री होती। बस यह भी ऐसे ही नहीं मिला। एक-एक मिनट और एक-एक श्वांस ज़ाया नहीं किया। ऐसे नहीं बनता, सारी रात मेहनत करते हैं पर इसके लिए कोई मेहनत नहीं करते। अगर इधर मेहनत करे तो पता नहीं क्या बन जाए। जितना बाहर दुनिया में मेहनत करते हैं, अगर इधर करे तो काम न बन जाए?

पाठी– हमन है इश्क मस्ताना, हमन को होशियारी क्या।
रहें आज़ाद या जग से, हमन दुनियां से यारी क्या॥

मैनेजर साहिब जी–पहले-पहले तो हज़ारों रुकावटें पड़ती हैं। सच्चे पातशाह ने फरमाया कि हम बाबा जी को गांव ले गए। बाबा जी आए तो वहाँ वाणी का सत्संग किया करें। उस वक्त बीबी रुक्को साथ थी, बड़ी सख़्त थी। उसको कोई रोक नहीं सकता था। हमारे दिल में वहम कि वहाँ कोई लफ्ज़ राधा स्वामी का न बोल दे। वो तो वैसे ही शब्द पढ़ने लग गई। उसने और ऊपर उठा लिया। हमारी शर्म दो मिनट में उड़ गई। यह लोकलाज ही सब से बड़ी रुकावट है। वो कहते हैं कि हमें तो सतगुरु का इश्क है। हमें दुनिया से ताल्लुक क्या? अपने सतगुरु सतगुरु किया बाकी सब ताल्लुक तोड़ लेते हैं। यह माया पीछे तोड़ लेता है। हम रोज़ देखते हैं। सतगुरु के पीछे तोड़ना कठिन है। कई आदमी हैं, अन्दर उनके ख़्याल है कि नाम ले लें पर दुनियादारी बड़ी रुकावट है। वो हिलने नहीं देती। लोकलाज सबसे बड़ी रुकावट है। राजा पीपे को लोकलाज ने मार दिया। इस तरह सारी दुनिया लोकलाज ने पकड़ रखी है।

पाठी– जो बिछुड़े हैं पियारे से, भटकते दर बदर फिरते।
हमारा यार है हममें, हमन को इंतजारी क्या॥
हमन है इश्क.....
खलक सब नाम अपने को बहुत कर सर पटकता है।
हमन गुरु नाम साँचा है, हमन को नामदारी क्या॥
हमन है इश्क.....

मैनेजर साहिब जी–हाँ जी, फिर बोल भई!

पाठी– खलक सब नाम अपने को बहुत कर सर पटकता है।
हमन गुरु नाम साँचा है, हमन को नामदारी क्या॥
हमन है इश्क.....

मैनेजर साहिब जी–लाहौर का एक लड़का था। वह मलाया के जंगलों में था। उसने सोचा कि अब यहाँ से कैसे निकले, वापिस कैसे जाऊं। एक और प्रेमी था। दोनों ने सलाह बनाई कि कैसे निकलें। वो रात को ख़्याल में बैठा। सतगुरु के आगे बिनती की कि ऐ सतगुरु! मुझे अपने देश ले जा। रात को सपने में सच्चे पातशाह आए, कहने लगे कि काका! बात यह है कि (उन दिनों में टिकट नहीं मिलते थे)। टिकट तुझे मिल जाएगा, लेकिन तीसरे जहाज़ में बैठना। सुबह वो उठ गया। वो गया और टिकट मिल गया। जहाज़ चलने लगा। पहले तो वो चढ़ने लगा लेकिन अंग्रेज़ कैप्टन का रूप धार कर उसको रोका कि जगह नहीं है। दूसरे में चढ़ना। फिर दूसरे में चढ़ने लगा तो फिर रोका। तीसरे में चढ़ने लगा तो कहने लगे आजा बैठ जा। वो बैठ गया। अब जहाज़ डावांडोल होने लगा तो सब घबरा गए कि कैसे होगा। सब अपने-अपने ख़्याल में प्रार्थना करने लगे, सोचने लगे और कहने लगे कि तू नहीं सोचता। कहने लगा कि मेरा बचाने वाला मेरे साथ है। और थोड़ी देर डावांडोल होकर वो सीधा हो गया। आगे पता चला कि पहले जो दो आए थे दोनों ही डूब गए। अब वो डेरे आया कहने लगा कि सच्चे पातशाह जी आप ही निकाल कर लाए हो। अब वो आगे जवाब देते हैं।

पाठी– हज़ूर महाराज जी ने कहा देख काका! मैं तो कुछ भी नहीं हूँ। यह सब वाहिगुरु के खेल हैं। कुछ हुआ है तो तेरे प्यार और भरोसे से। मैं तो साधू सन्तों का ही सेवादार हूँ। शुक्र है जो सच्चे पातशाह ने मुझे सेवा बख्शी है। धन सतगुरु सच्चे पातशाह दीन दुनिया के वाली होकर फिर भी सेवादार बने रहे।

मैनेजर साहिब जी–कहते थे कि यह सब बाबा जी के खेल हैं। सब खेल सतगुरु के हैं। सब फकीरों का एक ही मत है। कहते हैं–

हमन गुरु नाम साँचा है, हमन को नामदारी क्या॥

अपनी हस्ती भी मिटाए। कहते थे कि जो सतगुरु है वही सब कुछ है, बाकी कुछ नहीं। अगर अपनी हस्ती को मिटाया, तब उनका नाम चलता है। जो अपना नाम चलाना चाहते हैं, उनका नहीं चलता।

पाठी– दीन दुनिया के वाली होकर भी सेवादार बने रहे, हमें सबक सिखा गए।

खलक सब नाम अपने को बहुत कर सर पटकता है।
हमन गुरू नाम साँचा है हमन को नामदारी क्या॥
हमन है....
न पल बिछुड़े पिआ हमसे न हम बिछुड़ें प्यारे से।
उन्हीं से नेह लागी है, हमन को बेकरारी क्या॥
हमन है....

मैनेजर साहिब जी–फिर बोल भई!

पाठी– न पल बिछुड़े पिआ हमसे न हम बिछुड़े प्यारे से।
उन्हीं से नेह लागी है, हमन को बेकरारी क्या॥
हमन है....

मैनेजर साहिब जी–साथ रहते हुए भी मन यकीन नहीं करता। सच्चे पातशाह बाहर गए हुए थे। कितने ही सत्संग रखे हुए थे। तार गई। जिस को हम कहते हैं पोत-जवाई, मर गया। कुदरती तार सच्चे पातशाह के पास चली गई। खोली, पढ़कर सेवादार के हाथ पकड़ा दी कि जज साहिब को दे देना। जब उनके पास गई तो कहने लगे सच्चे पातशाह ने पढ़ी? कि हाँ जी सच्चे पातशाह जी ने पढ़ ली। कि नहीं पढ़ी नहीं होगी? कि आधा खाना खाने के बाद बताएंगे। कि अच्छा खाना खाने के बाद ही बताएंगे। थोड़ी देर बाद सच्चे पातशाह जी कहने लगे कि काको! ला खाना खा लें। फिर उन्होंने बात की जी सही है, कि हाँ सही है। कि जी फिर दौरा कैंसिल कर देते हैं। सच्चे पातशाह जी कहने लगे कि अब जो होना था हो गया। अब हम वहाँ जाकर क्या करेंगे। इतनी संगतों का दिल दुखाएं, हम किसलिए जाएँ? क्या करेंगे हम? अगर हम होते तो सब छोड़कर पीछे को दौड़ते। वो इन चीज़ों से बेलाग होते हैं। कहने लगे कि हमारा तो सतगुरु से ताल्लुक है। हमें उन चीज़ों से क्या? तब वो ताकत आती है। कि हमारा इन चीज़ों से ताल्लुक क्या? अन्दर सतगुरु है। हमारा तो ताल्लुक उससे है। हर किसी के पैदा भी होने हैं और मरने भी हैं। हमारा क्या ताल्लुक। फिर बोल भई!

पाठी– न पल बिछुड़े पिया हमसे, न हम बिछुड़े प्यारे से।
उन्हीं से नेह लागी है, हमन को बेकरारी क्या॥
हमन है इश्क.....
कबीरा इश्क का मादा दुई को दूर कर दिल से।
जो चलना राह नाजुक है, हमन सर बोझ भारी क्या।
हमन है इश्क...

मैनेजर साहिब जी–बाकी सारी दुनिया बोझ लेकर जाती है। कोई कहता है कि यह मैंने अच्छा काम किया। कोई कहता है कि मेरे बाल बच्चे है, ज़मीन जायदाद है, मेरा यह है, मेरा वो है। सब बोझ ले कर जाते हैं। अच्छे बुरे कर्म इसके साथ जाते हैं। अब मौत आती है तो सारा बोझ इसके सिर पर रख देते हैं कि चल। अब सिर पर बोझ है, आगे आग के समुद्र हैं, पीछे यमदूत हैं। अब जिसके पास कुछ भी रखा नहीं वो क्या करेगा? वे सब बोझ को छोड़कर अलग हो जाते हैं। बस एक सतगुरु ही सतगुरु रह जाता है। बस! कौन उसको पकड़े? वो फिर आज़ाद है। कहते हैं कि आगे का रास्ता नाजुक है। हमारे सिर पर बोझ नहीं, बिल्कुल हल्के हुए फिर रहे हैं। हमें रोकने वाला कौन? रुकावट ही कोई नहीं।

पाठी– कबीरा इश्क का मादा दुई को दूर कर दिल से
जो चलना राह नाजुक है, हमन सर बोझ भारी क्या॥
हमन है.....

मैनेजर साहिब जी–मोगे वाला लड़का कहाँ है भई!

पाठी– जन्म दिन आया जन्म दिन आया।
दो जहां के वाली का जन्म दिया आया॥
जन्म दिन आया जन्म दिन आया।
सावन सांईं शाह का जन्म दिया आया॥
आज चारों दिशा में खुशियां छाई हैं,
और संगत भी मस्ती में आई है।
करे जो भी पुकार, बोले सब संसार, सतगुरु रूहानी का.....

जन्म दिन आया.....
शहर इनामी से सावनशाह जी चलके।
दुनियां सोई हुई को जगा कर के॥
बाटें चांदी, सोना, ऐसा कोई नहीं सोहणा दुनियां फानी में...

जन्म दिन आया.....
नैना तरस रहे थे हमारे जी।
आप आए दुखियों के बन कर सहारे जी।
पांच सावन, नूरी चोला पाया ताकत रूहानी का.....
जन्म दिन आया.....

मैनेजर साहिब जी–करता तो वही सब कुछ है। वो ताकत अपने आप ही काम करती है। पर आमतौर वो ताकत, दुनिया के दुख दूर करने आती है। वो दुख कौन से हैं? आत्मा जो कि चौरासी में धक्के खाती है। नरकों में जाते हैं, गधे घोड़े बनते हैं। यह दुख दूर करते हैं। हम मांगते और-और चीज़े हैं। वो तो आते ही इन कामों के लिए हैं। जो सच्चे दिल से पुकार करता है, उसकी जरूर सुनता है। लंडी खोतल का एक पठान था। खूब भजन बन्दग़ी वाला था। उसकी औरत इधर-उधर जाती थी और पराया माल लाकर खिलाती थी। अब पराए माल से बन्दग़ी में असर पड़ता था। उसने उसको बहुत समझाया पर वह नहीं मानी। पहले तो उसने सोचा कि इस को दुख दूं। फिर सोचता है कि यह भी ठीक नहीं। उसने उसका कत्ल ही कर दिया। जब उसने कत्ल किया, जो उसका प्रेमी था, उसने उस पर मुकदमा कर दिया। ख़ैर, उसको फांसी हो गई। अब वो फांसी की कोठड़ी में बैठा सोचता है कि ऐ मालिक! तेरे पीछे तो मैंने ये काम किया है, अगर तूने संभाल नहीं की तो मैं समझूंगा कि तू है ही नहीं। अगर तू दुनिया में कहीं है, काम कर रहा है तो आकर मेरी संभाल कर। अब यह तो सच्ची तड़प पर है, सच्ची लगन पर है। सच्चे पातशाह के समय की बात है। वो कहने लगे कि तू फिकर न कर कि मालिक नहीं है। मालिक है। इस समय जेल के दरवाज़े खुले पड़े हैं। सिपाही सोए पड़े हैं तू निकल जा। जेहलम में चला जा। वहाँ तुझे हम मिलेंगे। यह दुखियों का सहारा है। उसने देखा कि ताले खुले पड़े हैं। सिपाही सोए पड़े हैं। ज्यों भागा वहाँ से सीधा जेहलम पहुँच गया। वहाँ काफी देर तक सब्ज़ी बेचता रहा। अब वो भी वचन पर कायम था। एक साल के बाद सच्चे पातशाह जेहलम गए सत्संग के लिए। जब वहाँ गए तो उसने क्या देखा कि कार में सच्चे पातशाह बैठे हैं और कार निकल गई। वो पीछे भागा। फिर उसने पता किया। वहाँ पहुँच गया। सत्संग खत्म हो गया था। सच्चे पातशाह नाम देने लगे थे। वो पहुँच गया। कहने लगा कि आपने मुझे ऐसा कहा था कि तुझे कलमा देंगे वहाँ जेहलम में आना कि अच्छा भई! दे देंगे तुझे कलमा। कि जी मेरी कहानी सुन लो, कि सुना। फिर उसने सारी कहानी सुनाई, कि ऐसे-ऐसे हुआ। फिर उसको नाम दिया। सो यह तो सच्ची तड़प पे है। सच्ची लगन पर है। जो सच्ची पुकार करते हैं वो जरूर मदद करते हैं। असली कल्याण तो आत्मा का है। वो धुक्कड़ वहाँ आपरेशन करवा कर रोने लग गया। वहाँ फिर पूज्य मस्ताना जी ने दर्शन दिए। संभाल की। कहने लगे कि पुत्र फिकर न कर तेरा कर्म हम उठाते हैं। पर असली वो है,

आत्मा के कल्याण का। उसका हमें फिकर नहीं। यही तो बॉडी में सतगुरु की पहचान है। जो काम करता है। हाँ जी जीव को इतबार नहीं आता। वो तो कदम-कदम पर साथ है। हर वक्त संभाल करता है। जो मेहनत करते हैं वो तो देखते हैं कि कैसे सतगुरु संभाल करता है। जो भजन सिमरण नहीं करते उनको तसल्लीयाँ मिलती रहती हैं। सतगुरु जरूर संभाल करता है। उसको भी तसल्ली मिलती है। संभाल हर किसी की करता है। जब नाम का बीज डालता है तो सतगुरु साथ-साथ है। इसके पांव में एक कांटा भी नहीं चुभता। कदम-कदम पर संभाल करता है। सूली को सूल कर देता है। डाक्टरों के अन्दर बैठ जाता है। वहाँ भी संभाल करता है। जहाँ भी जाओ साथ है। आम दुनिया कह देती है कि हमें तो तसल्ली नहीं मिली। ऐसे नहीं मिलती। ऐसे करामाते दिखाएं, तो सारी दुनिया पीछे लग जाए। फिर तो अधिकारियों का भी बेड़ा गर्क हो जाता है। वो ऐसे नहीं दिखाते, जो प्रेमी हैं उनको अन्दर ही अन्दर दिखाते हैं बाकी नहीं। सब को दिखाता है जो प्रेमी हैं।

पाठी– जब दुखियों ने दुख में पुकारा था।
तेरे बिना और कोई न सहारा था॥
सब को सुख दिया कष्ट प्रभु ने लिया, दुनियां फानी का...
जन्म दिन.....

मैनेजर साहिब जी–फिर बोल भई!

पाठी– जब दुखियों ने दुख में पुकारा था,
तेरे बिना और कोई न सहारा था।
सब को सुख दिया कष्ट तूने लिया दुनियां फानी का.....
जन्म दिन.....

पाठी– मैंने थोड़ा सा हाल कहा। सच्चे पातशाह ने कहा मुझे सब मालूम है। मुझे अपनी जान दे देनी है। लेकिन दुनिया को बचाना है। कुछ फिकर न करो। आखिर में हिन्दुओं और सिक्खों की जय होगी। मुझे इस देह में नहीं देखना। मैंने कहा कि सच्चे पातशाह कि आप क्यों नहीं देखोगे? हज़ूर महाराज जी ने कहा कि काकीए! एक ही चीज़ होगी। या मैं रहूँगा या दुनिया रहेगी।

मैनेजर साहिब जी–यह पाकिस्तान की लड़ाई के समय की बात है। उस वक्त अगर यह सहारा न देते तो बचता ही कौन? सब को निकाल-निकाल कर लाए।

पाठी– काकीये। एक ही चीज़ होगी कह कर ध्यान में चुप हो गए।

पाठी– जब दुखियों ने दुख में पुकारा था।

तेरे बिन और कोई न सहारा था।
सब को सुख था दिया, कष्ट तुमने लिया, दुनियां फानी का.....
जन्म दिन.....
पांच सावन कैसे सुहावना है। समय ऐसा कभी आया न आना है।
हो मुबारक वो सब को दुनियां सानी का.....
जन्म दिन.....

मैनेजर साहिब जी–किसी को समझ में नहीं आया। सच्चे पातशाह ने फरमाया कि, जब उन से पूछा कि, करने से हो सकता है। अब काम चालू हो गया। उससे भी खतरा था। शहर में बड़ी-बड़ी बिल्डिगें थी। गवर्नमेंट को नोटिस दे दिया कि अगर हमारी बिल्डिगों को नुकसान हो गया तो सरकार को पूरा हर्जाना देना पड़ेगा। अब वो जब वहाँ पहुँचे तो जब उन्होंने पूछा कि यह किस तरह हो सकता है। सच्चे पातशाह कहने लगे कि हमें कुछ शतीरियां चाहिएं। वो कहने लगे कि शतीर जितने मर्ज़ी लो। अब जब वहाँ पहुचे तो काम चालू हो गया था। आठ पलीतों के फ्यूज़ उड़ाने थे। अन्दर सुरंग में करना था। सच्चे पातशाह ने चार को तैयार करके पानी पीने लग गए। अभी चार तैयार करने थे। नौकरों ने कहा कि पीछे पलीतों को आग लगा दी। सच्चे पातशाह ने पूछा कि चार को लगाई, कि आठ को? कि जी आठ को। सच्चे पातशाह के होश उड़ गए। कहने लगे कि हमने सतगुरु का आसरा लिया और काम में लग गए कि जो होगा देखा जाएगा। सबने रोका कि यह काम न करो। जान का खतरा है। उन्होंने परवाह ही नहीं की। अन्दर चले गए। सतगुरु की मौज़, कुदरती सब आठ की आग बुझी पड़ी थी। सो जान तो वहाँ खतरे में ही है। अगर हम यहाँ डिसप्लिन नही रख सकते तो हम भजन भी नहीं कर सकते। इतनी मेहनत इतने खतरे में जान डाली तब भजन कर सकते हैं। इन चीज़ों की कदर मालिक की दरगाह में नहीं, मेहनत की कदर है। कहते हैं न इस तरह 'चोरों कतुब' बनाया। उसकी अड़ी में बनाया कि घोड़े को छोड़े, वो छोड़े को खोल दे कि मैं चोरी जरूर करनी है। वो खोले, तो वो बांध दे। उसने भी न छोड़ा। फकीर ने देखा कि हमें ऐसा अड़ियल चाहिए। उसने झट तव्वजों देकर उसको नाम दिया। हमारा इतना डिसप्लिन नहीं, इतना ही नहीं, मन कैद नहीं कर सकते! आगे क्या करेंगे! भजन में बिठा भी नहीं सकते।

धन धन सतगुरु तेरा ही आसरा

सत्संग

'प्रथम बन्दौ सतगुरु स्वामी'

सत्संग के वचन

पाठी– प्रथम बन्दौ सतगुरु स्वामी।
तुलसी चरण शरनि रति मानी।

पुज्य मैनेजर साहिब जी–यह तुलसी साहिब का शब्द है। पहले भी कई बार अर्ज़ किया है कि उस मालिक ने, उस सतगुरु ने, उस अकाल पुरुष ने रचना की है। जब यह ख़्याल किया कि मैं रचना करूं, तो यह सब काल के सपुर्द किया है।

''खण्ड पाताल दीप सभि लोआ। सब कालै वसि आपि प्रभि किया।''

अब उस मालिक का हुक्म है। उसने क्या किया है, कि जीवों को लेकर कैद किया हुआ है। पहले कारण शरीर है, उसके ऊपर सूक्ष्म है, उसके ऊपर अस्थूल है, यह जो हम देख रहे हैं। चलाने के लिए क्या किया है? उसने पाप, पुण्य का जाल डाला।

'पाप पुण्य बीज की पोट'

यह बीज है। जिससे सारी दुनिया चलती है। महात्मा चरणदास जी कहते हैं–

पाप पुण्य के सत्य ही ठहर रहा ब्रह्मण्ड।
इन दोनों के मिटत ही होत खण्डु खण्ड।
विरले जन को होत है पाप पुण्य की सूझ।
सोई उतरे भवजाल से बहुते रहे आरुझ।

सारी दुनिया पाप, पुण्य के जाल में उलझी हुई है। पाप को तो सब बुरा कहते हैं, किसी ने पुण्य को कहा है? पुण्य भी एक हथकड़ी है! कृष्ण भगवान ने लिखा है कि अच्छे कर्म और बुरे कर्म दोनों हथकड़ियां हैं। एक सोने की समझ लो, एक लोहे की समझ लो। है तो हथकड़ी। किसी को फर्स्ट क्लास जेल मिल गई, किसी को सैकेण्ड क्लास जेल मिल गई, किसी को थर्ड क्लास जेल मिल गई,

लेकिन रहा तो जेली का जेली। छुटकारा तो न हुआ। स्वर्गों में गया, वहाँ भी तन-मन का पिंजरा है। नरकों में गया, वहाँ भी तन-मन का पिंजरा है। स्वर्गों का सुख भोग कर चौरासी में फिर आना पड़ता है। गधे-घोड़े बनना पड़ता है। कृष्ण भगवान ने लिखा है कि हे उधो! यह जो कीड़ा जा रहा है कई बार स्वर्गों का राजा इन्द्र बना, कई बार सृष्टि का कर्त्ता ब्रह्मा बना, आज वह कीड़ा है। फिर क्या फायदा हुआ उनका! हम रोज़ पढ़ते हैं:

इन्द्रपुरी महि सरपर मरणा, ब्रह्मपुरी निहचलु नहीं रहिणा।
सिवपरी का होइगा काला, त्रैगुण माया बिनसि बिताला।

बागड़ में एक शब्द गाते हैं।

तीन लोक चौदह भवन में इस घोघड़ का राज

वहाँ तक इस का राज है। और इसने क्या किया है? मन साथ में चौकीदार लगा दिया है। क्या? कि जीव को भरमाना और भटकाना। और काम नहीं इसको, यह काल का ऐजण्ट है। यह काल का वकील है।

जीउ एकु अरु सगल सरीरा, इसु मन कउ रवि रहो कबीरा।

मस्ताना जी फरमाया करते थे कि भई हिन्दुस्तान में कितने वकील हैं। हमने कहा जी करोड़ों ही होंगे। तो कहने लगे कि त्रिलोकी का एक ही वकील है, जो सब को नचा रहा है। किसी जीव को नहीं छोड़ता। इसको कोई काम नहीं।

गुरुनानक साहिब फरमाते हैं कि–

मनु मैंगलु साकतु दीवाना बन खंडि माया मोहि हैराना।
इत उत जाहि काल के चापे गुरमुखि खोजि लहै घरि आपे।

मन एक मस्त हाथी की तरह है, जो मोह, माया और विषय-विकारों के जंगलों में भटकता फिरता है। कभी स्त्रियों का प्यार, कभी बच्चों का प्यार, कभी रिश्तेदारों का प्यार, कभी कौमों, मज़हबों के झंझट, कभी नाच, कभी रंग, कभी तमाशों में घूमता है।

'इत उत जाहि काल के चापे।'

यह काल के कहने पर चलता है। इसलिए किसी बिरले गुरुमुख ने इसे काबू किया है। और इसने क्या किया है? इन्द्रियां लगा दी, इसमें फंसा रहे। भक्ति भी करे या फिर पाप, पुण्य में फंसा रहे। और इसने क्या किया है? कबीर साहिब ने लिखा है:

जप तप योग, नेम, व्रत, पूजा बहुत प्रपंच पसारा हो।
जैसे बधिक औट टाटी के देही विसवासे चारा हो॥

योग, जाप, नेत, व्रत, पूजा जारी कर दी। सारी दुनिया इसमें उलझी पड़ी है। हमारे फंसाने का जाल है। जैसे शिकारी नीचे दाने डाल कर ऊपर जाल बिछा देता है। जानवर आता तो है पेट भरने के लिए, उल्टा फंस जाता है। इसलिए यह सब फंसाने वाले हैं। ज़्यादा से ज़्यादा हम स्वर्गों तक जा सकते हैं। थोड़ा और ऊपर चले जाते हैं पर छुटकारा नहीं होता। जो छुटकारे का काम है, वो उसने अपने हाथ में रखा है।

''दातै दाति रखी हथि अपणै जिसु भावै तिसु देई।''

जो रचना का काम है। उसने काल के सपुर्द किया है।

''खण्ड पाताल द्वीप सभि लोआ, सब कालै वसि आपि प्रभ किया।''

मालिक ने आप ही जीवों को काल के सपुर्द किया है। जो छुड़ाने का है, वो उसने अपने हाथ में रखा हैं। वह गुरु कौन सा है? बाहर गुरु कर-कर थक गए। बड़े-बड़े जप किए, पर किसी का छुटकारा हुआ? श्रंगी ऋषि ने अड्डासी हज़ार साल तक तप किया। विश्वामित्र ने साठ हज़ार साल तप किया। प्राश्चर जी पूर्ण योगी होकर आए। योग कामयाब न हुआ। मारे गए कि न मारे गए? मंछदर इस देह से निकल जाता था। मन ने ख़्याल किया कि विषय भोगें, राजपाट करें। किसी राजे का देहान्त हुआ। अपनी रूह को अपने जिस्म से निकाल कर उसके शरीर में प्रवेश करके विषय भोगे, राजपाट किया पर मन काबू न आया। मालिक की प्राप्ती न हुई। यह दात मालिक ने अपने हाथ में रखी है। जो रचना का काम है वह काल के सपुर्द किया है। तभी तो तुलसीदास ने कहा है कि वह कौन सा गुरु है? कहाँ रहता है?

सुन हिरदे सतगुरु सहदानी, सतगुरु सतपुरुष को जानी।

वह सतगुरु चौथे लोक में रहता है। त्रिलोकी तक काल का पहरा है। यह बाहर वाले गुरुओं का काम नहीं। सबने गुरु किए। यहाँ तक आए। हाँ, सोचो! छुड़ाने वाला गुरु तो न मिला। आगे जाकर अनेक धोखे हैं। गुरुनानक साहिब ने लिखा है।

बिखड़े दाउ लंघावै मेरा सतगुर, सुख सहज सेती घरि जाते।

कबीर साहिब ने लिखा हैः

रगड़ा है भारी!

कोई समझे संत सुजान, रड़ बड़ मच रही भारी।

अजीब गड़बड़ है। अन्दर आगे काल का हैडक्वाटर है। त्रिकुटी का किला है। वहाँ पर बड़े-बड़े पीर, पैग़म्बर, ओलिया सब रूके बैठे हैं। किसी को भी काल नहीं छोड़ता।

किउ गुर बिनु त्रिकुटी छुटसी सहज मिलिअै सुखु होइ।

वहाँ से निकले। निकाले कौन? गुरुनानक साहिब खुद अकाल पुरुष आए। जब जाने लगे तो रिद्धियों-सिद्धियों ने घेरना चाहा। वो तो उन की चाल से वाकिफ थे निकल गए और किसी की क्या ताकत कि निकल जाए। वो खुद ही ले जाए तो ले जाए। वरना कोई नहीं जा सकता। यह दात उसने अपने हाथ में रखी हैं।

तुलसी दास कहते हैं कि ''मैं उस सतगुरु को नमस्कार करता हूँ जो सबका स्वामी है, सब का मालिक है। जिसने यह सारी दुनिया बनाई है। दूसरे सन्त उसकी मेहर से मिल सकते हैं। ऐसे नहीं। ऐसे तो गुरुओं से दुनिया भरी पड़ी है। लेकिन ठीक फकीर नहीं मिलता। हमें क्या पहचान है कि गुरु कौन सा ठीक है। उसकी मेहर से मिल सकता है। गुरुनानक साहिब फरमाते हैं कि-

किरपा करे जिसु पारब्रह्मु होवै साधु संगु।
जिउ जिउ ओहु वधाईअै तिउ तिउ हरि सिउ रंगु॥
दुहा सिरिआ का खसमु आपि अवरु न दूजा थाउ।
सतिगुरु तुठा पाइआ नानक सचा नाउ॥

जिस पर मेहर करे उसे साधू मिलता है। सन्त किसे कहते हैं? सन्त वह है जो इन शरीरों में से निकले, मालिक की दरगाह में जाए। उसका नाम सन्त है। साधू वो है जो किसी कामिल सन्त का चिताया हुआ हो, मेहनत करके ब्रह्म, पारब्रह्म से पार जाए। उसका नाम साधू है। उस अमृतसर में नहाए, उस प्रयाग में नहाए, उस नाम के तीर्थ में नहाए। सब मैले साफ हो जाएं। उस का नाम साधू है। क्या?

पारब्रह्मु साध रिदै बसै। नानक उधरै साध सुनि रसै।

जिस पर मेहर करे उसे साधू मिलता है। सन्त किसे कहते हैं? सन्त वह है जो इन तीन शरीरों से निकले।

साध सोई जिन एह गढ़ लीन्हा, नौ दरवाजे प्रगट कीना।

साधू कौन है?

साध सोई जिन एह गढ लीना, नौ दरवाजे प्रगट कीना।
दसवां खोल जाए जिन दीना यहाँ कुफल रहा मारा है।

इस काया के अन्दर, इस मन्दिर के अन्दर नौ दरवाज़े हैं। दो आंखों के, दो कानों के, दो नाक के, एक मुंह का, दो टट्टी पेशाब के। दसवां अन्दर खुलता है।

आगे सेत सुन्न है भाई, मान सरोवर पैठ नहाई।

आगे जाके। मान सरोवर कहो, अमृतसर कहो।

हंसन मिल हंसा हो जाई, मिलै जो अमि आहारा है।

यह अमृत पीए, यह शांती ले, उसका नाम साधू है। वो मालिक की मेहर से मिलता है। ऐसे नहीं। रंगे कपड़ों का नाम साधू नहीं। भेखों का नाम साधू नहीं। जो अन्दर जाए, तीर्थ में नहाए। उसका नाम साधू है। उसका नाम गुरुमुख है, जिसके अन्दर मालिक की कोई ताकत है। मालिक का दूसरा रूप क्या है? 'शब्द'। अभी प्राइम मिनिस्टर बोले, एक मिनट में आवाज़ आ गई। जिन अफसरों से ताल्लुक है, वो काम करना शुरू कर देंगे। वो तो वहाँ बैठा है। किसने काम करवाया? उसकी आवाज़ ने, उसकी ताकत ने, उसके हुक्म ने काम करवाया। उसकी आवाज़ सब जगह है। इस तरह हुक्म कहो, शब्द कहो, नाम कहो। सब जगह पर है।

सबदे धरती सबदे आकास। सबदे सबद भया प्रकास।

जैसे इसमें आवाज़ में आती है। इस तरह रेडियो इसके अन्दर है। कहते हैं।

तेरा कवणु गुरु जिस का तू चेला।
सबदु गुरु सुरति धुनि चेला॥
सब्द गुरु को कीजिए बहुतक गुरु लबार।
अपने अपने स्वाद में ठौर ठौर बट मार॥

वो सतगुरु ही गुरु है। इसका दूसरा रूप क्या है 'शब्द'। अन्दर भी अनेकों शब्द हैं। काल के भी है। जिसको 'अनहद' कहते हैं।

'अनिक अनाहद आनंद झुनकार।'

बुल्ले शाह ने कहा है।

'बजदे नाद हजार'

इसको पता नहीं कितने ही धोखे हैं अन्दर। जो सच्ची दरगाह से आ रहा है, सतलोक से आ रहा है, वो सच्ची वाणी है, वो सच्चा शब्द है। वो गुरु है।

कहते हैं कि पहले तो मैं उस शब्द गुरु को नमस्कार करता हूँ जिसकी मेहर से फकीर मिला, सतगुरु मिला। फिर उन सन्तों को नमस्कार करता हूँ। बिना सन्तों के राह नहीं मिलता। देख लो! युगो के युग बीत गए, चौरासी में धक्के खा रहे हैं। कभी ऊंट बनते हैं, कभी बैल बनते हैं, कभी कुछ तो कभी कुछ। भक्ति कर-कर के थक गए। ठीक रास्ता तो न मिला। जब सन्तों के ज़रिए, जो मालिक के बख़्शे हुए हैं, द्वारा ठीक रास्ता मिलता है, फिर छुटकारा होता है। उन सन्तों को नमस्कार करता हूँ। क्या?

पाठी– प्रथम बन्दौ सतगुरु स्वामी। तुलसी चरण सरणि रति मानी॥
पुनि बन्दौ सन्तन सरनाई। जिन पुनि सुरति निरत दरसाई॥

मैनेजर साहिब जी–सुरत निरत सेवा का किसी को पता नहीं। यही गुरुनानक साहिब ने कहा है किः

गुरु की सेव न जाणै कोई, गुरु पारब्रह्मु अगोचरु सोई॥

गुरु की सेवा का किसी को पता नहीं। वो पारब्रह्म से पार है 'अगोचर' क्या? मन इंद्रियों का विषय नहीं। हम इन आंखों से देख नहीं सकते। इन कानों से सुन नहीं सकते। इन हाथों से छू नहीं सकते।

जिस नो लाए लए सो सेवकु जिसु बडभाग मथाइणा।

जिसके अच्छे कर्म हैं उसको लगाए तो लगाए। उसके अपने हाथ में है। सतगुरु का पता कैसे चलता है? कैसे देख सकते हैं?

सन्तन की सरणाई पड़िआ, जीउ प्राण धनु आगै धरिया॥
सेवा सुरति न जाणा काई तुम करहु दइआ किरमाइणा॥

कि सन्तों की शरण में जाकर जो मालिक के बख़्शे हुए हैं। शरण किसे कहते हैं? पूर्ण तौर पर किसी के हवाले करना, यह शरण है। जैसे मरीज़ डाक्टर हवाले करता है।

मुरदा होय मुरीद न गली होवणा। सबर सिदक सहीद भरम भऊ खोवणा।

सबर से, सिदक से, भरोसे से अपनी जान कुर्बान करना। तन, मन, धन, आपा भाव छोड़कर गुरु की शरण में जाना, इसका नाम शरण है।

सन्तन की सरणाई पड़िआ, जीउ प्राण धनु आगै धरिया॥

कि मैं तो गन्दगी का कीड़ा हूँ, गन्दगी खाने वाला हूँ, मुझे सुरत की मेहर का पता नहीं। मालिक को न तन ने देखना है, न मन ने देखना है। जब देखना है, आत्मा ने देखना है। सेवा चार प्रकार है। तन, मन, धन और सुरत की।

इन सब का आपस में गहरा सम्बन्ध है। तन और धन से सेवा करवाता है। पर मन की सेवा मुश्किल है। यह मन के हुक्म में रहता है, सन्तों के हुक्म में नहीं। मन जिधर जाता है, तन भी उधर जाता है। धन भी उधर जाएगा। देख लो! ख़्याल ही जाते हैं। सोच लो! मन ही हमारा दुश्मन है। यह उल्टे रास्ते है। सन्तों के आगे बस बेच ही दे। उनके हुक्म से परे न होये। ज़रा सोचो! जो बोले सो करे। उसके हुक्म में रहे। उनके हुक्म से की गई सेवा से मन की चंचलताई रूकती है। मन पर दबाव पड़ता है। फिर मन सिमरण में लगता है, ऐसे नहीं लगता। जब सिमरण करता है तो फिर एकाग्रता बनती है। फिर सतगुरु की सेवा शुरू हो जाती है। तभी उन्होंने लिखा हैः

गुरुमुखि दीसै सहजि सुभाइ, सेवा सुरति एक लिव लाइ।

गुरुमुख कब बनता है, जब इन तीनों शरीरों से निकले, तब गुरुमुख बनता है। जैसे कोई डाक्टरी में दाखिल होता है। पहले दिन से हम उसे डाक्टर कहना शुरू कर देते हैं। बनेगा तो तब, जब वह कोर्स कर लेगा। सन्तों के हुक्म अनुसार सेवा भजन, सिमरण करता है। उसको गुरुमुख कहने लग जाते हैं। लेकिन बना तो नहीं, बनेगा तो तब, जब उन के हुक्म में सेवा करता है। उसकी सुरत सेवा में चल पड़ती है।

गुरुमुखि दीसै सहजि सुभाइ। सेवा सुरति एक लिव लाइ।

जब तक रूह कहो, सुरत कहो, आत्मा कहो तन के पिजरे में है, तब तक मालिक से नहीं मिल सकती। रास्ता ही नहीं मिलता।

दादू जब लग सुरत सिमटे नहीं, मन निश्चल नहीं होई।
तब लग पिओ परसे नहीं बड़ी विपत एह होई॥

बड़ी मुश्किल यही है। जड़ चेतन की गांठ खोलना।

जीवतु मरै मरै फुनि जीवै तां मोखंतर पाए।

यहाँ से मार्ग शुरू होता है। यहाँ आकर असली मार्ग शुरू होता है। सिमरण जो है यहाँ तक लाने के लिए है। यहाँ से मार्ग शुरु होता है। तब यह खालसा बनता है।

पूर्ण जोत जगै घट में तब खालसा ताहि नखालस जानै।

जब उस नाम से, सत्-ताकत से ताल्लुक पड़ा, तब मैं सनातनी बन गया। यहाँ से नाम शुरू होता है। इस नाम में ताकत है, शक्ति है। जब नाम से ताल्लुक पड़ गया। तो मैं सनातनी बन गया। यहाँ आकर काफी मैले साफ हो जाती हैं,

तब वह पाक बन गया, श्रेष्ठ बन गया, आर्य बन गया, सच्चे सौदे वाला बन गया। इन बिल्डिगों का नाम सच्चा सौदा नहीं। यह तो कल को गिर जाएंगी।

कुड़ु राजा कुड़ु परजा कुड़ु सभु संसारु॥
कुड़ु मण्डप कुड़ु माड़ी कुड़ु बैसण हार॥

यह सब कूड़ है। यहाँ से मार्ग शुरू होता है। यहाँ सुरत की सेवा बढ़ती है।

सेवा सुरति न जाणा काई तुम करहु दइआ किरमाइणा॥
निरगुण कउ संगि लेहु रलाए, करि किरपा मोहि टहलै लाइ॥

कि मैं तो निरगुण हूँ, मेरे में कोई गुण नहीं, अपनी सेवा में रखें। जो कहता है कि मुझ में गुण है, वो अहंकारी है। उसको कभी रास्ता नहीं मिलता।

निरगुण कउ संगि लेहु रलाए करि किरपा मोहि टहलै लाए॥
पंखा फेरउ पीसउ सन्त आगै चरण धोइ सुखु पाइणा॥
बहुत द्वारे भ्रमि भ्रमि आइआ तुमरी किरपा ते तुम सरणइआ॥

कि मैं चौरासी में धक्के खा रहा था। युगों-युगों से कभी ऊंट बनता, कभी घोड़ा बनता हूँ, कभी गधा बनता हूँ, कभी कुछ तो कभी कुछ। मालिक की मेहर से तुम्हारी शरण में आया हूँ।

बहुत द्वारे भ्रमि भ्रमि आइआ तुमरी किरपा ते तुम सरणइआ॥
सदा सदा संतह संगि राखहु एहु नाम दानु देवाइणा॥

तुम्हारी शरण में आया हूँ कि मैं और कुछ नहीं चाहता। मैं आपकी गरज़ में ही रहूँ। मुश्किल रास्ता है। मरदाना कितनी बार भागा। सोचो! कितनी बार रहा। साथ रहे यही गनीमत है। धीरे-धीरे चलता है। यह जल्दी का काम नहीं है।

भए किरपाल गुसाई मेरे दरसनु पाइआ सतिगुरु पूरे।

जिसको बख़्शे। सफाई हुई अन्दर सतगुरु प्रगट हो गया।

सुख सहज सदा आंनदा नानक दास दसाइणा।

कहते हैं कि यहाँ से मार्ग मिलता है। वो सतगुरु फिर आगे ले जाता है सहज अवस्था में। वहाँ आनन्द ही आनन्द है, सुख ही सुख है, शांती ही शांती है, प्रेम ही प्रेम है। वह सहज अवस्था चौथे लोक में है। इसके मुत्तल्लक रोज़ पढ़ते हैं-

अनंदु भइआ मेरी माए सतगुरु मैं पाइआ।
सतगुरु त पाइया सहज सेती मनि वजीआ वाधाईआ।

सहज अवस्था में जो त्रिलोकी से पार चौथे लोक में रहता है, वहाँ पाया।

राग रतन परवार परीआ सबद गावण आईआ।

वहाँ अजीब राग हैं, अजीब खेल है। तो इन रागों में मस्त हैं। अजीब खेल हैं। वह तभी कहते हैं कि पहले तो मैं सतगुरु को नमस्कार करता हूँ जिसकी मेहर से सन्त मिला, कोई फकीर मिला, कोई गुरुमुख मिला। फिर उनको नमस्कार करता हूँ, जिनके ज़रिए सुरत शब्द का पता चला। असली सुरत की सेवा का पता चला। हाँ जीः

पाठी– चरन सरन संतन बलिहारी। सूरति दीन्ही लखन सिहारी॥

सरन सूर सूरति समझाई। सतगुरु मूर मरम लख पाई॥

मैनेजर साहिब जी–कहते हैं कि में उन सन्तों के चरणों में नमस्कार करता हूँ। जिन्होंने मेरी सुरत को मालिक को देखने के काबिल बना दिया। मेरी तीसरी आंख खोल दी, जो मालिक को देखने वाली है। और वह इन आंखों से देखा नहीं जा सकता। इन आंखों से तो हम सिर्फ दुनिया को देख सकते हैं। यह आंखें भी फनाह हैं, जो मालिक को देखने वाली हैं वो और हैं। यह पराए आसरे हैं। हम सूर्य के आसरे देखते हैं, लैम्प या बिजली के आसरे देखते हैं। यह सब फना है। जो मालिक को देखने वाली आंख है वह और है। इसका पता ही नहीं।

'नानक से अखड़ीआं बिअंनि जिनि डिसंदो मा पिरी।'

वो आंख और है जो मालिक को देखने वाली है। इसमें मोतियाबिंद है। तुलसीदास साहिब कहते हैं–

है घट में सूझत नाहि लानत ऐसी जिंद।

तुलसी इस संसार को भया मोतियाबिंद॥

मोतियाबिंद का ख़्याल है, अस्सी, नब्बे साल की उम्र हो गई। कहता है कि टट्टी पेशाब के काबिल हो जाऊं। उसका फिकर है, उसके लिए दवा करता है, डाक्टर के पास जाता है, पैसे खर्च करता है, आपरेशन करवाता है। अगर थोड़ा भी दे तो कितना शुक्रगुज़ार होता है। पर इस आंख का किसी को पता नहीं कि खोलनी है। इसका भी मोतियाबिंद हटवाना है। इसकी दवाई भी है, क्या? 'सिमरण'। आपरेशन क्या है? विषय छोड़ने, अनेक बन्धनों से बंधा पड़ा है। यह लोकलाज छोड़नी है। मां, बाप, भाई का प्यार छोड़ना। कौन सी चीज़ साथ जाएगी? सब कुछ छोड़े बैठे हैं। अन्दर जाए तो देखे, यह तो अनेक बन्धनों में फंसा पड़ा है। यह बन्धन तोड़े, ख़्याल छोड़े तो अन्दर जाए। ख़्याल को आंखों के पीछे इकट्ठा

करे। तब यह आंख खुलती है, तब देख सकता है। यहाँ से मार्ग शुरू होता है। राम, कृष्ण, शिव, ब्रह्मा, विष्णु, महेश, परमेश्वर सब इस के अन्दर है। अन्दर जाए, आंख खोले तो देखे। इसलिए कहता है कि उन्होंने मेरी आंखे खोल दी जो मालिक को देख सकती है। जब तक आंख नहीं खुलती, भजन बंदगी नहीं छोड़ी। खुलती कैसे है? यहाँ गुरुनानक साहिब ने काज़ी रूकनदीन को कहा था किः

इक महल दो बारीयां शिव शक्ति सुलतान।

यह महल है, इसकी दो बारियां हैं। यह असली मन्दिर है। देह तो बाहर काम करने के लिए है। यही ईसा ने कहा हैः

"Eyes are the windows of the soul."

वो तीसरी आंख अन्दर है, जो मालिक को देखने वाली है, 'शिव शक्ति'। वो अन्दर है। जिसे 'शिव नेत्र' कहते हैं। जब तक वो खुलती नहीं, कुछ नहीं बनता। अन्दर देख ही नहीं सकता। यह तो सिमरण ही नहीं करता। यह अन्धे नहीं हैं, गुरुनानक साहिब ने लिखा है कि असली तो वो अंधे है जो सिमरण नहीं करते।

पाठी– चरण सरन संतन बलिहारी।

मैनेजर साहिब जी–और-और झगड़ों में पड़ गई दुनिया। यह काम किसी ने भी न किया। यह काम करना था आकर। यह आंख खोलनी थी।

पाठी– चरन सरन संतन बलिहारी। सूरति दीन्ही लखन सिहारी॥
सरन सूर सूरति समझाई। सतगुर मूर मरम लख पाई॥

मैनेजर साहिब जी–यह सब परमार्थ का मार्ग है। भक्ति का गुण क्या है कि आंख खोलना, अन्दर सतगुरु को प्रगट करना। वो मिलता तो पहले फकीरों के रूप में है। जिन फकीरों के रूप में काम लेता है उनके स्वरूप में मिलता है, ऐसे नहीं।

हरि का चिहन सोई हरि जन का, हरि आपे जनमहिं आपि रखाता।

उस रूप में आकर मिलता है।

अलख पुरुष की आरसी सन्तों की है देह।
लखा जो चाहे अलख को इन्हीं में लख लेह॥

उसी स्वरूप में आकर मिलता है। फिर आगे गाईड करता है, तो अपना रूप बनाता है आगे जा कर। पर इसको प्रगट करना ही सब परमार्थ का मूल है। अगर यह नहीं हुआ तो कुछ भी नहीं। मालिक को देखने के लिए कोई

पर्दा नहीं। एक मुसलमान फकीर ने लिखा है कि मालिक पर कोई पर्दा नहीं। पर्दा हमारी आंखों पर है। यह कर्मों के जाल में फंसा हुआ है। यह पर्दे उठाए तब है। मालिक पर कोई पर्दा नहीं। हमारी आंखों में मोतियाबिंद है, अन्दर की आंख पर है। क्या है यह मोतियाबिंद? यह सब ख़्यालों के पर्दे हैं। कई बार देखा होगा! मस्ताना जी फरमाया करते थे कि बरसात के दिनों में टट्टी करते हैं। शाम को देखो तो वहाँ पर कीड़े ही कीड़े दिखाई देते हैं। देख लो। इस तरह हाल हमारा है। यह ख़्यालों के कीड़े है जो हमें अन्दर नहीं जाने देते। इन को छोड़े तब जाए। मगर जाए कैसे?

पाठी– सरन सूर सूरति समझाई। सतगुरु मूर मरम लख पाई॥
मैं मति हीन दीन दिल दीन्हा। संत सरन सतगुरु को चीन्हा॥

मैनेजर साहिब जी–फरमाते हैं कि मुझे तो अक्ल ही नहीं थी। मेरी बुद्धि काम ही नहीं करती है। मैं दीनता से सन्तों की शरण में चला गया। उनके कहे अनुसार भजन सिमरण किया। सन्तों के ज़रिए सीख कर अन्दर जा सकते हैं और कोई तरीका नहीं। यही गुरुनानक साहिब कहते हैं–

संता की होइ दासरी एहु आचारा सिखुरी।
सगल गुणा गुण उत्तमो भरता दूरि न पिखुरी॥

कि पहले तो सन्त ही नहीं मिलते। अगर मिल भी जाएं तो मन नहीं मानता। मनमुखता नहीं छोड़ता। मर्दाने ने नहीं छोड़ी न! इसी तरह सबका हाल है। मनमुखता नहीं छोड़ता। मन के कहने पर चलता है।

मन की मति तिआगहु हरि जन एहा बात कठैनी।

वो क्या कहते हैं कि तन का प्यार छोड़, यह तुझे बैठने नहीं देगा। सारी उम्र इसी की पालना की हमने।

देह प्यारी जीव को निस दिन सेवा माहिं।
दादू जीवन मरण लौ कबहूं छाड़े नाहिं॥

इस की सेवा की। सारी उम्र इसी में लगे रहे। देह का प्यार छोड़ने नहीं देता। हाय दर्द है, फिर खाना पीना नहीं छूटता।

फरीदा एह तनु भउकणा नित नित दुखीऐ कउणु।
कंनी बुजे दे रहां किती वगै पउणु॥

यह सारा दिन कुत्ते की तरह भौकता रहता है। मेरे लिए यह लाओ, यह लाओ। इसकी सुनता ही नहीं। कबीर साहिब कहते हैं कि इस की किसे न सुणी। सब

की मिट्टी प्लीत कर दी। मस्ताना जी फरमाया करते थे कि देखो भई नौकर मालिक से काबिल है। हमने इससे काम लेना था। यह नौकर है आत्मा का। उल्टा यह काम ले रहा है आत्मा से। मालिक आत्मा है और तन नौकर है। इससे काम लेना था। यह काम करना था। इससे राम नाम निकालना था मगर सारी उम्र यही खा गया। यह आत्मा से काम ले रहा है। सोच लो! यह नहीं छोड़ता। इसने मिट्टी पलीत कर दी सब की। यह किसी को नहीं छोड़ता जैसे इसका प्यार है। अगर मालिक से प्यार हो तो सब कुछ हासिल कर ले।

देह प्यारी जीव को जीव प्यारा देह।
दादू हर रस पाईए जो ऐसा होए सनेह॥

फिर जा सकता है। इसका प्यार छोड़े, लज़्ज़तें छोड़े। तब अन्दर जाए। नहीं तो कैसे जाए। यह जो लज़्ज़तें हैं, यह अन्दर जाने नहीं देतीं। फिर चोरियां, ठगीयां, सोचो! सादा खाए, सादा पहने, लज़्ज़तें छोड़े, अन्दर जाए। अपना सतगुरु, सतगुरु करे, तब जा सकता है। लोक लाज वगैरह यह सब बन्धन है।

पाठी– मैं मति हीन दीन दिल दीन्हा।

मैनेजर साहिब जी–परमार्थ का बनना मुश्किल नहीं लेकिन दास बनना मुश्किल है। अगर दास बन जाए तो सब कुछ बन जाए।

पाठी– संत सरन सतगुरु को चीन्हा।
सतगुरु अगम सिन्ध सुखदायी। जिन सत राह रीति दरसाई॥

मैनेजर साहिब जी–यह सतगुरु अगम क्या है? मन बुद्धि की गमता से परे है। बड़ी-बड़ी ताकतें इसको पहचान न सकीं।

गुरु की भक्ति करे क्या प्राणी ब्रह्म, इन्द्र, महेश न जाणी।
सतगुरु अलख कहो क्यों लखीए जिसे बख्शे तिन पछाता हे॥

बड़ी-बड़ी ताकतों ने इसे नहीं पहचाना। जिसको वो बख़्शे, वो इस भक्ति में लगे। कहते हैं कि सतगुरु अगम है। सुखों का दाता है। सुखों का समुद्र है। सुखों का भण्डार है। जब सन्तों की शरण में गया, सब मैलें दूर हो गई। अन्दर सतगुरु आ गया 'जिन सत राह रीति दरसाई।'

यहाँ से मार्ग शुरू होता है। यहाँ आकर सतगुरु आगे ले जाता है। जिन सन्तों से काम लेता है, उनके ज़रिए, जो चिताएं हुए जीव हैं, उनके लिए हर रोज़ यहाँ तक आता है, नीचे नहीं आता। सतगुरु इसका इन्तज़ार करता है कि कब यह

आए तो इसको मैं ले जाऊं। यह एक कदम चलता है, सतगुरु दो कदम आगे आता है। इसके उपर इतना दयालु है।

चरण सरण गुर एक पैड जाइ चल।
सतिगुरु कोटि पैड आगे होइ लेत है॥
एक बार सतगुरु मंत्र सिमरण मात्र।
सिमरण ताहि बारम्बार गुर हेतु है॥

वो बार-बार सिमरण करता है इसका कि वो कब आए। बू-अली-कलंदर ने लिखा है कि 'आप को इस मेहर का पता नहीं, वो आशिक की तरह हर वक्त तेरे ख़्याल में है। तेरे इन्तज़ार में है कि कब आए, तो मैं इसे ले जाऊं। सोचो! वो इसी इन्तज़ार में है लेकिन यह बाहर ही बाहर फिर रहे हैं।

पाठी– सतगुरु अगम सिंध सुखदाई। जिन सत राह रीति दरसाई॥
पुनि पुनि चरन कँवल सिर नाऊँ। दीन होइ संतन गति गाऊँ॥

मैनेजर साहिब जी–कि मैं हर समय संतों का शुक्राना करता हूँ। क्यों? मैं दीनता से शुक्राना करता हूँ, कि अपने सुखों के देश को छोड़कर, इस गन्दे देश में आकर अपने जीवों को चिताता है, जीयादान करता है। वो खुद जन्म मरण से परे है। हमें निकालने के लिए आते हैं। जो संत मालिक की दरगाह में जाते हैं, वो जन्म मरण से परे हैं। वो मालिक के ऐजन्ट हैं। वो आना नहीं चाहते। यह गन्दा देश है। वो मालिक का देश है, असली देश है। गुरु गोबिन्द सिंह जी क्या लिखते हैं।

द्वै ते एक रूप हो भयो। चित न भयो हमरौ आवन कह।
चुभी रही स्रती प्रभु चरनन मह॥
ज्यों त्यों प्रभु हम को समझायो। इम कह कै इह लोक पठायो॥

कि पहले मैं अलग था। मालिक की भक्ति करके अन्दर गया तो वहाँ की खुशी और आनन्द देखकर मेरा इस दुनिया में आने का मन नहीं करता था। मालिक ने ज्यों-त्यों समझा कर भेजा कि तेरा तो छुटकारा हो गया, जब चाहो आ जाओ, जब चाहो चले जाओ। उनको भी समझा, शायद कोई मान जाए। वो रहना नहीं चाहते, वो मालिक के हुक्म में रहते हैं।

कबीर साहिब कहते हैं।

मोहि न व्यापे जग की माया। कहन सुनन की है यह काया॥

यह समझाने के लिए है।

ब्रह्म बोले काया के ओल्हे। काया बिन ब्रह्म किआ बोले।
मोहि न व्यापे जग की माया। कहन सुनन की है यह काया॥

मैं तो मालिक की दरगाह में रहता हूँ हर वक्त। वो तो यहाँ काम करने के लिए आते हैं। जैसे कोई दौरे पे आते हैं। वो भी दौरे पर आते हैं, जीवों को चिताने के लिए। वहाँ से ख़ज़ाना लाते हैं। फिर वो देते हैं। जब तक वो आत्मा में इंजैक्शन नहीं देते, यह आत्मा जाग ही नहीं सकती।

गुर का सबदु गुर थै टिकै होर थै प्रगट न होये।

यही ईसा ने कहा है-

"That which is the born of the flesh is flesh, that which is born of the spirit is Spirit."

कि जैसे मांस से मांस पैदा होता है। आदमी से बच्चा पैदा होता है। ऐसे ही रूह से रूह जागती है। इसका नाम, नाम देना। इसका नाम है (initiation)'इनीशियेशन, नाम देना। इसका नाम है 'जीयादान'। दो लफ्ज़ तो हर कोई बता देते हैं। दो लफ्ज़ का क्या हैं? मस्ताना जी ने सारी बातें खोल दीं। यह गांव था गुसाईवाला बागड़ में, वहाँ सत्संग हुआ। नाम देने लगे। जगह इतनी ज़्यादा नहीं थी। वहीं लंगर बनाया। तो मस्ताना जी कहने लगे कि यहीं दरी बिछा दो। जब बिठाया तो बाबू जी को कहने लगे कि शर्तें बता दो। उन्होंने बताया कि मांस नहीं खाना, शराब नहीं पीनी, पराई स्त्री की तरफ नहीं देखना। वहाँ आमतौर पर नाई काम करते थे। तो नाई कहता है कि मैं तो नहीं बैठता, क्योंकि मुझे तो यह काम करने हैं। मैं छोड़ नहीं सकता। उन्होंने कहा कि इसको कहो कि खड़ा रहे। यह लफ्ज़ ही सुनेगा और क्या करेगा? यह तो पहले मालिक की दरगाह में लिस्ट भेजनी पड़ती है। नाम देना पड़ता है। फोटो वहाँ भेजनी पड़ती है। वहाँ भेजेंगे नहीं तो लफ्ज़ क्या करेंगे। जैसे यहाँ भर्ती करने आते हैं। कोई पटवारी भर्ती करता है। कोई तहसीलदार भर्ती करने आता है। कोई सिविल सर्विस के तो कोई सैंटर के करता है। इसी तरह मालिक की दरगाह से भी फकीर आते हैं। काल के भी आते हैं। संभाल उन्हीं की है। जिनके नाम दर्ज हैं। बाकी की नहीं। ऐसे ही धक्के खाते हैं। हाँ जी! मैं उनको नमस्कार करता हूँ। वे अपना देश छोड़कर आते हैं।

पाठी– पुनि पुनि चरन कँवल सिर नाऊँ। दीन होइ संतन गति गाऊँ॥

मैनेजर साहिब जी–तभी कबीर साहिब ने लिखा है-

सेवा ते दोनों भलै एक संत एक रामु।
रामु जो दाता मुक्ति के संत जपाए नामु॥

राम जो मुक्ति के दाता हैं, उनके ज़रिए सीख कर जप सकता है। ऐसे तो सारी दुनिया जपती है। क्या बना? कर-कर के थक गए। जप-जप के थक गए, कुछ बना?

पाठी– दीन जानि दीन्ही मोहिं आँखी। मैं पुनि चरन सरन गहि भाखी॥

मैनेजर साहिब जी–सन्तों की शरण दीनता और गरीबी का मार्ग है। यह हस्ती मिटाने का मार्ग है। हम अहंकार में भरे पड़े हैं। मालिक की दरगाह में वो ही जा सकता है जो दीनता और गरीबी से भरपूर है। जब यह सब अकड़ छोड़ देता है, सब अहंकार छोड़ देता है, फिर मालिक के आगे बेनती करता है, फिर किसी सन्त का मिलाप होता है।

गुरु साहिब ने लिखा है-

होई निमाणी ढहि पई मिलिआ सहजि सुभाइ।
पूरब लिखिआ पाइआ नानक सन्त सहाई॥

जब सब अकड़ें निकल गईं, सब अहंकार निकल गया, फिर दीनता के साथ मालिक के आगे बेनती करे कि ऐ मालिक मैं तो कुछ नहीं कर सकता। जो कहते हैं कि कुछ किया, बस खत्म। यही ईसा ने कहा है–

"Be like children for shall enter into the kindom of heaven."

तुम मासूम बच्चों की तरह बन जाओ फिर मालिक की दरगाह में जा सकते हो। ऐसे नहीं। फिर मालिक की मेहर हासिल कर सकता है, फिर सन्तों के पास जाकर नम्रता से पेश आए कि मैं तो कुछ नहीं कर सकता। कहते हैं कि मैं नम्रता के साथ ही उनकी शरण में गया। उन्होंने फिर मेरे पर रहम किया। मेरी आंखें खोल दीं। सन्त लेते भी कुछ नहीं, देते भी कुछ नहीं और छोड़ते भी कुछ नहीं। मुफ्त इलाज करते हैं। क्या? जब राजा जनक ने ज्ञान मांगा तो अष्टावक्र ने कहा कि ज्ञान की दक्षिणा भी होती है। जी क्या? कि तन, मन और धन। कि मैं देने को तैयार हूँ। अच्छा भई, संकल्प कर ले। संकल्प कर दिया। कि तन मेरा है? कि हाँ जी। जाओ फिर! जूतियों में बैठ जा। क्यों बिठाया जूतों में? एक राजे का सबके सामने जूतियों में बैठना कोई आसान बात है? यह तो लोक लाज छुड़ाने के लिए है। ठीक है कि भई धन दे दिया? कि जी मैंने दे दिया। मन महलों में जाए, रानियों में जाए, ख़ज़ानों में जाए।

उन्होंने कहा कि महल तो मेरे हैं, ख़ज़ाने भी मेरे हैं, कि हाँ जी। फिर मन को इन पर से हटा ले। वहाँ से ध्यान हटाया। अब उन्होंने पूछा कि मन संकल्प उठाता है। उन्होंने कहा कि मन मेरा है? हाँ जी। फिर संकल्प हटा! पुरानी भक्ति थी, ख़्याल अन्दर चला गया, ज्ञान हो गया। फिर पूछा कि ज्ञान हो गया? कि हाँ जी! कोई कसर तो नहीं? कहने लगा नहीं जी। फिर ले संभाल अपना तन, मन, और धन। उनसे अपना नहीं संभाला जाता दूसरों का लेकर क्या करेंगे?

अपना मन काबू नहीं आता दूसरे का लेकर क्या करना है? सोचो! उसके पास वो धन है जो कभी खत्म न हो। इस धन का क्या करना है? उसके पास जो धन है वो सब भूखें मिटा देता है।

साचा नामु मेरा आधारो॥
साचु नामु आधारु मेरा जिनि भुखा सभि गवाईआ।
पाइयो रे मैंने नाम रत्न धन पाइयो।
जिसको पाए सुख दुख भूले मन आनन्द रे समायो।
जिसकी चोरी कबहुं नहीं होवै दिन दिन बढ़त सवायो।

कि संभाल अपना तन, मन, धन। अपना नहीं समझना, सतगुरु का समझना। सेवादार बन के काम करना। बोलो! क्या लिया और क्या छोड़ा? वो तन, मन, के बन्धनों को छुड़ाने आते हैं, और कोई नहीं छुड़ा सकता। यह तन, मन के बन्धन छोड़ता ही नहीं। तन, मन, का प्यार नहीं छोड़ता। मन का प्यार, विषय विकार, कुछ भी नहीं छोड़ता। यह अन्दर जाने नहीं देते। यही रुकावटें हैं। जो अन्दर नहीं जाने देतीं और क्या है?

बंधन मात पिता संसारि। बंधन सुत कनिआ अर नारि।
बंधन करम धरम हउ कीआ। बंधन पुत्र कलत्र मनि बीआ।
बंधन बेदु बादु अहंकार। बंधनि विनसै मोह विकार।

यह मन के बन्धनों में फंसा पड़ा है। आगे से आगे बढ़ता ही जा रहा है। इन बन्धनों में इतना खुश है कि इनको छोड़ना नहीं चाहता। यह खुश हो रहा है। इस को यह नहीं पता कि आगे से आगे बन्धनों में फंसता ही जा रहा है।

पाठी– दीन जानि दीन्ही मोहिं आँखी। मैं पुनि चरन सरन गहि भाखी॥
मैनेजर साहिब जी–गुरुनानक साहिब ने कहा है–

कर्म धर्म सभि बन्धना पाप पुण्य सनबंधु।
ममता मोहु सु बन्धना पुत्र कलत्र सुधन्द।
जह देखा तह जेवरी माया का सनबंध।
नानक सच्चे नामु बिनु बरतणि बरतै अंधु।

पाठी– मैं तौ चरन भाव चित चेरा। मोहिं अति अधम जानि कै हेरा॥

मैनेजर साहिब जी–फरमाते हैं कि मैं तो मूर्ख था, गरीब था। सन्तों की शरण में चला गया। सब कुछ हासिल किया। मैं तो उनका दास हूँ।

पाठी– मैं तौ चरन भाव चित चेरा। मोहिं अति अधम जानि कै हेरा॥
मैं तौ प्रति प्रति दास तुम्हारा। सन्त बिना कोई पावै न पारा॥

मैनेजर साहिब जी–फरमाते हैं कि मैं तो बार-बार सन्तों का दास हूँ, जिन सन्तों से राह मिला है। गुरु अंगद साहिब ने फरमाया है कि-

सोई चतुर सिआणा पंडितु सो सूरा सो दाना।
साध संगि जिनि हरि हरि जपिउ नानक सो परवाना॥

मुहम्मद साहिब ने अली से कहा कि–

गुप्त पैग़म्बर अली रा किए अली। शेरे हक्की पहलवान पुरदिली।

कि ऐ अली तू खुदा का पहलवान है। तू शेर है, बहादुर है। क्यों बहादुर कहा? लड़ाई लगी हुई थी। उसको तीर लगा। जब निकालने लगे तो दर्द हुआ। उन्होंने कहा कि अब क्या करें? उसने कहा कि जब मैं नमाज़ पढ़ूंगा, तब निकाल देना। शाम को जब नमाज़ पढ़ी। ख़्याल अन्दर चला गया। उन्होंने तीर निकाल दिया। दर्द न हुआ।

लेकवर शीरी मकुन एतमीद। अन्दर आं दर साया ऐ नरवले अमीद।

लेकिन अपनी बहादुरी पर भरोसा नहीं करना। यहाँ बड़े-बड़े रह गए। किसी फलदार वृक्ष के नीचे आ। किसी सन्त की शरण में आ। वो हाथ पकड़ने वाला है। वह मालिक की दरगाह में ले जाने वाला है। यही मुहम्मद साहिब ने कहा है कि–

मैं इतना बड़ा हूँ, ज़मीनों, आसमानों, खण्डों, ब्रह्माण्डों में नहीं समा सकता लेकिन अजीब बात यह है कि मोमनो, गुरुमुखों के दिल में समा जाता हूँ। जिसने मुझे तलाश करना है, उनके ज़रिए कर सकता है और कोई तरीका नहीं। सब फकीरों की एक ही तालीम है। चाहे वो हिन्दु है, चाहे वो मुसलमान है, चाहे वो

सिक्ख है, चाहे वो ईसाई है। सब एक ही तालीम है।

पाठी– मैं तौ प्रति प्रति दास तुम्हारा। संत बिना कोई पावै न पारा।

मैनेजर साहिब जी–कबीर साहिब ने लोगों को पुकार-पुकार कर कहा था। "कि ऐ दुनिया के दीवानों, लोगों ने सच्चा धर्म विसार कर, पशुओं की तरह खा पी, सोकर गवाया है। ऐसे ही जन्म को खो रहे हैं। झूठे धंधों में फंस कर सारा दिन कुत्तों की तरह और सुअरों की तरह क्यों धरती को उखाड़ रहे हो? कभी सच्चे साधुओं की सोहब्बत भी हासिल करो और उनसे मालिक को अपने अन्दर प्रकट करना सीखो। अपने अहंकार में अपनी अक्ल को बड़ी समझते हो और दूसरों की अक्ल को छोटी। आप जैसे छोटी अक्ल वालों को जो अपने ही ख़्याल, अपनी बुद्धि से कर्म, धर्म, पूजा, पाठ करते हैं, वो सीधे नरकों में जाते हैं। बोलो! कबीर साहिब के वचन हैं, वाणी में हैं। हाँ जीः

पाठी– सन्त दयाल कृपा सुख दाई। तुमरी सरन अधम तरि जाई॥

मैनेजर साहिब जी–वो मालिक है, दयालु है, कृपालु है। सुखों, दुखों में डालने वाला काल है। वो सदा ही दयाल है। संत उसके ऐजेण्ट हैं। सुखों का भण्डार है। वो दया लेकर आते हैं। वो तो दया सब को देते हैं।

कबीर साहिब कहते हैंः

सतगुरु सब को देत है लेता नाही कोय।
लेता नाही कोय, सीस को धरै उतारी।
वही सकस को मिलै मरने की करे तयारी।

आशा, तृष्णा छोड़े तो ले। कैसे मिले? दुनिया की आशा तृष्णाएं छोड़ता नहीं, बाहर की लज़्ज़तें छोड़ता नहीं, फिर कैसे ले। वो तो मेहर लेकर आते हैं। जो उसकी शरण में जाता है, पापी से पापी तर जाता है।

कोटि अपराधी संतसंगि उधरै जमु ताकै नेड़ि न आवै।
जनम जनम का बिछुड़िया होवै तिनु हरि सिउ आणि मिलावै।

अगर थोड़ी सी भक्ति है तो उसके पास यमदूत नहीं आते। इसलिए कहते हैं किः

प्रभ कै सिमरनि दुखु जमु नसै। प्रभु कै सिमरनि कालु परहरै।
प्रभ कउ सिमरहि तिन अनद घनेरे। प्रभु कउ सिमरहि बसहि हरि नेरे।

उसके साथ-साथ है। यह अंगद साहिब का शब्द है-'पिंगल पर्वत पारि करे'

पाठी– महिमा साधु संग की सुनहु मेरे मीता।
मैलु खोई कोटि अघ हरे निरमल भए चीता।

मैनेजर साहिब जी–अघ क्या? सौ पाप का एक पाप। इतने पाप नष्ट होते हैं। कैसे? उनके बताए हुए सिमरण पर चलने से, असूलों पर चलने से।

प्रभु के सिमरनि मन की मलु जाइ। अंम्रित नामु रिद माहि समाइ।

तो सिमरण जो उनका बताया हुआ है, मैलें साफ करता है। उसमें इतनी ताकत है कि जैसे हाथ से मशीन चलाते हैं थोड़ा काम होता है। अगर बिजली पर लगा दें तो मिनटों में काम करता है। ऐसे ही नाम में ताकत है। मिनटों में साफ करता जाता है। मगर फकीरों की बात कोई नहीं मानता। इस कान से सुन कर उस कान से निकाल देते हैं।

पाठी– पिंगुल परबत पारि करे खल चतुर वकीता।
अधुले त्रिभवण सूझिआ गुरु भेटि पुनीता।

मैनेजर साहिब जी–देख लो, कैम्प लगता है। किसी का ऑपरेशन होता है, किसी को दवाई दी जाती है, किसी को रेहड़ी देते हैं, किसी को बूट देते हैं। इसी तरह इसकी दवाई अन्दर है। खानी भी पड़ेगी, ऑपरेशन भी करवाना पड़ेगा। यह विषय विकार छोड़े, ख़्याल निकाले, तन का प्यार छोड़े। सिमरण करे बस! यह दवाई है। फिर मेहर भी करता है। जो लाचार थे। उनको गाड़ियां दी, बूट दिए, स्ट्रैचर दिए पर वह मेहनत करता नहीं। अगर करे तो फिर सतगुरु भी मेहर करता है। ठग्गियों वालों पे नहीं। जो मेहनत करता है उसपे मेहर भी करता है। यह आत्मा पिंगली हुई पड़ी है। इसको होश ही नहीं। यह पहाड़ है जिसे चाहे वो चढ़ा दे। इसके अन्दर अनेकों पहाड़ हैं, बड़े-बड़े समुद्र हैं, बड़े-बड़े बीयाबान जंगल हैं।

या घट भीतर सात समुद्र याही में नदिया नारा।
या घट भीतर सूरज चंदा याही में नौ लख तारा।
या घट भीतर बिजली चमके याही में होय उजियारा।
या घट भीतर अनहद गरजै, बरसै अंम्रितधारा।
या घट भीतर देवी देवा, याही में ठाकुरद्वारा
या घट भीतर काशी मथुरा याही में गढ़ गिरनारा।

इसके अन्दर बड़े-बड़े पहाड़ हैं, बीयाबान जंगल हैं। यही मुसलमान फकीरों ने कहा है–

अन्दर आं बहरो बियाबां व जबाल। सकता में गरदन्द ओहामो ख्याल।

इसके अन्दर बड़े-बड़े बीयावान जंगल व पहाड़ हैं। जिनका हम ख़्याल भी नहीं करते।

ई बियाबां दर बियाबां हाए ऊ हम चूं। अन्दर बहरे पुर यक तारे मू।

कि यह दुनिया उसके आगे ऐसे है जैसे समुद्र में बाल। यह बाल जितनी दुनिया है। इसके अन्दर इतना बड़ा खेल है।

भाई गुरुदास जी ने लिखा हैः

'रोम रोम में त्रिलोकी की रचना है।' उन्होंने तजुर्बे किए हैं, तब लिखा है। आत्मा पिंगली हुई पड़ी है, आगे पहाड़ों पे कैसे जाए? फिर इसमें इतनी ताकत जा जाती है कि पहाड़ों को चीर कर चले आता है। उनके बताए हुए तरीके से, उनकी सोहब्बत करते-करते आगे पहुँच जाता है।

पाठी– पिंगुल परबत पारि करे खल चतुर वकीता।

अंधुले त्रिभवण सूझीआ गुरु भेटि पुनीता।

मैनेजर साहिब जी–मूर्ख से मूर्ख इन्सान भी ज्ञानी बन जाए। बाहर के ज्ञान का सवाल नहीं। असली ज्ञानी वो है जैसे मीरा ने कहा हैः

सांकड़ी गली में मेरा सतगुरु मिलिआ। किस विधि फिरूं अपूठी।

अन्दर को प्रगट करना, शब्द का रस लेना।

पायो रे मैंने नाम रत्न धन पायो।

जिस को पाए सुख दुख भूले मन आनन्द रे समायो।

जिसकी चोरी कबहूं न होवे ऐसो धन मैने पायो।

खरचूं लाख खत्म नहीं होवे दिन बिन बढ़त सवायो।

इसका नाम ज्ञान है।

'सो गिआनी जिनि सबद लिव लाई।'

जिसने अन्दर शब्द का रस लिया, वो ज्ञानी है। बाहर तो सब झगड़े हैं। वो शांती देने वाला है, हाँ! मस्ताना जी क्या पढ़े हुए थे? पढ़े लिखे बात ही नहीं कर सकते थे। यह मामूली सी बात है। सीधा सादा रास्ता है। उलझन में पड़ गई सारी दुनिया।

पाठी– अंधुले त्रिभवण सूझीआ गुरु भेटि पुनीता।

मैनेजर साहिब जी–उनकी सोहब्बत में जाकर सिमरण करे। यहाँ तक आए तो आंख खुल जाए। आवागमन सब का पता चल जाए।

नाइ सुणिअै घट चानणा आनेर गवावै।
नामे हि घटि चानणा नामे सोभा पाई।
नामु जपत कोटि सूर उजारा बिनसै भरमु अंधेरा॥

पाठी– **अंधुले त्रिभवण सूझीआ गुरु भेटि पुनीता।**
महिमा साधु संग की सुनहु मेरे मीता।

मैनेजर साहिब जी–पढ़ते सब हैं पर वाणी पर कोई नहीं चलता। पढ़-पढ़ के सब चले गए।

पड़ि पड़ि गडी लदीअहि पड़ि पड़ि भरीअहि साथ।
पड़ि पड़ि बेड़ी पाईअै पड़ि पड़ि गडीअहि खात।
पड़ीअहि जेते बरस बरस पड़ीअहि जेते मास।
पड़ीअै जेती आरजा पड़ीअहि जेते सास।
नानक लेखै इक गल होरु हउमै झखणा झाख।

ऐसे नहीं, पढ़ने का मुदा यह है अन्दर नाम को प्रगट करना।

पढ़ना गुणना चातुरी यह तो बात सहल।
काम दमन मन बस करन गगन चढ़न मुश्किल॥
चतुराई क्या कीजिए जो नहीं शब्द समाए।
कोटन गुण सूदा तो अंत बलाई खाए॥

हमारे पास एक नामधारी आया। कहने लगा कि मैं सत्संग भी करता हूँ, नाम भी देता हूँ। लोग सोलह पहरों में पाठ करते हैं, मै सात पहरों में करता हूँ। पर अन्दर शांती नहीं। शांती कहाँ से आए? सब पढ़-पढ़ के थक गए। शांती तब है जब नाम को अन्दर प्रगट करे!

नामु मिलै मनु त्रिपतीऐ बिनु नामै धिग जीवासु॥
कोई गुरुमुखि सजणु जे मिलै, मैं दसे प्रभ गुणतासु॥

कोई ऐसा गुरमुख मिले, ऐसा फ़कीर मिले। फिर उनके ज़रिए प्रगट कर सकते हैं। नाम सुक्ष्म मण्डलों में जाकर मिलता है। इस दुनिया की चीज़ नहीं। उसका सिमरण से ताल्लुक है। वो लिखने पढ़ने की चीज़ नहीं। वो अलग चीज़ है।

नाम डोरि है गुप्त कोउ नहीं जानता।
निह अछर निह रूप दृष्ट नहीं आवता॥

पलटू साहिब ने कहा है:

शब्द शब्द सब को कहे वह तो शब्द बदेह।

जीभा पर आवे नहीं निरख परख कर लेह॥

यही कबीर साहिब ने लिखा है–

चिहनु वरनु नहीं छाया माया नानक सबदु पछाणै॥

इसके मुत्तल्लक रोज़ पढ़ते हैं–

सतगुर की सेवा सफल है जे कोई करे चितु लाइ॥

कौन सी सेवा?

बन्धन तोड़ै मुक्ति होइ साचै रहै समाइ॥

इन तन मन के बन्धनों से निकले। तीसरी आंख खोले। यहाँ आए। आंखों के पीछे ख़्याल को इकट्ठा करे, तब है।

इस जग महिं नामु अलभु है। गुरमुखि वसै मनि आइ॥

फिर नाम मिलता है। यहाँ से मार्ग शुरू होता है।

पाठी– ऐसी भगति गोविंद की कीटि हसती जीता॥

जो जो कीनो आपुनो तिसु अभै दानु दीता॥

मैनेजर साहिब जी–'कीटि हस्ती' यह कीड़ी जैसी है आत्मा, और काल हस्ती है जो बड़ो-बड़ों को खा गया। त्रिलोकी तक सब को खा गया।

'तीन लोक और चौदह भवन में इस घोघड़ का राज' अगर सिमरण करे तो काल इसके नज़दीक न आए। यह कहने की बातें नहीं। प्रेमीयो के तजुर्बे की बातें हैं। वो धमका कर काल को निकाल देते हैं। हाँ जीः

पाठी– जो जो कीनो आपुनो तिसु अभै दानु दीता॥

मैनेजर साहिब जी–जो कामिल फकीर के चिताए हुए हैं, उनका महकमा ही अलग है। जैसे कोई सेंटर में चला जाए तो सूबे वाले उसका कुछ नहीं कर सकते। उसका एकाउंट तो ख़त्म करना पड़ता है पर वो कर कुछ नहीं सकते। चाहे छोटा सा मुलाज़म क्यों न हो। इसी तरह जो मालिक का चिताया हुआ है, उसके पास यमदूत नहीं आते। मालिक के सिवा उसको कोई सज़ा नहीं दे सकता। मालिक खुद लाता है और सज़ा दिलाता है। गुरुनानक साहिब का एक जीव नरकों में गया। उसने खोटे कर्म किए थे। सज़ा तो दिलाई पर छोड़ा नहीं। फिर छोड़ते नहीं। फिर आवागमन, जन्म-मरण के बन्धनों से निकल जाता है। जिसका नाम एक बार मालिक की दरगाह में दर्ज हो जाता है। फिर वो जन्म-मरण के चक्र से परे हो

जाता है। कोर्स तो करना पड़ता है। लेने-देने भी खत्म करने पड़ते हैं। चाहे एक जन्म में कर ले, दो में कर ले, चार में कर ले। यह उसकी अपनी मर्ज़ी है, मेहनत करे। धर्मराज कबीर साहिब का एक जीव था। आठ जन्मों में गया है। पर छोड़ा तो नहीं, देख लो! नरकों में से निकाल कर लाए। हाँ जीः

पाठी– जो जो कीनो आपुनो तिसु अभै दानु दीता॥
सिंधु बिलाई होइ गइओ तृणु मेरू दिखीता॥
स्रमु करते दम आढ कउ ते गनी धनीता॥

मैनेजर साहिब जी–यह सिमरण करे, इसकी सब चिन्ता फिकर मिटने लग जाती है। इसको पता लगने लग जाता है कि सतगुरु मेरे साथ-साथ है, मेरे सब काम करता है। कोई करे सही, फिर इसको किसी का डर नहीं। बे-फिक्र हो जाता है। हाँ! जीः

पाठी– कवन वडाई कहि सकउ बेअन्त गुनीता॥
करि किरपा मोहि नामु देहु नानक दर सरीता॥

मैनेजर साहिब जी–यह सारी मिसालें देनी पड़ती हैं। यह सीधा रास्ता है। मिसालों की ज़रूरत ही नहीं। मालिक की मेहर हो तो, कामिल फकीर मिल जाए। फिर आने का रास्ता बताए। फिर इतना ही काम है बस। सारा निचोड़ ही इतना है। सब ग्रन्थों पर विश्वास नहीं आता। मालिक की मेहर के बिना फ़कीर नहीं मिलता। फ़कीर की मेहर के बिना आगे रास्ता नहीं मिलता।

सिमरण मार्ग सहज का सतगुर दिया बताए।
स्वांस स्वांस सिरमण करो इक दिन गुरु मिल जाए।

बस बात ही इतनी है। ना पढ़ने की ज़रूरत, न लिखने की ज़रूरत है। बस निचोड़ है सब ग्रन्थों का निचोड़ है। बाकी सब झगड़े हैं। बुल्लेशाह ने लिखा है।

होर सब गलड़ीयाँ इक अल्ला अल्ला दी गल।
कुछ रौला पाया आलमां कुछ कागजां पाया झल।

यही चरणदास ने कहा है–

पढ़ूं न गीता वेद कुरान। एक ही सिमरूं श्री भगवान।

यह समझाना पड़ता है, पर ज़रूरत ही नहीं। क्योंकि इसको तसल्ली नहीं आती। अगर मुसलमान है तो उनकी बातें उनकी भाषा में समझानी पड़ती हैं। सिक्ख हैं तो उनको उनकी बातें समझानी पड़ती हैं। बागड़ी है तो उनको बागड़ी में, मारवाड़ी तो उनको मारवाड़ी में, लेकिन बात सारी इतनी है। हाँ जीः

पाठी– सन्त दयाल कृपा सुखदाई। तुम्हारी सरन अधम तरि जाई॥

मैनेजर साहिब जी–पापी से पापी रूहें भी फायदा उठा गईं। वो जानते थे कि हम गुनहगार हैं। वो शरण में आ गए। कर्मी-धर्मी अपने अहंकार में रह गए। वो आ ही नहीं सकते। अगर सब कुछ जानता है तो खा धक्के फिर! हाँ जीः

पाठी– आदि न अंत संत बिन कोई। तुलसी तुच्छ सरन में सोई॥

मैनेजर साहिब जी–संत वो है जिसको डिग्री मिलती है। अन्दर सतगुरु को प्रगट करे। वो मालिक का ऐजेण्ट है। वो उस तख्त पर बैठता है।

गुर के सेवक सतगुर पिआरे ओइ बैसहि तखति सु सबदु विचारे।
ततु लहहि अंतरगति जाणहि सतसंगति साचु वडाई हो।

ऐसे तो अनेकों लोग नाम ले लेते हैं। पर मालिक की दरगाह में कौन तख़्त पर बैठता है, जो शब्द गुरु को अन्दर प्रकट करता है। जो मालिक की दरगाह में जाता है उससे मालिक काम लेता है। वो मालिक का ऐजेण्ट है। उसको ऑर्थोरिटी मिलती है, ऐसे नहीं। बाहर के तख़्तों पर तो हर कोई बैठ जाता है। लेकिन उस तख़्त पर नहीं बैठ सकता।

राम समीपी सन्त है वे जो करे सो होय।
वे जो करे सो होय हुक्म में उनके साहिब।

यही मुसलमान कहते हैंः

संत कहैं सोई करैं राम न करते बायब।

सब की एक ही तालीम है।

पाठी– जो कछु करहिं करहिं सोई संता। संत बिना नहिं पावै पंथा॥

मैनेजर साहिब जी–आखिर फैसला यही है कि सब कुछ सन्तों के हाथ में जो कुछ करें। उसके बिना राह नहीं मिलता। इसलिए कहते हैं किः

संत का मारगु धर्म की पउड़ी को बड़भागी पाइ।

धर्म किसे कहते हैं? धर्म का नाम ही बदनाम कर दिया लोगों ने। यह धर्म तो बाद में बने हैं। दो हज़ार साल पहले ईसाई धर्म नहीं था। तेरह चौदह सौ साल पहले मुसलमानों का नहीं था। पांच सौ साल पहले हमारा (सिख धर्म) नहीं था। सोच लो! धर्म क्या है असली? कल को सच्चा सौदा ही धर्म बन जाएगा। असल में धर्म में क्या है?

सरब धर्म महि श्रेष्ठ धरमु। हरि को नामु जपि निरमल करमु।

नाम जपकर आत्मा का कल्याण करना यह असली धर्म है। बाकी तो सब झगड़े हैं।

पाठी– जो कछु करहिं करहिं सोई संता। संत बिना नहिं पावै पंथा॥
मोरे इष्ट संत सुति सारा। सतगुरु संत परम पद पारा॥

मैनेजर साहिब जी–मेरे इष्ट कौन हैं? सन्त कौन हैं? जो सार शब्द को पकड़ कर मालिक की दरगाह में जाते हैं। उसके नीचे? नीचे अनहद है। जो सार शब्द है, वो असली है। वो पारब्रह्म से शुरू होता है, इसको पकड़ कर मालिक की दरगाह में जाते हैं। वो इष्ट हैं, वो रहबर है, वो परमपद को पहुँचते हैं। वो मालिक की दरगाह में काम करते हैं। हाँ जीः

पाठी– मोरे इष्ट संत सुति सारा। सतगुरु संत परम पद पारा॥

मैनेजर साहिब जी–यही कबीर साहिब ने लिखा हैः

शब्दहि गुरु शब्द सुनि शिष्य भए। शब्द को विरला बुझै॥
गुरु सोई सोई शिष्य महात्मा अन्तर घट की सूझे॥
शब्दहि शब्द शब्द बहु अन्तर सार शब्द लखि लीजै॥
कहे कबीर जहि शब्द न दरसे, धृिक जीवन जग जीजै॥

वो छुटकारा वाला है।

पाठी– मोरे इष्ट संत सुति सारा। सतगुरु संत परम पद पारा॥

मैनेजर साहिब जी–यह सब कुछ आप ही करता है। यही पलटू साहिब कहते हैं–

पाठी– देत लेत हैं आपुहीं पलटू पलटू सोर॥
पलटू पलटू सोर राम की ऐसी इच्छा।
कौड़ी घर में नाहिं आपु मैं माँगौं भिच्छा॥
राई परबत करैं करैं परबत को राई।
अदना के सिर छतर नीच की करैं बड़ाई॥
लीला अगम अपार सकल घट अंतरजामी।
खाँहिं खिलावहिं राम देहिं हम को बदनामी॥
हम सों भया न होयगा साहिब करता मोर।
देत लेत हैं आपुहीं पलटू पलटू सोर॥

''धन धन सतगुरु तेरा ही आसरा''

सत्संग

'बिनु गुर सबदै मनु नहीं ठउरा'

सत्संग के वचन

पाठी– बिनु गुर सबदै मनु नहीं ठउरा।
सिमरहु राम नामु अति निरमलु अवर तिआगहु हउमै कउरा॥
मनु मैगलु साकत दीवाना, बनखंडि माइआ मोहि हैराना।
इतु उतु जाहि काल के चापे, गुरुमुखि खोजि लहै घरु आपे।
बिनु गुर सबदै मनु.....

मैनेजर साहिब जी–फिर बोल भई! मनु मैगलु साकत दीवाना॥

पाठी– मनु मैगलु साकत दीवाना, बनखंडि माइआ मोहि हैराना।

मैनेजर साहिब जी–मालिक को, सतगुरु को कोई जानता है? सब का ईश्वर, परमेश्वर ब्रह्म, पारब्रह्म, खुदा, राम मन ही है। असल में दुनिया मन की पूजा करती है, मालिक की नहीं। जितने हम काम कर रहे हैं, सब मन के कहने से कर रहे हैं। मन के कहने से रिश्ते नाते, मन के कहने से कौमों महजबों में फंसे पड़े हैं। मन के कहने से भक्ति करते हैं। जितने काम हैं सब मन के कहने पर करते हैं। मन का स्वभाव क्या? *'मन का सुभाउ मनहि बिआपी'।*

यह अपने दायरे से किसी को निकलने नहीं देता। गुरुनानक साहिब कहते हैं कि ''मन एक मस्त हाथी की तरह है जो मोह माया और विषय विकारों के जंगलों में भटकता रहता है। कभी स्त्रीयों का प्यार, कभी बच्चों का प्यार, कभी रिश्तेदारों का प्यार। कभी कौमों, मज़हबों के झंझट। कभी नाच, कभी रंग, कभी तमाशों में घूमता है। यह काल का ऐजण्ट है। यह ऐसे ही चक्र खा रहा है। कभी विषय विकारों में ऐसे ही धक्के खा रहा है।

इतु उतु जाहि काल के चापे।

यह काल का ऐजण्ट है। उसके हुक्म में है, उसके दबाव में है। काल आप ही मन रूप में इसके अन्दर रम रहा है।

जीउ एकु अरु सगल सरीरा। इसु मन कउ रवि रहे कबीरा।

कबीर साहिब कहते हैं:

वह गुप्त भापुनि संग सब के मन निरंजन जानिये।
मन पुरुष भेद उच्छेद देवे आपो प्रकट आनीये।

यह मालिक की सच्ची भक्ति में लगने नहीं देता। एक और जगह लिखा है कबीर साहिब ने :–

ज्ञान हीन जपे नहीं भाई जीव के संग मन काल रहाई।
जीव के संग काल वासा, अज्ञानी जन कहे मन विश्वासा।
मन का कहना न कीजौ कोई, मन जीव को भरमावे सोई।
कहे कबीर मनदास गवारी, मन का कहा न कीजौ नर नारी।

सब मन के अन्दर है।

मन अन्तरि, बोलै सभु कोई। मन मारे बिनु भगति न होई।

यह काल का ऐजण्ट है। इसका काम है जीव को भरमाना और भटकाना। जीव को सच्ची भक्ति में न लगने देना। मन को उसने क्या रिश्वत दी है। 'इंद्रियां'। इन्द्रियों के लिए क्या है?' 'भोग'। यह एक दूसरे से मिले हुए हैं।

मन न छाड़े विषय रस, विषय न मन को छोड़।

इसका यही स्वभाव है। इससे बचने का एक ही रास्ता है। क्या? गुरमुखों की शरण। जिन गुरमुखों ने इसको काबू किया है, उनकी शरण में ही जाकर काबू आ सकता है और कोई तरीका नहीं। सबको अंगुलियों पर नचा रहा है।

मन का मस्तक मूंडीए काम क्रोध के केस।
दादू विषय विकार सब सतगुरु के उपदेश॥ (दादू साहिब)
नानक तिन संतन सरणागती जिन मनु वसि कीन्हा।
तनु धनु सरबसु आपणा प्रभि जन कउ दीन्हा॥

जिन्होंने काबू कर लिया, उनके ज़रिए हम काबू कर सकते हैं। उनके वचन परे काल ही काल है।

सतगुरु शब्द अलंघ कर जन कोई सिख जाई।
दादू पग पग काल है जहां जाई तहां खाई॥
सतगुरु बरजे शिश करे, क्यों करि बंचै काल।
दहदिसि दादू बहि गया, पानी फोड़ी पाल॥

(दादू साहिब)

जैसे पानी टूट जाता है ऐसे ही उनके वचन परे काल ही काल है। देख लो! मरदाना कहने लगा, मैं तो वहीं रहूँगा जहाँ टके सेर खाजा और टके भाजी। मन काबू न आया। फंस गया न! फकीर जो वचन कहे, उसके अनुसार चले, तब यह काबू आता है, ऐसे नहीं। और कोई तरीका नहीं। शरण किसे कहते हैं? अपने आप को पूर्ण तौर पर हवाले करना। जैसे डाक्टर के हवाले मरीज़ को करते हैं, जब ऑपरेशन करते हैं। बस ऐसे ही हैं।

मुर्दा होये मुरीद न गल्लीं होवणा।

यह बातों का मज़मून नहीं।

सबर सिदक सहीद भरम भयो खोवणा।

सारी दुनिया मन की मुरीद है। कबीर साहिब का कहना है कि यह ऐसा है, इस तरफ आने नहीं देता।

कबीर इह मन मसखरा कहूं तो माने रोस।
जा मार्ग साहिब मिले ताही न चाले कोस॥ (कबीर साहिब)

इस रास्ते पर तो एक कदम नहीं चलता, हाँ जीः

पाठी– मन मैंगलु साकत दीवाना, वनखँडि माइआ मोहि हैराना।
इतु उतु जाहि काल के चापे, गुरमुखि खोजि लहै घरि आपे।
बिनु गुरु सबदै मनु नहीं.....

मैनेजर साहिब जी–आत्मा जो है सतपुरुष की अंश है। यह (मन) ब्रह्म की अंश है। ब्रह्म एक शक्ति है।

कबीर मन तो एक है भावे जहाँ लगाय।
भावे गुरु की भक्ति कर भावे विषय कमाय॥

(कबीर साहिब)

किसी तरफ ले जाओ। इसके बिना दुनिया में काम नहीं कर सकते। इसके बिना हम कोई काम नहीं कर सकते। इसको साथ लेना पड़ता है। यह सतगुरु की मेहर से काबू आता है। जब शब्द का रस लेता है तब काबू आता है। नाम का अमृत सबके अन्दर है।

नउ निधि अंम्रितु प्रभ का नामु। देही महि इस का बिसरामु।

जब अमृत पीता है। तब काबू आता है।

मन मूसा पिंगल भिआ पी पारा हरि नाम।
बिनु गुरु सबदै मनु नहीं ठउरा॥

इसके लिए क्या चाहिए? जो गुरुमुख इसको रास्ता बताते हैं 'सिमरण'। वो सिमरण करे।

सिमरहु राम नामु अति निरमलु अवर तिआगहु हउमै कउरा।

क्या? हौंमे छोड़कर दीनता से सतगुरु के आगे बेनती करे कि सतगुरु मैं तो भजन नहीं कर सकता, तूं कराए तो कराए। बैठे भी उसका आसरा लेकर। उठे, सतगुरु तेरी मेहर से बैठा। फिर बेशक एक कदम चले तो चले, नहीं तो चल ही नहीं सकता। अहंकार सबको खा जाता है।

कीया कराइया सब गया जब आइआ अहंकार।

(कबीर साहिब)

उसका आसरा लेकर बैठे। फिर तो बेशक एक कदम चले। नाम का रस लेकर काबू आएगा, नहीं तो आता ही नहीं। सारा ख़्याल इसका आंखों के पीछे इकट्ठा होता है। यहाँ अमृत बरसता है। यहाँ से तो शुरू होता है। यह असली अमृत है। वो त्रिलोकी से पार दसवें द्वार में जाकर मिलता है। गुरुनानक साहिब जब मक्के गए तो काज़ी रूकनदीन ने मालिक के बारे में पूछा तो उन्होंने फरमाया।

नौ दरवाजे कोट दे दसवां नूर महल।
हौज हयाती पुर भरे तिस विच कमल अचल॥

कि यह महल है, मालिक इसमें रहता है। इसके नौ दरवाज़े बाहर, दसवां अन्दर खुलता है। अगर खोले, तो अमृत के हौज़ भरे पड़े हैं। आला से आला कौन सा है कमल का, दसवें द्वार का। वहाँ अमृत बरस रहा है। अमृत का सरोवर है। वहाँ अमृत है फिर यह काबू आता है, नहीं तो नहीं। हाँ, इतना सिमरण करे देह खाली कर जाए। ख़्याल को आंखों के पीछे इकट्ठा करे। यहाँ से रास्ता मिलता है। हाँ, जी। रास्ता अन्दर है यह भटकता फिरता बाहर। सबके अन्दर अमृत बरस रहा है।

झिमि झिमि बरसै अंम्रित धारा। मनु पीवै सुन सबदु बीचारा।

हाँ जी, जितने भी रूहानी फकीर हुए हैं सब का यही उपदेश है। सिमरण करके यहाँ आओ, अमृत पीयो। बस उनका एक ही मुदा है। न कौमों से न मज़हबों से। यह सब बाद में बने हैं।

पीयो राम रस प्यासा कोई जन, पीयो राम रस प्यासा।
गगन मण्डल में अमृत बरसै, उनमन के घर बासा॥

सब के अन्दर बरस रहा है, जो पीये।

पाठी– बिनु गुरु सबदै मनु नहीं ठउरा।

सिमरहु राम नामु अति निर्मलु अवर तिआगहु हउमै कउरा।

मैनेजर साहिब जी–कई कई जन्म की भक्ति होती है तब जाकर अमृत पी सकता है। लेकिन जो इस महकमे में आ जाए, सतगुरु उसको कोर्स करवा कर ही छोड़ता है, ऐसे नहीं। मौत के समय संभाल होगी। यमदूत नज़दीक नहीं आएंगे। काल नज़दीक नहीं आएगा। कोई सिमरन करने वाला हो। वो धमका कर भगा देते हैं यमदूतों को। वो कहाँ है भई मुंडके वाला, सुनो भई! सिरमण करो। इसके नज़दीक कोई चीज़ नहीं आती। जो काल सबको खा गया, वो भी इस सिमरण के नज़दीक नहीं आता। और फकीरों की कोई निशानी नहीं, यही है। उसके चिताए हुए जीव आराम से जाएंगे। कह कर जाएंगे। उसके पास यमदूत नहीं आएंगे। हाँ जी। सिर्फ नाम लिया डेरे कभी नहीं आई।

प्रेमी– 'धन धन सतगुरु तेरा ही आसरा'। हमारे गांव में एक प्रेमी है। उसकी औरत ने नाम लिया हुआ है। कभी डेरे नहीं आई। उसने कभी देखा नहीं डेरा। कोई तीन तिथि की बात है। तीन को ही वह चोला छोड़ गई। चोला छोड़ने से पहले उसने सारी बातें बताईं कि बाबा जी मुझे लेने आए थे। मैंने आठ दिन का समय मांगा था। अब वो समय खत्म हो गया है। आज मुझे जाना है।

मैनेजर साहिब जी–सुनो, जाना तो पहले था, आठ दिन का समय और मांग लिया। यह महकमा ही ऐसा है।

प्रेमी– उसने बताया कि बाबा जी के आने से पहले और आलाएं-बलाएं दिखाई दी थीं। जिन्होंने अपने साथ ले जाने के लिए दबाव डाला था। उसे धमका कर भगा दिया। तो जाने से पांच मिनट पहले सब कुछ बताया।

मैनेजर साहिब जी–दबका मार कर धमका दिया। महात्मा चरण सिंह यहाँ डेरे गदराणे में है। उसकी मां को यमदूत लेने आए, धमका कर भगा दिया। मैं नहीं जाती आप के साथ। मैं तो बाबे के साथ जाऊंगी। दूसरे दिन फिर आए। तीसरे दिन फिर आए। मैं नहीं जाती तुम्हारे साथ। यहाँ बैठी है वो विरमा उसके बाप ने जब चोला छोड़ा था, बीमार हो गया अन्दर लेटा था। उसका लड़का बाहर। वो बोलता तो था ही नहीं। वो अन्दर से बोला निकल जाओ यहाँ से। लड़का बाहर था। उसने पूछा पिताजी क्या बात है? वो कहने लगे कि आए थे चार काले-काले कपड़ों वाले। मैंने भगा दिए। मैं नहीं जाता आप के साथ। इतनी ताकत है फकीर के सिमरण में।

प्रेमी– उसने अपने आदमी से कहा कि मेरे जाने पर आपको, परिवार वालों को कोई तकलीफ नहीं होगी। आप रोना नहीं। अच्छी तरह रहना। सतगुरु की पूरी मेहर रहेगी। उसका एक लड़का था। उसने नाम नहीं लिया था। उस को पास नहीं बुलाया। नजदीक नहीं आने दिया। पड़ोसी दो, चार सत्संगी थे, उनको बुलाया।

मैनेजर साहिब जी–गैर सत्संगी को नज़दीक नहीं आने देते हैं। कहते हैं कि सत्संगी ही आए बाकी नहीं। नाम जपने वाला हो।

प्रेमी– बाकी उसने कहा कि कुछ नहीं करना। सादे ढंग से संस्कार करना। मेरे लिए कोई रंज नहीं करना। शोक नहीं करना। आप के घर मालिक की दया मेहर हुई है। वो कहने लगा कि मैं तो डेरे जा नहीं पाऊंगा। कुछ औपचारिकताएं पूरी करनी हैं। रिश्तेदार आए हुए हैं। बाबा जी को चिट्ठी भेजनी है।

पाठी– बिनु गुरु सबदै मनु नहीं ठउरा।
सिमरहु राम नामु अति निरमलु अवर तिआगहु हउमै कउरा।
एहु मनु मुगधु कहहु किउ रहसी। बिनु समझे जमका दुखु सहसी।

मैनेजर साहिब जी–यह मन मुग्ध है, मूर्ख है। बिना सोचे समझे अच्छे बुरे कर्मों में फंसा पड़ा है। बुरे कर्म करता है। गन्दी योनियों में जाता है। नरकों में जाता है। अच्छे कर्म करता है, अच्छी योनियों में जाता है। वहाँ के सुख भोगे, फिर चौरासी तैयार है। यमदूतों से छुटकारा नहीं। अच्छे कर्म करो या बुरे कर्म करो। यमदूत जरूर आएंगे।

पुण्य दानु जो बीजदे, सब धर्मराइ कै जाई।
बिनु सतिगुरु जमकालु न छोड़ई दूजै आपि खुआई।

जरूर यमदूतों के हाथ जाएगा।

पाठी– इहु मनु मुगधु कहहु किउ रहसी। बिनु समझे जमका दुखु सहसी।
आप बख्शे सतिगुरु मैले। कालु कंटकु मारे सचु पेलै।

मैनेजर साहिब जी–यह जो दात है जन्म मरण के बन्धन छुड़ाने वाली, यमदूतों से छुड़ाने वाली, काल से छुड़ाने वाली, सतगुरु ने अपने हाथ में रखी है। वो सतगुरु एक ही है। जिसकी जोत सबके अन्दर है, वो एक ही है।

एक ही की सेव, सब ही को गुरुदेव एक।
एक ही स्वरूप सबै एक जोत जानबो।

वो रहता कहाँ है? त्रिलोकी से पार चौथे लोक में।

सुन हिरदे सतिगुर सहदानी। सतिगुर सतिपुरुष को जानी॥

रहता कहाँ है?

चौथे पद में करे निवासा। तीन लोक में काल का वासा॥

यह रचना का जो काम है यह काल के सुपुर्द किया है।

खण्ड पाताल द्वीप सभि लोआ। सब कालै बसि आपि प्रभि किया।

चाहे अच्छे कर्म हैं, चाहे बुरे हैं, जो भी हैं, यह रचना को चलाने के लिए हैं। जो छुटकारे वाला है वो सतगुरु ने अपने हाथ में रखा है। वो बचाए तो बचाए।

किंउ गुरु बिनु त्रिकुटी छुटसी सहजि मिलिअै सुखु होई।

त्रिकुटी एक जगह है। वहाँ काल का हैडक्वार्टर है। वहाँ से कोई नहीं निकला। सतगुरु निकाले तो निकाले। जो फकीर मालिक की दरगाह में जाते हैं, जब वापिस आते हैं तो इस मन को साथ लेना पड़ता है। यह तो उनको भी धोखा देना चाहता है। ऐसी बला है। उनको भी धोखा देना चाहता है। वो तो इसकी चालों से वाकिफ हैं। जल्दी काबू नहीं आता। दूसरों का तो कहना ही क्या। यह 'मन' हमारा दुश्मन है।

पाठी– आपे बख्शे सतिगुरु मेलै। कालु कंटुक मारे सचु पेलै।

मैनेजर साहिब जी–बागड़ में एक शब्द गाते हैं। एक दिन काल आसी रे।

एक दिन घोघड़ आसी रे।

तीन लोक और चौदह भवन में इस घोघड़ को राज।

आये अचानक यूं पकड़ेगा ज्यूं चिड़ियां नै बाज॥

आखिर में क्या कहते हैं:

इस घोघड़ नै सन्तां पकड़ियो करयो भजन से काठो।

वो भजन चाहिए जो इस को काठो करे। इसको पकड़े। वो सन्त जानते हैं। सन्त किसे कहते हैं? सन्त उसे कहते हैं जिन्होने अन्दर प्रकट किया है। चौथे लोक में पहुँचे। उसका नाम सन्त है। ऐसे नहीं। क्या कहती है वाणी?

जिनकै हीअरै बसिउ मेरा सतगुरु ते सन्त भले भल भांति।

वो है जिसने प्रकट किया। उसका नाम सन्त है। हाँ जी:

पाठी– इहु मनु करमा इहु मनु धरमा। इहु मनु पंच ततु ते जनमा॥

मैनेजर साहिब जी–यह कर्म-धर्म किसने बनाए? 'मन' ने। यह दुनिया कौन चलाता है? 'मन'। रेल, हवाई जहाज़, गाड़ियां वगैरह कौन बनाता है? 'मन'। सोच लो!

इहु मनु करमा इहु मनु धरमा। इहु मनु पंच ततु ते जन्मा।

यह है क्या चीज़? जब आत्मा सुक्ष्म तत्वों, कारण तत्वों में पड़ती है, वहाँ से जो शक्ति पैदा होती है उस का नाम है 'मन'। यह आत्मा और तत्व के मध्य की चीज़ है। क्योंकि यह मादे से निकली है।

'इहु मनु पंच ततु ते जन्मा।'

यह मादे से निकला है और मादे का आशिक है। हर चीज़ अपने असल की तरफ जाती है। मिट्टी का ज़र्रा है, हवा में उड़ता है, फिर भी कहता है कि नीचे आऊं। पानी समुद्र से उठता है फिर कहता है कि नदी नालों के रास्ते समुद्र में जाऊं। हर चीज़ अपने असल की तरफ जाती है। पुराने समय में तो था, आजकल तो नहीं। खानदान देखते थे। वो ही असर होगा। बादशाह की लड़की थी। उसका किसी शहज़ादे से प्यार पड़ गया। वो शादी न करे उसके साथ। लड़की ने कहा कि हम चोरी निकल जाते हैं। वो आया और ऊंटनी पर चढ़ कर चले गए। रास्ते में नाला था। उसमें उसने लेटना शुरू कर दिया। बड़ा काबू किया पर नहीं काबू हुई। लड़की के मुंह से निकल गया कि इसकी भी आदत थी। उसको उसी समय चोट लग गई कि इसके कल बच्चा होगा तो उसकी भी यही आदत रहेगी। वो कहने लगा कि अभी वक्त है चलो मैं तुम्हें घर छोड़ आऊं। खानदान देखते थे। इस तरह मन मादे से निकला है। मादे की तरफ जाता है। यह मादे को छोड़ता ही नहीं।

मन माइआ मैं रमि रहिउ निकसत नाहिन मीत।
नानक मूरति चित्र जिउ छोड़ित नाहिन भीत।

यह खानदानी माया है।

मन माया न तजे, उल्ट फिर लागता।
जिउ जहाज का काव, जहाजे ताकता।
मारे मिटे न छूटे, टेव है कर्म की।
अरे हाँ पलटू मिटे न जीव की खोए परी है जन्म की।

माया की तरफ जाता है।

पाठी– 'इहु मनु करमा इहु मनु धरमा'

मैनेजर साहिब जी–इस माया से फकीरों ने काम लिया है। डेरे माया हैं। तन भी माया है। इसको छोड़ना था। आत्मा बड़ी चीज़ है, कोई और है। बाद में बस माया से ताल्लुक पड़ेगा और कुछ नहीं। जो फायदा मौके पर उठा गया, उठा गया। नहीं

तो फिर माया का चक्र है।

पाठी– इहु मनु करमा इहु मनु धरमा। इहु मनु पंच ततु ते जन्मा।
साकतु लोभी इहु मनु मूड़ा। गुरमुखि नामु जपै मनु रूड़ा।

मैनेजर साहिब जी–यह मन साकत है, बेइमान है, बदमाश है, लोभी है, मूढ़ है, गवार है। बार-बार माया की तरफ जाता है। आत्मा तो शान्त रहती है। यह इसको टिकने नहीं देता।

साकतु लोभी इहु मनु मूड़ा। गुरमुखि नामु जपै मनु रूड़ा।

विरले गुरुमुख ने इसको काबू किया है। इसके साथ सख़्त मुकाबला करना पड़ता है।

मनि के मते न चालिये मन के मते अनेक।
जो मन पर असवार है सो साधु कोई एक॥

जब यह भजन में बैठता है। फिर यह भागता दौड़ता है। सैकड़ों रुकावटें डालता है। यह भूत समान है। लगा रहे। जब भजन पर बैठता तो सोचता अगर जागेगा तो काम कैसे करेगा। इसका कहा न माने। जरूर दो ढाई घण्टे बैठे। उमरें बीत गईं। इसके साथ मुकाबला किया है।

मन ही नालि झगड़ा मन ही नालि सथ।
मनि जीतै जगु जीतु।

मुश्किल से काबू किया है फकीरों ने। बारह-बारह साल पानी ढोया है। सोच लो! सब फकीरों की हिस्ट्री पढ़कर देख लो। आसान काम नहीं, लगा रहे।

अपनी और निभाइए हारि परै की जीति।

कोई फिकर नहीं है। फिर जन्म नहीं मिलेगा। यह वक्त है बस लगा रहे।

छिन छिन राम संभालता जे जीव जाये तो जाये।
आत्मा के उधार को नांहि और उपाय॥

उमर भर की लड़ाई है इसके साथ। यह बहुत होशियार है। दबकर बैठ जाता है। अट्ठासी-अट्ठासी हज़ार साल तप किया। पवणाहारी बने। दबकर बैठ गया। उस वक्त पता चला जब सब कुछ खत्म कर दिया। वाणी में भी आता है।

कवनु कवनु नहीं पतरीआ तुम्हारी परतीति।
कौन कौन पतरीया मन तेरी प्रतीत।

जिसने इस पर भरोसा किया। फकीरों ने तो आखिर तक भरोसा नहीं किया।

पाठी– साकतु लोभी इहु मन मूड़ा। गुरुमुखि नामु जपै मनु रूड़ा।

मैनेजर साहिब जी–नाम का रस लेकर इसे काबू किया। ऐसे काबू आता ही नहीं। हज़ारों यत्न कर लो बाकी। हाँ जीः

पाठी– साकतु लोभी इहु मन मूड़ा। गुरुमुखि नामु जपै मनु रूड़ा।
गुरुमुखि मनु असथाने सोई। गुरुमुखि त्रिभवणि सोझी होई।

मैनेजर साहिब जी–गुरुमुख किसे कहते हैं? आत्मा तीन शरीरों में कैद है। पहले कारण शरीर है। उसके ऊपर सुक्ष्म शरीर है। उसके ऊपर अस्थूल शरीर जो हम देख रहे हैं। अनेक बन्धनों में फंसा पड़ा है। काम, क्रोध, मोह, लोभ, अहंकार, कौम, देश, सब बन्धनों में फंसा पड़ा है। यह सारे बन्धन तोड़े।

बंधन मात पिता संसारि, बंधन सुत कनिआ अरू नारि।
बंधन करम धरम हउ कीआ, बंधन पुतु कलतु मनि बीआ।
बंधन बेदु बादु अहंकार बंधनि बिनसै मोह विकार।

अनेकों बन्धनों में फंसा पड़ा है। यह सारे बन्धन तोड़े, सिमरण करे। ख़्याल को आंखों के पीछे इकट्ठा करे। फिर स्थूल कर्म खत्म होते हैं। फिर कारण शरीर, फिर नाम के तीर्थ में नहाए, अमृतसर में, प्रयाग कह लो वहाँ पहुँच कर आत्मा साफ होती है। फिर सच्चे सतगुरु, सच्चे शब्द से ताल्लुक पड़ता है। फिर गुरुमुख बनता है। उसका नाम गुरुमुख है। उनका मन काबू आता है, बाकी नहीं। उनका मन हर वक्त सिमरण में लगा रहता है। उठते बैठते लगा रहे।

सोए बैठे खड़े उताने कह कबीर हम वही ठिकाने।

एक मिनट भी नहीं छोड़ना। काम करते वहीं ध्यान रखते हैं वो। त्रिलोकी तक के भेद को जाना। वो मन की चालों से वाकिफ हैं। वो इसके काबू में नहीं आते। हाँ जीः

पाठी– गुरमुखि मनु असथाने सोई। गुरमुखि त्रिभवणि सोझी होई।

मैनेजर साहिब जी–यह जितनी रिद्धियां-सिद्धियां, यह सब मन के खेल हैं। हम रोज़ पढ़ते हैंः

पंखी होइ कै जे भवा सै असमानी जाउ।
नदरी किसै न आवउ न किछु पीआ न खाउ।
भी तेरी कीमति ना पवै हउ केवडु आखा नाउ।

इतनी शक्ति आ जाए। खाए पीये बगैर बिना जिन्दा रहे। फिर न समझो कि उसके पास नाम आ गया। यही एक शब्द कबीर साहिब का आता है।

पाखंड में कुछ नाही रे साधो, पाखंड में कुछ नाही रे।

देह बदल ले। शेर बन जाए। कभी कुछ बन जाए, कभी कुछ बन जाए। कितनी ही शक्तियां दिखा दे। तब भी यह न समझे कि उसके पास नाम है। हाँ, जी। यही एक मुसलमान फकीर ने लिखा हैः

'अगर दर हवा परीमगसेबाशी'

अगर तू हवा में उड़ता है तो एक मक्खी भी उड़ रही है।

'अगर बर आब रवी खसे बाशी'

अगर पानी में बैठकर चलना सीख लिया तो एक तिनका भी जा रहा है।

'दिल बदसदा कि कसे बाशी।'

इस मन को काबू कर। यह किसी विरले ने किया है। यह सब मन की शक्तियाँ हैं हाँ, जीः

पाठी– गुरमुखि मनु अस्थाने सोई। गुरमुखि त्रिभवणि सोझी होई।

मैनेजर साहिब जी–सन्तों का मार्ग बहुत ऊँचा है। लोग दुनिया की चीज़ें मांगते हैं।

सन्त जीव को बिपत छुड़ावे। करमी जीव जगत को चाहें।

माया मिल गई बड़ा फकीर है। बच्चा मिल गया बड़ा फकीर है। बीमारी हट गई बड़ा फकीर है। वो तो जन्म-मरण के बन्धन छुड़ाना चाहते हैं। फिर आना ही न पड़े। मन उल्टा फंसाता है कि रिद्धियों, सिद्धियों वाली इसी चाल में जीव उलझा रहे।

पाठी– इहु मनु जोगी भोगी तपु तापै। गुरमुखि चीन्हे हरि प्रभु आपे।

मैनेजर साहिब जी–भोगियों ने विषय विकार मन को दे दे कर कैद करने की कोशिश की कि किसी तरह इसकी भूख मिट जाए पर वो आगे ही आगे बढ़ते गए। योगी योग करके थक गए। पराशर जी पूर्ण योगी हुए हैं पर मन काबू न आया। अट्ठासी-अट्ठासी हज़ार साल तप किया। देह पर मिट्टी के ढेर बन गए पर मन काबू न आया। सोच लो! गुरमुखों ने अभ्यास किया, अन्दर गए, सिमरण करके नाम का रस लिया, फिर काबू आता है।

पाठी– इहु मनु जोगी भोगी तपु तापै। गुरमुखि चीन्है हरि प्रभु आपै।
मनु बैरागी हउमै तिआगी॥ घटि घटि मनसा दुविधा लागी॥

मैनेजर साहिब जी–यह मन एक बहरूपीया है। तरह-तरह के रंग बदलता है। कभी कुछ बनता है तो कभी कुछ बनता है।

मनि के मारे बन गए, बन तजि बसती माहि।
कह कबीर क्या कीजिए यह मन ठहरे नाहिं।

कभी कुछ बन गया तो कभी कुछ। यही कबीर कहते हैं :

मन ही गावे मन ही रोवे मन ही जागे मन ही सोवे।
जब लग भीतर लगन न लागी तब लग सुरत न कबहूं जागी।

यह तरह-तरह के रूप बदलता है। कभी कुछ बनता है, कभी कुछ बनता है।

पाठी– 'धन धन सतगुरु तेरा ही आसरा'। महात्मा सुन्दरदास जी कहते हैं कि इस कमबख़्त को अगर घेरा जाए तो यह काबू नहीं आता।

मैनेजर साहिब जी–हाँ, घेरा जाए तो काबू नहीं आता। कबीर साहिब ने कहा है कि न इसके हाथ हैं न इसके पांव हैं, कैसे पकड़ा जाए इसको?

पाठी– अगर इसको समझाया जाए तो कान ही नहीं धरता। यह जायज़ और नजायज़ की परवाह ही नहीं करता। न ही बदी व नेकी की तमीज़ करता है और नामुमकिन बात को एक मिनट में मुमकिन कर दिखाता है। न इसको गुरु की परवाह है न पीर की।

मैनेजर साहिब जी–देख लो! किसी ने फकीरों का हुक्म नहीं माना। गुरुनानक साहिब के लड़कों ने माना? गुरु अंगद की शरण में रहते तो अलग-अलग पंथ क्यों चलाते? गुरु अंगद साहिब के लड़कों ने माना! अगर मानते तो गुरु अमरदास के लातें क्यों मारते? बाबर को पुजारियों ने माथा नहीं टेकने दिया अमृतसर में, देख लो!

पाठी– न लोगों की शर्म है, न किसी की मानता है, न किसी से डरता है। सुन्दरदास जी कहते हैं कि कोई बताओ कि इस पर कैसे काबू किया जाए? इसकी तो फितरत ही नहीं समझ आती । कभी तो यह मन ज़ाहिद बन जाता है, कभी चोर, कभी कुछ।

मैनेजर साहिब जी–ज़ाहिद कह लो, जपी, तपी कह लो।

पाठी– कभी कंगाल, कभी फसाद, कभी लकड़ी की तरह अकड़ जाता है।

मैनेजर साहिब जी–कभी कहता है कि मैं यूं कर दूंगा। कभी कहता है कि मैं क्या कर सकता हूँ। बताओ एक मिनट में बदल जाता है।

पाठी– किसी वक्त नफज का बंदा, किसी वक्त काबू करना, किसी वक्त शीशे की तरह साफ। कभी कीचड़ की तरह मैला। इस मन की हालत तो शीशे जैसी

है कि जिस में कई रंग हैं, यानि यह तो पूरा बहरूपीया है।

मैनेजर साहिब जी–हाँ जी, पूरा बहरूपीया है। ''मनु बैरागी हउमै तिआगी।''

पाठी– मनु वैरागी हउमै तिआगी। घटि घटि मनसा दुविधा लागी।
राम रसाइणु गुरमुखि चाखै। दरि घरि महली हरि पति राखै।

मैनेजर साहिब जी–गुरमुखों ने नाम का रस ले कर इसे काबू किया है। मस्ताना जी फरमाया करते थे कि देख भई, आपने लड्डू का रस लिया, जलेबी का लिया, आमों का रस लिया, सेब का रस लिया, सारे रस लिए बाहर लेकिन जो रस मालिक ने अन्दर रखा आपके लिए, वो न लिया। इससे मन काबू आता है।

'बहुरूपी मनि तब लगे जब दादू मन लागा राम में'

फिर एक ही रंग, बस! जब वो रस आ गया, तब एक रंग में रहता है। जब तक माया का असर है, तब तक बदलता रहता है। बस!

पाठी– राम रसाइणु गुरमुखि चाखै। दरि घरि महली हरि पति राखै।

मैनेजर साहिब जी–क्योंकि मादे से निकला है। बाहर की चीज़ों में मस्त है। यही रस चाहता है।

पाठी– इहु मनु राजा सूर संग्रामि। इहु मनु निरभउ गुरमुखि नामि।

मैनेजर साहिब जी–जब राजा बनता है तो क्या लड़ाई, झगड़े, बन्दूकें, तोपे, हवाई जहाज़ लड़ाई का सामान इकट्ठे करता है। सारा दिन चिंता, फिकर लगती रहती है। अगर मन निरभउ है तो गुरमुखों ने रस लिया है, तब काबू किया है। बाकी किसी के काबू नहीं आता। अगर आता है तो इस रस से, नहीं तो नहीं।

पाठी– इहु मनु राजा सूर संग्रामि। इहु मनु निरभउ गुरमुखि नामि।
मारे पंच अपुनै बसि कीए। हउमै ग्रासि इकतु थाइ कीए।

मैनेजर साहिब जी–उन्होंने कैसे काबू किया? हउमै मारी, फकीरों की शरण ली। उनके हुक्म के मुताबिक भजन सिमरण किया। काम, क्रोध के रस से परे हुए। इसी चक्र में फिर रहे हैं। जितना काम कर रहे हैं, हम काम, क्रोध का कर रहे हैं। या काम का या क्रोध का, या लोभ का या मोह का, या माया का या अहंकार का। औरतें इसके काम की, ज़मीन जायदादें लोभ की, बाल-बच्चे मोह के, मान-बड़ाई अहंकार की, दुश्मन इसके क्रोध के। आत्मा का कौन सा काम है? यही कर रहे हैं, सोचो! सब से ताल्लुक तोड़ा। यह माया का काम है। भजन सिमरण मेरा है, यह भजन सिमरण करके। इन का रस लिया।

दस इन्द्री करि राखै वासि। ताकै आतमै होई परगासु।

फिर काबू आता है। फिर यह रस ले सकता है। फिर तो यह रस आवे।

यह रस आवे तो ओह रस नहीं आवे।

यह रस छोड़े तो आए। कैसे आए? यह बाहर के रसों में फंसा पड़ा है।

पाठी– मारे पंच अपुनै वसि कीए। हउमै ग्रासि इकतु थाइ कीए।

मैनेजर साहिब जी–हमारे पर हकूमत करते हैं। अपना-अपना काम करवाते हैं। जब यह रस लेता है तो काबू आ जाते हैं। फिर जैसे मर्ज़ी चलाओ इसको। फिर हुक्म में रहते हैं। मन भी हुक्म में रहता है।

पाठी– गुरमुखि राग सुआद अन तिआगे। गुरमुखि इहु मनु भगति जागे।

मैनेजर साहिब जी–जो गुरमुखता का कोर्स करते हैं, गुरमुखों के संग में जाकर वो राग-द्वेष में नहीं रहते। विषय-विकारों में नहीं फंसते। हर वक्त ख़्याल मालिक की तरफ रखते हैं।

'सोए बैठे खड़े उताने कह कबीर हम वहीं टिकाने'

'नामा कहै तिलोचना मुख ते रामु सम्भालि'

हर वक्त लिव लाई रखते हैं। एक मिनट भी नहीं छोड़ते। खाते-पीते काम भी करते सुबह जरूर बैठते हैं, अभ्यास करते हैं।

पाठी– गुरमुखि राग सुआद अन तिआगे। गुरमुखि इहु मनु भगति जागे।

मैनेजर साहिब जी–यह विषय हैं जो इसको अन्दर नहीं जाने देते। दुनिया के ख़्याल ही हैं। जब दुनिया के ख़्याल खत्म हों, तब अन्दर जा सकता है। ज्यों ज्यों दुनिया के ख़्याल कम होते जाएंगे। एक मुसलमान फकीर ने लिखा है:

''चूं शबी खाली तू अज़ ज़िकरे खुदा राह यावी दर हरी में किबरिया''

सिमरण कर-करके सारी दुनिया के ख़्याल निकल जाएं, तो मालिक के घर का रास्ता मिल जाएगा।

पाठी– गुरमुखि राग सुआद अन तिआगे। गुरमुखि इहु मनु भगति जागे।

अनहद सुणि मानिआ सबदु बीचारी। आत्मु चीन्हि भए निरंकारी।

मैनेजर साहिब जी–जब सिमरण कर-कर के सारे ख़्याल निकाले तो अनहद से ताल्लुक पड़ गया। जब अनहद से ताल्लुक पड़ गया मन मान गया। अन्दर शांती आ गई। अब यह आत्मा को भुलाता-भुलाता खुद ही भूल गया है। गुरुनानक साहिब ने कहा है:

मन तू जोति सरूपु है आपणा मूल पछाण।

तू कौन है? कहाँ से आया है?

मन ने आप गंवाया, गिआन बुझाया दीव।
करम लगा भरगत फिरिउ, मिला ना अपना पीव।
दौड़ दौड़ रस और ही, हो रिहा कंगाल।
नातर आगे भूप था, ऊँचा बड़ा दिआल।

यह छोटी हस्ती नहीं है। यह ब्रह्म की अंश है। यह ब्रह्म बन जाता है। वहाँ ठहर जाता है। फिर आगे नहीं जा सकता। अकेली है आत्मा जब आगे अमृतसर के तीर्थ में नहाई।

अठसठ तीर्थ नाम है किलविख काटणहारा।

फिर यह आत्मा मालिक को देखने के काबिल बनती है। फिर निरंकार को देख सकती है।

आत्म चीन्हि भए निरंकारी।

उस वक्त उसकी अपनी रोशनी बारह सूरज की होती है।

बारसि बारह उगवै सूर अहिनिस बाजे अनहद तूर।

(गुरुनानक साहिब)

पाठी– अनहद सुन मानिआ सबदु विचारी। आत्म चीन्हि भए निरंकारी।
इहु निरमलु दरि घरि सोई। गुरमुख भगति भाउ धुनि होई।

मैनेजर साहिब जी–यह कब निर्मल होता है, जब अपने घर पहुँचे। कैसे पहुँचता है? सिमरण करके सब ख़्यालों से ताल्लुक तोड़े। अन्दर धुन से ताल्लुक जोड़े। जिस की पुरानी भक्ति होती है वह जल्दी कामयाब हो जाता है। यह कई जन्म की भक्ति है। बाकीयों को देर लगती है। लेकिन कोर्स जरूर करना पड़ता है। जिनकी पुरानी भक्ति है उनका ताल्लुक पड़ता है। कबीर साहिब ने लिखा है कि मेरी भक्ति थी पुरानी, इसलिए शब्द से ताल्लुक पड़ा।

पाठी– हम कूकर तेरे दरबारि हम कूकर तेरे दरबार।
भउकहि आगै बदनु पसारि।

मैनेजर साहिब जी–कि सन्तों ने मेरी ड्यूटी लगाई है कि तू मालिक की शरण में जाना है। कि क्या कर? कि जैसे कुत्ता पहरे पर बैठता है। जब कोई आता है तो उसी वक्त भौंकता है। पहरा देता है। इस दरबार में इसकी राखी कर। विषय विकारों का ख़्याल न आने दें। यह दरबार है। हम कूकर हैं।

'हम कूकर तेरे दरबार'
'हरि मन्दिर एहो शरीर है ज्ञानि रतन प्रगटु होई।'

यह रखवाली है। काम का, क्रोध का, विषय विकारों का ख़्याल आने नहीं दे। यह ड्यूटी लगाई है।

पाठी– दिवस रैनि तेरे पाउ पलोसउ केस चवर करि फेरी।

मैनेजर साहिब जी–यह बारहमुखी का बाहरमुखी रहेगा। यह बाहर के दरबारों को दरबार समझेगा। असली दरबार छोड़ ही बैठा है।

पाठी– पूरब जन्म हम तुम्हरे सेवक। अब तउ मिटिआ न जाई।

मैनेजर साहिब जी–कि पुराना सेवक हूँ तुम्हारा। पुरानी भक्ति है।

पाठी– पूरब जन्म हम तुम्हरे सेवक, अब तउ मिटिआ न जाई।
तेरे दुआरे धुनि सहज की, माथै मेरे दगाई।

मैनेजर साहिब जी–'सहज धुन' जो सहज अवस्था से आ रही है। उस नाम से उस शब्द से, उस धुन से ताल्लुक पड़ा है। यह पुरानी भक्ति है।

पाठी– तेरे दुआरै धुनि सहज की माथै मेरे दगाई।
दागे होहि सु रण महि जुझहि बिनु दागे भागि जाई।

मैनेजर साहिब जी–मन से मुकाबला वो रखते हैं, लड़ाई वो कर सकते हैं जिनकी पुरानी भक्ति है, जो पुराने भक्त हैं, पुराने चिताएं हुए हैं। जिनको पहले ही से जीयादान मिला हुआ है, वो लड़ सकते हैं। मस्ताना जी फरमाया करते थे। उन्होंने मलोट में फरमाया कि कोई साल में, कोई दो में, और कोई चार में थक जाता है। विरला है, विरला कोई सिरे चढ़ता है।

पाठी– दागे होहि सु रण महि जुझहि बिनु दागे भागि जाई।
साधु होई सु भगति पछानै हरि लए खजाने पाई।

मैनेजर साहिब जी–जिसकी पुरानी साधना है, उसको भक्ति की कदर है। उस के अन्दर धुन आती है, ऐसे नहीं। मालिक के ख़ज़ाने में वो ही दाखिल होते हैं। उनको नाम का ख़ज़ाना मिलता है।

पाठी– साधु होई सु भगति पछानै हरि लए खजाने पाई।

मैनेजर साहिब जी–दो लफ्ज़ों का क्या वो तो हर कोई बता देता है। बाद में रोते हैं। इन लफ्ज़ों को कहता है कि हमारा नाम बड़ा है। वो कहता कि हमारा बड़ा है। वो कहता है कि हमारा बड़ा है। मौके-मौके पर सब बड़े थे। लफ्ज़ों में फंस जाती है दुनियां। मौके-मौके पर बदलते रहे हैं, बदलते रहेंगे। कितने नाम हो गए मालिक के। किसी ने कुछ जपाया, किसी ने कुछ जपाया। यह सब कुछ मौके-मौके पर है।

पाठी– कोठरे महि कोठरी परम कोठी वीचारि।
गुरु दीनी बसतु कबीर कउ लेवहु वसतु सम्हारि।

मैनेजर साहिब जी–कई चीज़ें हम बाहर ही रख देते हैं। कई सेहन में रखते हैं। कई कमरों में, कई अलमारियों में, कई अलमारियों की सेफो में। किसी को खास ख़ज़ाने में रखते हैं। यह कोठरी है। उसमें एक कोठरी है। वहाँ एक ख़ज़ाना हैं वहाँ रखी है। यह सतगुरु ने अपने हाथ में रखी है।

'रामु नामु कोठड़ी गढ़ मंदरि इक लुकानी।'

यह शरीर भी एक मन्दिर है। इसमें एक कोठरी है। उसमें एक खास जगह है। वहाँ रखी है। यानि कि यह सतगुरु ने अपने हाथ में रखी है। वो जिसको बख़्शे।

दसम दुआरा अगम अपारा परम पुरख की घाटी।
उपरि हाटु हाट परि आला आले भीतरि थाती।

यह जिस को सतगुरु बख़्शे। यह रिद्धियां, सिद्धियां सब नीचे दर्जे की हैं।

पाठी– कोठरे महि कोठरी परम कोठी वीचारि।
गुरु दीनी बसतु कबीर कउ लेबहु बसतु सम्हारि।

मैनेजर साहिब जी–संभाल कर रखना। इसका ग्राहक कोई नहीं, देखकर बरतना। ग्राहक को ही देवे।

पाठी– गुरु दीनी बसतु कबीर कउ लेवहु बसतु सम्हारि।

मैनेजर साहिब जी–स्कूल में बच्चों को दाखिल करते हैं वो देखते हैं कि चल पाएगा कि नहीं। सोच लो! नौकरी में देखते हैं कि चल पड़ेगा कि नहीं।

पाठी– गुरु दीनी बसतु कबीर कउ लेवहु बसतु सम्हारि।
हम कूकर तेरे दरबार।

पाठी– हाफिज़ साहिब फरमाते हैं कि या खुदा चारों तरफ अंधेरा ही अंधेरा छा रहा है। सब कोरे के कोरे नज़र आते हैं। इस रूहानीयत का कोई ग्राहक नहीं।

मैनेजर साहिब जी–नाम रत्न धन मुझ में खान खुली घट माहिं।
सीत मीत ही देत हूँ, ग्राहक कोई नाहिं।

पाठी– कबीर दीई संसार कउ.....

मैनेजर साहिब जी–बिना किस्मत के नहीं मिल सकती। बिना किस्मत के कोई भी फकीरों के पास नहीं आ सकता। यह फैसला है।

पाठी– कबीर दीई संसार कउ लीनी जिसु मसतिक भागु।
अंम्रित रसु जिनि पाइआ थिरु ताका सोहागु॥

मैनेजर साहिब जी–जिसने मेहनत करके अमृत पीया, उसकी रूह हमेशा सुहागिन हो गई। कोई विरला है जो हासिल करता है।

पाठी– इहु मनु निरमलु दरि घटि सोई। गुरमुखि भगति भाउ धुनि होई।
अहिनिसि हरि जसु गुरपरसादि। घटि घटि सो प्रभु आदि जुगादि।

मैनेजर साहिब जी–यह धुन सुनने के लिए, यह काम करने के लिए, नाम का रस लेने के लिए। क्या चाहिए? सतगुरु से मेहर मांगे। ऐसी साध संगत मिले ताकि हर वक्त भजन सिमरण बनता रहे। ऐसी चीज़ चाहिए।

कबीर साधू की संगत रहउ, जउ की भूसी खाय।
होनहारु सो होइ है साकत संगि न जाउ॥

(कबीर साहिब)

हर पल मालिक से यही मांगे कि ऐसी संगत दे, जहाँ तेरा यश हो, तेरा प्यार उठे, तेरा भजन सिमरण बने, अन्दर जाऊं। हर वक्त लगन लगी रहे। वो मालिक घट-घट में है। क्या पता कब मेहर हो। यह दिल की सच्चाई पर है। ज्यों-ज्यों इसकी सोहब्बत करता है, मालिक का प्यार बढ़ता जाता है। दुनियां की तरफ घटता जाता है। पहले ख़्याल करता है, मैं भजन सिमरण करूं। इतना आटा हो, इतनी फलानी चीज़ हो, यह हो वो हो। कबीर साहिब ने कहा है कि दो सेर आटा हो, नमक हो, घोड़ी हो, लवेरी हो। फिर कहता है यह सब झंझट है। फिर कहता है कि क्या करनी है भैंस और गाय। दूध मोल ले लिया करेंगे। फिर इसके बाहर के ख़्याल निकलते जाते हैं। अन्दर का प्यार बढ़ता जाता है।

नामै प्रीति नारायण लागी। सहज सुभाइ भइउ वैरागी।

फिर वैरागी बनता है। फिर कहता है रोज़ की रोटी मिल जाए। फिर कहता है रोटी मिले न मिले, मालिक तूं चाहिए। बस कि एक तूं चाहिए। फिर मालिक आ गया। यह सोहब्बत पर है। मालिक का प्यार बढ़ता जाता है। हर वक्त सोहब्बत करे। क्या पता किस समय मेहर कर दे। एक बुल्ला हुआ है। एक तो मुसलमान हुआ और एक बुलाकीराम हुआ है।

आठ पहर चौंसठ घड़ी बुल्ला धर ध्यान।
नहीं जानूं कौनी घड़ी आये मिले भगवान॥

आठ पहर चौसठ घड़ी भरो प्याला प्रेम।
बुल्ला कहे विचार के यह है हमारा नेम॥
जग आये जग जागीये पगीये हर के नाम।
बुल्ला कहे विचार के छोड़ देउ तन धाम॥

(महात्मा बुलाकी राम)

लगा रहे। हम दुनिया में आकर यह धाम छोड़ें। घर-बार छोड़ना तो आसान है, लेकिन यह छोड़ना मुश्किल है। जड़ चेतन की गांठ खोलना मुश्किल है। यह खोले! क्या पता किस समय मेहर कर दे। यह कोशिश करे। मस्ताना जी फरमाया करते थे। एक मुसलमान फकीर था शाह हुसैन। वो हर वक्त इसी ख़्याल में रहता था कि मालिक क्यों नहीं मिलता? कि ऐ मालिक दर्शन क्यों नहीं देता? बस इसी लगन में था। सारा दिन यही करता था। कि टट्टी में बैठा था। वहीं ध्यान जुड़ गया। शाह हुसैन पे मेहर हो गई।

शाह हुसैन गध्धा, जिस हँगदे अल्ला लध्धा।

कि मैं तो गधों जैसा था। टट्टी फिरते-फिरते मिल गया। क्या पता किस वक्त मेहर कर दे?

पाठी– अहिनिसि हरि जसु गुरपरसादि। घटि घटि सो प्रभु आदि जुगादि।

मैनेजर साहिब जी–बोलो! सब के साथ है। हमेशा सब की सुनता है जो सच्चे दिल से पुकारता है। जैसे-जैसे मेहनत करता है, इसको फल मिलता जाता है।

सतगुरु सदा दइआलु है भाई विणु भागा किआ पाईऐ।
एक नदरि करि बेखै समसरि जेहा भाउ तेहा फलु पाईऐ।

पाठी– राम रसाइणि इहु मनु माता। सरब रसाइणु गुरमुखि जाता।

मैनेजर साहिब जी–'राम रसाइणि' क्या? जब नाम का रस लिया तब यह मन काबू आता है। इसके साथ सब कुछ आ गया।

जाकि कंठी नाम है ताकि हम सिध।

कर जोड़े खड़े रहे। सब इसके पीछे हैं। सब रसायण आ जाते हैं।

विद्या माही बाद है तम के माँही रिद्धि।
राम नाम महि मुक्ति है योग के माही सिद्धि॥
राम नाम में ये समी, रिद्धि सिद्धि और मोक्ष।
ऐसा इष्ट सवारिये चरनदास कहे सोच॥

(महात्मा चरनदास)

सब कुछ आ गया। फिर शील, क्षमा, सन्तोष, धीरज, विवेक सब कुछ आ गया। फिर रसायण एक ऐसी चीज़ है, जब यह खा लेता है सब बीमारियां दूर हो जाती हैं। इस तरह नाम की रसायण एक ऐसी चीज़ है जितने इसके पाप हैं खत्म हो जाते हैं। सब वैर, विरोध, द्वैत निकल जाते हैं। आत्मा की सब मैले दूर हो जाती हैं।

पाठी– राम रसाइणि इहु मनु माता। सरब रसाइणु गुरमुखि जाता।
भगति हेतु गुर चरण निवासा। नानक हरि जन के दासनि दासा।

मैनेजर साहिब जी–भक्ति क्या? सब सुखों का सामान कहाँ है? सतगुरु के चरणों में। सुख कहीं नहीं मिल सकता। सब सुख सतगुरु के चरणों में है। रोज़ पढ़ते हैं, वहाँ सुख ही सुख है, शांती ही शांती है, आनन्द ही आनन्द है, अमृत ही अमृत है।

अनंदु भइआ मेरी माए सतिगुरु मै पाइआ।
सतगुर त पाइआ सहज सेती मनि बजीआ वाधाइआ।
राग रतन परवार परीआ सबद गावण आईआ।

कि मैंने ऐसा आनन्द हासिल किया है। कहाँ? सहज सेती, सहज अवस्था में, जो त्रिलोकी से पार है। वहाँ सुख ही सुख है, शांती ही शांती, अमृत ही अमृत है। अगर वहाँ पहुँच जाए, इसका वापिस आने को मन नहीं करता। वो ऐसा देश है। उसको कौन छोड़े? इस गन्दे देश में आना नहीं चाहते। गुरु गोविन्द लिखते हैं:–

द्वै ते एक रूप ह्वै गयो॥ चित न भयो हमरौ आवन कह॥
चुभी रही सुरति प्रभु चरनन मह॥
ज्यों त्यों प्रभ हम को समझायो॥
इम कह कै इह लोक पठायो॥

(गुरु गोविन्द सिंह जी)

कि पहले में अलग था। जब भक्ति करके मालिक की दरगाह में गया, वहाँ आनन्द और शांती, आनन्द और प्रेम को देखा, तो मेरा आने को मन नहीं करता था। मालिक ने ज्यों-त्यों समझा कर भेजा कि तेरा तो काम बन गया, उनको भी समझा, शायद कोई मान जाए। तू तो जब चाहे आ, जब चाहे जा। यही शम्मस तबरेज़ ने लिखा है। शम्मस तबरेज़ ने फरमाया कि ''तुम क्या जानो कि हम कैसे

मुर्ग हैं। अन्दर ही अन्दर हम हर पल, हर लम्हा क्या इच्छा रखते हैं?''

मैनेजर साहिब जी–मस्ताना जी फरमाया करते थे कि इस गन्दे देश में रहने को मन नहीं करता। क्या करें मजबूरी है। सतगुरु का हुक्म ही ऐसा है, क्या करें?

पाठी– बाहर से देखने में चाहे हम फकीर दिखाई देते हैं। हमारी बड़ाई अन्दर जाकर देखो कि हम कैसे बादशाह हैं। बाहर से चाहे हम कंगाल दिखाई देते हैं, तुम अन्दर जा कर देखो कि हम कैसी खान हैं। हम खुद खण्डो-ब्रह्माण्डों के मालिक हैं। हमें क्या गम है। आज हम इस शरीर रूपी कैदखाने में कैद हैं तो कब तक रहेंगे। हम सब ही इस जगह पर मेहमान हैं।

मैनेजर साहिब जी–यह देह तो छोड़ जानी है।

पाठी– हमारा इस जगह, इस दुनिया में आना, एक अपने बादशाह के साथ इकरार की वजह से है।

मैनेजर साहिब जी–हाँ, इस दुनिया में हम अपने बादशाह से इकरार की वजह से रह रहे हैं। नहीं तो रहने को मन ही नहीं करता।

पाठी– जिसे हम निभा रहे हैं। जब तक इस गुदड़ी शरीर में हैं, हम किसी को नाराज़ नहीं करते।

मैनेजर साहिब जी–सब के साथ दीनता से गुज़ार कर गए हैं। दीनता और ग़रीबी से।

पाठी– और न ही नाराज़ होते हैं।

भगति हेतु गुरु चरण निवासा। नानक हरि जन के दासनि दासा।

मैनेजर साहिब जी–सतगुरु के चरणों में कैसे पहुँचता है? सबका दास हो।

दासनि दासु होवै ता हरि पाई विचहु आप गवाई।

अपनी हस्ती को मिटाए। हम सन्तों के दास नहीं बनते। औरों का तो क्या बनना है।

संता की होइ दासरी एहु अचारा सिखुरी।
सगल गुणा गुण उतमो भरता दूरि न पिखुरी।

फिर मालिक दूर नहीं। इतनी हस्ती मिटाए कि बिल्कुल मिट्टी बन जाए। कुछ भी हो कबीर साहिब ने लिखा हैः

कबीरा रोड़ा होइ रहु बाट का तजि मन का अभिमानु।

कि मालिक की प्राप्ती करने के वास्ते रास्ते का रोड़ा हो जा। हरेक की ठोकर खा। तब मालिक के पास जा सकता है। फिर कहते हैं कि नहीं। रोड़े

से किसी को चोट लगेगी। तू खेह बन जा। फिर कहने लगे कि यह भी नहीं। खेह से किसी के कपड़े खराब होंगे, हाथ पांव खराब होंगे। फिर कहते हैं कि यह भी नहीं। तू साफ पानी की तरह बन जा। फिर कहते हैं किः

कबीर पानी हुआ त किआ भइआ सीरा ताता होई।
हरिजनु ऐसा चाहिअै जैसा हरि ही होइ।

फिर कहते हैं कि यह भी नहीं। क्योंकि ठण्डे की ज़रूरत तो गर्म मिल गया। गर्म की ज़रूरत तो ठण्डा मिल गया, फिर भी दुख। हस्ती को ऐसे मिटा जैसे मालिक ने मिटाई हुई है। वो सब का मालिक है! बाहर निशानी है? कोई गालियां निकाले, उसकी रोटी बन्द की? इतनी हस्ती को मिटाए तब मालिक का रूप बन सकता है, ऐसे नहीं।

पाठी– भगति हेत गुरु चरण निवासा। नानक हरि जन के दासनि दासा।
बिनु गुरु सबदै मनु नहीं.....

पाठी– मैं तो उन सन्तों का दास जिन्होंने मन मार लिया।
मनु मारा तन वस किया सभी भरम भए दूर।
बाहर से कछु दीखत नाहीं अन्दर बरसै नूर।
जिन्होंने मन मार लिया.....

मैनेजर साहिब जी–बाहर तो दिखाई नहीं देता, अन्दर है।

पाठी– शम्मस तबरेज़ साहिब फरमाते हैं कि बाहर चाहे फकीर ही दिखाई देते हैं पर हमारी बड़ाई अन्दर जाकर देखो कि हम कैसे बादशाह हैं। बाहर से हम कंगाल दिखाई देते हैं पर अन्दर जाकर देखो कि हम कैसी खान हैं।

मैनेजर साहिब जी–हाँ, कैसी खान हैं। अन्दर नूर बरसै।

पाठी– मनु मारा तन वस किया सभी भरम भए दूर।
बाहर से कछु दीखत नाहीं अन्दर बरसै नूर।
जिन्होंने मन मार लिया.....

मैनेजर साहिब जी–वो सुना भई, अपने बाप की, कैसे चोला छोड़ा?

प्रेमी– यह चमत्कार है। मैं अपने पिता जी की मौत का हाल सुनाता हूँ। मेरे पिता जी की मौत हुई। कुछ दिन बीमार हुए। लोगों ने कहा कि भई! डाक्टर भी बुलाओ। ज़बरदस्ती डाक्टर को बुलाया गांव वालों ने। एक डाक्टर को बुलाया। डाक्टर दवाई देने के लिए अन्दर आया और पूछा कि उदाराम तुम्हारी तबीयत तो ठीक है कि ऐसा अचानक समाचार क्यों भेजा? जब डाक्टर को कहा कि

डा. साहिब कोई नहीं है, मेरे को दवाई नहीं लेनी है। उसने कहा कि दवाई तो हम देंगे। तो कहने लगे कि दवाई तो मैं लूंगा नहीं। मेरे पास एक दवाई है, सच्ची दवाई। एक बार मेरे को कहा कि डाक्टर साहिब के कुछ रुपये देने हैं। मैंने पूछा कि क्या उधार लिए हैं? कहने लगे कि नहीं उधार तो नहीं लिए। उसको वो तरीके से देने हैं। और पैसे डाक्टर को दे दिए। फिर कई दिनों के बाद मौत की तारीख बताई। एक महीना था। फिर धीरे-धीरे करके मौत का दिन भी आया तो उसी दिन पड़ोस में शादी थी। जब उनको मालूम हुआ पूछने लगे कि भई क्या बात है। हमने कहा कि शादी है। कहने लगे कि हमने तो आज जाना था। इतने में दाढ़ी-वाढ़ी बनाई। फिर गुरु महाराज की फोटो के सामने हाथ जोड़कर नमस्कार करके पास बैठे। सब प्रेमीयों को बोला कि भई हमने आठ दिन की छुट्टी ले ली है। कई कहने लगे कि मौत आने पर आठ मिनट नहीं निकलते, आपने तो आठ दिनों की छुट्टी ले ली। वो कहने लगे कि भाई मैंने तो आठ दिनों की छुट्टी ले ली, मुझे नहीं जाना। काफी लोगों ने अफसोस किया कि मृत्यु आने पर आठ सैकिंड नहीं निकलते। यह बुढ्ढा कह रहा है कि आठ दिन मेरा कुछ नहीं बिगड़ेगा। आठ दिनों के अन्दर उन्होंने खाना पीना भी अच्छा किया, बातचीत भी। लेन देन भी ठीक किया। हमें कहा कि हमें किसी चीज़ की परवाह नहीं कि देखो भई बुधवार को हमें जाना है। आठ दिन के बाद जब बुधवार की रात आई। हम सब परिवार के जब इकट्ठे हुए, वो कहने लगे कि भई! हमें कल जाना है। पास बैठे प्रेमी कहने लगे कि भई हम ऐसे नहीं मानते। वह बोले कि फिर तुम लोग कैसे मानोगे? तब उन्होंने कहा कि भई टाइम नोट करवा दो। तो उन्होंने कहा कि कर लो। कल शाम पांच बजे का कर लो। और चेहरा एक दम खिल गया। कईयों ने सोचा कि अब बुढ्ढा मरने वाला तो नहीं, एकदम तैयार है। हमने भी सोचा कि भई! अब ठीक है। चेहरा भी खिल गया, बस तैयार है। जब बुधवार को दो बजे का समय हुआ तो कहने लगे कि बेटा! मेरी दाढ़ी बना। मैंने दाढ़ी बनाई। कपड़े बदला! कपड़े बदलाए। कहने लगे कि अब भई! तैयारी है। पांच बजे गए गुरु महाराज की फोटो को नमस्कार की और कहने लगे कि गुरु जी पांच मिनट और दीजिए। पानी गर्म कराओ, स्नान कराओ। कहने लगे कि बुढ्ढा मरने वाला तो है नहीं। अब स्नान भले हर रोज़ ही कराओ। पानी गर्म करवाया। मैंने बोला कि पानी गर्म हो गया। कि अब नहलाओ। नहाने के लिए खुद उठकर बाहर आए। बैठ

गए। मुझे कहा कि भई और तो कोई प्रेमी नहीं है। मैं शब्द बोलता हूँ तुम सब बोलना। एक बात है मगर रोना नहीं। इस बात का खास ध्यान रखना। किसी भी परिवार के सदस्य की आंखों में आंसू नहीं आना चाहिए। हम सबने खुश होकर कहा कि बाबा मरे तो नहीं! कोई बोले कि मरे को तो सब रोते हैं। यह मरने वाला नहीं, रोना किसलिए? फिर उन्होंने सिर पर पानी डाला। धन धन सतगुरु करके चोला छोड़ दिया।

मैनेजर साहिब जी–वो भी पांच दिन बैठी रही। कहने लगी कि पांच दिन की छुट्टी मिली है। सिमरण करो, बस।

पाठी– प्रभु गुण क्यों नहीं गायो रे.....

मैनेजर साहिब जी–तरह-तरह की बोलियां हैं। मस्ताना जी बिलोचस्तानी बोलते थे। जब बागड़ियों को पूछो कि समझ आती है? तो कहने लगे कि समझ तो कुछ नहीं आता बाबा जी की बोली मीठी लगती है।

धन धन सतगुरु तेरा ही आसरा

सत्संग

'मूसन मस्कर प्रेम की'

सत्संग के वचन

मैनेजर साहिब जी–मन तो इधर से उधर, उधर से इधर छत्तीस सौ जगह जाता है, धक्के खाता है। एक प्रेमी ने कहा कि मन तो इधर-उधर हो जाता है, जाना भी पड़ता है। आखिर वहीं आना पड़ता है। सतगुरु से बड़ा कोई नहीं। उस शब्द गुरु से बड़ा कोई नहीं। उसने हर चीज़ की रचना की है।

सबदे धरती सबदे आकास। सबदे सबदु भइया प्रगास॥

(284/11 मः5)

वो बादशाह है। बाकी जितनी ताकते हैं, देवी-देवते, उसके मातहैत हैं। उसके मुकाबले में कोई नहीं। अगर बादशाह को छोड़ कर छोटे-छोटे अफसरों के पास जाए तो उसको कहाँ ढ़ोई है। यह डगमग होते हैं तब धक्के खाते हैं, बनता भी कुछ नहीं। एक दिलासा ही दिलासा है। आखिर यहीं आना पड़ेगा। इसके आगे न भूत आए, न प्रेत, न देवी-देवते, न यमदूत, न काल, न महाकाल। कोई चीज़ आगे नहीं आ सकती। अपने लिए आप देरी करता है। अगर सतगुरु का नाम जपे तो चाहे कितनी भी मुसीबतें आएं तो यही कहे कि ऐ मालिक! तेरी रज़ा है, मालिक तेरी मौज़ है। अगर यह जपे, तो इसके सब काम बनें। यह जितना दूर जाता है उतने ही धक्के खाता है, उतना ही दूर जाता है। हाँ, जी! अपने घर जाने में देरी करता है।

पाठी– ''दीक्षित हुई रूह को अपने घर जाने में देरी'' जब सिक्ख सतगुरु के घर में नया जन्म प्राप्त कर ले, तो उसको चाहिए कि वह पिछले कर्म-धर्म, अपनी अक्ल और चतुराईयां सब छोड़ कर पूरे तौर पर सन्तों की शरण में पड़ जाए। क्योंकि वह उसका जन्म मरण नहीं मुका सके और मालिक की प्राप्ति नहीं करा सके। जो साधन, सन्त उसकी हिदायत के लिए बताएं, उस पर चलना ही उसका सच्चा कर्म, धर्म है, वही उसकी भक्ति है। अगर सिक्ख फिर भी पिछले कर्मों-धर्मों

में लगा रहे तो वह उन्नति की क्या आशा रख सकता है? ऐसा सिक्ख अपनी मंजिल के तय करने में खुद ही देरी करता है।''

मैनेजर साहिब जी–यह इस तरह ही है। अगर सीधे रास्ते चलते-चलते उल्टे रास्ते पर पड़ जाए तो उसको देर ही लगेगी। फिर और रास्ता तय करना पड़ेगा। कहता है कि कितनी ही मुसीबत क्यों न आये, मेरा मन इधर उधर न हो। यही बेनती करे मालिक के आगे कि ऐ मालिक! मेरा मन इधर उधर न हो। तूं तोड़ चढ़ा। हाँ जी। बोल भई!

पाठी– ''धन धन सतगुरु तेरा ही आसरा।''

समन जउ इस प्रेम की दमक्यिहु होती साट।
रावन हुते सु रंक नहि जिनि सिर दीन्हे काटि॥

मैनेजर साहिब जी–मालिक प्रेम है। उसके मिलने का एक ही रास्ता है।

साच कहूं सुन लेहो सभै। जिनु प्रेम कीओ तिनही प्रभि पाइयो।

(गुरु गोविन्द सिंह जी)

अब सवाल पैदा हुआ कि मालिक हमने देखा नहीं। प्रेम किससे करें? ऐसे तो सब लोग कहते हैं कि मालिक से प्रेम करो। पर जो चीज़ देखी नहीं उससे प्यार कैसे हो? गुरु अर्जुन साहिब फरमाते हैंः

नदरी आवै तिसु सिउ मोहु॥ किउ मिलिअै प्रभ अबिनासी तोहि॥
करि किरपा मोहि मारगि पावहु॥ साध संगति कै अंचलि लावहु॥

(801/7 मः 5)

कि जो चीज़ें इन आंखों से नज़र आ रही हैं, उनसे हमारा प्यार है। इसलिए क्या कर? इसको कोई कामिल साधू मिला ताकि वो मालिक, जो गैब के अन्दर, वो सतगुरु जो गैब के अन्दर है, उससे प्यार पड़ जाए। वो मालिक किसी साधू के अन्दर प्रगट होता है। उसका प्यार उसके अन्दर बोलता है। उसका प्यार ही सतगुरु का प्यार है। उसकी सेवा सतगुरु की सेवा है। उसकी सोहब्बत सतगुरु की सोहब्बत है। मौलवी रूम ने कहा है कि–

हर के ख्वाही हम नशीनी बा खुदा।
गो नशीन अन्दर हजूरे औलिया॥

कि जो कोई चाहता है कि मैं खुदा के साथ बैठूं या मालिक के साथ बैठूं, वो औलिया क्या? सूफीयों के पास बैठे। प्रेमीयो के पास बैठे। सन्तों फकीरों के पास बैठे।

हम नशीनी सायते यक बा औलिया।
बेहतर अज़ सद साला तापते बे रया॥

फरमाते हैं कि उनकी एक घड़ी की सोहब्बत बाहर की प्रेम से की गई सौ साल की बन्दग़ी से कहीं अच्छी है। एक घड़ी की सोहब्बत, क्यों? वहाँ सिवाय सतगुरु के और कोई बात ही नहीं।

चूं शवी दूर अज़ हजूरे औलिया।
दर हकीकत दूर गशताये अज़ खुदा॥

कि अगर तूं उनकी सोहब्बत से दूर हो गया। समझो खुदा से दूर हो गया। बोलो! खुदा की सोहब्बत से दूर हो गया। फकीरों की सोहब्बत में ही प्रेम जागता है।

सन्त सजन मन मित्र से लाइनि प्रभ सिउ रंगु जीउ॥
तिन सिउ प्रीति न तुटई कबहु न हौवै भंगु जीउ।

(760/मः 5)

उनकी प्रीत कभी नहीं टूटती। उनके ज़रिये।

सुभर भरे प्रेम रस रंगि। उपजै चाउ साध कै संगि॥

(289/3मः 5)

बुल्लेशाह ने कहा हैः—

जिचर न इश्क मजाजी लागे। सुई न सीवे बिन धागे।
इश्क मजाजी दाता है। जिस पिच्छों मस्त हो जाता है॥

प्रेम ही इसको आगे लेकर जाता है। और कोई चीज़ नहीं। उनके प्यार से ही आगे जाता है। उनका प्यार आगे मालिक से है। वो प्यार ही इसको आगे लेकर जाता है। उनका प्यार आगे मालिक से है। वो प्यार ही इसको खींचकर लेकर जाता है। जहाँ पर वो और वहाँ पर वो। हमारा प्यार ही दुनिया में खींचकर लाता है बार-बार हमें। यह समन और मूसन इन्होंने गुरु अंगद साहिब से नाम लिया था। उनसे प्रेम था। जब गुरु साहिब ने लाहौर में सत्संग किया। जैसे हम कहते हैं कि हमारे भी सत्संग हो, हमारे भी हो। इस तरह उनका भी ख़्याल हुआ कि हमारे भी सत्संग हो। अब सब की लिस्ट बन गई। अब उनकी बारी आई। यह मज़दूरी करते थे। उन्होंने सोचा कि मज़दूरी कर के हम सत्संग करवा लेगें। पैसे कुछ कमाए थे, लेकिन जब मौका आया बीमार हो गए। पैसे खर्च हो गए। जब सत्संग का मौका आया तो एक दिन पहले लांगरी आ गए। उन

दिनों सुच्चम वगैरह बहुत होती थी। कहने लगे कि भई कल आपके सत्संग है। वर्तन वगैरह साफ करने के लिए दे दो और राशन वगैरह भी हमें दे दो। अब उन बिचारों के पास कुछ नहीं था। उन्होंने सोचा अब क्या करें। प्रेम भी था। अगर नहीं सत्संग कराते तब भी बदनामी होती है। गुरु साहिब क्या कहेंगे? अब सत्संग रखवाया जो है। अगर करवाते हैं तो पैसे पास नहीं। कहने लगे कि भई! राशन पानी हम सुबह को दे देंगे। हम इन्तज़ाम नहीं कर सके। अभी आने वाला है राशन। वो चले गए। उन्होंने सलाह की और रात को बाणीये के सेंध लगा ली। सब राशन ले आए। आकर देखा तो नमक, मिर्च, मसाला नहीं था। पहले सोचा कि रहने देते हैं। फिर सोचा कि चलो ले ही आते हैं। जब गए तो लड़का अन्दर चला गया। चीज़े लेकर जब बाहर निकलने लगा तो बाणीयां जाग पड़ा। उसने टांगों से पकड़ लिया। वो सेंध में से निकलने लगा था। अब बाहर से बाप खींचे, अन्दर से बाणीयां खींचे। उन्होंने सोचा कि यह तो बहुत बड़ी बदनामी होगी कि गुरु के सिक्ख चोरी करते हैं। अब लड़का बाप को कहने लगा कि तू मेरा सिर काट ले। अब बाप बेटे का सिर कैसे काटे। आखिर मजबूर होकर उसने सिर काट लिया और घर ले आया। बाकी जो लाश थी वो बाणीये ने खींच ली। अब बाणीए ने देखा कि सिर तो नहीं है। पुलिस आएगी वो मुझे पकड़ लेगी कि सिर तूने काटा है। उसने सोचा कि हो न हो समन को देते हैं लाश, कि इसे ठिकाने लगा दे। पड़ोस में है। गरीब आदमी है। उसके पास गया कि भई! यह लाश पड़ी है इसको ठिकाने लगा दे। मैं तुझे इनाम दूंगा। अब उसको और क्या चाहिए था। उसने लाश लेकर अन्दर रख ली। सिर जोड़कर एक कोने में चादर डाल कर ढ़क दी। लांगरी आए। उनको राशन, बर्तन वगैरह दे दिए। उन्होंने लंगर तैयार कर दिया। जिस वक्त परोसने का समय आया। गुरु साहिब आए कि भई! मूसन कहाँ है? कहने लगा कि जी बीमार पड़ा है। कि उसको लाओ। कि जी वो तो सख़्त बीमार है। उठ नहीं सकता। गुरु साहिब कहने लगे कि उसके बिना तो हम खाते नहीं। वो कहने लगा कि जी मेरे कहने से तो नहीं आता। कि हम बुलाएं! उन्होंने आवाज़ दी—मूसन। वो पूर्ण ताकत थी। वो मौके पर देखकर ही ऐसा करते हैं। कि मूसन! वो झट उठकर आ गया। अब वहाँ कहते हैं। यह गुरु अंगद साहिब का शब्द है कि ऐ समन! प्रेम बड़ी ऊँची चीज़ है। प्रेम बड़ी अमूल्य चीज़ है। इसके मुकाबले में कोई चीज़ नहीं, कोई दौलत नहीं। न यह पैसे से

मिलती है, न खेतों में उगती है। कबीर साहिब ने कहा हैः

प्रेम न बाड़ी उपजै, प्रेम न हाट बिकाए।
राजा राणा जो रूचे, सीस दिए ले जाए॥

कोई होवे! यह सिर देने का काम है। कहते हैं कि अगर यह मोल बिकती तो बाज़ारों में मिलती। लोग ज़मीन गिरवी रखकर ले लेते। राजे-महाराजे ले लेते। कई बार पूज्य मस्ताना जी फरमाया करते थे कि यह ऐसी दौलत है, अगर पैसों से मिलती तो टाटा बिरले जैसे इसे छोड़ते क्या? जवाहर लाल छोड़ता? अगर ज़ोर से मिलती तो फौजी अफसर छोड़ते? गवर्नमेंट छोड़ती? नहीं। यह तो प्रेम का सौदा है, यह बहुत ऊँची चीज़ है।

अगर बाजारों में बिकती होती तो रावण कोई कंगाल था। सोने की लंका का मालिक था, खरीद लेता। वो मूर्ख नहीं था। चार वेदों का पढ़ा हुआ टीकाकार पण्डित था। उसने सिर काट-काटकर शिवजी महाराज के आगे रख दिए। तब उसका प्रेम कमाया। अगर सीस देकर मिल जाए।

सीस दिए जो गुरु मिले तो भी सस्ता जाण॥

पर यह एक मूल्यवान वस्तु है।

पाठी– समन जउ इस प्रेम की दमक्यिहु होती साट।
रावन हेतु सु रंक नहिं जिनि सिरि दीन्हे काटि॥

मैनेजर साहिब जी–सिर किसने कटवाया? प्रेम ने सिर कटवाया। उनसे प्रेम था। गुरु साहिब से प्रेम था। मालिक तो उन्होंने देखा ही नहीं। उस प्रेम ने कटवाया सिर। बाकी किस की ताकत है?

पाठी– प्रीति प्रेम तनु खींच रहिआ बीचु न राई होत।
चरण कमल मनु बेधिओ बूझनु सुरति संयोग॥

मैनेजर साहिब जी–कहते हैं कि जब मालिक प्रेम है। उसके मिलने का रास्ता प्रेम है। जब इसका, ज्यों-ज्यों फकीरों के साथ प्रेम पड़ता जाता है, आगे सतगुरु से पड़ता जाता है, अन्दर मालिक से पड़ता जाता है। पहले कहता है कि मुझे रोटी मिलती रहे, कुछ नहीं चाहिए। फिर कहता है कि गुज़ारा चलता रहे। फिर कहता है कि थोड़ा ही मिले, फिर कहता कि रोज़ की रोटी हो इतना ही बहुत है। आखिर जब उसका प्यार हर तरफ से हट जाता है, एक सतगुरु ही रह जाता है। हर तरफ से ख़्याल टूट जाए, एक सतुगुरु का ही रह जाए कि जान जाए तो जाए परवाह नहीं, पर सतगुरु का प्यार न टूटे। रोटी हो न हो। धन हो न हो। मुझे किसी चीज़

की परवाह नहीं, तो रूह के रास्ते में ज़रा भी रुकावट नहीं रहती। राई जितनी भी जगह नहीं रहती। सीधी सतगुरु के चरणों में जाती है। लेकिन इस रमज को वही जानते हैं जिन्होंने प्रेम कमाया है। प्यार किया है। तन, मन, धन अपने मुर्शिद पर कुर्बान किया है। उनकी सुरत शब्द में लगी है। उनको कदर है। बाकीयों को क्या पता है? दुनिया को क्या पता कि प्रेम क्या होता है? नहीं तो रोज़ दुनिया बातें करती है, धक्के खाता है, रोज़ वहाँ जाता है, वहाँ है क्या? अगर बीबीयों को देखते हैं तो बाते बनाते हैं कि वहाँ क्या लेने जाती हैं। प्रेम ही रस को खींचे फिर रहा है। और कुछ नहीं।

मू लालन सिउ प्रीति बनी ॥रहाउ॥
तोरी न तूटै छोरी न छूटे अैसी माधो खिंच तनी।

(827/3 मः 5)

पाठी– प्रीति प्रेम तनु खंचि रहिआ बीचु न राई होत।
चरण कमल मनु बेधिओ बूझनु सुरति संयोग॥

मैनेजर साहिब जी–किसी के साथ प्रेम पड़ जाए। किसी औरत से पड़ जाता है। किसी का मर्द से पड़ जाता है, किसी का यार दोस्त से पड़ जाता है। वो उस पर जान कुर्बान कर देता है। परवाह नहीं करता। इस तरह अगर इससे प्यार पड़ जाए तो जान कुर्बान कर देता है। परवाह नहीं करता। वो कहता है कि मुझे तो प्रेम चाहिए और कुछ नहीं चाहिए। हाँ जीः

पाठी– सागर मेर उदिमान बन नवखण्ड बसुधा भरम।
मूसन प्रेम पिरंम कै गनउ एक करि करम॥

मैनेजर साहिब जी–कहते हैं कि अगर समुद्र का सफर करना हो, पहाड़ों पर चढ़ना हो, जंगलो बीयावानों का सफर करना हो, वो कितना ही लम्बा चौड़ा हो और कठिन हो पर अगर प्रेम आ जाए तो एक करम के बराबर हो जाता है। ऐसे ही अगर मालिक का प्रेम आ जाए तो यह लम्बा चौड़ा सफर भी एक करम के बराबर लगता है। वो हज़ारों मुसीबतों के होते हुए भी परवाह नहीं करते। उसमें इतनी ताकत आ जाती है कि उसमें जान नहीं होती पर दिन पर रात सेवा में लगा रहता है। सिमरण में लगा रहता है, परवाह नहीं करता। बाहर देखो शीरी और फरहाद आशिक हुए हैं। फरहाद उसके पीछे पहाड़ चीर कर ले आया। इस तरह जिसके अन्दर प्रेम आ जाता है, वो अन्दर की मुसीबतें, पहाड़ों को चीरता हुआ चला जाता है। वैसे तो बहुत लम्बा चौड़ा सफर है पर

अगर प्रेम आ जाए तो मिनटों में जाता है। कोई भी काम है प्रेम से करो, मिनटों में हो जाता है। यही शम्मस तबरेज़ ने लिखा हैः

''कि अगर रास्ता दूर है तो इश्क के परों से उड़। जब तू इश्क के पर खोलेगा तो तुझे पौढ़ी का हाजत नहीं रहेगी। इश्क के घोड़े की रफ्तार तेज़ है काफी। वो मिनटों में पहुँचा देता है।''

देख लो! कैसे पहाड़ चीर कर ले आया। एक बार हमने देखा कि एक बागड़ी था बहुत ही बूढ़ा। उसके अंग-अंग में दर्द रहता था। चारपाई से उठ नहीं सकता था। सत्संग का मौका आ गया। दिल में ख़्याल आ गया और जोश भी आ गया। वो चल पड़ा। ज्यों लालपुरे से चला, शाम को सच्चे सौदे। यह प्रेम की ताकत है। यह प्रेम की चीज़ है। बाकी कोई चीज़ नहीं।

पाठी– सागर मेर उदिमान बन नव खण्ड बसुधा भरम।
मूसन प्रेम पिरम कै गनउ एक करम॥
मूसन मसकर प्रेम की रही जू अम्बरू छाइ।
बीधे बाधे कमल महि भंवर रहे लपटाइ॥

मैनेजर साहिब जी–यह प्रेम नहीं जो हम समझते हैं, कि बड़ा प्रेमी है। नहीं, यह प्रेम नहीं। यह तो खाने पीने की चीज़ों से पैदा हुआ है। मौलवी रूम ने कहा हैः

ई न इश्कत कि दर मरदम बवद्द।
ई फसाद अज खुरदने गंदम बवद्द॥

कि यह प्रेम नहीं जो खाने पीने की चीज़ों से पैदा हुआ है। इसका तब पता चलता है जब सिमरण करके, नौ द्वारे छोड़कर आंखों के पीछे आता है, तब पता चलता है। नीचे यह माया मनमौज़ी से बंधा हुआ है। जिस्म और जिस्मानियत से बंधा हुआ है। दुनियां की चीज़ों से बंधा हुआ है। यह माया से रहित मण्डलों में है। बही में कहते हैं कि ऐ मूसन!

मूसन मसकर प्रेम की रही जु अम्बरू छाइ॥

कि जो प्रेम की चांदनी है, प्रेम की खुशबू है, जो असली ठिकाना है, वो कहाँ है? अम्बर क्या? यह अम्बर है, यह आसमान है, यह आकाश है (पूज्य मैनेजर साहिब जी सिर की तरफ इशारा करते हुए) फरमाते हैं कि यहाँ आकर पता चलता कि यह चीज़ है क्या? कहते कि जब यहाँ आया, तो सतगुरु का सरूप आ जाता है। जिस चोले में आकर सतगुरु काम करता है उसी सरूप

में आकर वहाँ मिलता है। जब वहाँ आता है तो उसमें इतना मस्त हो जाता है। इतना पकड़ा जाता है, उस की खुशबू में ही इतना मस्त हो जाता है। जैसे कहते हैं कि कमल पर भंवरा मस्त हो जाता है। उसकी खुशबू में मस्त हो जाता है। रात को उसमें कैद हो जाता है। अब वो कैद है। दिल तो चाहता है कि उड़ जाऊं पर जो स्वाद कैद में है वो और जगह नहीं। इस तरह अगर वो सरूप आ जाए तो उसमें स्वाद है। बाहर के प्रेम में भी स्वाद है। यह नहीं कि नहीं है। बाहर के प्रेम में बहुत स्वाद है। पर उसका तो ठिकाना ही क्या? असली प्रेम का तब पता चलता है जब सिमरण करके यहाँ पहुँचे।

पाठी– मूसन मसकर प्रेम की रही जु अंबरू छाइ।
बींधे बांधे कमल महि भंवर रहे लपटाइ।
जप तप संजम हरख सुख मान महत अरू गरब।
मूसन निमखक प्रेम परि वारि वारि देउ सरब।

मैनेजर साहिब जी–फरमाते हैं कि कोई भी काम बिना प्रेम के नहीं होता है। कहते हैं कि जप-तप हैं, जितने संयम, जितनी खुशियां, जितनी मान वडिआइआं हैं, जितने अहंकार हैं, प्रेम के बिना सब थोथे हैं और बेकार हैं। जितनी इबादतें हैं, अगर उनमें प्रेम नहीं तो किसी भी काम नहीं। कहते हैं कि बिना प्रेम के किसी भी काम के नहीं। अगर मालिक का प्रेम हासिल करना है, अगर सतगुरु का प्रेम हासिल करना है तो बाकी सब चीज़ों को कुर्बान कर दे। प्रेम के लिए बादशाहों ने बादशाही छोड़ दी। बादशाह इब्राहीम ने बारह साल गन्दगी ढोई है कबीर साहिब के पास। गुरु अमरदास जी 72 साल की उम्र तक जप, तप, तीर्थ, व्रत सब कुछ करते रहे हैं। 21 बार गंगा स्नान को गए हैं। और-और कार्य किए मगर सब थोथे और बेकार निकले। प्रेम को हासिल करने के लिए बारह साल गुरु अंगद साहिब जी की शरण में पानी ढोया। यह प्रेम ही है। जप तप भी वो है जिसमें प्रेम हो।

सो जपु सो तपु सा व्रत पूजा, जितु हरि सिउ प्रीत लगाइ॥

(720/13 मः 4)

अगर मालिक का प्रेम नहीं, तो जितने भी जप तप हैं, सब थोथे और बेकार हैं। किसी भी काम के नहीं, कितना ही कर लो। कितनी ही पूजा पाठ कर लो। कितना ही तीर्थ व्रत कर लो। जब तक मालिक का प्रेम नहीं उठा, मालिक की आह नहीं उठी कि ऐ मालिक तेरे दर्शन नहीं हुए तब तक किसी

काम के नहीं। सब बेकार है। मौलवी रूम ने लिखा है:

प्रेम अगिन अपने हृदय बालिये।
फिकर भजन और बन्दगी का जालिए॥

मूल प्रेम है। अगर प्रेम आ गया तो सब कुछ है, नहीं तो कुछ भी नहीं। क्या?

किआ जपु, किआ तपु, किआ व्रत पूजा, जाके रिदै भाउ है दूजा॥

(324/12 कबीर)

अगर प्रेम नहीं तो किसी भी काम नहीं।

पंथा प्रेम न जाणई भूली फिरै गावारि।
नानक हरि बिसराइ कै पउदे नरकि अंधार॥

(1424/मः 5)

कहते हैं जितने पंथ हैं, जितने भेख हैं, प्रेम के बिना सब बेकार और खाली हैं। सब नरकों के अधिकारी हैं। कबीर साहिब फरमाते हैं:

जोगी जंगम सेवड़ा संन्यासी और दरवेश।
बिना प्रेम पहुंचे नहीं दुर्लभ सतगुरु देश॥

बिना प्रेम के कितने साधन कर लो, कितनी इबादतें कर लो, किसी भी काम की नहीं। हाँ जी:

पाठी– जप तप संजम हरख सुख मान महत अरु गरब।
मसून निमखक प्रेम परि वारि देउ सरब॥
मूसन मरमु न जानई मरत हिरत संसार।
प्रेम पिंरम न बेधियो उरझिओ मिथ बिउहार॥

मैनेजर साहिब जी–कहते हैं कि ऐ मूसन! सारी दुनिया अंधी है। असली प्रेम को किसी ने नहीं समझा! असली प्रेम को किसी ने नहीं समझा। करना तो था मालिक से प्रेम, मगर दुनिया की झूठी चीज़ों से प्यार करता है। कौमों, मज़हबों से, तीर्थ, व्रतों से, बाल बच्चों से, और-और चीज़ों से, इनका प्यार ही है। जो बार-बार इसको दुनिया में लाता है। और कौन सी चीज़ लाती है? अगर मालिक का प्रेम आ जाए, सतगुरु से प्रेम आ जाए, तो कहाँ रूकेगा? सीधा जाएगा, जहाँ प्यार है। वहीं जाएगा। सब झूठी दुनिया से प्यार करते हैं और बार-बार पैदा होते हैं और मरते हैं। जन्म-मरण का कारण ही यही है कि झूठी चीज़ों से प्यार डाल रखा है। किसी चीज़ ने साथ नहीं जाना। न मां-बाप ने, न बहन-भाई

ने, न कौम-मज़हब ने। ऐसे ही झूठी चीज़ों से प्यार डाल रखा है।

पाठी– जप तप संजम हरख सुख मान महत अरू गरब।
मूसन निमखक प्रेम परि वारि वारि देउ सरब॥
मूसन मरमु न जानई मरत हिरत संसार।
प्रेम पिंरम न बेधिओ उरझिओ मिथ बिउहार॥
घबु दबु जब जारीऐ बिछुरत प्रेम बिहाल।
मूसन तब ही मूसीऐ बिसरत पुरख दइआल॥

मैनेजर साहिब जी–कहते हैं कि अगर घर-बार छोड़ जाए या कोई नुकसान हो जाए, बाल बच्चे बीमार हो जाएं तो कितना व्याकुल होता है, कितना दुख मानता है। मालिक के प्रेम के पीछे भी कभी दुखी हुआ? कि मालिक से बिछुड़ा पड़ा है। वो तो दुख नहीं। जिनको मालिक का प्यार है वो एक मिनट भी दूर नहीं होते साध संगत से।

इकु पलु खिनु विसरहि तू सुआमी जाणउ बरस पचासा॥

(601/3 मः 3)

वो एक पल छिन भी नहीं भुलाता। बाहू ने तो यहाँ तक लिखा हैः

जो दम गाफिल सो दम काफर सानूं मुरशद एह फरमाया हूं।

''कि जिस समय मैं मालिक से गाफिल हो गया। मैं काफिर बन गया।'' एक मिनट भी नहीं भूलता। मूसा की कहानी है कि उसको अहंकार हो गया कि मैं बड़ा भक्त हूँ। खुदा को कहने लगा कि मेरे जैसा कोई भक्त है? खुदा ने कहा कि तेरे से बड़े-बड़े भक्त पड़े हैं। तू क्या चीज़ है। कि दिखाओ! कि आदमी तो क्या? जानवर पड़े हैं। कि फलाने जंगल में एक जानवर बैठा है। उसके पास जा। कहने लगा कि मुझे तो उसकी भाषा समझ नहीं आएगी। कि मैं तुझे ताकत देता हूँ। उसकी भाषा तेरी समझ में आएगी। मूसा उस के पास गया। सुना भई! क्या हाल है? वो कहने लगा कि मैंने तो तेरे से बात नहीं करनी थी। मूसा ने कहा कि तू कौन से काम में लगा है? कि मुझे फुर्सत ही नहीं बात करने की मगर मालिक का हुक्म है इसलिए तेरे से बात कर रहा हूँ। मूसा ने पूछा कि क्यों? क्योंकि मैं मालिक की भक्ति में लगा हुआ हूँ। मुझे एक मिनट भी फुर्सत नहीं। मूसा ने पूछा कि मेरे लायक कोई सेवा। सेवा यह है कि वो जो छप्पड़ है। उसको मेरे पास ला दे। कि क्यों? कि जब मैं पानी पीने जाता हूँ तो भी मुझे याद न भूले। कि वो तो दूर नहीं। कि तेरे लिए

दूर नहीं मुझे पता है कि मुझे कितना नुकसान है। हो तो यूं कि एक मिनट भी न भूले।

इकु पलु खिनु बिसरहि तू सुआमी जाणउ बरस पचासा॥

(601/3 मः 3)

एक मिनट भी, एक लम्हा भी विसर जाए तो पचास बरस का फर्क पड़ जाता है।

पाठी– घबु दबु जब जारीऐ बिछुरत प्रेम बिहाल।
मूसन तब भी मूसीऐ बिसरत पुरख दइआल॥
जा को प्रेम सुआउ है चरन चितव मन माहि।
नानक बिरही ब्रह्म के आन न कतहू जाहि॥

मैनेजर साहिब जी–कहते हैं जिन को मालिक से प्रेम है। फकीरों से प्रेम है, वो मरकर कहाँ जाएगा? मालिक के पास ही जाएगा। जिसका फकीरों से प्यार पड़ गया, वो वहीं जहाँ फकीर। और कहाँ जाएगा? अगर सतगुरु का ख़्याल है तो सतगुरु के पास ही जाएगा और कहाँ जाएगा? कहते हैं प्रेम हो, भजन सिमरण हो या न हो। जिसको प्रेम है उसको हर वक्त याद है। जब हर वक्त याद है तो उसका भजन तो बना बनाया है। बाकी क्या? बना बनाया है भजन! तभी तो पूज्य मस्ताना जी फरमाया करते थेः

तुलसी तलब ना छोड़िये नित उठ धिआइये राम।
मानस मजदूरी देत है, किआ राखे भगवान॥

(तुलसी साहिब)

कि न जप, ऐसे कहा करते थे कि बस तल्ब लगी रहे और नहीं। जिस को तल्ब लगी वो फिर जाएगा कहाँ? कहते हैं कि जैसे ख़्याल है तो जाएगा कहाँ? मालिक के पास जाएगा बाकी कहाँ। मुहम्मद साहिब के वक्त का जिक्र है। एक माई का लड़का और आदमी दोनों लड़ाई में गए। सिपाही आया। माई ने पूछा कि लड़ाई का क्या हाल है? वो कहने लगा कि माई तेरा आदमी तो मर गया। उसने पूछा कि मुहम्मद साहिब बचे? कि माई तेरा बेटा भी मर गया। कि मुहम्मद साहिब बचे? कि वो तो सही सलामत हैं। वो कहने लगी कि वो सही सलामत हैं तो मेरा सब कुछ सलामत है। जिसका ऐसा प्रेम है वो कहाँ जाएगा? बाकी सब ख़्याल टूट गए। फिर जाएगा कहाँ?

पाठी– जा को प्रेम सुआउ है चरण चितव मन माहि।
नानक विरहि ब्रह्म के आन न कतहू जाहि॥

मैनेजर साहिब जी–जो प्रेम को पैदा करता है। प्रेम को पैदा करने का तरीका सिमरण है और कोई नहीं। जो सिमरण करता है उसका ख़्याल सीधा साध संगत में जाता है। झट से साध सगत में जाने का ख़्याल करता है। जो नहीं करता उसका मन फिर खराब होता है। जो सिमरण करता है वो कहता है कि मैं जल्दी जाऊं। साध संगत में सिमरण करे तो झट प्रेम आता है। फिर कहता है कि मैं साध संगत में जाऊं और चीज़ अच्छी लगती ही नहीं।

पाठी– लाख घाटी ऊँचौ घनो चंचल चीत बिहाल।
नीच कीच निमृत घनी करनी कमल जमाल॥

मैनेजर साहिब जी–कहते हैं कि रूह के रास्ते में लाखों ऊचाईयाँ, लाखों गहराईयाँ हैं। मौलवी रूम ने कहा है:

अन्दर आं बहरो बीआबां व जबाल। सकता मे गरदद ओहामो ख्याल॥
ई बीआबां दर बीआबां हाए ऊ। हम चू अन्दर बहरे पर यकतारे मू॥

"कि अन्दर आत्मा के रास्ते में बड़े-बड़े बियावान, पहाड़ और जंगल हैं। बड़े-बड़े समुद्र बीयाबान पहाड़ हैं, जिनकी बाबत हम वहम और ख़्याल भी नहीं कर सकते। यह दुनिया उनके आगे इस तरह जैसे समुद्र में एक बाल।"

हज़ारों रुकावटें हों, हज़ारों मुसीबतें हों, हज़ारों ऊँचाईयों हों, हज़ारों जंगल हों, हज़ारों पहाड़ हों अगर प्रेम आ जाए तो झट वहाँ पहुँच जाएगा। अगर इसका मन चंचल है, कभी सतगुरु की तरफ, कभी बाल-बच्चों की तरफ, फिर सतगुरु की तरफ, कभी माया की तरफ, फिर सतगुरु की तरफ, कभी कर्मों-धर्मों की तरफ, कभी कौमों-मज़हबों की तरफ तो कभी फिर सतगुरु की तरफ। फिर कब पहुँचेगा ऐसा प्रेमी? यह सब ख़्याल तोड़े, सिर्फ एक सतगुरु का ख़्याल रखे। साध संगत से प्यार रखे, बस! फिर सीधा जाएगा। जैसे कमल का फूल गन्दी जगह पर होता है। जब सूर्य चढ़ता है, उसको देखते ही खिल जाता है। इस तरह गन्दे से गन्दे जीव हों, सन्तों से प्यार करने पर उनकी रूह साफ हो जाती है। यह प्यार ही चमकाता है इसको। बाकी कोई चीज़ नहीं। प्यार ही रूह को साफ करता है। बाकी कोई चीज़ नहीं। देख लो! समन, मूसन ने प्यार में ही चोरी कर ली। वो चोरी भी कबूल हो गई। इस तरह पापी से पापी जीव भी सीधा सतगुरु के पास सचखण्ड अनामी में पहुँचने का हकदार बन जाता है। हाँ जी:

पाठी– लख घाटी ऊंचौ घनो चंचल चीत बिहाल।
नीच कीच निमृत घनी करनी कमल जमाल॥
कमल नैन अंजन सिआम चंद्र बदन चित चार।
मूसन मगन मरम सिउ खंड खंड कर हार॥

मैनेजर साहिब जी–कहते हैं कि ऐ मूसन! अगर कमल जैसे नैन हों, काला सुरमा डाला हो, सुन्दर बदन हो, अच्छे चाल चलन पर प्रेम के बिना किसी भी काम का नहीं। प्रेम को हासिल करने के लिए बाकी सब कुछ बेकार है। सब चीज़े बेकार हैं। यहीं पर रह जाएंगी। सब नाशवान हैं। अगर साथ जाने वाली चीज़ है तो सिर्फ सतगुरु का प्यार। बाकी कोई चीज़ नहीं। कहते हैं सब चीज़ें कुर्बान कर देनी चाहिएं। यही कबीर साहिब कहते हैंः

जा घट प्रेम न संचरै, सो घटु जान मसान।
जैसे खाल लोहार की, सांस लेत बिन प्राण॥

(कबीर साहिब)

एक प्रेमी ने बड़ा अच्छा वचन लिखा हैः

धन दे जी को राखिये, जी दे राखिये लाज।
जीव लाज धन दीजिए, एह प्रीत के काज॥

अपने आप ही सब कुछ होता जाता है। भाई मँझ का किस्सा आता है। उसको सत्संग प्यारा लगा। उसने नाम मांगा तो गुरु अंगद साहिब जी ने पूछा कि पहले क्या करता था? कि जी सुलतान की पूजा करता था। मन्दिर भी बनाया हुआ है। कहने लगे कि पहले उसको ढहा कर आ। अब किसकी ताकत जो मन्दिर को ढहा दे पहले। सौ वहम पड़ जाते हैं। वह ढ़हा कर आ गया। लोगों ने बहुत समझाया कि ऐसा मत कर। पर परवाह नहीं की। नाम मिल गया। अब वापिस घर आ गया। अब कभी भैंस मर गई। कभी गाय मर गई। कभी ज़मीन गिरवी रख दी। बुरा हाल हो गया। किसी में ताकत है? है जो इतना दुख सहे! यह सब प्रेम की खातिर है। गांव से भी निकल गया। दूसरे गांव में जाकर रहे। अब वहाँ और आज़माइश शुरू हो गई। प्रेम देखते हैं फकीर और क्या? एक सिक्ख भेजा कि यह ख़त लेजा। उसको तब देना जब वो पच्ची रुपये दे। कहना कि इसकी भेंट पच्चीस रुपये है। अब पच्चीस रुपये कहाँ से लाए? उसकी औरत के पास एक आधा गहना होगा वो बेच दिया। सुनार को पूछा कि कितने का होगा। वो कहने लगा कि तोल कर बताता हूँ। तो कहने

लगा कि पहले मुझे पच्चीस रुपये दे दे। उसको पच्चीस रुपये दिए और पत्र ले लिया। उसको चूमा और बड़ा खुश हुआ। अब छः महीने के बाद एक और पत्र भेज दिया कि इसकी भेंट भी पच्चीस रुपये है। अब वो कहाँ से लाए? एक लड़की थी उसकी। गांव का चौधरी उसका रिश्ता मांगता था। यह देता नहीं था कि मैं उसके बराबर का नहीं हूँ। अब औरत को भेजता है उनके पास कि हम लड़की का रिश्ता भी देते हैं और पच्चीस रुपये उधार दे दो, वापिस कर देंगे। कौन करता है ऐसा? यह सब प्रेम करवाता है। उसकी औरत अब चौधराइन के पास गई कि ऐसे ऐसे बात है। पच्चीस रुपये ले आई। चिट्ठी ले ली पच्चीस रुपये दे कर। अब चिट्ठी में लिखा था कि फौरन दरबार में आ जाओ। वहाँ साध संगत में सेवा करो। अब एक तो उधार ले लिया। दूसरे लड़की का रिश्ता कर दिया। ख़ैर दरबार में आ गए। अब बेचारा लकड़ियां लाए लंगर में रख दिया करे और रोटी खा लिया करे। एक दिन गुरु अंगद साहिब जी ने पूछा कि भाई मँझ क्या करता है? कि जी लड़कियां लंगर में ला कर रख देता है और रोटी खा लेता है। कि फिर यह तो रोटी की मज़दूरी हुई सेवा तो नहीं हुई। उस की औरत ने सुन लिया और जाकर उसको बताया। कहने लगा कि ठीक है पहले लड़कियां लाकर लंगर में रख। फिर दूसरी बार लकड़ियां लाकर रखे तो उससे रोटी खाए। गुज़ारा करे।

अब और आजमाइश हो गई। आगे गया तो जबरदस्त अंधेरी चला दी। लाकर खूह में गिरा दिया। सिर पर लकड़ियों का भार। गिरने नहीं दी। सत्संग लगा हुआ था। गुरु साहिब फौरन उठे। सतगुरु भी इसी मौके पर संभाल करता है। सब जानते हैं। फौरन लाओ भई लज्जें जल्दी करो। दौड़े खूह के नज़दीक खड़े हो गए और किसी को कहकर भेजा कि छोड़ ऐसे गुरु को। फैंक लकड़ियां तुझे निकालें कि तेरा बुरा हाल कर दिया। वो गया और कहने लगा कि छोड़ लकड़ियां तुझे निकालें, देख तेरा क्या हाल हो गया? कहने लगा कि यह बात मत कह। जो हो गया सो हो गया। कहने लगा पहले लकड़ियां निकालो लंगर में लेकर जानी हैं। फिर मुझे निकालना। पहले लकड़ियां निकालीं फिर उसे निकाला। गुरु साहिब ने छाती से लगा लिया। यह प्रेम करवाता है।

मंझ प्यारा गुरु का गुरु मंझ प्यारा, मंझ गुरु का बोहिथा जग लंघनहारा॥

सो प्रेम करवाता है। बाकी कोई चीज़ नहीं। प्रेम का उनको पता है जिन्होंने कुर्बानियां की हैं। बाकीयों को क्या पता जो तन के यार हैं? उनको क्या पता

है कि प्रेम क्या होता है? अगर प्रेम आ जाए तो ये मुसीबतें छोटी-छोटी लगने लग जाती हैं।

पाठी– कमल नैन अंजन सिआम चन्द्रबदन चित चार।
मूसन मगन मरंम सिउ खंड खंड कर हार॥
मगनु भइओ प्रिअ प्रेम सिउ सूध न सिमरत अंग।
प्रगटि भइओ सभ लोउ महि नानक अधम पतंग॥

मैनेजर साहिब जी–जब प्रेम आता है तब तन-मन की सुध नहीं रहती। इसको यह नहीं पता चलता कि मैं अच्छा काम कर रहा हूँ या बुरा। प्रेम की मस्ती ही ऐसी है। इसको होश ही नहीं रहती कि मैं बोलता क्या हूँ? मैं करता क्या हूँ? कुछ पता नहीं रहता सिवाय मालिक के प्रेम के, सिवाय सिमरण के, सिवाय उसके ख़्याल के कोई चीज़ बाकी नहीं रहती।

एक बार स्वामी जी महाराज के बारे की बात है। एक बीबी थी, नहा रही थी। एक योगी ने आकर प्रेम का शब्द पढ़ा। वो वहाँ से ज्यों दौड़ी गलियों-मुहल्लों में से होती हुई सीधी स्वामी के पास। जब उन्होंने देखा कि बीबी तू तो नंगी है। कहने लगी कि मुझे तो प्रेम में पता ही नहीं चला। जा वापिस कपड़े पहन कर आ। तो स्वामी जी कहने लगे कि शुक्र है कि कोई प्रेमी तो मिला। प्रेम वही है, पूज्य मस्ताना जी कहा करते थे कि जिसमें सब कुछ भूल जाए। इश्क वही है, जिसमें सब कुछ भूल जाए। और कोई प्रेम नहीं। दुनिया का ख़्याल ही निकल जाए। इसका नाम असली प्रेम है। अगर ख़्याल निकल जाए तो रूह के रास्ते में कोई रुकावट नहीं, सीधी जाएगी। यह हमारे ख़्याल ही हैं जो हमें रोके बैठे हैं। हम कहते तो हैं कि भजन नहीं बनता। दुनियां के ख़्याल ही बार-बार लाते हैं। यह ख़्याल निकल जाए तो कोई रुकावट नहीं। सिमरण, ख़्याल को निकालने के लिए है। अगर ख़्याल निकल जाए तो कोई रुकावट नहीं।

पाठी– मगनु भइयो प्रिय प्रेम सिउ सूध न सिमरत अंग।
प्रगटि भइयो सभ लोअ महि नानक अधम पतंग॥

मैनेजर साहिब जी–कहते हैं जिस तरह मिसाल देते हैं पंतगे की कि लाट को देखकर वहीं जलकर मर जाता है। पीछे नहीं हटता। इस तरह प्रेमी का असली प्रेम है। वो हुक्म को पीछे नहीं करता। उसका जो काम है भजन सिमरण का वो एक मिनट भी नहीं छोड़ता। उठते-बैठते, चलते-फिरते हर वक्त उस का ध्यान

सतगुरु की तरफ रहता है। इसको प्रेम आ जाए सतगुरु का यह नहीं कि काम रूक जाते हैं, सतगुरु आप इसके काम करता है। इसकी जगह आकर खड़ा हो जाता है। काम करने लग जाता है। इसको पता नहीं लगता जब वो काम करता है। यह प्रेम करे तो सही, सतगुरु किसी चीज़ की कमी नहीं देता। इसकी जगह आकर काम करने लग जाता है। नौकरी करने वालों की ड्यूटीयाँ देते देखा है हमने। प्रेम ऐसी चीज़ है। जब हम नौकरी में थे। पूज्य मस्ताना जी हमें लेट कर देते थे। नारायण सर जी को तो अक्सर लेट कर देते थे कि हम भेज देंगे। कई बार तो सारा दिन ही नहीं आने देते थे। यह वहाँ हमारे पास होता था। एक बार पहले साबुन बेचने लग गया अड्डे पर। उधर से आ गया सब इंस्पैक्टर। वो पूछने लगा कि नारायण सर कहा है? मैंने कहा कि घर तक गया है। कि वो तो साबुन बेच रहा है बस अड्डे पर। वो एक लफ्ज़ भी नहीं बोला। कुछ भी नहीं कहा प्रेम में इतनी ताकत है। मुंह ही बन्द करवा दिया उसका। अब सारी सारी रात जागना। एक बार वो आया हमने रजिस्टर आगे रखे। चैक करने लग पड़े। यह स्टूल पर बैठा ऐसे नींद में। उसकी ताकत नहीं हुई कि उसको कुछ कहे। यह है प्रेम की ताकत। बस सतगुरु वहीं पकड़ लेता है।

पाठी– ''धन धन सतगुरु तेरा ही आसरा।''

पूरण प्रेम लगा दिल में, सब नेम का बन्धन टूट गया।
कोई पण्डित लोग बतावत है, समझावत है जग रीतन को।
जब प्रीतम से दृढ प्रीत भई, सब रीत का बन्धन टूट गया॥
पूरण प्रेम.....

मैनेजर साहिब जी–बाहर के कर्मों-धर्मों में, जब फकीरों से प्यार हो गया तो बाहर के सब ख़्याल छूट गए। अब वो अच्छे नहीं लगते। दुनिया कहती है कि मन्दिर छोड़े, मस्जिद छोड़े, गुरुद्वारे छोड़े, कौम-मज़हब छोड़े। अब उनको अच्छे नहीं लगते। प्रेम ऐसी चीज़ है। फिर कहते हैं अब नाम ले लिया। घर में बैठकर जपा, बाकी क्या,? आगे एक ऐसी स्टेज आ जाती है जिसको प्रेम पड़ गया, उसको साध संगत के बिना एक मिनट भी चैन नहीं आती। अब वहाँ भी एक मिनट नहीं छोड़ता। अब जहाँ प्रेम है वहाँ समय कौन सा रहा। दिन पर रात लगा रहे, बाकी क्या? कोई वेहला(खाली) वक्त रहा ही नहीं उसके लिए जब उसका ख़्याल हरदम उधर लगा हुआ दिन पर रात। जब वो सोता, तो सोते-सोते रूह ऊपर चली जाती है। यह सेवा इसलिए होती है कि सेवा में लगा रहे। कोई पाप तो नहीं आया। सतगुरु का ख़्याल आए या सेवा का और कोई ख़्याल

तो नहीं आएगा। इसलिए पूज्य मस्ताना जी दिन पर रात लगाए रखते थे कि दुनियां के ख़्याल निकल जाएं।

पाठी– पूरण प्रेम लगा दिल में, सब नेम का बन्धन टूट गया।
कोई पण्डित लोग बतावत है, समझावत है जग रीतन को।
जब प्रीतम से दृढ़ प्रीत भई, सब रीत का बन्धन टूट गया।
पूरण प्रेम.....
कोई तीर्थ परसन जावत है, कोई मन्दिर में नित दर्शन को।
घट भीतर देव दीदार हुआ, तब बाहर से मन रूठ गया॥
पूरण प्रेम.....

मैनेजर साहिब जी–प्रेम तो कुदरती है जिसको देवे मालिक। सिमरण साधन है जो प्रेम को पैदा करता है। प्रेम पैदा हो जाए वो सिमरण बन जाए। अगर प्रेम आ गया तो सब सिमरण बन गया। प्रेम ही सब कुछ है। अगर प्रेम है तो सब कुछ है वरना कुछ भी नहीं। प्रेम के मुकाबले में कोई चीज़ नहीं। जो सिमरण करता है उस को प्रेम उठता है और वो चाहता है कि मैं साध संगत में जाऊं। सिमरण एक मिनट भी नहीं छोडूं। उस को कैद करते हैं कि हाय! तू इतना सिमरण करता कि तू इतना क्यों जागता है। क्यों तू इतना करता है। पर उसको स्वाद नहीं आता। सिमरण में ही स्वाद है। अन्दर शांती आती है। सिमरण से सब अग्नि बुझ जाती है। दुनियां तो उसे पागल समझती है, पर जो उसे स्वाद मिलता है वो उसे ही पता है।

पाठी– कोई तीर्थ परसन जावत है, कोई मन्दिर में नित दर्शन को।
घट भीतर देव दीदार हुआ, तब बाहर से मन रूठ गया।
पूर्ण प्रेम लगा.....

मैनेजर साहिब जी–जिन को कामिल सन्त से नाम मिला है। हमने देखा है कि अगर उसका सिमरण नहीं बनता, कोशिश करता है। अगर किताब पढ़कर भी गुज़ारता है तो भी उस को नशा है। उसको पढ़ने में भी नशा है। जिन को नाम मिला है। उसको अन्दर कुदरती रस आता है। उसको पढ़ने में भी रस है। वाणी को पढ़ने में भी रस है।

पाठी– कोई जीव कहे कोई ईश कहे, कोई गावत है ब्रह्म निरंजन को
जब अन्तर बाहर एक हुआ, सब द्वैत का पर्दा फूट गया॥
पूर्ण प्रेम.....

मैनेजर साहिब जी–प्रेम ही असली सिमरण है कबीर साहिब का वचन है। यह लिखा है। अगर इसके अन्दर प्रेम आ गया तो इसका बना बनाया भजन है। सिमरण प्रेम करता है। प्रेम है तो सब कुछ है। यहाँ सिमरण है। सिमरण कहते हैं किसी चीज़ को बार-बार याद करना। यहाँ ख़्याल आ गया, वहाँ समझो उसकी मुक्ति में कोई कमी नहीं। वाणी में साफ कहा हैः

जो घट सिमरो राम को सो नर मुक्ता जाण॥
ते नर अन्तर नाहि नानक सत जाण॥

कर्मों का चक्र लिए बैठा है। इसे थोड़ी सी रुकावट है। जिस का हर वक्त सिमरण चलता है, उसमें और मालिक में कोई फर्क नहीं। नज़दीक है मालिक के, और बोल!

मैनेजर साहिब जी–धुक्कड़ खड़ा हो, बोल शब्द!

पाठी–''धन धन सतगुरु तेरा ही आसरा।''

बेनती है प्यारी साध संगत कि पूज्य मस्ताना जी दो जहान के शहनशाह हम उन के गुण नहीं गा सकते। कैसे नहीं गा सकते? जब पूज्य मस्ताना जी गुफा से बाहर आते थे, सुन्दर स्टेज पर नूरी मुखड़े से फरमाया करते थे कि भई! तू किधर से आया? किधर जाएगा और तेरा यहाँ है क्या, जिस का तू गुमान करता है? क्यों नहीं अपना कुछ? परम पूज्य मस्ताना जी दो जहान के शहनशाह फरमाया करते थे कि तेरा तो यह शरीर भी नहीं। सो यह भी एक दिन छोड़ना पड़ेगा। सो जिन जिन प्रेमीयो ने, मेरे प्यारों ने, शहनशाह के बच्चों ने, जो-जो भी वाक्य सुनाए, वचन सुनाए, यह सही है। पर हम तो हैं न कुत्ते, मानते ही नहीं। सन्तों के वचनों को मानते नहीं। अमल नहीं करते। हम शहनशाह के आगे एक वचन बोलते थे किः

''की भरोसा इस दम दा करें, दम आवे, आवे ना आवे॥''

इस शब्द को परम पूज्य शहनशाह छः-छः, सात-सात बार बुलाते थे।

धन धन सतगुरु तेरा ही आसरा धन सच्चा सौदा धाम।
जंगल में मंगल कर दिया मेरे परम सन्तों के न्यारे राम॥
तीर्थ व्रत और करतारीया काशी और कैलाश में।
ओह रमिया राम न खोजिया जो बैठा तेरे पास में॥
शाह मस्ताना के दरबार में जाइए बारम्बार।
ओह भूली वस्तु बता बता मेरा शाह मस्ताना है दातार॥
ओह नाम जहाज में बैठ जा तैनू करदे छिन विच पार॥

अगर सिमरण करे तो मिनट नहीं लगता। बाबे जहाज़ बना रखा है न गेट पर, बाबा कहता था कि ऐसा जहाज़ उड़ा कर ले जाएगा सतगुरु। तुम्हारे को छिन में ले जाएगा।

की भरोसा इस दम दा करें, दम आवे, आवे न आवे।
काहनू मेरी मेरी करदा हैं, काहनू पापा दी बेड़ी चढ़दा हैं।
तिन गज दा कफन दा टुकड़ा तेरा, हथ आवे आवे न आवे।
की भरोसा.....

मैनेजर साहिब जी–सन् 1965 की बात है। लड़ाई लगी थी। पाकिस्तान ने हमला कर दिया। अमृतसर में जहाज़ गिरा लिया। अब कोई न कफन डाले। सारी उम्र बनाया पाया। अब मिले न मिले। हम दिल्ली गए बहुत पुरानी बात है। मोहन ने सुनाई। जब मजलिस हुआ करे तो यह शब्द बुलवाएं और मोहन को कहें कि सुना भई! वो ही बात।

एक आदमी दुकानदार था। सुबह नहा धो कर तैयार हो दुकान पर जा रहा था। कश्मीरी गेट पर दो बसों के बीच, एक इधर से आ रही थी, एक उधर से, बीच में उसका साइकिल डोल गया और एक बस के नीचे आ गया। फिर सब ख़त्म। सिपाही आए लाश ले गए। अब पता न चले कि किसकी लाश है। उन्होंने पोस्टमार्टम वगैरह करके वहीं जला दिया। अब पड़ोसी दुकानदार ने सोचा कि आज आया नहीं। था शराबी। कि रात ज़्यादा पी ली होगी। न उठा होगा। उसका हाल ऐसा था। शाम को घर नहीं पहुँचा। घर वालों ने सोचा कि कहीं ऐसी सोसायटी में बैठ गया होगा और ज़्यादा पी ली होगी। अब दो दिन हो गए फिर उन्होंने तलाश की। पता न चले। फिर किसी ने बताया कि भई दो दिन पहले ऐसे अखबार में निकला था। वहाँ थाने में पता करते हैं। जब पता किया तो चाबी मिल गई दुकान की। कपड़े भी मिल गए। अब यहाँ उसको कफन कहाँ से मिले? बोलो! यह तो वक्त गुज़ार रहा है ऐसे ही दिलासे दे दे कर कि कल कर लेंगे आज कर लेगे। क्या पता किस समय मौत आ जाए? एक मिनट का भरोसा नहीं। अब जाते-जाते पैर फिसला बस खत्म। कुछ पता है? जो यह कर जाएगा वो ही पाएगा। एक मिनट का भरोसा नहीं। साथ जाने वाला तो एक सतगुरु है, बाकी कोई नहीं। दुकाने भी यहीं रह गईं, शराबें भी यहीं रह गईं, सोसायटी भी यहीं रह गईं, सब कुछ यहीं रह गया। कर्म-धर्म भी यहीं रह गए। बस एक सतगुरु संभालने वाला है। बाकी कोई संभालने वाला नहीं।

पाठी– साढ़े तिन हथ बन्देया जगह है तेरी।
काहनू महल ते माड़ियां मलदा है।
तेरा वेला भजन दा जावे मूरखा हथ आवे आवे न आवे।
की भरोसा.....
दुनिया ते आके जाण तो डरदा है आदमी।
देखो जी की नादानीयां करदा है आदमी॥
खुदगरज़ीआं दा पुतला कहंदा मैं ही मैं रहवां।
कब्जे च हर चीज जहाँन दी कर लवाँ।
अग मोह दी वाल के सड़दा है आदमी॥
देखो जी की नादानीयां करदा है आदमी।
ऐथे रहन दे सदा सुपने जगा लए।
महल मुनारे कोठियां बंगले चिणवा लए।
पर पानी ते जिवें तरदा है आदमी।
देखो जी की नादानीयां करदा है आदमी।
की भरोसा.....
तेरा जंगल डेरा लावनगे, उत्थे फेर न फेरा पावनगे।
तेरी अर्थी नूं हथ भी न लावनगे, हथ लावे, लावे न लावे।
की भरोसा.....
''भावें दुखडे होण हजारा पर मेरा सतगुरु कदी न भुले।
जो भूल गया शाह मस्ताना तैनू प्रेमीयां तेरे कौड़ी नहीं न पल्ले।''
''तैनूं घलिया सी बन्दिया लाल खरीदने नू, तू कोलयां दे ढेर ला बैठों।
हुक्म सी सच्ची कस्तूरी खरीदने दा, हिंग अजवैण दे ढेर तू ला बैठों।
उस शाह अगे की जबाव करसें, जिस शाह दी रकम खराब कर बैठों।
वारस शाह मिआं तेरी क्या वे सुदागरी,
ऐवें मुफत हट्टियाँ ते चोर वहा बैठों।''
तैनू मस्ताना शाह कैहंदा है,
बन्दे क्यों नहीं भजन विच बैहंदा है।
तेरा जनम अमोलक जावे मूरखा, हथ, आवे, आवे न आवे
की भरोसा.....

मैनेजर साहिब जी–बाकी यह है कि जैसे मां बाप कहते हैं कि हमारा बच्चा पैरों पर

खड़ा हो जाए। इस तरह फकीर भी चाहते हैं कि सब अपने पैरों पर खड़े हो जाएं। अपना भजन सिमरण करो। आपस में बाते भी भजन सिमरण की करो। पहले पैरों पर खड़े होना सीखें। अगर सब पैरों पर खड़े होते तो मौज़ के चोला छोड़ने के बाद इधर-उधर न होते। सब को पैरों पर खड़े होना पड़ता है। बाकी किसी चीज़ में शांती नहीं। सिमरण करोगे तो शांती है। सब बीमारियों का इलाज सिमरण है। सिमरण के साथ ही सब कुछ है।

सरब रोग का अउखदु नामु।

(आदि ग्रन्थ)

धन धन सतगुरु तेरा ही आसरा

सत्संग

'साच धणी जग आए बिनासा'

सत्संग के वचन

पाठी– साच धणी जग आए बिनासा॥ छूटस प्राणी गुरमुखि दासा॥
सभ जप सभ तप सभ चतुराई॥ उझड़ भरमै राहि न पाई॥
बिनु बूझे को थाए न पाइ॥ नाम बिहूणे माथे छाई॥
साच धणी जग आइ बिनासा॥ छूटस से प्राणी गुरमुखि दासा॥

मैनेजर साहिब जी–ये गुरुनानक साहिब का शब्द है। कहते वो मालिक, सतगुरु सब के अन्दर है। कैसे है? जैसे ये करंट आ रही है, बल्बों को टयूबों को सबको ताकत दे रही है। इसी तरह उस मालिक का रूप क्या है, शब्द, नाम, वाणी। आगे भी अर्ज़ करते हैं। अभी प्राइम मिनिस्टर बोले, आवाज़ सब जगह आ जाएगी। सब अफसर काम करने लग जायेंगे। उसका रूप क्या हुआ- आवाज़, हुक्म, शब्द, जो कहो। इसी तरह वो मालिक शब्द रूप में सब जगह व्यापक है।

तिसु रूपु न रेख अनाहदु वाजै सबदु निरंजनि कीआ॥

(351/6 मः 1)

सब के अन्दर है। सब को ज़िन्दगी और ताकत दे रहा है। अब अगर उसके अन्दर होते हुए हम चौरासी में धक्के खाते हैं, नरकों में जाते हैं, वो हमें काम नहीं देता। काम कब देता है? है इसके अन्दर मगर काम क्यों नहीं देता? है इसके अन्दर। जिस तरह विद्या इसके अन्दर है वो काम नहीं देती। जब मास्टर के ज़रिए हम सीख लेते हैं। जितनी-जितनी सीखते हैं उतना काम देती है। इसी तरह जब तक इसे गुरुमुख नहीं मिलता, जिसने उस ताकत को अन्दर प्रकट किया है, नाम को अन्दर प्रगट किया है, उससे हम सीखते नहीं, तब तक अन्दर काम नहीं देता। पहले तो इसे गुरुमुख नही मिलता। अगर मिल जाए तो उसका दास नहीं बनता। बल्कि फिर तो उसके दासों का दास बनना पड़ता है।

दासनि दासु होवै ता हरि पाए विचहु आपु गवाई॥

(600/13 मः 3)

सन्ता की होइ दासरी, एहु अचारा सिखुरी॥
सगल गुणा गुण ऊतमो, भरता दूरि न पिखुरी॥

(गुरु नानक साहिब)

उनका दास बनना, ये दास बनता नहीं। कहता मैं गुणी, मैं ज्ञानी, मैं आलम, मैं फाज़ल। ये अपनी मनमत छोड़ता नहीं। अगर दास बन जाए, पहले तो फकीर नहीं मिलता, अगर मिल जाए तो यह दास नहीं बनता। यह दास बन जाए तो सब कुछ है। फिर रास्ता नजदीक है, दूर नहीं। नज़दीक से नज़दीक है। दास बनना ही मुश्किल है। हस्ती को मिटाना ही मुश्किल है। हस्ती को मिटाना ही मुश्किल है। ये मनमत छोड़ता नहीं।

मन की मति तिआगहु हरि जन एहा बात कठैनी॥

(800/8 मः 3)

मरदाना सारी उम्र साथ रहा। देख लो! मनमत नहीं छोड़ी ना? इसी कारण दुनियां खटती नहीं। यह दास बने तब है। उसके हुक्म के मुताबिक भजन सुमिरण करे तब है। आजकल तो तालीम ही नहीं रही वो। पहले जमाने में मास्टरों की इज़्ज़त करते, और-और काम करते। सच्चे पातशाह फरमाया करते थे हम मास्टरों की इज़्ज़त करते थे। वो एक आला खानदान के मालिक थे। बादशाही ख़ानदान था। उन दिनों में, सबसे बड़ा ओहदा होता था फौज का, सूबेदार मेजर। उनके लड़के ने मास्टरों की सेवा करनी, पानी लाना उनका, और-और काम करने। मास्टरों से ऐसे-ऐसे सवाल पूछने। उनको भी नहीं पता चलता। उनको भी किताबें देखनी पड़तीं। और लड़के कहते आप उन पर इतनी तबज्जों देते हैं हमारे पर नहीं देते? हम भी फीस उतनी ही देते हैं? कहते जबरदस्ती तबज्जो ले लेते हैं। उतने ही कारीगर बनते थे। जितने उनके पास रहते थे। उतनी ही तालीम हासिल करते थे। इसी तरह सन्तों के पास जा जाकर उनकी सेवा करके, उनके हुक्म के मुताबिक भजन सिमरण करे, जितनी यह सोहब्बत करे, उतना ही रंग चढ़ता है। हाँ जी, कहते हैं कि बगैर सन्तों के रास्ता नहीं मिलता, बगैर गुरुमुखों के रास्ता नहीं मिलता। फिर उनका दास नहीं बनता फिर उनका दास बने। हाँ जी, सभ जप.....

पाठी– सभ जप सभ तप सभ चतुराई॥ उझड़ि भरमै राहि न पाई॥
बिनु बुझे को थाए न पाई॥ नाम बिहूणे माथे छाई॥
साच धणी जग आए बिनासा॥ छूटस प्राणी गुरमुखि दासा॥

मैनेजर साहिब जी–कहते जितने जप हैं, जितने तप हैं, जितनी चतुराईऐं हैं, जितनी अक्ले हैं, यह सब उल्टे रास्ते हैं। किस तरह हैं? शास्त्रों में अनेकों जप लिखे हैं- काली का, भैरो का, लक्ष्मी का, हनुमान का, देवी का, देवताओं का। उन जपों के करने से इसके अन्दर वो शक्तियें पैदा हो सकती हैं। इसके साथ रहने लग जायेगीं। इसके काम करेंगी। शरीर की रक्षा करेंगी और और काम करेंगी। लेकिन जन्म-मरण के बन्धन नहीं छुड़ा सकतीं। ना उनके छूटे हैं ना इनके छुड़ा सकती हैं। ये ही कृष्ण भगवान ने ऊधो को कहा है–हे ऊधो! ये जो कीड़ा जा रहा है, ये कई दफा स्वर्गों का राजा इन्द्र बना, कई दफा सृष्टि का कर्त्ता ब्रह्मा बना, आज ये कीड़ा है। फिर जन्म-मरण के बन्धन तो नहीं छूटे। सोच लो! जन्म मरण के बन्धन तो नहीं छूटे। ये ठीक है इनके शरीर की रक्षा करने लग जाएंगी। और-और काम करेंगी। मगर जन्म-मरण के बन्धन नहीं छूटते। जन्म-मरण के बन्धन छुड़ाने वाला एक ही अन्दर वाला राम है। जिसे हम जिन्दाराम कहते हैं, शब्द गुरु कहते हैं, सच्चा राम कहते हैं। उसके बगैर जितने साधन हैं सब उल्टे रास्ते हैं। कोई मालिक की दरगाह में कबूल नहीं। इसे मालिक की दरगाह में जगह नहीं मिलती। ''नाम बिहूणे माथे छाई।' बगैर मालिक के प्रगट किए इसके माथे धूड़ है। कोई नहीं पूछता मालिक की दरगाह में। आगे भी अर्ज़ करते हैं कि सरकार ने आपको बिजली दे दी। आप पंखें चला लो सुख ले लो, ट्यूबें जला लो सुख ले लो, बल्ब जला लो सुख ले लो, और कारखाने चला लो सुख ले लो। हाथ लगाओ तो साड़ेगी भी! काम तो उसी ने किया। इस तरह करंट तो सभी के अन्दर है। चाहे उसे काम, क्रोध पर लगा कर साड़ लो। हम काम, क्रोध पर ला रहे हैं। अगर शील, क्षमा, सन्तोष, धीरज, विवेक, दीनता, और गरीबी पर लगायें तो अन्दर शांती आ जाये। फिर जैसे उन्होंने कारखाने चलाये, किसी ने जूतियों का चलाया, किसी ने प्लास्टिक का चलाया, किसी ने कपड़े का चलाया, किसी ने कोई चलाया, किसी ने कोई चलाया। वगैर करंट के तो नहीं चलता। इसी तरह जो भक्ति करो। वो करंट तो सब के अन्दर है। चाहे देवी-देवताओं की पूजा करो, भूत बनो, प्रेत बनो, जिसकी पूजा करो उसका रूप बन जाओ, जो कारखाना चला लो। अगर हमें कोई ऐसा मैकेनिक

मिल जाए, जो करंट को पकड़ना सिखाए। हम पकड़ें, जिधर से आ रही है उधर चल पड़ें, तो कहा पहुँच जायेंगे? भाखड़ा। फिर जो मर्ज़ी करो। इसी तरह वो करंट सब के अन्दर है। हमें ऐसा फकीर मिले जो नाम को पकड़ना सिखाए। यह अन्दर जाये, पकड़े, फिर वो सीधी सड़क है, जरनैली सड़क है मालिक की दरगाह में पहुँच जाती है। नाम क्या चीज़ है? लफ्ज़ नहीं। हम लफ्ज़ों को नाम बनाये बैठे हैं। ये तो एक साधन है आंखों तक आने का। नाम कोई और चीज़ है जो लिखने पढ़ने से परे है। ना हिन्दी है, ना पंजाबी है, ना फारसी है, ना उर्दू है, ना अंग्रेज़ी है, किसी जुबान में नहीं वो और चीज़ है।

नाम डोरि है गुप्त कोऊ नहीं जानता॥
निंह अछर निंह रूप दृष्ट नहीं आवता॥

(पलटू साहिब)

लिखने पढ़ने में नहीं। अगर लिखने पढ़ने में हो तो हिन्दी, पंजाबी के हों तो हमारे लिए। बाकी कौमें कहाँ जायें? अगर अंग्रेज़ी के हों तो उनके लिए, बाकी किधर जाएं? नहीं, वो सबके अन्दर एक सा है। यह लफ्ज़ तो बदलते रहते हैं। बीस मील तक जाओ बोली बदल जाती है, लेकिन उसमें कोई तबदीली नहीं, वो हमेशा कायम है।

हिरदै नामु सदा धुनि निहचल घटै ना कीमति पाई।
बाहू इह कलमां मैनूँ यार पढ़ाया जरा न हुंदा लमां हू॥

उसमें कभी तबदीली नहीं आती। ये ही ईसा ने कहा है–

"The Grass withereth, the flower fadeth; but the word of our God shall stand for ever."

(Isaith, 40-8)

घास सूख जायेगी, फूल मुरझा जायेंगे, मगर खुदा का कलाम अटल जारी रहेगा। उसमें कभी तबदीली नहीं आती। वो एक शक्ति है जो खण्डों, ब्रह्मण्डों को रचती है। जिसके मुतल्लक हम रोज़ पढ़ते हैं–

नाम के धारे सगले जन्त। नाम के धारे खण्ड ब्रह्मण्ड॥

ये लफ्ज़ तो खण्ड ब्रह्मण्ड नहीं बना सकते। वो नाम एक शक्ति है। गुरु नानक साहिब मिठुन कोट गये। वहाँ मीयां मीठा फकीर मिला। वो कर्मी-धर्मी था। गुरुनानक साहिब ने फरमाया, मीयां मिट्ठे! सच्चे नाम के प्रगट किये बिना जीव का कल्याण नहीं, मुक्ति नहीं, छुटकारा नहीं। जीव बन्धनों में रहता है।

वो कहता जी सच्चा नाम क्या चीज़ है? कहते, सच्चा नाम एक अमोलक वस्तु है जो कहने सुनने से परे है। फिर भी कुछ तो बताओ? बताने की चीज़ नहीं, अनुभव की चीज़ है। फिर क्या पता लगे? एक तरफ ले गये, कहते सुन भई! तुझे कुछ सुनाई देता है? नहीं जी! गुरु नानक साहिब ने तवज्जों दी। कर्मों-धर्मों से हृदय साफ था। कहता जी मुझे ऐसा लगता है मेरे अन्दर रोम-रोम में नाम की लहरें चल रही हैं।

रोमि रोमि रविआ हरि नामु॥

वो रोम-रोम में है, ज़र्रे-ज़र्रे में है। सबको ज़िन्दगी और ताकत दे रहा है। उसका नाम नाम है। उसके मुतल्लक हम रोज़ पढ़ते हैं–

सतिगुरु की सेवा सफलु है जे को करे चितु लाइ॥

कौन सी सेवा? बाहर की अपनी हद में ठीक है। असली सेवा कौन सी है?

बंधन तोड़ै मुक्ति होइ सचै रहै समाइ॥

ये तन, मन, धन के बन्धन तोड़े, लोक लाज छोड़े, ख़्याल को आंखों के पीछे इकट्ठा करे, जड़ चेतन की गांठ खोले, फिर उस नाम से ताल्लुक पड़ता है। वो सुक्ष्म मण्डलों में जाकर मिलता है।

इसु जग महि नामु अलभु है गुरमुखि वसै मनि आइ॥

किसी विरले गुरुमुख ने अन्दर प्रकट किया है। उनके जरीये प्रगट कर सकते हैं। तभी उन्होंने कहा है–

जिस बखर कउ लैनि तू आइआ॥ राम नामु संतन धरि पाइआ॥

(283/3 मः 5)

यही पलटू साहिब कहते हैं–

सन्त सनेही नाम है, नाम सनेही सन्त।
नाम सनेही सन्त, नाम से वहीं मिलावें।
वे हैं वाकिफकार मिलन की राह बतावें।
जप तप तीर्थ व्रत करे बहुतेरा कोई।
बिना वसीले सन्त नाम से भेंट न होई।
पलटू एह है प्राण पर आदि सेती और अन्त।
सन्त सनेही नाम है नाम सनेही सन्त॥

जब भी मिलना है सन्तों के जरीये। कहते जितने जप तप हैं, कौन से

होते हैं? शारीरिक या मानसिक दुख सहने की क्रिया। मन को काबू करने का साधन। लोग कीलो पर लेटे। नीचे लटके। वायु खड़ी करके तपस्या की। देख लो! पानी में बैठे, बहुत ज़ोर लगाये पर ज़ोर से नहीं मिलता।

हठ निग्रहु करि काइआ छीजै वरतु तजनु करि मनु नहीं भीजै।

इनसे भी मालिक नहीं मिलता। कौन सी सेवा प्रवाण है?

सो तपा जि इहु तपु घाले॥

सतिगुरु नो मिलै सबदु समाले॥''

अन्दर शब्द गुरु को प्रगट करना ये तप है। वो साधन है।

सो तपस्वी जो साध संग॥

जिसको पूरा साधू संग मिले। वो तरीका बताये कि तू जड़ चेतन की गांठ खोल। इस तरह ख़्याल को आंखों के पीछे इकट्ठा कर। ये तपस्या कबूल है और कोई कबूल नहीं। देख लो! कितने-कितने बड़े जप-तप किये। किसी का कुछ बना? 88-88 हज़ार साल जप किए। कुछ बना? पवणाहारी बने, मन काबू आया? जितनी देर कैद है उतनी देर कैद है। बदमाश है, उसे जेल में बन्द कर दो। कैद है बेचारा, चुपचाप बैठा है। जब बाहर निकाला वैसा का वैसा। मन का ये हाल है। इन चीज़ों से काबू नहीं आता, और चतुराईओं से काबू नहीं आता। अक्ल ज्ञानों से काबू नहीं आता। ये सब उल्टे रास्ते हैं।

''सहस सिआणपा लख होहि त इक ना चलै नालि॥''

दुनिया ज्ञान छाँट-छाँट कर मर गई, किसी को कुछ मिला? सोचो, यहाँ ज्ञानों का कोई काम नहीं। बल्कि ज्ञान तो और दूर करता है। ये तो और भी दूर करता है मालिक से, क्योंकि अहंकार हो जाता है। मैं ये कुछ जानता हूँ, वो कुछ जानता हूँ। अहंकार ही बड़ी रुकावट है। कहते सभी उल्टे रास्ते हैं। वगैर नाम के प्रगट किए कोई नहीं पूछता मालिक की दरगाह में। हाँ जीः

पाठी– सभ जप सभ तप सभ चतुराई॥ उझड़ि भरमै राहि न पाई॥
बिनु बुझे को थाए न पाई॥ नाम बिहूणे माथे छाई॥

मैनेजर साहिब जी–इन जपों-तपों से रिद्धियां-सिद्धियां आ जाती हैं मगर मुक्ति नहीं, छुटकारा नहीं, जन्म-मरण के बन्धन नहीं छूटते। महात्मा चरण दास ने लिखा हैः–

विद्या माहि वाद है तप के माहि रिद्धि।
राम नाम महि मुक्ति है योग के माहि सिद्धि॥

राम नाम महि ये सभी रिद्धी सिद्धी और मोक्ष।
ऐसा इष्ट संभारिये चरनदास कह सोच॥

जितने महात्मा मालिक की दरगाह में गये हैं सबकी एक ही तालीम है। क्या? कि अगर तूं जन्म मरण के बन्धन छुड़ाने हैं तो अन्दर शब्द गुरु कहो, सच्चा नाम कहो, सच्ची बाणी कहो, उसे प्रकट कर। फिर जन्म-मरण के बन्धन छूटते हैं। ऐसे नहीं। हाँ जीः

पाठी– साच धणी जग आए बिनासा॥ छूटस प्राणी गुरमुखि दासा॥
जग मोह बाधा बहुती आसा॥ गुरमती इक भए उदासा॥

मैनेजर साहिब जी–कहते जितने जीव हैं सब दुनिया के मोह में फंसे पड़े हैं। किसी को बच्चों का मोह है। किसी को औरत का मोह है। किसी को रिश्तेदारों का मोह है। किसी को कौमों-मज़हबों का मोह है। किसी को देशों का है। सब इसी तरह फंसे पड़े हैं। हमने जहाँ इनके साथ रहकर गुज़ारा करना था। लेने-देने खत्म करने थे लेकिन उल्टा फंसते ही जाते हैं, आगे से आगे। गुरु अर्जुन साहिब कहते हैंः

घटि वसहि चिरणार बिन्द रसना जपै गोपाल।
नानक सो प्रभु सिमिरये तिसु देही कउ पालि॥

मालिक के भजन सुमिरन के लिए इसे पालना था। रोटी का गुज़ारा करना था। रिश्तेदारों के साथ लेने देने खत्म करने थे, लेकिन आगे से आगे फंसता ही जाता है। कैसे? अगर रोटी का बन्दोबस्त करता है, पहले कहता रोटी हो। फिर कहता दाल हो। फिर कहता सब्जी हो। फिर कहता चार-चार सब्जीयाँ हों। फिर मकानों का। इसी तरह पहले कहता ठिकाना हो, कच्चा मकान हो, फिर कहता पक्का होवे, फिर कहता चिप्स हो। इसी तरह कपड़ों का है। इसी तरह फंस गया। इसी तरह आगे से आगे फंस गया। सच्चे पातशाह बताते थे। एक था सुथरा उसने मकान बनाया। किसी को पूछा कि मकान की छत किस तरह मज़बूत होती है। उन दिनों में कच्ची छतें होती थीं। कहते भई अगर थम्मीयां दे तो मज़बूत होती है। वो ज्यूं थम्मी देने लगा थम्मी पे थम्मी, आप भी बाहर समान भी बाहर। किसी ने पूछा कि तूं बाहर क्यों बैठा है? मकान जो मज़बूत करना था। कहता अगर जगह होती तो एक थम्मी और न दे देता। इसी तरह हमारा हाल है, सोचो! जगह ही नहीं छोड़ी। दुनियां के इतने ख़्याल डाल रखे हैं खाने पीने, पहनने के, मालिक के लिए जगह ही नहीं छोड़ी। देखो सारी दुनियां

का ये ही हाल है। आगे से आगे बढ़ता ही गया। मालिक के लिए जगह ही नहीं छोड़ी। जिसको पूछो फुरसत नहीं, जिसको पूछो फुरसत ही नहीं, सत्संग में आने की फुरसत नहीं। देख लो! भजन सिमरण की फुरसत नहीं। एक बार एक प्रेमी जाने लगा। मस्ताना जी कहते, भजन सिमरण करया कर। कहता क्या करूं जी गृहस्थी हूँ। मस्ताना जी कहते दिखा तुझे मालिक ने कहाँ पट्टा लिखकर दिया कि गृहस्थ में जाकर भजन नहीं करना। सोचो! सारी दुनियां का ये ही हाल है। जिसे पूछो फुरसत नहीं। जिसे पूछो फुरसत नहीं, आगे से आगे बढ़ता ही गया। मालिक को तो बिसार ही दिया। हाँ, हाँ जीः

पाठी– जग मोहि बाधा बहुती आसा॥ गुरमती इक भए उदासा॥

मैनेजर साहिब जी–हमे कोई गुरमुख मिले वो कहता तेरे साथ कौन सी चीज़ जाएगी? मां, बाप जाएगें, बहन, भाई जाएगें, बेटे-बेटीयाँ जाएंगी, कौम मज़हब जाएंगे? इस शरीर ने भी नहीं जाना जिसके पीछे सारी उम्र लगा रहा। कुछ अपने लिए भी कर। उनकी सोहब्बत करते-करते फिर इसे रंग चढ़ता है। फिर होश आती है। फिर कहता मैं भजन करूं। फिर दुनियां में रहता हुआ दुनियां से उदास हो जाता है। दुनियां में रहता हुआ बैरागी बन जाता है। दुनियां का प्यार घटता जाता है। मालिक का प्यार बढ़ता जाता है। यह सोहब्बत पर है। जैसी सोहब्बत करेगा वैसा ही रंग चढ़ेगा। अगर चोरों की सोहब्बत करेंगे तो चोर बनेंगे। ठग्गों की करेंगे तो ठग बनेंगे, बदमाशों की बदमाश बनेंगे, शराबी की तो शराबी-कबाबी बनेंगे। इसी तरह फकीरों की सोहब्बत में आकर जिन्होंने नाम का रस लिया है, दुनियां का त्याग किया है, उनकी सोहब्बत से त्याग आयेगा। ये कौमों मज़हबों के ठेकेदारों के पास जाएंगे तो वो रंग चढ़ेगा। जो सोहब्बत करो। हाँ जीः

पाठी– जग मोहि बाधा बहुती आसा॥ गुरमती इक भए उदासा॥
अंतरि नामु कमलु परगासा॥ तिन्ह कउ नाही जम की त्रासा॥
साच धणी जग आए बिनासा॥ छूटस प्राणी गुरमुख दासा॥

मैनेजर साहिब जी–अब गलती की है तो हमारी रुचि बाहर मुखी है। हम बाहर मुखी हैं। बाहर ही बाहर ख़्याल है। गुरु अर्जुन साहिब फरमाते हैंः

नदरी आवै तिसु सिउ मोहु॥ किउ मिलिये प्रभ अबिनासी तोहि॥
करि किरपा मोहि मारगि पावहु॥ साध संगति के अंचलि लावहु॥

(801/7 मः 5)

क्या? कि जो कुछ हमारी इन आँखों से नज़र आ रहा है, हमारा इन चीज़ों से प्यार है। ऐ मालिक! तेरे साथ कैसे प्यार करूं? मुझे कोई ऐसा साधू मिला जिसके ज़रीये तेरा प्यार उठे। मैं अन्तर मुखी हो जाऊं, मैं नाम को प्रगट करूं। वो नाम इसके अन्दर है।

अंतर नाम कमल प्रगासा॥

वो नाम इसके अन्दर है। ये फिरता बाहर ही बाहर। नाम इसके अन्दर है, ये फिरता बाहर ही बाहर। फिर कैसे मिले, कैसे शांती आए?

काइआ नगरी महि मंगहि चड़हि जोगी ता नामु पलै पाइ॥

अन्दर जाये तो मिले। कुदरती तौर पर एक धार आ रही है। दिमाग के ज़रीये आँखों में आई, देखने लगा। कानों में आई सुनने लगा। जुबान में आई बोलने लगा। हाथ-पैरों में आई चलने फिरने लगा। कई बार हमने देखा होगा, कोई ख़्याल में बैठे हैं तो टांग सो जाती है। वो काम नहीं देती। फिर दबाओ या ख़्याल करो तो काम देने लग जाती है। वहाँ से वो चीज़ निकल गई थी। ये पहले ही जहाँ बंधा पड़ा है इसने और बांध लिया। आगे से आगे, मां-बाप से, बहिन-भाई से, बेटे-बेटीओं से, कौमों-मज़हबों से, अनेकों बन्धनों में डाल रखा है। लोक-लाज वगैरा, फिर अन्दर कैसे जाये? सोचो, सारी दुनियां बाहर मुखी है। अन्दर तो जाती ही नहीं। कहते हैं नाम इसके अन्दर है। ये फिरता बाहर। अगर ये नाम को प्रगट करे, तो थोड़ी भक्ति है साधन करे 'तिन्ह कउ नाहि जग की त्रासा' यमदूत नजदीक ही ना आयें। ये फकीर की निशानी है और कोई निशानी है? जो फकीर अन्तरमुखी जाते हैं वो हमें अन्तरमुखी जाना सिखाते हैं। जो उनके बताये तरीके से, अन्दर भी दो किस्म के फकीर हैंः- एक छोटे दर्जे के, एक बड़े दर्ज के। छोटे दर्जे के आंखों तक। इसके नीचे देवी देवते हैं। लेकिन नाम नहीं, नाम आंखों से ऊपर शुरू होता है। यहाँ आए, जो इस भक्ति को करे, उसके नजदीक यमदूत नहीं आते। उनके नजदीक नहीं आते और फकीर की कोई निशानी नहीं। जब उनके प्रेमीयों की मौत होती है वो आराम से जायेंगे, कहकर जायेंगे। अगर नहीं कहेंगे तो उनके चेहरे पर रौनक होगी। चेहरे पर रौनक होगी पहले से ज़्यादा और जिस्म नहीं अकड़ता। ये निशानी है। उनके नजदीक यमदूत नहीं आते।

जो कोई सन्त सरण के दागी॥ तिन तै काल दूर होई भागी॥
जम की जाल निकटि नहीं आवे॥ मारिग छाड़ि अलग हो जावे॥

ये ही गुरु नानक साहिब फरमाते हैं:

जिना सतिगुर सिउ चितु लाइआ सु खाली कोई नाहि॥
तिन जम की तलब न होवई ना ओइ दुख सहाहि॥

(516/4 मः 3)

पाठी– फिर फरमाते हैं कि जहाँ पापी मनुष्यों को काल दूध की तरह मथनी से मथता है, वहाँ सन्तों के चिताए हुए जीवों का, जो नाम प्रगट कर लेते हैं या प्रगट करने का यत्न करते हैं, धर्मराज स्वागत करता है और नमस्कार करता है।

मैनेजर साहिब जी–बोलो! जो यमदूतों का मालिक है वो भी नमस्कार करता है। वो भी स्वागत करता है। हम तो सुन-सुनकर हैरान हैं। मस्ताना जी का वचन था लकड़वाली में माफी वाले आये कुछ। तो मस्ताना जी ने फरमाया भई चक्कर लगाओ, इनके लिए नारे लगाओ? नारे लगवाये कहने लगे इनकी गलती भी माफ। फिर ये भी तरे, इनके रिश्तेदार भी तरे, कुत्ते भी तेरे, इनके पशु भी तरे। कैसे भई? वो अब साबित हो रहा है। पशुओं पर भी साबित होता है, रिश्तेदारों पर भी साबित होता है, पड़ोसियों पर भी साबित होता है। जिसने कभी दर्शन ही नहीं किये, डेरे ही नहीं आया, कभी साध संगत में नहीं आया, उनकी भी संभाल होती है। ये है नाम को अन्दर प्रगट करने की सिफत। उनके रिश्तेदार क्या, किसी ने सत्संग सुना, किसी ने दो, किसी ने सुना ही नहीं, सिर्फ विश्वास ही आ गया, इतने में ही बस। इस नाम की भक्ति की ये सिफत है। हाँ जी, हाँ जी, ये थोड़ा भी करता है उसकी भी संभाल है। हाँ जी, अपनी तरफ से पूरी कोशिश करे फिर मालिक की मौज़ है। अगर ठग्गी करे फिर नहीं। हाँ जी:

पाठी– जग त्रिअ जितु कामण हितकारी॥ पुत्र कलत्र लग नामु विसारी॥
बिरथा जन्म गवाइआ बाजी हारी॥ सतिगुरु सेवे करणी सारी॥
साच धणी जग आइ विनासा॥ छूटस प्राणी गुरमुख दासा॥

मैनेजर साहिब जी–फिर बोलः–

पाठी– जग त्रिअ जितु कामण हितकारी॥ पुत्र कलत्र लग नामु विसारी॥

मैनेजर साहिब जी–कहते कोई औरत के मोह में फंसा पड़ा है। कोई बच्चों के मोह में फंसा पड़ा है। कोई कहीं फंसा पड़ा है कोई कहीं। मालिक का नाम ही बिसार रखा है। याद ही नहीं किसी को। हम ऊपर-ऊपर से प्रेमी हैं अन्दर से नहीं। गुरु गोविन्द साहिब के समय का ज़िक्र है। एक बड़ा प्रेमी कहलाता

था तो उन्होंने फरमाया कल भई फलाना कपड़ा लाना? कहता अच्छा। गया कपड़ा ले आया। जब घर आया तो पूछा क्या है? जी कपड़ा है। क्या करना है। गुरु साहिब ने मंगाया है। कहते कपड़ा बहुत सुन्दर है मैंने तो बच्चों के लिए रखना है। कहते हम और ले आएँगे, और है नहीं? कहते और दे देना ये नहीं। कहते उन्होंने मंगाया है? कहते कह देना मिला नहीं। बेचारा लाचार हो गया। पूछा कपड़ा ले आया? कहता मिला नहीं। औरत ने कपड़ा निकाल कर आगे रख दिया। मस्ताना जी फरमाया करते थे। कहते तुम्हारा सिख है या मेरा सिख है? हमारा ये हाल है। ऊपर-ऊपर से है अन्दर से नहीं। ये सच्चा दिल हो सतगुरु भी इसकी संभाल करे। कदम-कदम पर संभाल करे। जो भजन करते हैं सच्चे प्रेम से, सच्चा दिल है, कदम-कदम पर उनकी संभाल होती है। हाँ जी, कहते सारी दुनियां ऐसे फंसी पड़ी है। गुरुमुखों से प्यार नहीं करती। जब तक गुरुमुखों से प्यार नहीं करती अन्दर सतगुरु को प्रगट नहीं कर सकती।

गुरमुखि सिउ करि दोसती सतिगुर सिउ लाइ चित॥
जमण मरण का मूलु कटीअै तां सुख होवी मित॥

(1421/5 मः 3)

जब सभी ताल्लुक तोड़ता है तब अन्दर सतगुरु को प्रगट कर सकता है। तभी नाम का रस ले सकता है, ऐसे नहीं।

लोग कुटुम्ब सभन ते तौरे तउ आपन बेढ़ी आवे हो॥

ये सारे ताल्लुक तोड़े तब अन्दर आता है। हाँ, जिसने ज़िन्दगी में हासिल करना है वो करे। नहीं तो कई-कई जन्म लगेगें। ये अब मेहनत कर ले तो जल्दी पहुँचेगा। नहीं तो आगे बैठाता है सतगुरू। हाँ जीः

पाठी– जग त्रिअ जितु कामण हितकारी॥ पुत्र कलत्र लग नामु विसारी॥
बिरथा जन्म गवाइआ बाजी हारी॥ सतिगुरु सेवे करणी सारी॥

मैनेजर साहिब जी–ये जन्म कीमती है। ऊँचे से ऊँचा है। इसीलिए इसे कहते हैं नर नारायणी देह। सारी योनियों का सरदार है।

इसमें आकर इसने जन्म-मरण के बन्धन छुड़ाने थे। पता नहीं हम कब से मालिक से बिछुड़े हैं। युगों के युग बीत गए। कितने सतयुग बीत गए। कितने त्रेते बीत गए। कितने द्वापर बीत गए। कितने कलयुग बीत गए। इसी तरह चौरासी में धक्के खाते हैं। क्यों? क्यों खाते हैं? और-और साधन तो किए, दुनियां के काम किए, रिद्धियाँ-सिद्धियाँ प्राप्त कीं, और-और जप-तप किए। जो सतगुरू की सेवा

है, क्या? अन्दर सतगुरू को प्रगट करना। ये आला से आला करनी है जो जन्म-मरण के बन्धन छुड़ाती है। वो न की। ये इसी जन्म में हो सकता है। ये अब न किया तो फिर चौरासी तैयार है। चौरासी भुगतने के लिए युगों के युग बीत जाते हैं। ये नर्कों में चला जाए तो एक-एक नर्क में युगों के युग पड़ा रहता है। ये स्वर्गों में चला जाए जो एक-एक स्वर्ग में युगों के युग पड़ा रहता है। बाहर देख लो! सापों की उम्र सुनते हैं दो-दो, तीन-तीन सौ साल की है। हम जब लखनऊ गए तो वहाँ चिड़िया घर में पाँच हज़ार साल का एक साँप, बोलो! पाँच हज़ार साल का। कब चौरासी खत्म हुई? कब आदमी की योनी मिली? इसी तरह बर्बाद करते आऐ हैं। नहीं तो फिर गधे, घोड़े, सांप बनेगा। ये वक्त है चौरासी से निकलने का। कहते कीमती वक्त था ऐसे ही बर्बाद करके चला गया। हमें कदर नहीं एक-एक स्वांस की कीमत त्रिलोकी जितनी है, एक-एक स्वांस की कीमत त्रिलोकी जितनी है जो हम पैसे-पैसे के लिए बर्बाद करते हैं।

कहता हूं कहि जात हूं कहां बजाऊँ ढोल।
स्वाँसा खाली जात है तीन लोक का मोल॥
ऐसे महंगे मोल का एक स्वाँस जो जाए।
चौदह लोक न पटतरै काहे धूल मिलाये॥

ये तो मस्ताना जी ने साबित कर दिया, क्या? मस्ताना जी तो सारे खेल दिखा गए। क्या? एक दफा दिल्ली गये तो कार में जा रहे थे किसी प्रेमी के साथ। आगे मुनादी कर रहे थे बीड़ियों की। कार के ऊपर बल्ब लगे थे और-और सज़ावट की हुई थी। आगे आदमी जा रहे थे। बाँसों के साथ टांगे बांध रखी थी। मस्ताना जी ने पूछा यह क्या है? कहते जी ये बीड़ियों की मुनादी करते हैं। क्या? कि हमारी बीड़ी अच्छी है ये पीयो। कहने लगे बीड़ियों की मुनादी के लिए इतना पैसा खर्च करते हैं? जी हाँ। कहने लगे हम भी ज़िन्दाराम से पूछेंगे कि तूं शाहों का शाह, तेरी मुनादी के लिए क्या खर्च किया जाए? शाम को जब अपने ठिकाने पर आए सुबह उठकर कहने लगे हमने सतगुरु आगे बिनती की। सतगुरु ने हुक्म दिया एक स्वांस की कीमत खर्च कर दो। एक स्वांस! बोलो! एक स्वांस की कीमत! सोना बाँटा, चांदी बाँटी, कपड़े बाँटे। तहसील सरसे का ही खत्म नहीं हुआ होगा त्रिलोकी तो कहीं पड़ी है! सोच लो! दिखा दिया माया आपके पीछे-पीछे है। आपके घरों में बरकतें पड़ेंगी! आप सिमरन करो तो सही। नाम जपो ये आपके पीछे-पीछे है। इतनी कीमती चीज़ है। एक

स्वांस की कीमत देख लो कहाँ त्रिलोकी? शहर सरसे की ही खत्म नहीं हुई होगी दौलत जितनी उन्होंने खर्च की। सोना, चांदी, कपड़े इतना खर्च किया। ये कीमती स्वांस है हमें कदर नहीं। ऐसे ही बर्बाद करके चले गये। हाँ जीः

"बिरथा जन्म गवाइआ बाजी हारी।" ऐसे ही वक्त खराब करके चली गई सारी दुनियां? हाँ जीः

पाठी– बिरथा जन्म गवाइआ बाजी हारी॥ सतिगुरु सेवे करणी सारी॥
साच धणी जगु आइ बिनासा॥ छूटसि प्राणी गुरमुख दासा॥
बाहरहो हउमै कहै कहाए॥ अंदरहो मुक्तलेप कदे न लाए॥

मैनेजर साहिब जी–बाहर से तो ये गुणी भी है, ज्ञानी भी है, सब कुछ है। अन्दर से दिल सच्चा नहीं। अन्दर कपट है। मालिक का सच्चा बनता नहीं। बाहर-बाहर से ही है। गुरु नानक साहिब का जिक्र आता हैः

गलीं असी चंगीआ, आचारी बुरीआह॥
मनहु कुसुधा कालीआ, बाहरि चिटवीआह॥
रीसा रिच तिनाड़ीआ, जो सेवहि दरु खड़ीआह॥
नालि खसमै रतीआ, माणहि सुखि रलीआ॥
ताणि निताणिआ, रहिह निमानणीआह॥
नानकु जनमु सकारथा, जे तिन कै संगि मिलाह॥

कहते हैं, बाहर से तो हम सुन्दर हैं, अन्दर से काले हैं। जुदाई उनकी करते हैं जो मालिक से रते हुए हैं। मालिक के घर जाकर आनन्द लेते हैं। वो ताकतें रखते हुए 'होदे ताण निताणीया' सब ताकतें रखते हुए भी निमाणे बनकर रहे हैं। दीन बनते हैं, गरीब बनते हैं। उनकी सोहबत में जाकर दीनता, नम्रता अखत्यार करे। फिर भजन सिमरण करे तो जा सकता है, नहीं तो नहीं। हम बाहर से ज्ञानी भी हैं, भक्त भी हैं, मगर अन्दर से नहीं। अन्दर बिल्कुल भी असर नहीं। हाँ, यह दिल की सच्चाई पर है। सच्चा दिल हो तो अन्दर जा सकता है। हम ऊपर-ऊपर से भजनीक हैं। हाँ जीः

पाठी– बाहरहो हउमै कहै कहाए॥ अंदरहो मुक्तलेप कदे न लाए॥
माइआ मोह गुर सबद जलाए॥ निरमल नामु सद हिरदै धिआए॥
साच धणी जगु आइ बिनासा॥ छूटसि प्राणी गुरमुख दासा॥

मैनेजर साहिब जी–जब तक अन्दर नहीं जाता, शब्द का रस नहीं लेता, नाम का रस नहीं लेता, अन्दर शांती नहीं आती। माया, मोह का प्यार नहीं हटता।

सारी दुनिया माया, मोह प्यार में फंसी है। सब को फंसाए जा रही है। एक दफा अमरपुर जब दूसरी बार डेरा बना है शाम को काम करवा रहे थे। तो एक प्रेमी आ गया। हमने पूछा क्या हाल है? कहता जी क्या हाल है? एक मोह माया का नशा चढ़ा है और कुछ भी नहीं। वाक्य ठीक है सब मोह, माया के नशे में फिर रहे हैं। किसी को माया का नशा चढ़ा है, किसी को बाल बच्चों का नशा चढ़ा है, किसी को औहदे का चढ़ा है, किसी को खानदान का नशा चढ़ा है। सब नशे में फिरते हैं सारी दुनियां। जब तक अन्दर रस नहीं आता तब तक ये नशा नहीं उतरता। अन्दर का रस ले ले बाहर के नशे छोड़े, क्या? तन का प्यार छोड़े, विषय विकार छोड़े। पहले तकलीफ तो उठानी पड़ती है। हरेक काम में पहले तकलीफ उठानी पड़ती है। इनका प्यार छोड़े, भजन सिमरन करे, ख़्याल को आंखों के पीछे इकट्ठा करे जहाँ नाम का रस शुरू होता है। उसमें ऐसा रस है कि दुनियां की सभी लज़्ज़ते सभी दौलतें फीकी लगने लग जाती हैं।

फरीदा सकर खण्डु निवात गुडु माखिउ मांझा दुधु॥
सभे वसतु मिठीयां रब न पुजनि तुधु॥

उसके मुकाबले में कोई लज्जित नहीं। जब फीकी लगने लगीं तो उसका ख़्याल निकल गया। जब ख़्याल निकल गया तो काम, क्रोध, लोभ, मोह वस में आ गये। मन काबू आ गया, अन्दर शांती आ गई, 'माइआ मोह गुरु सबदि जलाए।' इसके लिए क्या करे फिर? 'निरमल नामु सद हिरदै धिआए।' जिसने हासिल किया है उसने उठते-बैठते चलते-फिरते, सोते-जागते एक मिनट भी नहीं बिसारा। काम करते-करतेः

नामा कहै तिलोचना मुख ते रामु समालि॥
हाथ पाउ करि कामु सभु चीतु निरंजनु नालि॥

(1376/1 मः 5)

काम भी करते गये सिमरन भी करते रहे। रात को भी टाईम दिया। एक मिनट भी नहीं बिसारा।

इकु पलु खिनु विसरहि तू सुआमी जाणउ बरस पचासा॥

(601/3 मः 3)

एक मिनट सिमरन से बिसर जाना पचास साल के बिछोड़े के बराबर समझते हैं। गुरु नानक साहिब मोदी खाने में लगे थे। तोलते-तोलते मालिक का ख़्याल

भूल गये। जब तेरहवां पलड़ा आया तो फिर तेरह के तेरह ही रह गये और सब ख़्याल निकल गये। इतनी तड़फ हो इतनी लग्न हो फिर नाम प्रगट होता है। फिर अन्दर रस आता है। तो माया, मोह निकलते हैं।

पाठी– माइआ मोह गुर सबदि जलाए॥ निरमल नामु सद हिरदै धिआए॥
साच धणी जग आइ बिनासा॥ छूटस प्राणी गुरमुख दासा॥

मैनेजर साहिब जी–गुरु नानक साहिब ने क्या लिखा है:

कामु, क्रोधु परहर पर निंदा॥ लबु लोभु तजि होहु निचिंदा॥
भ्रम का संगलु तोड़ि निराला॥ हरि अंतरि हरि रसु पाइआ॥

अगर तूने नाम की प्राप्ति करनी है, अन्दर नाम का रस लेना है, अन्दर शांती लेनी है तो क्या कर? काम छोड़ दे, क्रोध छोड़ दे, लोभ छोड़ दे, मोह छोड़ दे, अहंकार छोड़ दे, पराई बातें छोड़ दे, निन्दा चुगली छोड़ दे।

कामु, क्रोधु परहर पर निंदा॥ लबु लोभु तजि होहु निचिंदा॥
भ्रम का संगलु तोड़ि निराला॥ हरि अंतरि हरि रसु पाइआ॥

भ्रम क्या? सारी दुनिया भ्रम है। आज है कल नहीं। इसने फनाह हो जाना है। बल्कि त्रिलोकी तक पनाह हो जाता है प्रलय में। बैकुण्ठ तक का भी ख़्याल छोड़ दे।

जब लग मनि बैकुंठ की आस॥ तब लगु होई चरन निवासु॥

बाहर, तो वैसे ही कूड़ है। रोज़ पढ़ते हैं हम:

कुडु राजा कुडु परजा कुडु सभु संसार॥
कूडु मंडप कूडु माड़ी कूडु बैसण हारू॥

(गुरु नानक साहिब जी)

इन सबका ख़्याल छोड़ दे। बड़ा भ्रम कौन सा है? ये तन मेरा है। इस तन का प्यार छोड़ दे।

भ्रम का संगलु तोड़ि निराला॥ हरि अंतरि हरि रसु पाइआ॥

जब तू ये छोड़ेगा, सिमरन करेगा तो तेरे अन्दर रस आने लगेगा। शांती आने लगेगी।

निसि दामिनि जिउ चमकि चंदाइणु देखै॥
अहिनिस जोति निरंतरि पेखै॥

कहते जैसे अंधेरी रात में बिजली की चमक होती है, अब आंखें बन्द करो अन्दर अंधेरा है, फिर तेरे अन्दर भी लश्कारे आने लगेंगे। चांद सूर्य आने लगेंगे।

आनंद रूप अनूप गुरि पूरै देखाइआ॥

आगे सतगुरु आ जायेगा आनन्द देने वाला, शांती देने वाला, मालिक की दरगाह में ले जाने वाला। ये तरीका मालिक के पास जाने का है। हाँ जीः

पाठी– माइआ मोह गुर सबद जलाए॥ निरमल नाम सद हिरदै धिआए॥

मैनेजर साहिब जी–कोई-कोई वचन ये मानता है। सच्चे पातशाह के टाईम की बात है। एक स्टेशन मास्टर था, वो पण्डित था। एक बार वो अफसर के साथ आ गया। अफसर कहता चलो सन्तों के दर्शन कर आते हैं, साथ आ गया। खैर! पहले तो वो मानता नहीं था। फिर नाम भी ले लिया। एक बार सच्चे पातशाह ने फरमाया सारी दुनियां पराया काम करती है, अपना कोई नहीं करता। उसको ऐसी चोट लगी जाकर कमरे में बैठ गया भजन पर। अब स्टेशन मास्टर भी साथ था। आगे तो वो रात की ड्यूटी स्टेशन मास्टर को दे दिया करते। लेकिन वो अपनी ड्यूटी खुद संभालता। उनको दिन की देता आप रात को लेता। भई मैं जागता रहूँ, भजन सिमरन करता रहूँ। अब बैठ गया। अफसर को जबाव देकर आना था। अंग्रेज़ अफसर था। बहुत सख़्त था। वो किसी की अच्छी रिपोर्ट लिखता ही नहीं था। अब चाबी उसके पास थी। अब ड्यूटी पर जाना था। स्टेशन मास्टर दरवाज़े खड़खड़ाये। वो खोले ही ना। दूसरों को भी कहा, खोले ही ना। फिर सच्चे पातशाह जी के पास गये। कहने लगे अंग्रेज़ अफसर ने आना है? डयूटी उसी की है? चाबी उसके पास है। अगर चाबी हो तो हम ड्यूटी संभाल लें। कहने लगे, उसे उठाओ? कहने लगे जी हमने तो बहुत ज़ोर लगाया। कहते अच्छा फिर बैठे रहने दो और क्या करें? जो छोटा स्टेशन मास्टर था वो कहता गया। अब तो रिपोर्ट, वो आगे सख़्त है। सुबह हो गई, पहले तो चला न जाए। कहते जल्दी कर, तू डिसचार्ज तो हो जाना है?

मन का ईलाज ये ही है बस डण्डा और कोई नहीं। इसका ईलाज डण्डा है।

मन ही नाल झगड़ा मन ही नालि सथ॥ (89/18 मः 3)

मनि जीतै जगु जीतु॥

इसका इलाज डण्डा है।'' इसे जरूर बिठायें कुछ हो। कहे भई! अब आ जा मुकाबले में। अब तो बैठ दो-अढ़ाई घण्टे। सख़्त मुकाबला रखे, बिठाये जरूर जितना हो सके। इसके साथ मुकाबला रखे फिर ये भी सीधा हो जाता है। इसका इलाज डण्डा है।

धावत राखै ठाक रहाए।

हाँ, फिर ये कब होता है? *सिख संगत करम मिलाए।* साध संगत में आते-आते, सोहब्बत करते-करते फिर रंग चढ़ता है। फिर ये मुकाबला कर सकता है, नहीं तो नहीं कर सकता। एक दिन साध संगत से परे हो जाये तो बस। मस्ताना जी फरमाया करते थे कि हिन्दु दाढ़ी मुड़ाते हैं रोज़ अगले दिन बाल आ जाते हैं। मन का ये हाल है। ज़रा सा साध संगत से परे हुआ बस ये होशियार है फिर। पलटू साहिब कहते कि जैसे रसायन से लोहा साफ रहता है तो उसे जंग नहीं लगता साफ रहता है। इसी तरह हर रोज़ की सोहब्बत करते-करते ये भी सीधा रहता है। फिर भजन सिमरन कर सकता है। जितनी सोहब्बत हो उतना ही रंग चढ़ता है। हाँ जीः

पाठी– धावत राखै ठाक रहाए॥ सिख संगति करम मिलाए॥

मैनेजर साहिब जी–और भागों से मिलता है। मस्ताना जी फरमाया करते थे जब तक पांच छः जन्म की भक्ति न हो फकीरों के दरबार में आ नहीं सकता। जब तक आठ दस जन्म की भक्ति न हो नाम नहीं ले सकता। फकीरों के साथ नहीं रह सकता, सोहब्बत नहीं कर सकता। फरमाया करते थे, दरवाज़े के बाहर जाते ही भुला देता है। ऐसी बला है यह दरवाज़े के बाहर जाते ही भुला देता है। पहले तो यहाँ ही सुनने नहीं देता फिर दरवाज़े के बाहर जाते ही भुला देता है। अगर थोड़ा बहुत याद हो तो कालांवाली जाकर भुला देगा, नहीं तो घर जाकर तो भुलाया ही है। हाँ, हाँ जी, कई प्रेमी फरमाते हैं कि एक महीना ना आयें तो मन ऐसा हो जाता है बस, हाँ, देख लो! यहाँ दरवाज़े में भुला देगा, गाड़ी चढ़ते भुला देगा, घर जाकर तो भुलाया ही है। हाँ जीः

पाठी– धावत राखै ठाक रहाए॥ सिख संगत करम मिलाए॥
गुर बिनु भूलो आवै जाए॥ नदर करे संयोग मिलाए॥

मैनेजर साहिब जी–भागों से फकीर मिलता है।

'दुर्लभ दर्शन साध का'

दादू साहिब कहते हैं पहले तो साधू मिलना मुश्किल है।

'दुर्लभ गुर उपदेश।'

फिर नाम मिलना मुश्किल है।

'दुर्लभ करना कठिन है'

फिर जपना देख लो, किसी को जपने देता है?

'दुर्लभ परसउ लेख।'

जो जपते हैं चार दिन में थक जाते हैं। जब तक कर्म खत्म नहीं होता आगे जा नहीं सकता। यह लगा रहे। हम तो दूसरे दिन ही चाहते हैं। चार दिन बैठता है कहता कुछ प्राप्ति नहीं हुई, चलो छोड़ो। देख लो! ये कनक है कितने महीने लग गये फल पकने को? पांच छः महीने में तैयार हुई, सोच लो! ये जल्दी चाहता है। जल्दी नहीं। कई बीज ही कितने दिन उगते नहीं। ये जल्दी का काम नहीं। आहिस्ता-आहिस्ता का काम है, धीरे-धीरे का।

धीरे धीरे रे मना धीरे सब कुछ होय।
माली सीचें सौ घड़ा ऋतु आए फल होय॥

मौके पर ही फल लगना है।

कबीर धीरज के धरे हस्ती मन भर खाय।
टुक एक के कारने, स्वान घरै घर जाय॥

एक रोटी के टुकड़े के लिए घर घर जाता है। यह भी तभी है यह लगा रहे बस। ये जल्दी का काम ही नहीं। अगर जल्दी कुछ आ भी जाए वो रहता नहीं। जल्दी का काम नहीं। यह लगा रहे फिर सब कुछ बन जाता है। यह छोड़े ना। बस! हाँ जीः

पाठी– गुर बिन भूलो आवै जाए॥ नदर करे संयोग मिलाए॥

मैनेजर साहिब जी–अब तो खुली छुट्टी है। मस्ताना जी फरमाया करते थे। नौकर दुकान पर बैठा है ग्राहक आए या ना आए। उसकी तनख्वाह तो खरी है। ये भी बैठे चाहे मन लगे या ना लगे। इसकी भी तनख्वाह तो खरी है। मालिक भी देखता है, इतनी बड़ी बला से वासता पड़ा है। ये बैठे सही। हाँः

पाठी– साच धणी जग आए बिनासा॥ छूटस प्राणी गुरमुख दासा॥

मैनेजर साहिब जी–यह ठेका रखे कि मैंने जरूर भजन करना है, बस। जैसे दुनियां के ठेके लेता है कि यह वक्त जरूर देना है। फिर वो खड़ा है। फिर वो भी तैयार है। मालिक भी तैयार है।

उलट पुलट जप राम ही टेढ़ा सीधा होये।
या का फल नहीं जायेगा कैसे ही लो कोये॥

(चरण दास)

यही तुलसी साहिब ने लिखा हैः

भाव, कुभाव अलख हूं॥ नाम जपत मंगल दिस दिसहू॥

जैसे भी है आप बैठो, मालिक मज़दूरी देगा। हाँ, हाँ जीः

पाठी– रूड़ो कहउ न कहिआ जाई॥ अकथ कथउ नह कीमति पाई॥

मैनेजर साहिब जी–कहते जिन्होंने नाम जपा, मुकाबले किए, अन्दर रस लिया, वो बता नहीं सकते कि अन्दर कैसा रस है, क्या चीज़ है?

मिल सखिआं पूछो कहो कंत निशानी।
रसि प्रेम भरी कछु कहन न जाणी॥

क्या बताए?

आत्म अनुभव ज्ञान कथ जो कोई पूछे बाद॥
गूंगे ने गुड़ खा लिया कहे कौन मुख स्वाद॥

(कबीर साहिब)

क्या बताये वो बताने की चीज़ ही नहीं। जिसने रस लिया है वो ही जानता है, वो क्या चीज़ है, कितना मीठा है, कितना प्यारा है? नामदेव का एक शब्द आता है 'रूड़ो तेरा नाम रूड़ो', बोल, वो बताता है कितना मीठा है? हाँ बोल कितना प्यारा है। हाँ जीः

पाठी– तेरा नामु रूड़ो

मैनेजर साहिब जी–रूड़ो क्या? मीठा। कैसा मीठा है? हाँ जीः

पाठी– तेरा नामु रूड़ो रूपु रूड़ो अति रंग रूड़ो मेरो रामईआ॥
मारवाड़ि जैसे नीरू बालहा बेलि बालहा करहला॥

मैनेजर साहिब जी–कहते ऐसा मीठा है जैसे मारवाड़ी को (उधर पानी नहीं होता हमने आंखों से देखा है) क्या? मारवाड़ में बारिश हुई है, पशुओं के पैरों के निशानों में पानी खड़ा है, कटोरियों से निकाल कर घड़ों में डाला है। फिर उसे छाना। प्यारा हुआ न हुआ? कहते ऐसा प्यारा है, ऐसा संभालने वाला है वो, जैसे मारवाड़ियों को पानी प्यारा है। ऐसा प्यारा है। वो ऐसी चीज़ है बता नहीं सकते? कैसा प्यारा है? कैसा मीठा है? जैसे उधर बेल होती है, ऊंट को वो प्यारी है, ऐसा प्यारा है वो। हाँ जीः

पाठी– जिउ कुरंक निसि नादु बालहा तिउ मेरै मनि रामईआ॥
तेरा नामु रूड़ो।

मैनेजर साहिब जी–मृग को पकड़ने के लिए रात को बाजा बजाते हैं। वो आकर क्या करता है? बाजे पर मस्त होकर सिर रख देता है। वो जानता भी है मैं पकड़ा जाऊंगा मगर उसे बाजा इतना प्यारा लगता है जान की परवाह नहीं करता। कहते जिन्होंने वो रस लिया है वो जान की परवाह नहीं करते। उसमें ऐसा रस है एक मिनट नहीं छोड़ते। कहने सुनने से परे हैं। ऐसा प्यारा है।

उन्होंने कितनी मिसालें दी हैं भई ऐसा प्यारा है वो। कोई तो रस ले, किसलिए इतनी मिसालें दी हैं? ऐसा प्यारा है वो। उसकी तारीफ की है। कोई तो लो, कभी तो इसे होश आए कि मैंने भी रस लेना है। वो ऐसा मीठा है। त्रिलोकी की दौलत दे दो, पैसों से वो नहीं मिलता, जोर से वो नहीं मिलता। ये प्रेम का सौदा है। कोई कमाई करे मेहनत करे।

कर्म करतूति अंम्रित फलु लागा॥ हरि नाम रतनु मनि पाइआ॥

(1039/2 मः 1)

जिन्होंने मेहनतें कीं, मन के साथ मुकाबले किए, उन्होंने अन्दर रस लिया। फिर बताया ऐसा मीठा है, ऐसा प्यारा है, तुम भी वो निकालो। गुरु राम दास ने रस लिया। क्या लिखते हैं–

बसुधा सपत दीप है सागर कढि कंचनु काढि धरीजै॥
मेरे ठाकुर के जन इनहु न बाछहि हरि मागहि हरि रसु दीजै॥

(1323/18 मः 4)

कहते इस दुनिया की सात बादशाही हैं, सात ही समुद्र हैं। अगर सभी की दौलत निकाल कर एक तरफ रख दें दूसरी तरफ हरि रस, जिन्होंने रस लिया है इसकी कदर है, उनसे पूछे कि तुझे हर रस चाहिए या ये दौलत चाहिए? वो दौलत की ओर देखते ही नहीं। वो कहते हमें हर रस चाहिए। वो ऐसा मीठा है। हम पैसे-पैसे के पीछे मरते हैं बाहर के। वो इन्हें पहचानते ही नहीं। वो ऐसा मीठा है, ऐसा प्यारा है। हाँ जीः

पाठी– रूड़ो कहउ न कहिआ जाई॥ अकथ कथउ नह कीमत पाई॥
सभ दुख तेरे सूख रजाई॥ सभ दुख मेटे साचै नाई॥
साचा धणी जग आए बिनासा॥ छूटस प्राणी गुरमुख दासा॥

मैनेजर साहिब जी–फिर बोल,

सभ दुख तेरे सूख रजाई॥ सभ दुख मेटे साचै नाई॥

कहते अगर वो सच्चा नाम प्रकट कर ले सब दुख दूर हो जाएं। सब बीमारियां खत्म। ये बाहर के जन्म मरण के बन्धन छूट जायें। तभी उन्होंने कहा है–

सर्व रोग का अउखदु नामु।

सब बीमारियों का क्या? ईर्ष्या, वैर, विरोध सब निकल जायें। पर कब? जब दुख हो, सुख हो, अमीरी हो, गरीबी हो, नाम जपने का ठेका रखे। ये हम कर्मों के हिसाब से लाये हैं। जिसे पूछो बीमारी लगी है। क्या करूं जी गुज़ारा

नहीं चलता। ऊधर ख़्याल जाता है। ठेके लिए हुए हैं। वो तो हमारे कर्मों के हिसाब से है। दुख सुख सब को भुगतने पड़ेंगे। जैसे-जैसे कर्म लिखवा कर लाया है वो जरूर भुगतने पड़ेंगे। जो लिखवा कर लाया है वो ही मिलना है। न वो बढ़ेगा न घटेगा। कि दुख-सुख, अमीरी-गरीबी, तन्दरुस्ती, बीमारी सब अपने कर्मों के हिसाब से लिखवा कर लाया है। उसे जरूर भुगतना है। भुगते बगैर छुटकारा नहीं। वहाँ प्रेमी बैठा है उसका पोत्रा उसे बहुत तकलीफ। उससे चला न जाए, अब भी तकलीफ है। मस्ताना जी वहाँ गये तो वो रोता आया? कहते इसे पूछो क्या बात है? मैनेजर इसे दिलासा दे। कहा जी अर्ज़ तो करनी नहीं चाहिए मैंने देख लिया सभी इलाज करवा लिए ये दर्द नहीं जाता? मस्ताना जी कहते ये तो मामूली सी बात है। कोढ़ी का कोढ़ ठीक हो गया ये कोई बात है? पर बात ये है तुझे भुगतना तो पड़ेगा। फिर जन्म लेना पड़ेगा। भुगते बगैर छुटकारा नहीं। अब ठीक हो जायेगा फिर जन्म लेना पड़ेगा। कहता जी फिर तो इसी जन्म में भुगतने दो। ये भुगतने पड़ते हैं सब को भुगतने है। ये भुगतते हुए, दुख हो, सुख हो, अमीरी हो, गरीबी हो, बीमारी हो, तन्दरुस्ती हो, भजन का ठेका ले। अब बीमार पड़ा है बीमार है उठ नहीं सकता, टट्टी पेशाब नहीं कर सकता, रोटी नहीं खा सकता। ख़्याल कहाँ है लड़के को बुलाता है इधर आ फलां खेत जोत दिया? खेत में तो ख़्याल है। सतगुरु का ख़्याल नहीं। खेत का भजन तो है, देख लो, ये सब मन के बहाने हैं। लेटा हुआ ही कहता रहेगा ये काम कर आ, ये काम कर आ। उसकी तरह सिमरन कर। दुख हो, सुख हो, अमीरी हो, गरीबी, तू सिमरन कर। बस लगा रह। टूटा फूटा भी कर तो भी तेरा सिमरन कबूल है। हाँ जी, अगर तू ये काम करे तेरे सभी दुख दूर हो जायें। सिमरन से भी बीमारियां दूर हो जाती हैं, कर्म घट जाते हैं। हाँ जीः

सिमरत नामु किलबिख सभि काटे॥ धर्मराइ के कागर फाटे॥

सिमरन के सिवाए कोई इलाज नहीं। असल तो है नाम। इसे अन्दर प्रगट करे सब कर्म काट देता है। लेकिन सिमरन से भी कटते हैं कर्म। सिमरन करे कर्म हल्के हो जाते हैं। इसकी दिली पावर इतनी मज़बूत हो जाती है कि तकलीफ ही महसूस नहीं होती। हाँ, हाँ जीः

पाठी– सभ दुख तेरे सुख रजाई। सभ दुख मेटे साचै नाई॥
साच धणी जग आए बिनासा॥ छूटस प्राणी गुरमुख दासा॥
कर बिनु वाजा पग बिनु ताला॥ जै सबद बुझै ता सचु निहाला॥

मैनेजर साहिब जी–आज एक प्रेमी आया कहने लगा कि जब मैं भजन पर बैठता हूँ कोई न कोई बीमारी या कोई ऐसा सिआपा पड़ता है भजन बनता ही नहीं। ये करता है भई, बला है मन, सुनोः

पाठी– बिरला कोई जीव अधिकारी, गुरु वचन तरे आधारी॥
जो वचन सम्हारे गुरु के, मन गंदा ना लड़ावै छलकै॥
ज्यों त्यों कर जीव भुलावै, काल आपने खेल खिलावै॥
गुरु भगति न करने पावै, बहु भांति उपाए लगावै॥
कभी मित्र होए भरमावै, कभी बैरी बन धमकावै॥
कभी रोगन माहि समावै, नाना विधि जाल बिछावै॥

मैनेजर साहिब जी–जो भजन सिमरन करता है उसके मुखालफ रहता है, सौ बहाने लगाता है। लै, तेरे दादे परदादे ये काम करते थे, तूं नया काम करेगा? रात को जगा तो कल काम कैसे करेगा? बाल-बच्चे कैसे पलेंगे? बाल-बच्चे तो सतगुरु ने पालने हैं। वो अपनी किस्मत लिखवाकर लाये हैं। रात को जागेगा तो काम कैसे करेगा? अगर फिर भी न माने तो किसी से झगड़ा करवा देगा या बीमारी लगा देगा। सौ सिआपे डालता है। जो लगा रहे, फिर सीधा हो जाता है बस, देख लो! फकीरों ने नतीजे निकाल कर लिखे हैं। सौ सिआपे डालता है मन। इसका काम ही यह है बस। कि ये सच्ची भक्ति न कर ले। और कोई काम नहीं बस। हाँ जी, जिस तरह भी होता है यह कोशिश करता कि भजन न करे, बस। जो इसका मुकाबला रखता है वो है, जिसने पाया है मुकाबला रख कर पाया है। तभी उन्होंने कहा है–

मन ही नालि झगड़ा मन ही नालि सथ॥''

हाँ, हाँ जीः

पाठी– कर बिन वाजा पग बिन ताला॥ जै सबद बुझे ता सच निहाला॥
अंतर साच सभे सुख नाला॥ नदर करे राखै रखवाला॥
साच धणी जग आए बिनासा॥ छूटस प्राणी गुरमुख दासा॥

मैनेजर साहिब जी–कहते जिसने नाम का रस लिया है, शब्द का रस लिया है, जब उससे ताल्लुक पड़ जाता है तो सारे दुख दूर हो जाते हैं। दुख की बदबू भी नहीं रहती। इसे सुख ही सुख है, सुख ही सुख है। पर कब? कहते वहाँ कुदरती राग हो रहे हैं। ये नहीं, ये बाहर के नहीं? वो मीठे से मीठे राग हैं। ये तो हाथों से बाजे बजते हैं। मुंह से बोलता है, पैरों से ताल बजते हैं। कहते

वहाँ ये काम नहीं करते। वो अपने आप हो रहे हैं राग। वो मीठे से मीठा है। ये तो दो चार घण्टे के बाद थक जाता है, खण्डित हो जाता है। वो खण्डित होता नहीं। अपने आप चल रहा है। न वहाँ ज़ुबान की ज़रूरत है, न हाथों पैरों की ज़रूरत है, न वाणी की ज़रूरत है।

कर बिन वाजा पग बिन ताला॥ जै सबदु बुझै ता सच निहाला॥

अगर उस शब्द से ताल्लुक पड़ जाए, नाम से ताल्लुक पड़ जाए। ये बाहर के शब्द नहीं? ये तो सभी गाते हैं। जो असली शब्द है उस से किसी बिरले ने ताल्लुक डाला है।

प्राणी हरि जपि जनमु गइउ॥
साच सबद बिनु कबहूं न छूटसि बिरथा जन्मु भइओ॥
सो दरु तेरा केहा सो घरु केहा जित बहि सरब समाले॥
वाजे तेरे नाद अनेक असँखा केते तेरे वावणहारे॥
केते तेरे राग परी सिउ कहीअहि केते गावणहारे॥

कितने गाने वाले हैं, कितने बजाने वाले इसके अन्दर बैठे हैं। कहते अगर उससे ताल्लुक पड़ जाये सभी दुख दूर हो जाएं। दुख की बदबू भी न रहे। सुख साथ ही साथ आते हैं। पर ये मेहनत का सौदा है। ये दवाई खाये तभी है। मेहनत करे इतनी। हाँ जीः

पाठी– अंतर साधु सभे सुख वाला॥ नदरी करे राखै रखवाला॥

मैनेजर साहिब जी–मस्ताना जी फरमाया करते थेः

बिनु मेहनत किसे न पाया रब्ब दा नाम खजाना॥

यह मेहनत की चीज़ है, पर मेहनत यह होवे। अगर करता है तो अहंकार में आ जाता है, मैं इतनी मेहनत की। ये बैठे तो सतगुरु आगे बेनती करके बैठे कि सतगुरु तू बिठाए तो बिठाए वरना मेरी कोई ताकत नहीं। उठे तो सतगुरु तेरी मेहर से बैठ सका हूँ। मैं ना आए अगर मैं आ गई तो फिर गया।

कीया कराइया सब गिआ। जब आइया अहंकार॥

मेहनत भी करे और सतगुरु पर छोड़े। हाँ जीः

पाठी– साच धणी जग आए बिनासा॥ छूटस प्राणी गुरमुख दासा॥

मैनेजर साहिब जी–यहाँ तो कदम कदम पर सतगुरु का आसरा रख कर काम करे तो चल सकता है। अगर जरा सी भी मैं आई तो बस गया।

दादू है को भय घणा, नाहि को कुछ नाहि।
दादू नाहि हो रहे, अपने साहिब मांहि॥

बस, यह मैं निकालनी मुश्किल है। पहले तो मेहनत नहीं करता। अगर मेहनत करता है तो मैं मार देती है। मैं न आए। ये सबसे बड़ी रुकावट है। हाँ जीः

पाठी– त्रिभवन सूझै आप गवावै॥ बाणी बूझै सच समावै॥

मैनेजर साहिब जी–कहते अगर इस शब्द से ताल्लुक पड़ जाये। ख़्याल को आंखों के पीछे इकट्ठा करे। ठीक फकीर मिल जाए। वहाँ भी अनेकों धोखे हैं। वहाँ कितने ही शब्द है। बुल्लेशाह ने कहा है–

बजदे नाद हजार।

गुरु नानक साहिब कहते हैंः

अनिक अनाहद आनन्द झुनकार।

एक दूसरे से मिलते जुलते हैं। जिसे कोई पूरा फकीर मिला है, पूरा गुरुमुख मिला है, जो उनका बताया सच्चा सिमरन है, उसके साथ शब्द का ताल्लुक पड़ता है। जैसे रेडियो में कितनी आवाज़ें हैं– कलकते की बम्बई की, अमेरिका की, इंग्लैण्ड की, अफ्रीका की, दिल्ली की, सोच लो! इसी तरह अन्दर भी ब्रह्मलोक, शिवलोक, इन्द्रलोक। जैसे ये स्विच लगाते हैं, सुन लेते हैं। इसी तरह जिसे कोई कामिल फकीर मिला है उसे सच्चे शब्द से ताल्लुक पड़ता है। वो त्रिलोकी से पार ले जाता है। कहते हैं उससे ताल्लुक पड़ जाये *"त्रिभवण सूझै आप गवावै॥* अपनी हस्ती को मिटाए, मैं निकाले। अति दीनता और नम्रता का मार्ग है। अगर ज़रा सा भी अहंकार है तो बस गया। कैसे हस्ती को मिटाए? कबीर साहिब ने कहा हैः

कबीर रोड़ा होइ रहु बाट का तजि मन का अभिमानु॥
अैसा कोई दासु होइ ताहि मिलै भगवानु॥

कि रास्ते का रोड़ा हो जा, हरेक की ठोकर खा। फिर कहते यह भी नहीं,

कबीर रोड़ा हूआ त किआ भइया पंथी कउ दुख देह॥
अैसा मेरा दासु है जिउ धरनी महि खेहु॥

रोड़े से किसी के ठोकर लगेगी। खेह बन जा। फिर कहते ये भी नहीं,

कबीर खेह हुई तउ किआ भइआ जो उडि लागै अंग॥
हरि जन अैसा चाहीअै जिउ पानी सरबंग॥

कहते हैं, खेह से किसी के कपड़े खराब होगें, हाथ-पाँव खराब होगें। साफ पानी की तरह बन जा। फिर कहते ये भी नहीं,

कबीर पानी हूआ त किआ भइआ सीरा ताता होई॥
हरिजनु अैसा चाहिये जैसा हरि ही होइ॥

गर्म की ज़रूरत है ठण्डा मिल गया वो भी दुख। ठण्डे की ज़रूरत है गर्म मिल गया वो भी दुख। कहते हैं, अपनी हस्ती को इस तरह मिटा जैसे मालिक ने मिटाई हुई है। अगर मालिक का रूप बनना है। क्या? वो सब का मालिक है, कोई निशानी है? कोई गालीयाँ दे किसी की रोटी बन्द की? इतनी हस्ती को मिटाए, इतनी दीनता हो, इतनी नम्रता हो। इतनी हस्ती को मिटाए तो सच्चे शब्द से ताल्लुक पड़ता है। फिर जाकर उस सच्ची वाणी से ताल्लुक पड़ता है जो सब दुख दूर करने वाली है। जिसके मुत्तलक हम रोज़ पढ़ते हैं, क्या?

दूख रोग संताप उतरे सुणी साची बाणी॥
सन्त साजन भए सरसे पूरे गुर ते जाणी॥

वो बाणी इसके अन्दर है। पर मिलता कब है जब सन्तों की सेवा में आकर उन्हें खुश करता है। *'सन्त साजन भए सरसे पूरे गुर ते जाणी'* का मतलब? खुश किया जा जाकर, सेवा करके। क्या खुश किया? रोटी खिलाई या कपड़ा दिया या कोई और? नहीं। यह तन मन के बन्धन तोड़े, ख़्याल आंखों के पीछे इकट्ठा करे। यह उनको खुश करने का साधन है और नहीं। यह चाहते हैं वो भई, तन का प्यार छोड़, बाल बच्चों का प्यार छोड़, उनसे हिसाब से बरत। उनकी सेवा भी हो मगर प्यार न हो। बच्चा मर गया उसकी मौज़, पैदा हो गया उसकी मौज़, गरीबी आ गई उसकी मौज़, अमीरी आ गई उसकी मौज़। इस तरह रहे। और विषय विकार छोड़ और दुनिया के ख़्याल निकाल। ये उनकी सेवा है, ये बन्धन तोड़ने हैं। ये खुश करना है उनको। फिर सच्ची बाणी से, सच्चे नाम से ताल्लुक पड़ता है जो सब दुख दूर करती है। हाँ जीः

पाठी– त्रिभवन सूझै आप गवावै॥ बाणी बूझै सच समावै॥

मैनेजर साहिब जी–जो असली बाणी है, असली शब्द है, असली नाम है वो ब्रह्म देश के पार मिलता है पारब्रह्म में जाकर। नीचे भी है अनहद, वो फनाह के दायरे में है ज़्यादा तर लेकिन असली वहाँ मिलती। वो तब मिलती है जब हस्ती को मिटाए। नहीं, नहीं मिलती। हाँ ये ही हम पढ़ते हैं–

अनदु सुणहु वडभागीहो सगल मनोरथ पूरे॥

कौन से?

पार ब्रहमु प्रभु पाइआ उतरै सगल बिसूरे॥

ब्रह्म देश के पार जाकर वहाँ सच्ची वाणी है।

दूख रोग सन्ताप उतरे सुनी सच्ची वाणी॥

सन्त साजन भए सरसे पूरे गुर ते जाणी॥

हाँ जी।

पाठी– सबद वीचारे एक लिव तारा॥ नानक धंनु सवारण हारा॥

मैनेजर साहिब जी–वो धन हैं, वो मुबारिक हैं जो उस शब्द से ताल्लुक जोड़ें। वो मालिक की दरगाह से आ रहा है। एक दफा उससे ताल्लुक पड़ जाये वो सीधी सड़क है, जरनैली सड़क है। हाँ जीः

पाठी– सबद वीचारे एक लिव तारा॥ नानक धंनु सवारण हारा॥

साच धणी जग आए बिनासा॥ छूटस प्राणी गुरमुख दासा॥

मैनेजर साहिब जी–एक बार सूर्य ग्रहण था तो गाड़ी ठीक ना करे कोई। तो हमने अपने मिस्त्री को बुलाकर ठीक करवा कर सूर्य ग्रहण में ही गये हैं। ये अपनी हद में ठीक है। ये नहीं भई, नहीं ये कानून अपनी हद में ठीक हैं। लेकिन जिनको कोई कामिल फकीर मिला है। वो भजन सिमरन करते हैं। सतगुरु वाली भक्ति है सच्चे नाम की, उनके नजदीक कोई चीज़ नहीं आती। उनसे सब दूर हैं उनको कोई डर नहीं। ये महकमा ही और है। कानून का महकमा अपनी हद तक है। सुनो! जहाँ तुम कानून की हद तक जाओ जज फैसला दे देगा, हाई कोर्ट फैसला दे देगा, सुप्रीम कोर्ट दे देगा। राष्ट्रपति के पास कानून है वो जब मर्ज़ी छोड़ दे। बस ये अगला कानून सन्तों वाला ये है। जहाँ कोई कानून नहीं। ये उसकी मेहर ही है। जो इस रास्ते को अपनाता है उस पर कोई कानून नहीं। वो अलग चीज़ है। हाँ जी, वहाँ दिल की सच्चाई की ज़रूरत है और भजन सिमरन की ज़रूरत है। दिल की सच्चाई की ज़रूरत है चाहे भजन थोड़ा ही है। मेहनत करता है बनता नहीं वो भी कबूल है। वहाँ सच्चाई की ज़रूरत है। हाँ जी, इस सृष्टि को चलाने वाला कौन है? धर्मराय काल। वो ही प्रेमीयों के नजदीक नहीं आता तो बाकी चीज़ें क्या आयेंगी। वो आप ही नहीं आता। काल भी डरता है।

प्रभ कै सिमरनि दूखु जमु नसै॥ प्रभ कै सिमरनि कालु परहरै॥

पढ़ते तो हैं। जो सन्तों का बताया सिमरन है, नाम तो दूर रहा उसके

आगे भी नहीं आते। देख लो, उसके आगे भी नहीं आते। हाँ, हम तो बीकानेर की बात सुनकर हैरान हैं। पड़ोसी था। कभी आया भी नहीं। बातें ही सुनी थीं। उसने भी बताया कि अब मैं जा रहा हूँ। अब मेरा जन्म मरण नहीं। मेरी भी संभाल हुई है। आगे बैठकर भजन करूंगा। नीचे नहीं आता। पड़ोसी था। जो कभी आया ही नहीं। हाँ जीः

पाठी– जीवन खत्म हुआ तो जीने का ढंग आया।
जब बुझ गई शमां तो महफिल में रंग आया॥
मन की मशीनरी ने, उस वक्त चलना सीखा।
तब ठीक चलना सीखा.....
''बचपन बीता खेलकूद में अकड़ में गई जवानी।
आया बुढ़ापा सिर पर तेरे आ गई समझ कहानी।''
मन की मशीनरी ने, उस वक्त चलना सीखा।
जब बूढ़े तन के हर इक पुर्जे पे जंग आया॥
जीवन खत्म हुआ.....

मैनेजर साहिब जी–सेवा तो इसकी नहीं जाती पर बात करते हैं। पतराम से कहने लगा हाय मैं सारा ख़ज़ाना लूटा बैठा। उस टाईम हमें बहुत दुख आया। उसकी सेवा थोड़ी तो नहीं पर कर्मों के पीछे कहता था। कहने का मतलब मौके पर याद आता है। ओहो! ओहो!! फिर कहते हैं मैं सारा लूटा बैठा। फिर याद आता है मौके पर आखिर। फिर क्या बनता है? हाँ, हाँ जीः

पाठी– जब बूढ़े तन के हर इक पुर्जे पे जंग आया।

मैनेजर साहिब जी–जिस दर्द से उसने कहा मैं सारा ख़ज़ाना लूटा बैठा वो हमें भी मालूम है। उस टाईम जिस हिसाब से उसने कहा, वो हमें पता है। हाय! हाय! हाँ जीः

पाठी– गाड़ी निकल गई तो घर से चला मुसाफिर।
आखिर वो लौट करके, वापिस बेरंग आया॥
जीवन खत्म हुआ.....
फुरसत के वक्त भी ना, सिमरन का वक्त निकला।
उस वक्त वक्त निकला, जब वक्त तंग आया॥
जीवन खत्म हुआ.....
आयु ने नथा सिंह जब, हथियार फैंक डाले।

यमराज फौज लेकर, करने को जंग आया॥
जीवन खत्म हुआ.....

मैनेजर साहिब जी–धुक्कड़ को लगाओ।

पाठी– 'धन धन सतगुरु तेरा आसरा, धन सच्चा सौदा धाम।
जंगल में मंगल कर दिया तो मेरे परम सन्तों के न्यारे राम॥'
'तीर्थ व्रत करता रहा, काशी और कैलाश में।
ते वो रमआ राम ना खोजिआ, जो बैठा तेरे पास में॥'
'सतगुरु के दरबार में जाइये बारम्बार।
ते भूली वस्तु बतावता, ते मेरा सतगुरु है दातार॥
नाम जहाज पर बैठ जा, तो तुझे कर दे छिन में पार॥'
'राम नाम की लूट है ते लूट सके तो लूट।
अन्त समय पछताऐगा ते जब प्राण जायेंगे छूट॥'
'मरना मरना सब जग कहे, ते मरन न जाने कोये।
ऐसी मरनी मर कबीरा, ते बहुरि जन्म न होये॥'

धन धन सतगुरु तेरा ही आसरा

सत्संग

'गुरु का वचनु बसै जिअ नाले'

सत्संग के वचन

पाठी– गुरु का वचनु बसै जीअ नाले।
जलि नहीं डूबे तस्कर नहीं लेवै पाए न साके जाले।
गुरु का वचन.....

मैनेजर साहिब जी–पहले भी अर्ज़ की है कि अन्दर दो ताकतें काम रही हैं। एक अकाल पुरुष की कह लो, सतगुरु की कह लो, सतपुरुष की कह लो। दूसरी काल की। खेल भी मालिक ने आप ही डाला है।

कालु अकालु खसम का कीना एहु परपन्चु वधावनु॥

(1104/7 कबीर साहिब)

काल को रचना का हुक्म दिया है। उसने ऐसे फंसाया है जीवों को कर्मों के जाल में कि निकलने का राह नहीं छोड़ा। रोज़ पढ़ते हैंः

किरति करम के बीछुड़े करि किरपा मेलहु राम॥
चारि कूंट दह दिस भ्रमे थकि प्रभ की साम॥

(गुरु अर्जुन देव)

कीमती बात है समझने की। हम जितनी भक्ति कर रहे हैं, काल की है। जप-तप, करम-धर्म, पूजा-पाठ सब काल के दायरे की हैं, योग, अभ्यास सब। इसमें स्वर्ग मिल जायेगें, अच्छी जून मिल जाएगी, त्रिलोकी का राज मिल जाएगा। लेकिन जन्म मरण के बन्धन नहीं छूटते। जो छुटकारे का रास्ता है वो अकाल ने, सतगुरु ने अपने हाथ में रखा है। वो सतगुरु चौथे लोक में है। जो आनन्द देने वाला है, शांती देने वाला है।

सुन हिरदे सतिगुर सहदानी, सतगुर सतपुरुष को जानी॥

रहता कहाँ है?

चौथे पद में करे निवासा, तीन लोक में काल का वासा॥

त्रिलोकी तक काल का दायरा है। वो सतगुरु चौथे लोक में रहता है। हमें निकालने के लिए कोई न कोई रूप धारता है। इन्सानी चोले में आता है। ऐसे कैसे समझाए।

ब्रह्म बोले काया के ओल्हे, काया बिन ब्रह्म किआ बोले॥
हमरो भरता बडो विवेकी आपे संतु कहावै॥

(476/14 कबीर साहिब)

साध रूप अपना तनु धारिआ॥

(1005/7 मः 5)

यही ईसा ने कहा हैः

"The Word was made flesh & dwelt amongest us." (Bible)

वो शब्द देह धार कर आता है। ऐसे कैसे समझाए? लेकिन देह समझाने के लिए है। वो ताकत गुरु है जो अन्दर काम करती है, सोच लो! जो ताकत काम करती है उसका नाम है 'गुरु'। वो एक अथॉरिटी है। जैसे यहाँ अफसर भर्ती करने आते हैं– सेंटर के भी आते हैं और सूबे के भी आते हैं। पटवारी, तहसीलदार और लेकिन सेंटर के अलग हैं और सूबे के अलग। जो सेंटर के हैं वो सूबे से अलग हैं। वो स्पेशल भर्ती करने आते हैं। गुनाह करे तो कर्मों का जाल है। लेने देने भी खत्म करने हैं। वो भी करना पड़ेगा। लेकिन सूबे वाले तो कुछ नहीं कर सकते। इस तरह जो सतगुरु के महकमे में आ जाते हैं, जो उस में भर्ती हो जाते हैं, सोच लो! बाद में तो रीतें बन जाती हैं। जो फकीर अथॉरिटी ले कर आते हैं। यह अथॉरिटी पर है। जैसे हम भी खड़े हैं, पास पुलिस खड़ी है। डाकू जा रहे हैं। हम कहें पुलिस को कि गोली चलाओ तो क्या वो चलाएगी? और अगर डी. एस. पी. कहे फिर तो चलाएंगे। लफ्ज़ तो वही हैं। इस तरह जिस फकीर को अथॉरिटी है, उसका वचन काम करता है। वो असली वचन है। वो जो सिमरण बताते हैं। यह लफ्ज़ तो बदलते रहे हैं और बदलते रहेंगे। उसमें पूरी अथॉरिटी है।

गुरु का वचनु वसै जीअ नाले॥

वो अथॉरिटी है सोच लो! उसके आगे कोई काल महाकाल नहीं ठहरता। वो नाम को प्रगट करना सिखाते हैं। नाम तो दूर पड़ा है। उसका सिमरण भी करे। यह आम आदमी का काम नहीं। ऐसे कई आते हैं जी मन नहीं लगता। मन लग जाए फिर तो सारा ही काम बन गया। अगर मन लग जाए फिर तो

सारा ही काम बन गया। इस मन को लगाने के लिए मुद्दतें लग जाती हैं। याद रखो इसके साथ सख़्त मुकाबला करना पड़ता है, आज़ादी मुश्किल से ली है न अंग्रेज़ों से? इस काल गवर्नमेंट से भी आज़ादी मुश्किल से मिलती है। जब कोई उठता था तो उसे कहते थे कि तुझे पटवारी बना देते हैं, तहसीलदार बना देते हैं। अगर न माने तो उसके खानदान तक तबाह करने जाते थे। इस तरह काल भी बहुत रुकावटें डालता है। कर्मों के जाल जो पहले पड़े हैं, वो आगे खड़े कर देता है। याद रखो! जब तक कर्म खत्म नहीं होते, आगे जा ही नहीं सकता। यह बीमारी है जी, यह दुख है, वो दुख है, वर मांगते हैं। यह चीज़े तो मिल जाएंगी मगर जन्म मरण के बन्धन नहीं छूटते। फिर कई-कई जन्म लग जाते हैं। अगर इस जन्म में ही भुगत जाये तो अच्छा है। जितनी तकलीफ आती है प्रेमीयों के उतना ही अच्छा है। यह एक किस्म का आप्रेशन है। कोई कहता है जी दवाई नहीं लगती। यह सब लेने देने के हिसाब हैं डाक्टरों के खत्म करने हैं। जब तक यह खत्म नहीं होते, आगे जा ही नहीं सकते। हाय! हाय! कृष्ण भगवान ने लिखा है कि मैं अपने सच्चे भक्तों को तीन दातें देता हूँ:

1. बीमारी
2. गरीबी
3. निरादरी

बोलो! कल भी आए थे कहते हैं कि जो लोग ताने मारते हैं कि तुम्हारे पास है क्या जो वहाँ जाते हो? देख लो! बस, ताने मारेंगे। गुरुनानक साहिब को ताने मारे, कबीर साहिब को मारे, पलटू साहिब को मारे हैं। फिर हम कौन हैं? सब को तकलीफें दी हैं फिर हम कौन हैं? उनके प्रेमीयो को तकलीफ दी है। सोच लो! यह सब सहने पड़ते हैं। साथ सिमरण करे। सतगुरु तो चौथा-पाँचवां हिस्सा कटवा देता है। कईयो का तो दसवां हिस्सा भी कटवाता है। जितने कर्म कट जाएं अच्छा है। जितनी बीमारी आ जाए अच्छा है। असूल न तोड़े, असूल तोड़ेगा तो सज़ा पाएगा। पहले ही फंसे पड़े हैं। असूल तोड़ कर आ जाते हैं जी माफी दो। ऐसे माफी मिलती है? ऐसे मिलती तो सारी दुनियां ले लेती। सोच लो! अभी भाखड़ा से स्विच बन्द कर दें तो सब खत्म, सोच लो! बीमारी इलाज से जाती है। यह भी सिमरन करेगा तभी होगा। तभी कर्म हल्के होंगे। अगर और बढ़ा लेगा तो उसकी सज़ा तो पाएगा। इस सिमरण के आगे यमदूत

नहीं आते चाहे थोड़ा ही है। काल नहीं आता हम रोज़ पढ़ते हैं।

प्रभ कै सिमरनि दूखु जमु नसै॥ प्रभ कै सिमरनि कालु परहरै॥

(262/14 मः 5)

इस के नजदीक नहीं आएंगे। अगर कोई कर्म होगा तो सतगुरु पहले कटवा लेगा। तकलीफ दे लेगा लेकिन मौत के वक्त साफ करके ले जाएगा। हमारे सामने कितनी रोज़ मिसालें आती हैं। कल भी एक चिट्ठी आई है। उन्होंने तो अन्दर देखा है। जितने इसके कर्म कट जायें अच्छा है। कर्मों के जाल में फंसा पड़ा है। सतगुरु ने तो निकालना है कर्मों के जाल से। हम और फंसते जाते हैं। जितनी चीज़ें मांगते हैं उतना ही दुख उठाते हैं।

क्या मांगू कुछ थिर न रहाई देखत नैन चले सब जग जाई॥

क्या मांगता है यह, इस तन ने जाना है। सादा खाओ, सादा पहनो। जितना समय निकाल सकते हैं निकालो। जितना सिमरन करोगे उतने ही ख़्याल निकलेंगे, हृदय पवित्र होगा।

प्रभ कै सिमरनि दूखु जमु नसै॥ प्रभ कै सिमरनि कालु परहरै॥

(262/14 मः 5)

जब आप सिमरन करते हो, ख़्याल को आंखों के पीछे इकट्ठा करके बैठो। जिस से नहीं बैठा जाता, वो चलता फिरता लगा रहे। जितना सिमरन करेगा उतना ही अमृत के पास पहुँचेगा। अगर आधे शरीर से भी निकल जाए, जिसे हम जड़ चेतन की गांठ कहते हैं, तो इसको पता लगने लग जाएगा कि कुछ है, तब करते हैं। यह जल्दी का काम नहीं। वो कहते हैं हाय, हम से संभाला नहीं जाता। हाय रोशनी हम से संभाली नहीं जाती। हाय यह नहीं होता। याद रखो! खैर, आहिस्ता-आहिस्ता का काम है। यह जल्दी का काम नहीं। इसमें मुद्दतें लग जाती हैं, सोचो! यह बूटा है, सख़्त मेहनत से पाया, गोडी की, पानी दिया। कितने दिनों में पाया फल? यह गन्दम है, देख लो! छः महीने में तैयार होती है। यह कहता है बस जल्दी से जल्दी मैं मालिक की दरगाह में पहुँ च जाऊं। दो दिन में थक जाता है। मालिक का रूप बनना कोई आसान काम नहीं। डाक्टरी, इंजनीयरिंग में कितना समय लगता है। बस इस तरह लगे रहो। यह चीज़ें न मांगो। दुख भी आने है सुख भी आने हैं, रोज़ यही बातें हैं। यही सुनाते हैं कि दुख सुख भोगने पड़ेंगे। तब तक यह खत्म नहीं होंगे जब तक भुगतें न। जितनी यह चीज़े मांगता है उतना ही फंसता जाता है। बस उसकी

रज़ा में रहे। सिमरण करता रहे, जैसे वो रखे। बाल बच्चों वालों को सुख नहीं। जिनके नहीं उनको भी सुख नहीं। देख लो घर-घर में जाकर तंग आए हुए हैं। माया वालों को भी शांती नहीं। वो इसके अन्दर है। इसको पता लग जाए कि शांती इसके अन्दर है। कम से कम ढाई घण्टे यह दसवन्ध है। चलते फिरते लगा रहे, बस! याद रखो! हक्क हलाल का खाओ, सादा खाओ, सादा पहनो, छुटकारे का बंदोबस्त करे। यह जन्म छुटकारे के लिए है।

पाठी– 'सन्तो की दया'

''सन्त अपने सत्संगीयों को दोबारा जन्म नहीं देना चाहते। वे चाहते हैं कि शिष्य के सारे कर्मों का भुगतान इसी जन्म में करवा कर उसे सतलोक में ले जाएँ। परन्तु वह जाना नहीं चाहता और बार-बार उनसे वहीं चीज़े मांगता है जिसे उस के कर्मों का बोझ और भी बढ़ जाए। अक्सर औरत, बाल बच्चे, धन दौलत, इज़्ज़त, विषय विकारों के सामानों की इच्छा करता है।''

मैनेजर साहिब जी–अन्दर जाते हैं यही बात होती है, बीमारी नहीं जाती, पैसा नहीं है, यह हो गया, वो हो गया। हाँ, जीः

पाठी– और अपने तन की बीमारियाँ दूर कराना चाहता है। अगर सन्त इन चीज़ों को दे दें तो फिर यही चीज़ें नए-नए कर्म करके उसके कर्मों का बोझ और बढ़ा दें जो सम्भवतः जीव के नए जन्मों में फंसने का कारण बन जाए। जीव बेचारे को पता नहीं कि उसके सिर पर तो पहले ही कर्मों का ऋण हद से ज़्यादा चढ़ा हुआ है।

मैनेजर साहिब जी–कब से बिछुड़े हैं मालिक से, युगों के युगों बीत गए। इसी जन्म में ले लो। कितना ताल्लुक पड़ा है। किसी का खाया, किसी को खिलाया, किसी को कुछ, किसी को कुछ। किसी को देना, किसी से लेना। बस इस तरह कोई कहीं जाएगा कोई कहीं जाएगा। सोच लो! घृतराष्ट्र से पूछा गया कि तू अन्धा क्यों हुआ? वो कहने लगा कि मुझे सौ जन्म की खबर है कि मैंने ऐसा कोई कर्म नहीं किया जिससे मैं अन्धा हूँगा। जब कृष्ण भगवान ने तव्वजो दी तो एक सौ छः साल पहले जन्म कोई कर्म किया था। उसका बदला आज भुगत रहा है। सोच लो! हमारा भी यही हाल है। यह कर्म भुगतने पड़ते हैं। बिना भुगते छुटकारा नहीं। यह चीज़े न मांगो। सिमरन करो तभी तुम्हारे अन्दर शांती आएगी तभी बीमारी भी जाएगी, दुख भी जल्दी दूर होंगे। मगर भुगतने पड़ेंगे, चाहे रोओ, पीटो।

पाठी– जिसका भुगतान करना जरूरी है। इसलिए सन्त अपने सत्संगीयों की इन प्रार्थनाओं को स्वीकार नहीं करते। चाहे वे इसके लिए कितना ही रोएं चिल्लाएं। जिस तरह एक मां अपने बच्चे को कभी ज़हर नहीं देती, चाहे वह कितना ही हठ करे। जब सन्त बीमारी या दुख भेजते हैं तो वे हमें स्वच्छ करने के उपाय होते हैं। बीमारी या दुख हमारे द्वारा किए गए कर्मों के कारण होते हैं। हमें तो प्रसन्न होना चाहिए कि बीमारी द्वारा हमारे बुरे कर्म कट रहे हैं। बीमारी कर्मों का बोझ हल्का करती हैं। वे उनका कर्जा चुकाती हैं।

मैनेजर साहिब जी–बंठिडे से आई है चिट्ठी। लिखा है कि वाक्य ठीक है। बीमारी में फायदा है। मैं बीमार रहा बहुत तकलीफ पाई। अब ऐसे हलका हो गया हूँ कि पूछो न। एक नई ज़िन्दगी मिल गई है। देख लो! बंठिडे का है शर्मा अभी नाम लिया है चार पांच साल हुए पर मेहनत बहुत करता है। शायद आया भी हो। हाँ, जीः

पाठी– यही कृष्ण भगवान ने लिखा है कि मैं अपने भक्तों को तीन दातें प्रदान करता हूँ– बीमारी, निरादरी और गरीबी।

जिस प्रकार कोई माँ अपने बच्चे को फोड़ा चिराने के लिए उसे डाक्टर के पास ले जाती है और ऐसा करने में उसका आशय बच्चे को कष्ट देना नहीं बल्कि उसे फिर से स्वस्थ करने का होता है। क्योंकि वह जानती है कि बिना इस कष्ट को सहे बच्चा स्वस्थ नहीं हो सकता। जब बच्चे का फोड़ा चीरा जाता है तो उसे कष्ट होता है और वह अपनी माता से लड़ता है। परन्तु जब वह स्वस्थ हो जाता है फिर समझने लगता है कि माता ने उसे जो कष्ट दिया था वह उसकी भलाई के लिए ही था। इस तरह जब कर्मों के कटने पर हमारा अनुभव खुलता है, फिर पता चलता है कि जो सन्त कर रहे हैं, वह हमारी ही भलाई को ध्यान में रख कर रहे हैं।

मैनेजर साहिब जी–जो कुछ भी कर रहे हैं हमारे फायदे के लिए है। सतगुरु ने तो हमारे कर्म कटवाने हैं। जितना जल्दी कट जाएंगे अच्छा है। नहीं तो देर लगेगी। कई कई जन्म लग जाते हैं। यह चीज़ें और मांगता है फिर फंसता ही जाता है। पुराने फकीरों के चिताए हुए जीव कितने ही आए हैं, देख लो! वो साबित कर गए हैं। दो तीन तो गुरुनानक साहिब के अब भी हैं। सच्चे पातशाह जी के हैं। यहाँ से नाम लेकर कितने आए हैं और आते ही पहचान लेते हैं। यह सुनो! देखो! क्या लिखता है। लेकिन मानता कोई नहीं।

पाठी–''धन धन सतगुरु तेरा ही आसरा''

धन धन सतगुरु के प्यारे,

''इस गुनाहगार को अपनी शरण में लेकर, जीव की धारा को बदलने वाले, सब भूलों को माफ करने वाले, इस फानी दुनियां से निकालने वाले, तीन जहानो की दौलत बख्शने वाले, दुनियादारों से अलग ही रूहानी दौरों के मालिक, समझ में नहीं आता कि क्या लिखूं मेरे सतगुरु पूज्य मैनेजर साहिब जी, धन धन सतगुरु कबूल फरमावें–

''शहनशाहे आलम! अर्ज़ है कि हज़ूर की मुश्कलबनामा मंजूर हुआ। मिलते ही जिस्म में एक करंट सा आ गया। अपने सेवक का कितना ख़्याल है आप को कैसे कहूँ। आप जी ने अपनी मकसद तहरीर में फरमाया है कि बीमारी प्रेमीयों के लिए अच्छी होती है। यह अपने आप में कभी न झटकाई जाने वाली एक सच्चाई है। अगर हजूर इज़ाज़त दें तो मैं अपना तजुरबा दिल खोल कर बयान करता हूँ। अब बीमारी के दौरान जो महसूस हुआ उस का खुलासा यानि निचोड़ यह है कि पहले तो यह महसूस हुआ कि जिस्म पर तमाम मैलें और गन्दगी होती है। जैसे कपड़े धोने से पहले धोबी भट्टी पर चढ़ाता है। तो सारी गन्दगी दूर हो जाती है। इस तरह यह शरीर गन्दगी और मैल से साफ होकर हल्का-फुलका हो गया है। जैसे कपड़े पर निखार आता है। उसी तरह से दुनियावी गन्दगीयों से साफ होकर, अन्दर से एक निर्मल और बहुत ही पवित्र आत्मा नमुनदार हुई है। जो कि हर वक्त अपने सतगुरु के चरणों में ध्यान लगाकर कहती रहती है कि ''धन धन सतगुरु तेरा ही आसरा''

क्योंकि रूह को इतना वक्त सिमरन में मिला है कि अब यह ध्यान किसी तरफ नहीं जाता। दुनिया में रहते हुए यानि इस बाहरी माया में और दुनियां से लगाव खत्म हो गया। सुरत एकान्त में एकदम बुलन्दियों पर पहुँच जाती है और अपने मकसद पर बड़ी आसानी से ठहर जाती है। यहाँ पर कई तरह से रंगों वाली, कभी छोटी, कभी बड़ी, कभी तेज़, कभी मध्यम और सुहावनी रोशनी के दर्शन होना, एक तरह से आम हो गया और पहले तो सूर्य ऐसे नमुनदार होता है कि जिस की रोशनी इस बाहरी सूर्य से हज़ारों करोड़ों गुना बुलन्द होती है। और रोशनी इतनी सुहावनी और आनन्द महक होती है, ऐसे मालूम होता है कि मैं नहा कर नई किस्म की नाव में आ गया। यह सब हज़ूर की शरण में आने से हुआ है। वरना बंदा किस काबिल था। बंदा तो दुनिया के कीचड़

के दलदल में फंसा हुआ था कि सौभाग्य से यह अपने मुर्शिद की सोहब्बत में मिली है। जिसने यह दौलत अपने इस अदने और खिदमतदार सेवक को बख़्शी है। दिल बस यही कहता है—''धन धन सतगुरु तेरा ही आसरा।''

मैनेजर साहिब जी—सोच लो भई! जितना करोगे उतना ही फायदा है। मेहनत करोगे तब यह दौलत मिलेगी। दुख-सुख भोगोगे तभी है। फिर रूह साफ होगी।

प्रभ कै सिमरनि मन की मलु जाइ॥
अंम्रित नामु रिद्ध माहि समाइ॥

(363/3 मः 5)

फिर अमृत के नजदीक पहुँचता है, अन्दर शांती आती है। मीरां क्या कहती है कि मैंने ऐसा सिमरन किया है। यह सिमरन तो बहुत ऊँचा है। अगर अपने ही नाम का कोई सिमरन करे तो अन्दर शांती आने लग जाती है। कोई अच्छी तरह करे। यह इतनी उत्तम चीज़ है, एक अंग्रेज़ ने लिखा हैः

पाठी— ऐसी अवस्था का प्राप्त होना एक मामूली बात है। जिसका जिक्र इंग्लैण्ड के मशहूर कवि टैनिसन ने अपनी किताबों में किया है जो उनको अपने ही नाम का सिमरन करने से प्राप्त हो जाया करती थी।

मैनेजर साहिब जी—अपने ही नाम का सिमरन, सोचो! सिमरन ऐसी चीज़ है। जिस का सिमरन करेगा, उसी के पास जाएगा, जो कोर्स करो। यह तो ऊँचे दर्जे का सिमरन है जो आप को मिला है। हाँ जीः

पाठी— ''बचपन से ही जब कभी मैं एकान्त में बैठा हुआ होता था तो मेरी एक जाग्रत समाधि लग जाया करती थी। यह अपने ही नाम के दो तीन बार चुपचाप सिमरन करने से लग जाया करती थी। यह अपने ही नाम का सिमरन करते हुए एकदम ही अपने आप भाव से परे निकल जाता था। और अपनी चेतनताई की अथाह गहराई में जाग उठता था। यह अवस्था साफ से साफ थी। यकीनी और पक्की और अक्ल से भरपूर थी जो शब्दों में वर्णन नहीं हो सकती। यहाँ मौत असम्भव मालूम होती थी। और एक सचमुच के अमर जीवन की प्राप्ति होती थी। मुझे शर्म आती है कि मैं इस अवस्था का एक अधूरा सा वर्णन दे सका हूँ। क्या मैंने यह नहीं कहा कि यह अवस्था वर्णनों की हद में आने वाली नहीं?''

मैनेजर साहिब जी—सोच लो! यह सिमरण तो मामूली सा है। तुम को वो चीज़ मिली है जिसके नजदीक काल-महाकाल नहीं आ सकते। कोई नहीं घेर सकता।

कैसे किया? क्या कहती है वो? मेन चीज़ सिमरन है। सिमरन से ही सब ख़्याल निकलेंगे। फिर अमृत आएगा, शांती आएगी। हाँ, जीः

पाठी– मीरां रो मन राम ही राम रटै।

मैनेजर साहिब जी–राम-राम रटने का मतलब यह नहीं कि राम राम करना है, वो सिमरन जो रविदास ने बताया था। पहले बहुत फकीरों के पास गई। सब ठगी निकली। फिर यह चीज़ मिली। हाँ जीः

पाठी– दासी रो मन राम ही राम रटै।
राम जी रटै कोई भगवान रटै॥
मीरां रो मन.....
राम नाम तू जप ले प्राणी कोटिक पाप कटै॥

मैनेजर साहिब जी–"कोटिक पाप कटै। सोच लो!

प्रभ कै सिमरनि मन की मलु जाइ॥ अंम्रित नाम रिद माहि समाइ॥
(363/ 3 मः 5)

पाठी– कोटिक पाप कटै।
मीरां रो मन.....
जन्म जन्म की खता पुरानी।

मैनेजर साहिब जी–जन्म-जन्म की खता पुरानी। जैसे वो धृतराष्ट्र का था। वो भी खत्म हो गए।

सिमरत नामु किलविख सभि काटै॥
धर्मराइ के कागर फाटे॥

पाठी– जन्म जन्म की खता पुरानी नाम ही लेत फटै।
मीरां रो.....

मैनेजर साहिब जी–किसी का कोई नुकसान उसके फायदे के लिए है। नुकसान है तब भी इसका फायदा है। फायदा है तब तो फायदा ही है। अगर बीमारी है तब भी इसके फायदे के लिए है। सतगुरु ने तो कर्म कटवा कर ले जाना है। यह खासकर प्रेमीयों के लिए है। औरों के लिए नहीं। हाँ, जीः

पाठी– कनक कटोरे अमृत भरयो पीवत कौन नटै॥

मैनेजर साहिब जी–कुछ आदमी ट्रैक्टर लेकर आए। उस पर से एक आदमी गिर गया और चार महीने तक अस्पताल में पड़ा रहा। इस तरह एक आदमी बस के ऊपर चढ़कर बैठा था। बस तेज़ थी। रास्ते में वृक्ष का टहना लगा और

नीचे गिर गया। ऊपर जो बैठे थे उन्होंने शोर किया और बस चार पांच किलोमीटर आगे निकल चुकी थी। जब बस पीछे मुड़ी तो वो भागता आ रहा था। उसको नुकसान नहीं हुआ। ट्रैक्टर वाले का मामूली था। उसको नुकसान हो गया। यह कर्म है। यह कर्मों के सिलसिले हैं जैसे लिखा है वैसे ही मरना है। जो मिलना है वही मिलना है। जो कर्मों अनुसार लिखवा कर लाए हैं वो जरूर मिलना है। ऐसे ही हाय, हाय लगी पड़ी है।

पहले बनी प्रालब्ध, पाछे बना शरीर॥
तुलसी यह अचरज है, मन नहीं धारे धीर॥

मन तू काहे डोलता है। पढ़ते हैं रोज़, सोच लो! सतगुरु साथ है। जो करता है इसके फायदे के लिए है। बस सिमरन करे। बस, इसका यह काम है और रोटी का काम है, और सिमरन करना। फजूल वक्त खराब करते हैं। जितना सिमरन करोगे उतना ही जल्दी जाओगे और शांती आएगी। घर बार नहीं छोड़ना। जो घर बार छोड़ कर गए वो धोखा खा गए। यह लेने देने भी खत्म करने है। यह लेने देने भी खत्म करने हैं। किसी को देना है तो किसी से लेना है। जब तक यह खत्म न हों, आगे जा नहीं सकता। लगे रहो बस! बाकी उसकी मौज़ पर छोड़ो। वो जानता है कि कैसे ठीक करना है।

पाठी– कनक कटोरे अमृत भरयो।

मैनेजर साहिब जी–'कनक कटोरे अमृत भरयो' फिर अमृत आ गया, हाय! हाय! यह मैलें निकलीं।

प्रभ कै सिमरनि मन की मलु जाइ॥ अंम्रित नाम सिद माहि समाइ॥

(363/3 मः 5)

फिर जितना आगे जाये आला से आला अमृत है। अब पहाड़ की तरफ जाओ ठण्ड, चोटी पर जाओ और ठण्ड। इस तरह ज्यों-ज्यों अन्दर जाएगा अमृत के पास पहुँच जाएगा। आला से आला अमृत है। नीचे का तो कईयों ने पीया है। लेकिन ऊपर का किसी विरले ने पीया है। असली जो है वो त्रिलोकी से पार जाकर मिलता है।

ऊपरि आदि सरब तिहु लोई 'सचु' नानक अंम्रित रसु पाइया॥

(1042/14 मः 1)

असली जो नाम है वो त्रिलोकी से पार जाकर मिलता है।

कहे कबीर जन गाइके, सुनो जगत इह गिआन॥
नीचे त्रिलोकी रहे, उपर सतिगुरु नाम॥

(944/14 मः 1)

बांधित तीन लोक बापुरा कैसे दरस लहै॥
नाव निशान सकल जग उपरि दादू देखत है॥

(दादू साहिब)

बाणी कहो, शब्द कहो, नाम कहो, एक ही चीज़ है। उसको प्रकट करना ही सच्चा सौदा है, बिल्डिगों का नाम नहीं। इन बिल्डिगों के लिए लड़-लड़कर मर गई सारी दुनियां।

इका बाणी इकु गुरु इको सबदु बीचारि॥
सचा सउदा हटु सचु रतनी भरे भंडार॥

(646/8 मः 3)

यह काम करना था। यह तो स्कूल थे। यहाँ से तो तालीम हासिल होती है कि चल यह कोर्स कर। पूज्य मस्ताना जी तो साफ ही खोल गए कि सन्तों ने जो सच्चा सौदा मुकर्रर किया है। वो आँखों के पीछे हैं। यहाँ से तो मार्ग शुरू होता है। टेप में भरे पड़े हैं 'वचन' फिर भी कोई नहीं मानता। यहाँ तो पूरी तालीम साफ ही खोल दी। गुरु भी अन्दर है, नाम भी अन्दर है, शब्द भी अन्दर है। अमृत भी अन्दर है। दीवारों पर भी लिखवा दिया पर माना कोई नहीं। बस इस तरह ही है। बाहर गुरु है वो भी इस शरीर रूपी मन्दिर में मिलता है। देख लो! वो गुरु भी अन्दर है। बाहर गुरु कैसे बने थे? जैसे किसी ने डाक्टरी की, उसको हम कहते डाक्टर। उस इल्म का नाम डाक्टर है। इस तरह यहाँ शब्द गुरु आता था, उसे गुरु कहते थे। बाद में नकले चल पड़ीं। गुरु पर गुरु चढ़ गए। गुरु नानक साहिब का रूप क्या था? 'शब्द'। गुरु अंगद साहिब का रूप क्या था 'शब्द'। गुरु अमरदास का रूप क्या था 'शब्द'

नानक आदि अंगद अमर सतिगुर सबदि समाइउ॥
धनु धनु गुरु रामदास गुर जिनि पारस परसि मिलाइउ॥

(1407/2 म : 5)

सोचो! शब्द रूप में आया। देह तो एक औज़ार है। छोड़ा और शब्द में समा गए। जितना मास्टर से प्यार करोगे उतनी ही विद्या आएगी। जितना सतगुरु से प्यार करोगे उतनी ही विद्या आएगी। जितना सतगुरु से प्यार करोगे तो उतना

ही अन्दर बसेगा, उतना ही सिमरन आएगा। उनको गुरु कहते थे। बाद में नकलें चल पड़ीं।

सतिगुर नो सभु को वेखदा जेता जगतु संसारु॥
डिठै मुकति न होवई जिचरु सबदि न करे वीचारु॥

(594/10 मः 3)

उनके वचनों पर चले तभी तालीम हासिल करे। कैसे करे? बाहर प्यार करने का यही फायदा है कि ध्यान उस तरफ रहेगा। ध्यान रहेगा तो सिमरन भी बनेगा।

पाठी– कनक कटोरे अमृत भरयो, पीवत कौन नटै।
मीरां रो मन.....
मीरां के प्रभ हरि अविनाशी तन मन ताहि पटै।
मीरां रो मन.....

मैनेजर साहिब जी–फिर तन मन में खुशी ही खुशी है। अविनाशी पुरुष मिल गया।

पाठी– गुरु का वचन वसै जीअ नालि।
जलि नहीं डूबै तसकरु नाहि लेवै, भाहि न साकै जाले॥

मैनेजर साहिब जी–सेंटर का कोई अच्छा मुलाज़म है। वहाँ टैक्स वाले खड़े हैं। जब उनको पता चलता जाता है तो सब हाथ बांध देते हैं कि जा भई! इस तरह इसके नजदीक भी कोई नहीं आता। न काल न महाकाल।

पाठी– भाहि न साके जाले॥
गुरु का वचन.....
सिमरउ सिमरि सिमरि सुख पावो सासि सासि समाले।

मैनेजर साहिब जी–सांस सांस समाले।

इक पलु खिनु विसरहि तू सुआमी जाणउ बरस पचासा॥

(601/3म : 3)

एक पल भी अगर अन्दर ख़्याल टिक जाए।

एक निमख जो सिमरन महि जीआ॥
कोटि दिनस लाख सदा थिरु जीआ॥

(239/2 मः 5)

सदा की ज़िन्दगी मिल जाए।

एक चित जिन इक छिणु धिआइउ॥ काल फास के बीच न आइउ॥

(अकाल उसतत)

मैनेजर साहिब जी–हाँ जी। इसको टिकाना ही मुश्किल है। लगा रहे बस, जैसा भी टूटा फूटा।

जैसा वित होय तैसा बरतै, अपना बल नाहि हारै॥

मुश्किल भी है। तभी उन्होंने लिखा है। क्यों किल्ली से केश बांधे? मन से मुकाबला रखे तब है कि ऐसे ही बन जाता 'सिमरण'। दिन को सेवा करनी रात को किल्ली से केश बांधने। इसलिए कि तन का प्यार छूट जाए और कोई ख़्याल ही न रहे। जब रात को बैठेगा तो सेवा का ख़्याल रहेगा या फिर सिमरण का या साध संगत का और तो कोई ख़्याल नहीं आएगा। इसलिए तन मन के बंधन तोड़े और किल्ली से केश बांधे। तब पाया कि ऐसे ही? गुरुनानक साहिब को क्या ज़रूरत थी, देख लो! खुद अकाल पुरुष आए। हमारे समझाने के लिए बारह साल रोड़ियों पर बिस्तर रखा। दुनियां ने मखौल बनाई है भक्ति। हाँ जी।

पाठी– सिमरउ सिमरि सिमरि सुख पावो सासि सासि समाले॥

गुरु का वचन.....

मैनेजर साहिब जी–बहुत वहम पड़े हुए हैं पुरानी रीतों के। यह निकाले तब है। यह करने नहीं देते। हाँ सुनो!

पाठी– ''दीक्षित हुई रूह को अपने घर में जाने में देरी''

मैनेजर साहिब जी–पहले संसार की चीज़ें मांगता है, फिर। हाँ, जी

पाठी– जब सिक्ख सतगुरु के घर में नया जन्म प्राप्त कर ले तो उसको चाहिए कि वह पिछले कर्म, धर्म, अपनी अक्ल और चतुराईयां सब छोड़कर पूरे तौर पर सन्तों की शरण में पड़ जाए। क्योंकि वह उसका जन्म मरण नहीं मुका सके और मालिक की प्राप्ति नहीं करवा सके।

मैनेजर साहिब जी–हम रीतों में फंसे पड़े हैं। हमारी यह रीतें हैं। कभी सोचा है कि कोई तड़प उठे? कोई काम घटा, कोई क्रोध घटा, मोह घटा कि ऐसे ही रीतों रीतों में ख़्याल रह गया? असली चीज़ ही छोड़ दी। रीत वो है जिससे मालिक का प्यार उठे। अन्दर कुछ प्राप्ति हो।

जालउ ऐसी रीति जितु मैं पिआरा बीसरै॥
नानक साई भली परीति जितु साहिब सेती पति रहै॥

(590/2 मः 1)

रीतों में ख़्याल रह गया। मालिक ही बिसर गया। यही मुसलमान फकीर कहते हैं कि रीति वो है जिससे मालिक का प्यार उठे। कुछ प्राप्ति हो। हाँ जी।

पाठी– जो साधन सन्त उसकी हिदायत के लिए बताएं कि उस पर चलना ही उसका सच्चा कर्म, धर्म है, वही उस की भक्ति है।

मैनेजर साहिब जी–मौके-मौके पर सन्तों ने हिसाब से काम लिया है। वो कानून बनाए हैं। अब बाणी को लेकर हम मारवाड़ में जाएं तो वो क्या समझेंगे? उनको वैसे ही तरीके से समझाया जाता है। हिसाब से उन को लगाया। पूज्य मस्ताना जी ने किसी को चांदी, किसी को सोना, कपड़े कि आहिस्ता-आहिस्ता कोई न कोई समझ जाएगा, बोलो! बच्चों को पढ़ाते हैं। एक बादशाह था। उसका बेटा था एक। वो पढ़ता नहीं था। सारा दिन कबूतर उड़ाया करता था। एक फकीर आ गया। उसने पूछा कि कैसे चल रहा है? कहने लगे कि यह मेरा लड़का है। पढ़ता नहीं। सारा दिन कबूतर उड़ाता है। कहने लगे कि अच्छा कोई बात नहीं। उसको बुलाया और पूछा कि कितने कबूतर हैं? कि जी थोड़े हैं। और ले लो। और ले लिए। अब कैसे पहचानोगे इनको? कि इसका नाम अलफ, इसका नाम बे, इसका यह। आहिस्ता-आहिस्ता पढ़ने लग गया। बस किसी भी हिसाब से लगाते हैं।

पाठी– अगर सिक्ख फिर भी पिछले कर्मों-धर्मों में लगा रहे तो वह उन्नति की क्या आशा रख सकता है? ऐसा सिक्ख अपनी मंज़िल के तय करने में खुद ही देरी करता है।

कर्म धर्म सब छोड़ के पड़े शरन में जाइ॥
पड़े शरण में जाइ तजी बल बुधी चतुराई॥
जप तप नेम आचार नहीं जानो कुछ भाई॥
पूजा ज्ञान ना ध्यान तिलक नहीं देवै जानो॥
जोग जुगत किछु नाहीं तीर्थ व्रत मानो॥
पलटू मैं जीते मुआ नाम भरोसे पाई॥
कर्म धर्म सब छोड़ के पड़े शरण में जाई॥

(1/154)

मैनेजर साहिब जी–यह तो पलटू साहिब ने कहा है और गुरु नानक साहिब कहते हैं। क्या?

पाठी– गुरु नानक साहिब फरमाते हैं कि काल ने मोह का बड़ा भयानक समुद्र

पैदा किया है। उसमें हर मनुष्य गोते खा रहा है। दुनियां पुराने रस्मों रिवाज और शरीअत के बन्धनों में ऐसी जकड़ी पड़ी है कि उसका छोड़ना मुश्किल हुआ पड़ा है। कोई बिरला गुरुमुख ही इनको छोड़कर भवसागर से पार होता है। अगर गुरु दीक्षित होकर सिक्ख और तपों-जपों में लगा रहे; उसका दुनियावी मोह नहीं टूटता और जन्म मरण खत्म नहीं होता। ऐसा सिक्ख अपने निज घर जाने में खुद ही अपनी देरी करता है। मगर सतगुरु तो हर समय दया करता और उसकी सम्भाल करता है। उसको जल्दी घर पहुँचाना चाहता है।

एतु मोहि डूबा संसारु॥ गुमुखि कोई उतरै पारि॥
एतु मोहि फिरि जूनी पाहि॥ मोहे लागा जम पुरि जाहि॥
गुर दीखिआ ले जपु तपु कमाहि॥ न मोहु तूटै न थाइ पाहि॥
नदरि करे ता एहु मोहु जाइ॥ नानक हरि सिउ रहै समाइ॥

(356/7 मः 1)

मैनेजर साहिब जी–''नानक हरि सिउ रहै समाइ,'' याद रखो मेन चीज़ सिमरण है।

सिमरन मार्ग सहज का सतगुर दिया बताए।
स्वांस स्वांस सिमरन करो इक दिन गुरु मिल जाए॥

(कबीर साहिब)

छोटी सी चीज़ है लेकिन है भी बड़ी।

सिमरन से सुख होत है, सिमरन से दुख जाए।
कहे कबीर सिमरन कीए साई माहि समाए॥

(कबीर साहिब)

सिमरन किसे कहते हैं? किसी चीज़ को बार-बार याद करने को। जिसको बार-बार याद करता है उसका रूप बन जाता है। जमींदार अपनी खेती का सिमरन करता है। यह फलानी फसल है, यह फलाना बीज अच्छा है। यह फलाना बीज ज़्यादा पानी मांगता है। यह करना है वो करना है तभी खेती होती है। दुकानदार अपनी दुकान का करता है। जो मालिक का सिमरन करता है वो करना है, यह करना है। साध संगत में जाना है। फिर वो उसका रूप बन जाता है।

'सिमरन मार्ग सहज का'

आसान भी है, सहज अवस्था में पहुँचने का है। चौथे लोक में पहुँचने का।

सिमरन मार्ग सहज का सतगुर दिया बताए।
स्वांस स्वांस सिमरन करो इक दिन गुरु मिल जाए॥

जब सभी ख़्याल निकाले तो सतगुरु आ जाता है। पहले वो फकीरों के रूप में आता है। फिर आगे ले जाता है। आगे धोखे है। वो खुद ले जाए तो ले जाए। तभी उन्होंने लिखा हैः

नानक कचड़िआ सिउ तोड़ि ढूढि सजण संत पकिआ॥
ओइ जीवँदे बिछुड़हि ओइ मुइआ न जाही छोड़ि॥

(1102/3 मः 5)

सजण सेई नालि मैं चलदिआं नालि चलन्हि॥
जिथै लेखा मंगीए तिथै खड़े दिसन्हि॥

(729/ मः 1)

सारे कर्म कटवा कर आगे ले जाता है। पहले यहाँ कटवाता है फिर जब शरीर से निकलता है। पहले कारण मण्डलों में, फिर सुक्ष्म में, फिर जब उसके देश में पहुँचता है फिर पूरी शांती है। रोज़ पढ़ते हैंः

अँनदु भइआ मेरी माए सतिगुरु मै पाइआ॥
सतिगुर त पाइआ सहज सेती मनि बजीया बाधाइआ॥
राग रतन परवार परिआ सब्द गावण आईआ॥

(गुरु अमरदास)

सोच लो! सहज सेती, सहज अवस्था में। मेन चीज़ सिमरन है। सिमरन से सब कुछ बन जाता है। हाँ जी। रेडियो में कितनी आवाज़े हैं, बम्बई, कलकता, इंग्लैण्ड। इस तरह अन्दर भी हैं ब्रह्मलोक, शिवलोक, इन्द्रलोक। एक दूसरे से मिलते जुलते हैं, सोच लो! वो खुद ले जाए तो ले जाए। पहले यहाँ आदमी के चोले में आकर समझाता है और फिर अन्दर उसी रूप में जाकर मिलता है। कहता है कि यह शब्द पकड़। अन्दर धोखे हैं कदम कदम पर।

बिखड़े दाउ लघावै मेरा सतिगुर॥ सुख सहज सेती घर जाते॥

(1185/12 मः 5)

पाठी– सिमरउ सिमरि सिमरि सुख पावो सासि सासि समाले॥
गुरु का.....

मैनेजर साहिब जी–खेती करते हैं, हल चलाते हैं, ख़्याल कभी कहीं है तो कभी कहीं, वो सिमरन में लगाए। दुकान पर वक्त मिला तो सिमरन में लगाये। बीबीयाँ

रोटी बनाते समय सिमरन में लगाएं। उस रोटी में भी असर पड़ेगा। हाँ, जीः

पाठी– सासि सासि समाले।

गुरु का वचन.....

मैनेजर साहिब जी–कोई सिमरन करता है, खेती करता है। वो कहते हैं खेती में बरकते पड़ती हैं। हर काम में बरकत पड़ती है।

पाठी– इह लोकि परलोकि संगु सहाई, यत कत मोहे रखवाले।

मैनेजर साहिब जी–लोक, प्रलोक, देखो! यह अथॉरिटी है उनको मिली हुई। इसके नजदीक कोई नहीं आता। न काल न महाकाल। यही दादू साहिब कहते हैं। जो अन्दर गए हैं सब की एक तालीम है। हाँ जी, सुनोः

पाठी– सच्चा सिमरन या गुरु मन्त्र कैसा होता है और उसके जपने से क्या लाभ है?

इसके बारे में दादू साहिब फरमाते हैं कि यह मन्त्र गुप्त भाषा योग्य है जो सिर्फ उत्तम जिज्ञासुओं को ही मिलता है।

मैनेजर साहिब जी–हाँ, बाद में हमारा बढ़ जाए, हमारा फिरका बढ़ जाए। बाद में यह सब हो जाता है। सिर्फ उत्तम जिज्ञासुओं को, सोचो! भर्ती करते हैं न, वो भी देखते हैं कि आगे चल पड़ेगा? स्कूल में दाखिल करवाते हैं वो भी देखते हैं, क्या सही है। हर किसी के नसीब में नहीं है। हाँ जी!

पाठी– यह मन्त्र जन्म मरण के फन्दे काट कर अमर कर देता है। दो दिली की हालत मिटा कर सदा एक रस हालत में रहने वाला बना देता है। सब से निर्भय कर देता है और राम बना देता है। यानि जिस तरह लकड़ी में आग होती है उस तरह आत्मा को सब जगह रमा देता है और आत्मा को निजस्वरूप में मिला देता है।

यह मन्त्र सदा की ज़िन्दगी प्रदान करता है। अखुट बल वाला बना देता है। आत्मा को सुन्दर बना देता है। सबका शिरोमणि यानि सबसे बड़ा बना देता है और ऊँची पदवी को पहुँचा देता है। निर्मल और पाक कर देता है और निरंकार की प्राप्ति करवा देता है।

मैनेजर साहिब जी–अकल नहीं छोड़ती। पूज्य मस्ताना जी क्या पढ़े थे? ख़्याल ही था सिमरन में बस। सिमरन करते-करते तभी हासिल किया है। यह अक्लें ही खराब करती हैं। देख लो! न इस इलाके के रहने वाले, न बोली जाने। बागड़ को भी सीधा कर लिया। उनको बोली न समझ आए। प्यार की बोली मीठी

लगती थी कि हमें तो बोलते ही मीठे लगते हैं। बस इसी में फंस गए, हाँ जीः

पाठी– उसको जपने वाला अलख यानि किसी के लखने से परे हो जाता है। अक्ल कुल हो जाता है। यानि सब अक्लों का मालिक बन जाता है। उसकी तह तक कोई नहीं पहुँच सकता। उसका कोई पार नहीं पा सकता यानि ऐसी जगह पहुँच जाता है जहाँ कोई नहीं पहुँच सकता। उसका कोई अन्त नहीं पा सकता और वह कुल का स्वामी बन जाता है। यह मन्त्र आत्मा के अन्दर नूर पैदा करता है। उसके तेज को बढ़ाता है।

मैनेजर साहिब जी–देख लो भई! यह मन्त्र आत्मा के अन्दर नूर पैदा करता है। उसने चिट्ठी में लिखा था न कि रोशनी आई है, सूर्य आया है। हाँ, जी।

पाठी– उसके तेज को बढ़ाता है। उसके अन्दर ज्योति को प्रगट करता और अन्दर प्रकाश कर देता है। सभी स्थानों पर सहायता करता हुआ परमधाम पहुँचा देता है।

मैनेजर साहिब जी–लोक परलोक देख लो! छोटी सी चीज़ है। दुनिया पढ़ने पढ़ाने में रह गई। सुनी किसी ने भी नहीं? सब पढ़ने पढ़ने में लगे हैं। असली चीज़ तो ली ही नहीं।

पाठी– इह लोकि परलोकि संग सहाई यत कत मोहे रखवाले।

गुरु का वचन.....

निरधन कउ धनु अंधुले कउ टिक मात दूधु जैसे बाले।

मैनेजर साहिब जी–यह एक शक्ति है। सिमरण कर-कर के अन्दर शक्ति मिलती है। वो आँख खुल जाती है।

पाठी– निरधन कउ धनु अंधुले कउ टिक मात दूधु जैसे बाले।

मैनेजर साहिब जी–बच्चा माँ के दूध से पलता है। सिमरन से आत्मा को खुराक मिलती है। सिमरन से आत्मा को खुराक मिलती है।

पाठी– मात दूधु जैसे बाले।

गुरु का वचन.....

सागर में बोहिथु पाइयो हरि नानक। करी किरपा किरपाले॥

मैनेजर साहिब जी–'सागर में बोहिथु' तभी उन्होंने लिखा है। दादू साहिब ने लिखा है। वो ऐसा सिमरन है मालिक की दरगाह में पहुँचा देता है।

पाठी– सागर में बोहिथु पाइयो हरि नानक। करि किरपा किरपाले॥

गुरु का वचन.....

जे कोउ अपनी ओट समारे अपनी ओट समारे॥

जैसा वित तैसा होय वरतै अपना वलि नहीं हारै॥

मैनेजर साहिब जी–काम में बरकत नहीं पड़ती पर कोशिश तो करता है पूरी, बस यह भी इस तरह है लगा रहे। हाँ जीः

पाठी– जैसा वित तैसा होय वरतै।

मैनेजर साहिब जी–जिसको पूछा जी काम नहीं चलता, यह हो गया, वो हो गया। यह करे तो उसमें भी बरकतें पड़ जाएं। हाँ जीः

पाठी– जैसा बित जैसा होय वरतै अपना वलि नहीं हारै॥

गुरु का वचन.....

जल नहीं डूबै तस्करु नहीं लेवै॥

मैनेजर साहिब जी–इसका उल्टा नुकसान होता है। सुनो! इसका बिसारना ही बड़ा पाप है जिस को नाम मिला है।

पाठी–'सिमरन न करने के दोष'

किसी कामिल उस्ताद के बताए हुए सिमरन को बिजली पर लगाई हुई एक मशीन से तुलना की जा सकती है। जिस तरह बिजली पर लगाई हुई एक मशीन हाथ से चलाने वाली मशीन से सैकड़ों गुना ज़्यादा काम करती है। अगर किसी चीज़ को बनाने वाली मशीन है तो मिनटों में चीज़े बना बना कर ढेर लगा देती है। अगर वह काटने वाली मशीन है तो मिनटों में काट-काटकर ढेर लगा देती है। इस तरह कामिल उस्ताद के बताए हुए सिमरन का हाल है।

दादू साहिब फरमाते हैं कि नाम लेकर सिमरन न करने का पाप इतना ज़्यादा है। जितना कि सारी दुनियां में हो रहा है।

मैनेजर साहिब जी–बोलो! औरः

पाठी– और उस सिमरण के करने का लाभ इतना ज़्यादा है। मिनट-मिनट पर सैकड़ों जन्मों की मन की मैले साफ करता जाता है।

मैनेजर साहिब जी–बोलो! फायदा उठा लो। अगर नहीं करता तो पाप करता है। कई जन्म लग जाते हैं, फिर छोड़ता नहीं। गुनाह भी करता है, फिर भी उसको छोड़ता नहीं। यह महकमा है ही ऐसा। गुरुनानक साहिब के एक जीव ने खोटे कर्म किए, नरकों में गया। सज़ा दिलाई। फिर भी निकाल कर लाए। छोड़ा तो नहीं। काल जल्दी से सन्तों के चिताए हुए जीवों को पकड़ता नहीं।

क्योंकि जब गुरुनानक साहिब अन्दर गए जिन्होंने दर्शन भी किए, वो भी साथ आ गए। उनको दोबारा जन्म मिला। अगला जन्म देकर नाम दिया। वो भी डरता है कि सभी जीव चले जाएंगे। जल्दी से नहीं पकड़ता। याद रखो! चाहे यह पाप उठा लो चाहे सिमरन करके फायदा उठा लो।

जेता पाप सब जग करे, तेता नाम बिसारे होई।
दादू राम, सम्भालिए, ऐता डारे धोई॥

पूज्य मस्ताना जी का एक वचन–

''लख लख लानत जेहड़ा नाम लैके जपदा नहीं। ऐसा पाप दुनियां में कोई नहीं। होर सारे पाप उतर जाएंगे, क्योंकि वह पाप तो राम उतार देगा। जो राम से ठगी करे, वो किस तरह उतारे? गऊ हत्यारा बख़्शा जाएगा, गुरु हत्यारा नहीं बख़्शा जाएगा। बख़्शा तब जाएगा जब शैतान मन का कहा न करे।''

मैनेजर साहिब जी–याद रखो सिमरन करोगे तो सुख पाओगे। ऊँची चीज़ मिली है कदर नहीं, चार पैसे खर्च हों तो कदर है पर इसकी कदर नहीं। देख लो भई! चलो बस!

धन धन सतगुरु तेरा ही आसरा

सत्संग

'खास वचन'

पाठी– लाहनत ओए लाहनत तैनूं, कर्मा दिआ मारिआ॥
अपना तूं चंगा मंदा, कदे न विचारिया॥
लाहनत ओए.....
गफलत दी चादर ओए तूं सौं गया ताण के॥1॥
पैरीं कुहाड़ा मारिया मूरखा तू जाण के।
भजन न कीता ऐवे वक्त गुज़ारिया॥
अपना तूं चंगा.....
आकड़ के तुरदा जावें ठोकरां तू मारदा॥2॥
हस्ती नूं अपनी मूरख क्यों नी सम्भालदा।
जिसने ग़रूर कीता बाजी ओह हारिया॥
अपना तूं चंगा.....
पाये चमकीले वस्त्र इत्र लगाएं तूं॥3॥
काल नगारा वज्जे फेर पछताएं तूं।
छडना जदों पै गया कोठा लिपया संवारिया॥
अपना तूं चंगा.....
बड़े बड़े राजियां दे ना दिसदे निशान ओए॥4॥
जित्थे सन हसदे खेले उत्थे शमशान ओए।
कबरां हन उत्थे जित्थे महल उसारिया॥
अपना तूं चंगा.....
विषय ते विकारां वल्ल मन तेरा जांवदा॥5॥
सतगुरु दे भजन बल्ल ज़रा भी नहीं आवंदा।
शर्म हया ना आवे तैनूं ओह नकारिया॥
अपना तूं चंगा मंदा, कदे न विचारिया॥
लाहनत ओए.....

खास वचनः

पाठी– झिमि झिमि वरसै अम्रितधारा॥ मनु पीवै सुनि सबदु वीचारा॥
झिमि झिमि वरसै.....
अनद विनोद करे दिन राती॥ सदा सदा हरि केला जीउ॥
झिमि झिमि वरसै.....
सभु किछु घर महि बाहरि नाही॥ बाहरि टोलै सो भरमि भुलाही॥
गुर प्रसादी जिनी अंतरि पाइआ॥ सो अंतरि बाहर सुहेला जीउ॥
झिमि झिमि वरसै.....
जन्म जन्म का बिछुड़िआ मिलिआ॥ साध किरपा ते सूका हरिआ॥

मैनेजर साहिब जी–सुनो भई बात, जितने फकीर मालिक की दरगाह से आए हैं उन सबका असली मतलब यही है। यह अपने सबके अन्दर है। सबके अन्दर है अमृत। वो अमृत सबके अन्दर बरस रहा है बल्कि ऊँचे का तो कोई नहीं पीया, नीचे भी है। आँखों तक आए तब यहाँ भी है। जो असली है वो त्रिलोकी से पार जाकर मिलता है। फकीर इसलिए आते हैं कि वो अमृत पी लो। गुरुनानक साहिब जी ने कहा है–

नौ दरवाजे कोट दे दसवां नूर महल॥
हौज हयाती पुर भरे तिस विच कमल अचल॥

यह नौ दरवाज़े हैं इस मन्दिर के हैं। दो आँखों के, दो कानों, दो नाक के छः, एक मुँह का, दो टट्टी पेशाब के, यह नौ दरवाज़े बन्द करे, दसवां अन्दर खोले। वहाँ अमृत के हौज़ भरे पड़े हैं। आला से आला कौन सा है? कमल का जो दसवें द्वार में मिलता है, वो असली है।

ऊपरि आदि सरब तिहु लोई 'सच' नानक अंम्रित रसु पाइआ॥
(1042/14 मः 1)

सोचो! वो पीये तो जन्म मरण के बन्धन छूटते हैं। यह मेहनत की चीज़ है। मेहनत कोई करता नहीं। जो मौके पर फायदा उठा गया, उठा गया। वो कुछ खट भी गया। नहीं तो कई-कई जन्म लगते हैं। ऐसे धक्के खाते हैं। पर मानता कोई नहीं।

दादू कहत पुकारी कोई माने नहीं हमारी॥

पूज्य मस्ताना जी फरमाया करते थे कि दादू साहिब कहते हैं कि हमारी

कोई नही मानता। इस तरह मस्ताने गरीब की भी कोई नहीं मानता। दो पाई का आदमी आ जाए उसकी मानेंगे लेकिन हमारी कोई नहीं मानता। देख लो भई! साथ रहने वालों ने नहीं मानी। आज तक साथ रहते हुए किसी ने नहीं मानी। बोलो भई! फकीर रो-रोकर गये हैं। देख लो भई! गुरुनानक साहिब के साथ दो थे, बाला और मरदाना। मरदाना मानता ही नहीं था कि मैं तो वहाँ रहूँगा जहाँ–

टके सेर खाजा, टके सेर भाजी॥

बोलो भई! फंस गया न। फिर गुरु गोविन्द सिंह जी का लांगरी, माया के लिए बच्चों को चिनवा दिया, बोलो भई! उसका अब छुटकारा हुआ है। वो तो फिर दया करते हैं। हामिद का बैठा है कोई, हामिद वाले? कोई नहीं आया। वहाँ एक लड़का है छोटा सा। उसने आप ही बता दिया कि गुरुनानक साहिब का चिताया हूँ। वो ताकत फिर छोड़ती नहीं। हर फकीर के मौके पर ऐसा हुआ है। साथ रहने वालों ने कदर नहीं की। एक दूसरे की मानेंगे। फकीरों की कोई नहीं मानता। याद रखो! दुनियां जिस साधू से ताल्लुक पड़ता है उसके पीछे लग जाती है। बस दोनों का बेड़ा गर्क। याद रखो! बाद में कई-कई गद्दीयां बन गईं। इसलिए ही बनी हैं और नहीं। फकीर आते हैं चले जाते हैं। बाद में जो लायक होता है उसको समझा देते हैं, बस। बाद में फिर झगड़े, देख लो! पीछे गुरुनानक साहिब के लड़के ही नहीं माने। गुरु अंगद साहिब के हुक्म में रहते। गुरु अंगद साहिब के लड़कों ने लातें मारीं, बोलो भई! देख लो! वो तो दीनता रखते हैं। नीचे गिरा दिया गुरु अमरदास जी को फिर भी उन्होंने उनकी टांगे दबाईं कि कहीं कोई हड्डी तो नहीं चुभी, बोलो भई! देख लो! उन्होंने संगत को कहा कि आप बैठो हम जाते हैं। गुरु अर्जुन देव जी के मौके पर पृथ्वी चंद मुख़ालफत ही करता रहा। गुरु तेग बहादुर जी को मत्था टेकने नहीं दिया। ऐसे होता है। यहाँ भी होगा ऐसा, देख लो। अभी भी हैं, कई ऐसे हो रहे हैं। याद रखो! किसी का कहना न मानो, सिमरन करो बस अपना यह है। यहाँ एक ही है बस वकील। देखो भई! कैसा सत्संग करता है जिनके गए हैं। याद रखो भई! किसी के पीछे न लगना। कई फिरते हैं ऐसे इधर-उधर बकते। कोई कुछ बकता है, कोई कुछ बकता है। एक-दूसरे की निन्दा चुगली रह गई बस और क्या? लेकिन करना भी क्या? रो-रोकर गए हैं फकीर। मन करने नहीं देता। मन और माया घेरते हैं फिर, यह सुनो भई! बस सिमरन करो सुख पाओगे।

किसी की न मानो जिसने सुख लेना है। हाँ, यह है भई! दो जगह है। ऐब उठाते हैं एक दूसरे के। गुण नहीं उठाते। फायदा वो उठाता है जो गुण उठाता है, याद रखो। यह रास्ता है कि सुधर जाए, सुधर जाए। घर में दो बच्चे होते हैं। एक खराब होता उसको सुधारना ही मुश्किल हो जाता है। सोचो, वो काबू नहीं आता। फकीर तो कोशिश करते हैं कि सुधर जाए, हाँ जीः

पाठी– ''साधुओं के लिए''

मन भजन पर बैठना तो कयामत समझता है।

गन्दे कर्म– जब मालिक रोटी देवे। दूजे यह कि बाहर कोई काम-कार न होवे, फिर भजन करे। मन तो इसका दुश्मन है। इस नूं बेहला रखोगे तो यह तुम्हारी गर्दन तोड़ेगा। या भजन करो, या पोथी पढ़ो, या सेवा करो ताकि एक श्वांस भी बिरथा न जाए, या किसी को नेक उपदेश दो अगर कुछ लेना है तो। मन को कभी भी बेहला न बैठने दो। अगर चौरासी में जाना है तो मन को जो मर्ज़ी करने दो। गुरु ने नाम दिया। हम ने कमाई करके पर्दा खोल लिया और जीते जी सचखण्ड पहुँच गए। यह साधू का धर्म है। जो शिकायतें करते हैं कि हमें काम सताता है। मन को बेहला रखोगे तो मन में ऐसे ही ख़्याल उत्पन्न होते हैं। तुम्हारे से तो गृहस्थी अच्छे हैं।

मैनेजर साहिब जी–हाँ जी, तुम्हारे से तो गृहस्थी अच्छे हैं, बोलो भई! जेली को पकड़ कर रखते हैं न, सुधारने के लिए? यह भी जेली है, कोई-कोई सुधरता है, बाकी बस!

पाठी– जो बीस-बीस साल, तीस-तीस साल बाहर रहते हैं, रुपया कमा कर लाते हैं और घर बैठकर खाते हैं। जायदादें बनाते हैं और भजन करते हैं।

मैनेजर साहिब जी–हाँ जी, देखो भई! बोलो भई! किसी की न मानना। जिस को हुक्म होता है वही चीज़ है। बाहर भी इस तरह, बाहर लिखकर रखा है कि साधुओं के लिए कोई चीज़ न लाओ। यह गृहस्थी ही खराब करते हैं उनको, हाँ जीः

पाठी– ''डेरे वाले साधुओं को लानत।'' पीछे रोओगे! देखो भई! संगत का बड़ा प्रेम है। दुनियां में सच्चा परमार्थ यही है। दुनियां सत्संग सुनकर कदर करती है मगर तुम डेरे वालों को कदर नहीं।

मैनेजर साहिब जी–बोलो भई! यह सच्चे पातशाह जी के वचन हैं दोनों ही। हाँ जीः

पाठी– तुम्हारा तो यह हाल है कि जिसकी मैं कदर करता हूँ तुम निरादरी करते हो या दुश्मनी। हमें तो भजन करने वाले प्यारे हैं और हमें क्या ज़रूरत है किसी की? जो तन मन लगाकर हमारी सेवा करे चाहे स्त्री हो, पुरुष हो, हमें प्यारा है। तुम डेरे में बैठे बातें करते हो। जरा आँख खोल कर बाहर जाकर देखो तुम्हें भी हमारा पता चले। 1900 को नाम दिया है इस दौरे में और अभी लाहौर अमृतसर वालों को समय नहीं दिया। महाराज जी कहा करते थे कि ''रब्ब को पहचानने वाले मर गए।'' सन्तों की कदर उनके जाने के बाद होती है। बाबा जी भी कहा करते थे कि–

मैनेजर साहिब जी–फिर रोते हैं, फिर क्या बनता है। हाँ जी

पाठी– बाबा जी कहा करते थे कि हमारी कमाई के जौहर पीछे पता लगेंगे। सो हम भी तुम्हें कहते हैं कि पीछे से रोओगे। अब बैर ईर्ष्या नहीं छोड़ते।

मैनेजर साहिब जी–हाँ, बैर, ईर्ष्या, बोलो भई! आए हैं भजन करने, बोलो! वो कहते हैं कि कोई कमाई वाला भेजो। किसको भेजें? बोलो भई! दो चार होंगे उनसे काम लेना है। बाकियों को ऐसे सुधारना है आहिस्ता आहिस्ता, हाँ जी।

पाठी– सतगुरु जी ने फरमाया कि हम बाहर खुश रहते हैं। कोई दुख शिकायतें नहीं सुनाता। डेरे वालों की तो शिकायतें ही खत्म नहीं होती, हाँ जी।

मैनेजर साहिब जी–डेरे वालों की तो शिकायतें ही खत्म नहीं होती, बोलो! देख लो। रो-रोकर गए हैं फकीर। गृहस्थी हो, साधू हो वो काम करो जिससे अन्दर शांती मिले, रस मिले। किस लिए आए हैं? किस लिए नाम लिया है? यह ठीक है कि जिसको एक बार पकड़ लेता है फिर छोड़ता नहीं। अभी तक गुरुनानक साहिब के समय के, देखो! कितना समय हो गया। फिर धक्के खाते हैं। देखो! लांगरी किस लिए आया था? भजन के लिए, सेवा के लिए। बच्चे चिनवा दिए लालच में। बोलो! सब फकीरों के साथ ऐसा हुआ है। वो तो फिर भी आहिस्ता-आहिस्ता ले जाते हैं। आते तो इसलिए हैं। जिसको पकड़ लेते हैं छोड़ते नहीं। यह महकमा ही अलग है। याद रखो! वो काम करो जिससे अन्दर रस मिले। अवगुण न उठाओ। जो अवगुण उठाता है उसके अन्दर अवगुण ही आ जाएंगे। कई बाहर के अवगुण उठाते हैं। उनके अन्दर वही पाप आएंगे। भजन तो उनके अन्दर से गया और नहीं तो, अवगुण ही अवगुण रहे और उठाता रहा। भजन तो गया? कैसे भई! सोच लो! फलाना यूं है, फलाना यूं है। वो पाप आ गया इसके अन्दर। हाय! हाय! पाप, मन हमारा दुश्मन है। मन और

माया। मन और माया का खेल है। मन ने मिट्टी पलीत कर दी सबकी। इसका प्यार छोड़े। हाय, हाय!

मन ही नालि झगड़ा मन ही नालि सथ।

(87/12 मः 3)

मन को मारना था। क्रोध को काबू करना था। वो फायदा उठाता है। खाने-पीने में ऐसे वक्त गुज़ार गए। गृहस्थी हो या त्यागी वो फायदा उठाता है जो भजन करता है। भजन करने वालों की वो चिट्ठीयाँ आती हैं कि पूछो नहीं। याद रखो! हाँ जी, क्या कहता है यहः

झिमि झिमि बरसै अंम्रित धारा।

वो पीओ अमृत इसलिए आए हैं, बोलो! बाहर के ख़्याल छोड़ो। बाहर के ख़्याल छोड़े तो अन्दर जाए। कैसे जाए? बाहर के ख़्याल ही नहीं छोड़ता, बस। यह दुश्मन है। कैसे किया जाता है? हाय! हाय! क्या करना। हाँ जीः

पाठी– जन्म जन्म का विछुड़िया मिलिआ।
साध किरपा ते सूका हरिया॥
सुमति पाए नामु धिआए गुरमुखि होय मेला जीउ॥
बरसै बरसै.....

मैनेजर साहिब जी–जो करते हैं, उनकी जब मौतें होती हैं, जो पाप है वो सतगुरु पहले कटवा लेता है। जो भजन करता है, तकलीफ आती है। जब सब कर्म खत्म हो जाते हैं तो आराम से जाता है। चेहरा ही बदल जाता है, हाय! हाय! उसके अन्दर खुशी होती है।

''अभी एक पटवारी ने चोला छोड़ा है। वह आया। पहले बहुत शराब पीता था। फिर नाम ले गया। इसी गाँव का है सिरसा का, अभी चोला छोड़ा। 26 तारीख को उसका भण्डारा था। फोटो देखो उसकी चेहरा ऐसा था कि जवानी में नहीं था ऐसा। ऐसे ही जाते हैं फिर, अगर कोई भजन करे।''

हाँ जी, वैसे तो सभी ऐसे ही जाते हैं और कहकर जाते हैं। जन्म कई लग जाते हैं। कहकर गया है कि मैं अब जा रहा हूँ। मेरे सब कर्म कट गए। पूछा कि किसी को मिलना है? कि नहीं, लड़की को मिला दें? कि नहीं। कोई पुण्य दान? कि नहीं। किसी चीज़ की ज़रूरत नहीं, बस! बोलो भई! ऐसे आज़ाद हो कर जा रहा हूँ। याद रखो! सिमरन करो, उठते-बैठते, चलते फिरते। दुनियां के लेने देने भी खत्म करने हैं। ये सुख भी आने हैं, दुख भी आने हैं। कर्मों

के हिसाब से वो भी भुगताने हैं। हाँ जीः

पाठी– जल तरंगु जिउ जलहि समाइआ॥
तिउ जोति संग जोति मिलाइआ॥

मैनेजर साहिब जी–पूज्य मस्ताना जी इस तरह रो-रोकर गए हैं। सभी फकीर इस तरह रो-रोकर गए हैं कि पहले मनैजर का कहना मानते थे, हुक्म मानते थे। अब मानते नहीं, फिर हम खड़े हो गए, अब हमारा भी नहीं मानते, बोलो भई! सोच लो! हाय! हाय! इस तरह होता आया है। कितना ही बुरा हो बच्चा, माँ-बाप आहिस्ता-आहिस्ता संभालते हैं न!

पाठी– जल तरंगु जिउ जलहि समाइआ॥ तिउ जोति संग जोति मिलाइआ॥
कहु नानक भ्रम कटे किवाड़ा॥ बहुड़ि न होइअै जउला जीउ॥
बरसै बरसै.....

मैनेजर साहिब जी–ऐब उठाते हैं। देखो भई! गुण नहीं उठाते। किसी के ऐब हैं। करते जाओ कि फलाना यू है, फलाना यूं है। फिर वो ही बस गया। मालिक तो निकल गया, बस गया वो जो बुरा है। क्या पता फकीरो का, अभी तो सतगुरु ने काम लेना है, आगे देखो! आखिर तो सब ने जाना है। 80 साल की उम्र हो गई है। गुरुनानक साहिब, कबीर साहिब गए और फकीर गए। यह तालीम हासिल कर लोगे तो सुख पाओगे, नहीं तो अपना आप जाणो भई! करोगे तो जल्दी जाओगे नहीं तो धक्के खाओगे कई-कई जन्म, हाँ जी। धर्मदास आठ जन्मों में गया, बोलो! मन ऐसी बला है। सुनने भी नहीं देता। नींद बगैरह इसके साथी हैं सब। फकीरों ने सारी-सारी रात किल्ली से केश बांधे हैं, हाय! हाय! बख्श ही दे, कि गुण उठाओ, वो फायदा उठाता है। पराये अवगुण देखोगे, जितने पराए अवगुण देखोगे उतना ही अहंकार आता है। अहंकार से भरे पड़े हैं। मैं बड़ा अच्छा हूँ। अहंकार हो गया न? सोचो भई! और मैल चढ़ गई। अपने अवगुण देखो, पराए गुण देखो। उनसे फायदा उठाओ। किसी को बुरा न कहो। हाँ जीः

पाठी– ''धन धन सतगुरु जी तेरा ही आसरा''
भजन गढ़ बांधो रे मेरा भाई। आगे यम संग होवेगी लड़ाई॥

मैनेजर साहिब जी–राजस्थान में जाओ वहाँ किले होते हैं। आपस में लड़ते थे। देखो! आपस में लड़ते थे अगर कोई हमलावर आए तो क्या बन्दोबस्त है भई! वहाँ अन्दर बाटी बनाकर रखते थे। यह एक किस्म की पंजीरी सी होती है। पानी नहीं मिलता था। अन्दर पानी का बन्दोबस्त होता था। अब तक पड़ी

है बाटी भी और पानी भी। बादशाह कोई है नहीं किले में। बाटी, पानी का प्रबन्ध है। लड़ाई के लिए यमदूत भी आएंगे। उसकी लड़ाई के लिए बन्दोबस्त करो वो किला बनाओ।

पाठी– यम संग होवेगी लड़ाई। भजन गढ़ बांधो रे मेरा भाई।
राम नाम का किला बना ले, नेम से कर तू चिनाई॥

मैनेजर साहिब जी–''नेम से कर तू चिनाई।'' चार-चार ईंटे लगाए तो दीवार खड़ी हो जाती है। ''जैसा वित होय तैसा वरतै अपना वलि न हारै।''

हाँ जीः

पाठी– राम नाम का किला बना ले, नेम से कर तू चिनाई।

मैनेजर साहिब जी–लगे रहो, तभी ख़्याल ठीक होगा। वो तो कहते हैं कि मिनट भी न छोड़ो।

एकु पलु खिनु विसरहि तू सुआमी जाणउ बरस पचासा॥

(601/3 मः 3)

बोलो भई! एक खिनु भूल गया तो पचास वर्ष का वकफ़ा पड़ गया। बोलो भई! गुरु अमरदास जी का वचन है। उल्टे पाप इकट्ठा करते हैं अब तो। देखो भई! उल्टा पाप इकट्ठा करते हैं। हाय! हाय! दूसरे के ऐब देख देखकर अन्दर पाप इकट्ठे कर लिए। बनाना तो क्या था? यह किला बना लिया पापों का। बस लगे रहो, जैसे भी हो इधर-उधर न देखो। दूसरों के सुधार का फ़िकर है, अपने सुधार का किसी को फ़िकर नहीं। देखो भई! हाँ जीः

पाठी– राम नाम का किला बना ले, नेम से कर तू चिनाई।
सत्य शब्द की तोप बना ले, यम की फौज हटाई॥
भजन गढ़.....
ध्रुव ने बाध्यो प्रहलाद भी बांध्यो, बांध्यो मीरांबाई।
बलख बुखारा ऐसो बांध्यो, छोड़ चल्यो बादशाही॥
भजनगढ़.....

मैनेजर साहिब जी–इब्राहीम बादशाह बारह साल तक कबीर के पास रहा रज़ाक किया। गुदड़ी सी रहा था दजला के किनारे। उसका लड़का आ गया। कहने लगा कि पिता जी आप ने क्या हासिल किया? अपनी ज़िन्दगी खराब कर ली? बेटा, अच्छा तूने क्या हासिल किया? कि मैंने फलाना राज्य फतेह किया, फलाना राज्य फतेह किया, यह काम किया, वो काम किया। इब्राहीम कहने लगा कि

अच्छा इतना बहादुर हो गया है! कि हाँ। उसने सुई ली और दजला में फैंक दी कि इसे निकाल कर दिखा। कहने लगा कि अभी निकाल देते हैं। बहुत से तैराक मंगवाए लेकिन सुई कहाँ से निकले? कहने लगा कि ऐसी सैकड़ों सुईयां अभी इकट्ठी कर दूं। कि नहीं मुझे तो वही ही सूई चाहिए। उसने इशारा किया और मछली सूई ले कर आ गई कि मैंने यह हासिल किया। फिर वो चुप कर गया। यह है बादशाही। दुनियां के सभी ख़्याल निकाले तो अन्दर जाए। पाप इकट्ठा करता है, फलाना यूं है, फलाना यूं है। भजन का ख़्याल नहीं किसी को, कोई बिरला करे।

पाठी– बलख बुखारा ऐसो बांध्यो छोड चल्या बादशाही॥

मैनेजर साहिब जी–कैसे फंसे हैं दुनियां में, कहते हैं न!

अंत मता सोई गता॥

अगर माया जोड़ी है, उस तरफ ख़्याल है उसका। तो नतीजा क्या है? पहले तो इसे तन का प्यार है, तन नहीं छोड़ना चाहता। मरने के करीब है, कोई रोटी नहीं देता अच्छी तरह। कोई सेवा नहीं करता। फिर भी कहता है कि मरूं न। देख लो! फिर तन का ख़्याल है। तन मिलता है, जैसे ख़्याल हों।

अंतिकाल जो लछमी सिमरै। ऐसी चिंता महि जे मरै।
सरप जोनि वलि वलि अउतरै॥

(526/10 त्रिलोचन)

देह भी मिल गई, सांप बनाकर बिठा दिया, पेट भर ले भई!

द्रव्य जोत मर जाए ता वो बैठे नाग॥
नारी में चित रहे होय कूकर काग॥

यह महात्मा चरणदास जी ने कहा है। फकीरों ने तजरबे करके लिखा है।

अंतिकाल जो लड़िके सिमरै। ऐसी चिंता महि जे मरै।
सूकर जोनि वलि वलि अउतरै॥

(526/10 त्रिलोचन)

सुअर की जोनि, सोच लो!

तन छूटे सुत में रहे एक न तेरी आस।
जन्म जो सूकर को लहै मोहे नरक निवास॥

फिर मकानों में, खेतों में ख़्याल रह गया तो–

अंतिकाल जो मंदर सिमरै॥ ऐसी चिंता महि जे मरै।
प्रेत जोनि वलि वलि अउतरै॥

(526/11 त्रिलोचन)

घर घर में बाबे की मढ़ियां हैं। अगर मालिक का ख़्याल करे तो उसके पास जाए। न घर-बार छोड़ना, न बाल-बच्चे छोड़ने। रहने का तरीका क्या है? कर्म भी काटने हैं, लेने-देने खत्म करने हैं। जब तक लेने-देने खत्म नहीं होते आगे जा ही नहीं सकता। जिसको दुख दिया है उससे दुख लेना है। जिसको सुख दिया है उससे सुख लेना है। दुख-सुख, अमीरी-गरीबी, तदरुस्ती-बीमारी सब कर्मों के हिसाब से लिखवा कर लाए हैं। रहने का तरीका क्या है? बच्चा पैदा हुआ, लड़का या लड़की उसकी मौज़। बीमार हो गया उसकी मौज़, राज़ी हो गया उसकी मौज़। मर गया उसकी मौज़, थोड़ा दे दिया उसकी मौज़, ज़्यादा दे दिया उसकी मौज़। उसकी मौज़ में रहे बाकी सिमरन करे। छुटकारे का बन्दोवस्त करे।

जिउ भावै तिउ राखि लै॥

यह है रहने का तरीका। और कर भी क्या सकता है? यह छुटकारे का तरीका है। उसकी रज़ा में रहे। दुख हो, सुख हो, उसने कर्म भी कटवाने हैं। जिसको दुख दिया उससे दुख लेना, जिसको सुख दिया उससे सुख लेना, सोच लो! जिसको कभी गाली दी है वो गाली भी खानी पड़ेगी। जिसको कभी मारा या निन्दा की उसका भी फल है। ज़रा सी बात का इवजाना देना पड़ता है। बस, लगा रहे इधर उधर न देखे। अपना काम किया, बाकी अपना सतगुरु-सतगुरु किया। चलते-फिरते, उठते-बैठते लगे रहो। ताश खेलते हैं, बाते करते हैं, सिनेमा देखते हैं, टी. वी. देखता है, सभी ख़्याल निकाले तब है। बस लगा रहे।

नामा कहै त्रिलोचना मुख ते रामु सम्हालि॥
हाथ पाउ करि कामु सभि चीतु निरंजन नालि॥

(1376/1 मः 5)

हाँ जी, पराई बातें सुन-सुनकर कर बैठे बातें करते रहेंगे, देखो! लोगों का क्या हाल है, डेरे में साधू भी ऐसे ही करते हैं। गृहस्थीयों की तरह सेवा की और अपना सतगुरु-सतगुरु किया, बस। एक दूसरे की मानेंगे। फकीरों की कोई नहीं मानता। कोई बिरला है। साधुओं को तो बल्कि ज़्यादा सज़ा मिलनी चाहिए वैसे, क्योंकि उनको समय भी मिला, बोलो भई! फिर भी न करें। हाय हाय! कई-कई जन्म लगते हैं फिर, तौबा है। कहते हैं कि अगर खाएं पीएंगे नहीं तो कैसे करेंगे? बस इसी में लग गए। किसी को आदत को बदलना आसान है? जल्दी नहीं

बदलती। एक बच्चा कैसा है? एक कैसा है? पहले वो प्रीतलड़ी एक रसाला छपता था। अमृतसर से निकलता था शायद। उसके एडिटर ने लिखा कि एक आदमी अपने बच्चों के साथ खेलने लग गया। उसने बच्चे को खेल-खेल में पागल कह दिया किसी बात पर, वो अपने बाप को कहने लग गया। वो कहने लगा कि मैं नहीं कहूँगा तो फिर तो नहीं कहेगा? कि नहीं। सोच लो! यह तो हमारा हाल है। ऐसे सीखते हैं सभी। हाँ जीः

पाठी– तन का है घोड़ा मन की है जीना, सुरता लगाम लगाई॥

मैनेजर साहिब जी–घोड़े को खिला कर उससे काम लेते हैं न? तन के घोड़े को भी खिला कर इससे काम लो। हाय! हाय!

रैन गवाई सोय के दिवस गवाया खाय॥
हीरे जैसा जन्म था कौड़ी बदले जाय॥

इससे काम लेना था, सोच लो! 'मन की जीना' अब मन हमारे ऊपर चढ़ा है। इस पर बैठो, इसको जीन बनाओ। ''सुरता लगाम'' घोड़े पर चढ़कर इधर उधर देखते हैं कि इधर उधर न हो जाए। चुस्ती से सिमरन करो, हाय हाय! कैसे करो? हाँ जीः

पाठी– अपने साहिब की करो नौकरी, बन जाओ सन्त सिपाही॥

मैनेजर साहिब जी–''बन जाओ सन्त सिपाही।'' सिपाही खड़े हैं न चौकों पर। कितनी चुस्ती से खड़े हैं कि कोई एक्सीडेंट न हो जाए। बस, तुम भी चुस्ती से सिमरन करो, हाय हाय! फिर तरक्की करोगे और क्या? हाँ जीः

पाठी– तन का है घोड़ा मन की है जीना, सुरता लगाम लगाई॥
अपने साहिब की करो नौकरी, बन जाओ सन्त सिपाही॥
भजन गढ़.....

मैनेजर साहिब जी–उन्होंने दिन पर रात सेवा की इसलिए कि तन का प्यार छूटे। सोच लो! पाल-पाल कर चले गए इसको। अगर रात को नींद भी आएगी तो सेवा का ख़्याल आएगा और तो कोई नहीं आएगा? देख लो! विषय-विकार छोड़े, तन का प्यार छोड़े। आहिस्ता-आहिस्ता मन टिकता है। जल्दी का काम नहीं। क्यों बारह-बारह साल किल्ली से केश बांधे? गुरुनानक साहिब को क्या ज़रूरत थी, सोचो! खुद अकाल पुरुष आए, बाकी पातशाहीयाँ तो बाद में बनी। उनको क्या ज़रूरत थी, सोचो! तेरह साल रोड़ियों पर बिस्तरा रखा हमारे समझाने के लिए कि हमने ऐसे पाया है। सख़्त मुकाबला करना पड़ता है मन के साथ। अपने अवगुण देखो, याद रखो। बस दूसरों के अवगुण देखते हैं, बस फिर और फंस जाते हैं।

भजन से तो गया, पाप और इकट्ठे कर लेता है। उसको फायदा पहुँचता है जिसकी निन्दा होती है। फकीरों ने तो निन्दा चुगली पसन्द की है।

निंदउ निंदउ मोकउ लोगु निंदउ॥ निंदा जन कउ खरी पिआरी॥

यही पलटू साहिब कहते हैं–

निंदक जीवे जुगन जुग काम हमारा होय॥
काम हमारा होय बिना कौड़ी को चाकर॥
कमर बांधि के फिरै करै तिहु लोक उजागर॥
उसे हमारी सोच पलक भर नाहिं बिसारी॥
लगा रहे दिन रात प्रेम से देता गारी॥
सन्त कहैं दृढ़ करैं जगत का भरम छुड़ावै॥
निंदक गुरु हमार नाम से वही मिलावै॥
सुनि के निंदक मर गया पलटू दिया है रोय॥
निंदक जीवै जुगन जुग काम हमारा होय॥

कबीर साहिब कहते हैं निन्दक युगों युगों तक जीवित रहे। ''हमने सतगुरु पाइआ निन्दक के प्रसादि॥''

हाय! हाय! सोचो! फकीरों ने तो फायदा उठाया है निन्दक अपना नुकसान करता है। हाँ जीः

पाठी– यह संसार रैन का सपना, भौर भए मिट जाई॥

मैनेजर साहिब जी–'ओस का मोती' आजकल ओस होती है न, ज़रा सी हवा आई बस खत्म। क्या पता कब दम निकल जाए? बस किला बना लो। आगे की तैयारी करो। आगे यमदूतों के साथ लड़ाई आएगी। दुश्मन के साथ लड़ाई हो तो कैसे चुस्त रहते हैं न? कि हमला न कर दे। क्या पता कब आ जाए? चुस्त रहते हैं? इसका किसी को ख़्याल है? हाँ जीः

पाठी– यह संसार रैन का सपना, भौर भए मिट जाई॥
कहे कबीर सुनो भाई साधो साहिब से लगन लगाई॥
भजन गढ़.....

मैनेजर साहिब जी–तंग कर दिया सबने। साधुओं को भी तंग करते हैं। ज़्यादा न आओ भई! महीने के महीने आओ। ज़्यादा तंग करोगे तो बन्द कर देंगे। क्या बात है भई! गलती भुगत फिर, मैं क्या करूं। ज़हर खाएगा तो मरेगा ही। पहले कह देते हैं कि यह नाम ऐसा नहीं। दो-दो, चार-चार घण्टे सिमरन कर। अन्दर माफी मांग। बाकी सब ठगी है। ऐसे माफी होने लगी तो बस, सबको हो जाए।

देखो भई! करना तो क्या? गलती, असूल भी ठीक नहीं रखता। सच्चे दिल से पुकार करो। वो माफी दे तो दे। बाहरी सब ठगी है। किसी की ताकत नहीं। हमने कह दिया माफी हो गई। तुम भी खुश हम भी खुश। तुम लेने वाले बन जाओ, हम देने वाले बन गए। कल को फिर हो जाएगी। बन गया काम। बोलो भई! सब ठगी है। सच्चे दिल से पुकार करो। हाय! हाय! बस सतगुरु सतगुरु भी नहीं करने देते। झगड़े लेकर आते हैं, काम नहीं चलता, यह है, वो है। जो कर्म लिखवा कर लाए हैं वो मिलना ही है। सिमरन करोगे तो बरकतें होंगी।

पहले बनी प्रालब्ध, पाछे बना शरीर।
तुलसी यह अचरज है, मन नहीं धारे धीर॥

यह छुटकारे का है। सिमरन करके अपना छुटकारा करो। नहीं तो फिर धक्के खाओगे कई जन्म तक।

पाठी– "धन धन सतगुरु जी।

पाठी– कामिल काम कमाल किया, तैने ख्याल से खेल बनाए दिया॥

नहीं कागज कलम ज़रूरत है, बिन रंग बनी सब मूरत है॥
मूरत में इह सूरत है, तैने एक से अनेक दिखाए दिया॥1.॥
कामिल काम.....

जब बूंद को लेकर देह रची, सुर दानव मानव जीव जुदा॥
सब के घट अन्दर मन्दिर में, तैने मुकाम जमाए दिया॥2.॥
कामिल काम.....

कोई पार निवार अधार दिया, सब विश्व चराचर धार रहा॥
बिना बीज के बाग लगाय दिया, जैसे फूल में रंग दिखाए दिया॥3.॥
कामिल काम.....

सब लोकन के नित संग रहे, फिर आप असंग स्वरूप सदा॥
ब्रह्मानन्द आनन्द भये मन में, गुरुदेव अलेख लखाय दिया ॥4.॥
कामिल काम.....

धन धन सतगुरु तेरा ही आसरा

सत्संग

'किरति करम के बीछुड़े'

सत्संग के वचन

मैनेजर साहिब जी–हम भी संक्रान्त लेते हैं। रात वो कहता था आत्मा सिंह। संक्रान्तों से कोई ताल्लुक नहीं, कोई ताल्लुक नहीं। उन्होंने तो हर तरह हमें शब्द गुरु से जोड़ने की कोशिश की। हर वक्त उनका ये ही ख़्याल रहा कि हमारी रुचि मालिक की तरफ लगे। एक दफा बुल्ला जा रहा था तो आगे सिआपा कर रहे थे। वो भी बैठकर सिआपा करने लगा :

हाइया साईयां, हाइया साईयां,
जंगल ढूंढ़े, बेले ढूंढ़े, ढूंढीआं सभे जाईयां।
जद मैं आकर वेखण लगा आण लभो विच माईयां,
हाइया साईयां, हाईया, साईयां॥

लोगों ने कहा तू क्यों रोता है। कहने लगा ये क्यों रो रहे हैं। कहने लगे इनका तो आदमी मर गया है। कहने लगा मैंने सोचा ये अपने लिए रो रहे हैं। भई मालिका हमारे पर भी ये एक दिन आयेगा। हमारा भी कोई बन्दोबस्त कर। हमारा भी कोई इन्तज़ाम कर। हम भी मौत के मुंह न चढ़े। इस जन्म-मरण के चक्कर से निकलें। उनका मतलब था कि अपने लिए भी रोवो। ये दिन आप पर भी आना है। इसी तरह हमारे देश में ये संक्रान्तें मनाते थे आप हिन्दुओं में। अब फकीरों का कोई ताल्लुक नहीं। ये छोड़ते तो नहीं वहम पिछले। चाहे नाम भी ले लें। ये पिछले वहम जल्दी-जल्दी नहीं जाते। गुरु नानक साहिब कहते हैं:–

एतु मोहि डूबा संसारु॥ गुरमुखि कोई उतरै पारि॥
एतु मोहि फिरि जूनी पाहि॥ मोहे लागा जमपुरि जाहि॥
गुर दीखिया ले जपु तपु कमाहि॥ न मोहु तुटै न थाइ पाहि॥
नदरि करे ता एहु मोहु जाइ॥ नानक हरि सिउ रहै समाइ॥

कि इतना मोह माया में फंसा है, इतना शरीयत में फंसा है, इतना कर्मों-धर्मों में फंसा है। इसको वहम पड़े हैं अगर मैंने ये ना किया तो पता नहीं क्या हो जाना है। पुराने वहम जल्दी निकलते नहीं। जिस पर मालिक मेहर करे। इसीलिए तरक्की नहीं करते। नाम लेकर भी भूत-प्रेत, इधर-उधर, देवी देवता सौ सिआपों में डालता है ये मन। किसी चीज़ के साथ, उन्होंने कहा इन्होंने छोड़ना तो नहीं हम नहीं संक्रांति तैयार करते हैं। तभी उन्होंने बारह माह तैयार किया। अब भी हमारा ये ही हाल है। पढ़ा और परे हो गये। मतलब तो लिया ही नहीं। ना ही आरतीयों से है, ना ही पूरनमासीयों से। वो किसी चीज़ से बन्धे नहीं होते। सोचो! ये कुदरती तौर से धार आ रही है। करंट कह लो, वेव कह लो, धार कह लो, ये दिमाग के जरीये आ रही है। जब आँखों में आई तो देखने लगा। कानों में आई तो सुनने लगा। जबान में आई तो बोलने लगा। हाथों-पैरों में आई तो चलने फिरने लगा। अब कई दफा आपने देखा होगा हम ख़्याल में बैठे होते हैं, टांगे सो जाती हैं। अब उस टांग पे भार दें तो काम नहीं करेगी। हाथ सो जाए तो उस हाथ से कोई चीज़ पकड़ें तो पकड़ी नहीं जाती। जब ख़्याल करते हैं तो काम करने लग जाती है। वहाँ से वो धार निकल गई थी। वहाँ से धार निकल गई थी। वो ज़िन्दगी है। ये तो आगे ही मिट्टी में फंसी पड़ी है। इसने आगे और बांध लिया मन्दिरों से, मस्जिदों से, तीर्थों से, संक्रान्तों से, फलाने से फलाने से। इन चीज़ों ने ही बांध रखा है। यहाँ ही निकालनी हैं। इसी को जिसको हम कहते हैं जड़ चेतन की गांठ खोलना। काम तो उसने ये करना था। ये आगे से आगे और बंधता ही गया, बंधता ही बंधता गया। इसको इतने वहम पड़े हैं आगे से आगे बंधता ही जाता है। छूटने का कोई उपाय ही नहीं। वाणी में एक जगह आता है।

फांसन की विधि सब कोई जाने छूटन की न कोई॥

बंधने को तो हर कोई जानता है। जितने कर्म-धर्म हैं इसको सब बांधते ही बांधते हैं :

कर्म धर्म सभि बन्धना, पाप पुन सनबंधु।
ममता मोहु सु बन्धना, पुत्र कलत्र सुधंधु॥
जह देखा तह जेवरी, माया का सनबन्धु।
नानक सच्चे नाम बिनु, बरतणि वरतै अन्धु॥

ये ठीक है अच्छे कर्मों का फल अच्छी योनि मिल जायेगीं। स्वर्ग मिल

जायेंगे। मगर जन्म-मरण के बन्धन नहीं छूटते। सवाल तो जन्म-मरण के बन्धन छूटने का है, वहाँ से छूटने का है। सारे ही बन्धन हैं :

बंधन माता पिता संसारि॥ बंधन सुत कंनिआ अरु नारि॥
बंधन करम धरम हउ कीआ। बंधन पुतु कलतु मनि बीआ॥
बंधन किरखी करहि करहि किरसान॥ हउमै डंनु सहै राजा मंगै दान॥
बंधन सउदा अणवीचारी॥ तिपती नाही माइया मोह पसारी॥
बंधन साह संचहि धनु जाई॥ बिनु हरि भगति न पवई थाई॥
बंधन वेदु वादु अहंकार॥ बंधनि बिनसै मोह विकार॥
नानक राम नाम सरनाई॥ सतिगुरि राखे बंधु न पाई॥

सारी दुनियां बन्धनों में फंसी पड़ी है। छूटने वाला कोई नहीं। वो हमें छुड़ाने के लिए आते हैं। हम बार-बार फंसते हैं। सो उनका इन चीज़ों से कोई ताल्लुक नहीं। सिर्फ इसलिए वो हमारी ज़रूरतों को लेकर हमारी दुनियादारों की हरकतों को लेकर हमें समझाते हैं। क्योंकि संक्रान्त मनाई जाती थी, इसीलिए उन्होंने ये बारह माह बनाया ताकि ये भी समझें असली संक्रान्त क्या है? उन्होंने हर इक महीने को मनुष्य के जन्म से तुलना की है और बताया है कि वो महीना क्या? मनुष्य जन्म किसका सुखदाई है और किसका दुखदाई है। हाँ जीः

पाठी– मांझ महला 5

किरति करम के वीछुड़े करि किरपा मेलहु राम॥
चारि कुंट दह दिस भ्रमे थकि आए प्रभ की साम॥

मैनेजर साहिब जी–पहले समझने की बात है कि हम फंसे कैसे हैं? जब मालिक ने ये खेल डाला तो दो ताकतें पैदा की।

कालु अकालु खसम का कीना एहु परपंचु वधावनु॥

अकाल वो ताकत है जो सत् ताकत है। जो फनाह के दायरे से परे हैं। जिसको हम सत्पुरुष कहते हैं, अकाल पुरुष कहते हैं, सतगुरु कहते हैं। काल का दायरा त्रिलोकी तक है। वहाँ तक जन्म मरण है। चाहे स्वर्ग-नरक हैं। सब कुछ है लेकिन जन्म मरण के चक्कर नहीं छूटते। काल को सृष्टि रचने का हुक्म हुआ। उसने क्या किया है? आत्मा को लेकर कैद किया हुआ है। यह तीनों शरीरों में कैद है। सबसे पहले आत्मा पर कारण शरीर है, फिर सूक्ष्म शरीर है, उसके ऊपर अस्थूल शरीर है जो हम देख रहे हैं। और उसने क्या किया है? कर्मों का जाल डाला है।

पाप पुनः बीज की पोट।

ये पाप पुण्य दोनों बीज हैं, जिससे दुनिया चल रही है। ये ही महात्मा चरण दास कहते हैंः

पाप पुण्य के सत्य ही ठहर रहा ब्रह्मण्ड।
इन दोनों के मिटत ही होत खंडू खण्ड॥
बिरले जन को होत है पाप पुण्य की सूझ।
सोई उतरे भौजाल से बहुते रहे अरूझ॥

सारी दुनियां पाप और पुण्य में उलझी पड़ी है। पाप को तो सब बुरा कहते हैं, पुण्य को भी कोई बुरा कहता है? कृष्ण भगवान ने कहा है, अच्छे कर्म और बुरे कर्म दोनों ही हथकड़ीयां हैं। एक सोने की समझ लो, एक लोहे की समझ लो। लेकिन है तो हथकड़ी। बन्धन तो न छूटे। सवाल तो बन्धन छूटने का हैः

काइया अन्दरि पापु पुनु दोई भाई। दुही मिलि कै सृष्टि उपाई॥
दोवै मारि जाई इकतु घरि आवै। गुरमती सहज समावणिआं॥

जितने हम कर्म करते हैं उनका नतीजा क्या है? पाप या पुण्य। ये शरीर पाप और पुण्य का बना है। ये पाप करता है तो गन्दी योनियों में जाता है, नरकों में जाता है। अगर अच्छे कर्म करता है तो अच्छी योनियों में जाता है, स्वर्गों में जाता है। वहाँ के सुख भोगे फिर इसके लिए चौरासी तैयार है। यही कृष्ण भगवान ने कहा है– हे उधो! ये जो कीड़ा जा रहा है ये कई दफा स्वर्गों का राजा इन्द्र बना, कई दफा सृष्टि का कर्त्ता ब्रह्मा बना। आज ये कीड़ा है। फिर उन स्वर्गों का क्या फायदा? अगर फिर कीड़ा ही बनना है। उन स्वर्गों का क्या फायदा? हम रोज़ पढ़ते हैं–

इन्द्र पुरी महि सरपर मरणा। ब्रह्मपुरी निहचलु नहीं रहिणा॥
शिवपुरी का होइगा काला। त्रैगुण माया बिनसि बिताला॥

ये ही महात्मा चरण दास कहते हैं–

जो पये काल प्रयन्त नर जीवै कोई।
तो भी होवै नाश ब्रह्मा के संग ही॥
जो पये देवन के माहि जाये के उतरे
तो भी न छूटे कर्म मुक्त घर ना लहे॥

फिर भी मुक्ति नहीं मिलती। युगों के युग बीत गये हमें मालिक से बिछुड़े। इसी तरह, कभी नरकों में, कभी स्वर्गों में, कभी अच्छी योनियों में, कभी गन्दी

योनियों में, कभी आदमी बन गये, कभी हैवान बन गये, कभी कीड़े, कभी पतंगे, कभी हाथी, कभी घोड़े, बनते आए हैं। हमारा छुटकारा नहीं हुआ। सो ये ही गुरु अर्जुन साहिब जी कहते हैं। हाँ जीः

पाठी– किरति करम के वीछुड़े करि किरपा मेहलु राम॥
चारि कुंट दह दिस भ्रमे थकि आए प्रभ की साम॥

मैनेजर साहिब जी–कहते हैं, ऐ मालिक! जब से आपसे बिछूड़े हैं युगों के युग बीत गये। हम कर्मों के जाल में फंसे पड़े हैं। हमारा छुटकारा नहीं हुआ, आपसे मिलाप नहीं हुआ, अपने घर नहीं पहँचे। हम पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण फिरे यानि दस दिशा घूमे। स्वर्गों में गये, नरकों में गये और जगह गये पर तेरा मिलाप नहीं हुआ। अब ये तेरी ही मेहर है, हम तो जोर लगा चुके, तेरी ही मेहर है तू बेशक निकाले। तू तो बेशक अपना मिलाप कराए। हम तेरी शरण में आए हैं। तू हमारे पर भी मेहर कर। तू अपना मिलाप करा। हम तो युगों-युग से आपसे बिछुड़े हैं। हाँ जीः

पाठी– धेनु दूधै ते बाहरी कितै न आवै काम॥
जल बिनु साख कुमलावती उपजहि नाही दाम॥

मैनेजर साहिब जी–अब मिसाल देते हैं कि जिस तरह एक गाय होती है वो दूध नहीं देती। उसे कोई अच्छी तरह घास भी नहीं डालता। दाना तो क्या डालना है। अच्छी तरह पानी भी नहीं पिलाते। जिस फसल को पानी ना मिले, पानी के बगैर वो सूख जाती है। उसे न ही फूल लगते हैं न ही फल लगते हैं। उससे कुछ भी नहीं मिलता, निकक्मी हो जाती है। इसी तरह हम भी निक्कमे हो चुके हैं। हमारी भी कोई कदर नहीं। जब मौत आती है, मौत के वक्त क्या होता है? इसके कर्मों का बोझ इसके सिर पर रखा जाता है। पीछे यमदूत होते हैं वो डण्डे मारते हैं। आग के समुद्रों से निकलना पड़ता है। बुरा हाल है, इसकी मिट्टी प्लीत है। कहाँ बादशाह का लड़का है ये, कहाँ सतपुरुष की अंश; कहाँ यमदूतों के डण्डे। जैसे कोई बादशाह का लड़का सिपाहियों के डण्डे खाये। हमारी हालत ये हो चुकी है। एक महात्मा ने लिखा हैः-

करम भार सिर ऊपर लादा। घेरे फिरे काल का पिआदा॥
पिआदे के संग इज्जत खोती। सतिपुरख के कुल की गोती॥

कहाँ सतपुरुष की अंश, कहाँ यमदूतों के डण्डे खाये। कहते हमारी हालत ये हो चुकी है। हम निकम्मे हो चुके हैं। हाँ जीः

पाठी– हरि नाह न मिलीअै साजनै कत पाईअै बिसराम॥
जितु धरि हरि कँतु न प्रगटई भठि नगर से ग्राम॥

मैनेजर साहिब जी–अगर किसी स्त्री का पति उसकी संभाल ना करे तो उसे कितना दुख होता है। उसे चैन कहाँ, आराम कहाँ? हमारा हृदय कमज़ोर हो चुका है। काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार की अग्नियों से सड़ रहा है। हमें चैन कहाँ से आए? तेरी मेहर के बगैर कुछ भी नहीं हो सकता।

कितनी नम्रता से बेनती करते हैं। जो भी फकीर मालिक की दरगाह में गये, चाहे हिन्दू हुए, चाहे मुसलमान, चाहे सिक्ख, चाहे ईसाई, सब बेनती से गये कि मालिक तूं ही ले जाए तो ले जाए, हमारी ताकत नहीं। ये अपने ज़ोर से नहीं जा सकता। वो अपनी मेहर से कोई कामिल फकीर मिलावे, मेहर से ही नाम जपावे, मेहर से ही नाम दिलाए तभी जा सकता है। नहीं तो नहीं। ये ही गुरु तेग बहादुर ने कहा है–

अब मैं कउन उपाउ करउ॥

कहते मैं युगों के युग बीत गये, अब क्या उपाय करूं। मालिक से जिन्होंने सच्चे दिल से बेनती की उनकी सुनाई हो गई। उनका बन्दोवस्त हो गया। हाँ जीः

पाठी– स्रब सीगार तँबोल रस सणु देही सभ खाम॥
प्रभ सुआमी कंत विहूणीआ मीत सजण सभि जाम॥

मैनेजर साहिब जी–कहते अगर कोई बीबी हार शृंगार करे, अच्छे कपड़े, गहने पहन कर अपने पति को मिलने जाए, आगे से वो दरवाज़ा न खोले, दर्शन न दे तो उसे कितना दुख होता है। उसे चैन कहाँ, सुख कहाँ? उसका चेहरा उतर जाता है। उसे सब घर के सास-ससुर, देवर-जेठ, माँ-बाप सब यमदूत दिखाई देते हैं। कोई भी अच्छा नहीं लगता। इसी तरह ऐ मालिक! हमने भी बहुत कर्म-धर्म किए, बहुत शृंगार बनाए लेकिन तेरा मिलाप न हुआ। हमें भी सब लोग मां-बाप, बहन-भाई जितने भी हैं रिश्तेदार, जितने पण्डित काज़ी सब यमदूत लगते हैं। तेरे बगैर ये किस काम? बोलो! चाहे भेख हैं और कुछ हैं, तेरे बगैर किस काम है? अगर तूं नहीं तो कुछ काम नहीं। हाँ जीः

पाठी– नानक की बेनँतीआ करि किरपा दीजै नामु॥
हरि मेलहु सुआमी संगि प्रभ जिस का निहचल धाम॥

मैनेजर साहिब जी–अब मालिक आगे बेनती करते हैं, कि ऐ मालिक! हमारी

यह बेनती है कि मुझे वो नाम दे, वो रास्ता बता, वो बन्दोबस्त कर कि हम सीधे तेरे घर सचखण्ड, अनामी में पहुँच जाएँ, जहाँ न आना-जाना, न जन्मना-मरणा है, जो निहचल है, हमेशा कायम है। हाँ जीः

पाठी– चेति गोविंदु अराधीअै होवै अनंदु घणा॥
संत जना मिलि पाईअै रसना नामु भणा॥

मैनेजर साहिब जी–चेत का महीना क्या? कहते मनुष्य जन्म पाकर हम क्यों दुखी होते हैं, कि मालिक का नाम नहीं जपते। हम उठते-बैठते, चलते-फिरते हर वक्त मालिक का नाम जपें। नाम जपकर यही नहीं हमारी मुक्ति हो जायेगी बल्कि हमेशा का सुख, हमेशा की शांती, हमेशा के आनन्द में पहुँच जायेंगे। पर अब आगे साफ तौर पर कहते हैं कि उस नाम का जपना कहाँ से सीखा जाता है? वो नाम कहाँ से मिलता है? वो तरीका कहाँ से मिलता है? कहते हैं सन्तों से। जो असली चीज़ है, असली जपना है, वो सन्तों के जरीये मिलता है। जो अन्दर वाला नाम है वो भी उनके हाथ में है, वो हमें सिमरन करा कर अन्दर ले जाते हैं। फिर वो नाम मिलता है। हाँ जीः

पाठी– जिनि पाइआ प्रभु आपणा आए तिसहि गणा॥
इकु खिनु तिसु बिनु जीवणा बिरथा जनमु जणा॥

मैनेजर साहिब जी–कहते जिन्होंने सन्तों महात्माओं से नाम जपना सीखा, नाम जपा, मेहनतें की, अन्दर सतगुरु को प्रगट किया, वो अपना जन्म सफल कर गये। उनका दुनिया में आना सफल हो गया। उनका इस दुनियां में आना मुबारिक है। कहते हैं उनका क्या दस्तूर है? कैसे गये? कहते उठते-बैठते, चलते-फिरते उन्होंने एक मिनट भी मालिक का नाम जपना नहीं छोड़ा।

सोई घड़ी सुलखणी जो सहु नालि विहावै॥

गुरु अर्जुन साहिब कहते हैं भई! वो घड़ी मुबारिक है, जो मालिक के नाम में लगे। कहते हैं :–

इकु पलु खिनु बिसरहि तूं सुआमी जाणउ बरस पचासा॥

अगर छिन-पल भी बिसर गया तो समझो मुझे पचास साल का बकफा पड़ गया। हमारा क्या हाल, बोलो भई! सोच लो! हम तो उधर ख़्याल भी नहीं करते। कहते एक मिनट भी ना छोड़ा। यही बाहू ने कहा है–

जो दम गाफल सो दम काफर, सानुं मुरशद एह फरमाया हू॥

कि हमारे मुर्शद ने ये बताया है, क्या? कि जिस वक्त तू मालिक का नाम जपना छोड़ा, उस वक्त काफिर बन गया। मोमन नहीं, काफिर है। एक

बार मूसा को अहंकार हो गया कि मेरे से बड़ा भक्त कौन है? कहता मूसा बड़े-बड़े भक्त हैं। आदमी तो क्या जानवर हैं। उसने कहा, दिखाओ। कहने लगे फलाने जंगल में, फलाने वृक्ष पे फलाना पक्षी बैठा है। तू उसके पास जा। वो कहने लगा मुझे उसकी आवाज़ समझ नहीं आनी। कहता मैं तुझे ताकत देता हूँ तू उसकी आवाज़ समझ लेगा। वो जानवर के पास गया। जाकर उसे पूछता है तेरा क्या हाल है? कहने लगा, मूसा! मैंने आपसे बात तो करनी नहीं थी। मुझे फुरसत नहीं मगर मेरे मालिक का हुक्म है तभी मैं तेरे साथ बात कर रहा हूँ। कहता तू कौन सा काम करता है? क्या मालिक का नाम जपता है? कहता कोई सेवा मेरे लायक। कहता सेवा ये है अगर कर सकता है, ये जो कूंआ है पानी पीने का, मेरे पास ला दे। वो कहने लगा ये कोई दूर है? कहने लगा मुझे ही मालूम है जब मैं इतनी दूर जाता हूँ तो मेरा सिमरन छूट जाता है। मुझे ही मालूम है। वो कान पकड़ने लगा। सो उन्होंने एक मिनट भी नहीं छोड़ा। उठते-बैठते, चलते-फिरते, खाते-पीते, सोते-जागते, सतगुरु से प्रीत लगाई रखी। हाँ जीः

पाठी– जलि थलि महीअलि पूरिआ रविआ विचि वणा॥
सो प्रभु चिति न आवई कितड़ा दुखु गणा॥

मैनेजर साहिब जी–कहते जो मालिक जलों-थलों में, उजाड़ों-पहाड़ों में, दरियाओं में, जहाँ जाओ साथ है, हर जगह है। हमारे अन्दर है। अन्दर होते हुए उसे बिसारें तो कितना दुख है। हमारे कितने खोटे भाग हैं कि अन्दर होते हुये उसे बिसारें? कहते हमारे जैसा और कौन खोटे कर्मों वाला हो सकता है? हाँ जीः

पाठी– जिनी राविआ सो प्रभू तिंना भागु मणा॥
हरि दरसन कंउ मनु लोचदा नानक पिआस मना॥

मैनेजर साहिब जी–कहते जिस जिसने सन्तों महात्माओं से नाम जपना सीखा, अन्दर मेहनतें कीं, अन्दर मालिक को प्रगट किया; तिना भागु मणा' क्या? वो ऊँचे भागों वाले हैं। वो अपना जीवन सफल कर गये। अब मालिक आगे बेनती करते हैं कि ऐ मालिक! मेरा दिल भी तेरे दर्शनों के लिए तड़फता है, मन बहुत लोचता है। तूं हमारे पर भी मेहर कर। हमारा भी पर्दा खोल दे, और दर्शन दे। हाँ जीः

पाठी– हरि दरसन कउ मनु लोचदा नानक पिआस मना॥
चेति मिलाए सो प्रभू तिस कै पाइ लगा॥

मैनेजर साहिब जी–अब कहते हैं चेत का महीना क्या? मुनष्य जन्म पाकर हमें क्या करना चाहिए? कहते हमें उन सन्तों महात्माओं की शरण में जाना चाहिए। उनके पास जाना चाहिए जो हमें मालिक से मिला दें। तभी हमारा जन्म सफल हो सकता है, नहीं तो नहीं। हाँ जीः

पाठी– बैसाखि धीरनि किउ वाढीआ जिना प्रेम बिछोहु॥
हरि साजनु पुरखु विसारि कै लगी माइआ धोहु॥

मैनेजर साहिब जी–अब दूसरा महीना बैसाख का आता है। बैसाख का महीना क्या? मनुष्य जन्म पाकर जिनको मालिक का प्यार नहीं, सतगुरु का प्यार नहीं, नाम नहीं जपते, उनको शांती कहाँ, चैन कहाँ, खुशी कहाँ, आनन्द कहाँ? वो खुशी बाहर ढूंढ़ते रहे विषय-विकारों की लज़्ज़तों में, बेटी-बेटों में, कौमों-मज़हबों के झगड़ों में, ज़मीनों-जायदादों में। माया के प्यारे बन गये, माया के सामान इकट्ठे करने लगे। फिर नतीजा क्या निकला? आगे कहते हैं, हाँ जीः

पाठी– पुत्र कलत्र न संगि धना हरि अविनासी ओहु॥
पलचि पलचि सगली मुई झूठै धँधै मोहु॥

मैनेजर साहिब जी–अब मौत के वक्त न पुत्र साथ जाते हैं, न ज़मीने-जायदादें साथ जाती हैं, न ही स्त्री साथ जाती है, न ही देश साथ जाते हैं, न ही कौमें-मज़हब साथ जाते हैं। दुनियां व्यर्थ ही झूठे धन्धों में खप-खप कर मर गई। फिर क्या हुआ? मौत आ गई। हाँ जीः

पाठी– इकसु हरि के नाम बिनु अगै लईअहि खोहि॥
दयु विसारि विगुचणा प्रभ बिनु अवरु न कोई॥

मैनेजर साहिब जी–अब सारी उम्र विषय-विकारों में, इन्द्री के भोगों में, बेटे-बेटीओं में, ज़मीनों-जायदादों में, झगड़ों में, ज़मीने-जायदादें इकट्ठी कीं, कारखाने बनाये और-और धन्धे करता रहा। साथ जाने वाला सतगुरु था, अविनाशी पुरख था। उसके साथ प्यार न डाला। अब बेटी-बेटे यहाँ रह गये। ज़मीने-जायदादें यहाँ रह गईं। कारखाने यहाँ ही रह गये। जो धन था कुछ घर वालों के पास रह गया, कुछ लोगों के पास रह गया। इसी तरह अपनी ज़िन्दगी खराब करके चला गया। हाँ, फिर बोलः–

पाठी– इकसु हरि के नाम बिनु अगै लईअहि खोहि॥
दयु विसारि विगुचणा प्रभ बिनु अवरू न कोइ॥

मैनेजर साहिब जी–अब वो यहाँ ही रह गये, कोई भी साथ नहीं गया। आगे

कौन साथ दे? आगे जाकर खराब हुआ। यहाँ ही ले लो। यहाँ साथ दिया? पाकिस्तान बना। उधर से जो आए हैं उनसे पूछो? ज़मीनें भी थी, कारखाने भी थे, बन्दूकें भी थीं, किसी भी चीज़ ने काम दिया? बोलो! यहाँ ही काम न दिया? आगे कौन से ने काम देना है? हाँ जीः

पाठी– प्रीतम चरणी जो लगे तिन की निरमल सोइ॥
नानक की प्रभ बेनती प्रभ मिलहु परापति होइ॥

मैनेजर साहिब जी–कहते निर्मल बुद्धि उनकी है, फायदा वो उठाते हैं, लाभ वो उठा गये, जन्म सफल वो करते हैं, जो सतगुरु की शरण में रहते हैं, उसे अन्दर प्रगट करते हैं, वो फायदा उठा जाते हैं, बस। बाकी इसी तरह अपना जन्म बर्बाद करके चले गये और चले जाते हैं। अब मालिक के आगे बेनती करते हैं कि ऐ मालिक! तूं हमारे पर भी मेहर कर, अपने दर्शन दे, हमारा पर्दा खोल दो, तेरे दर्शन हों। तेरे बगैर इस आत्मा को चैन कहाँ? तेरे बगैर कहीं भी सुख नहीं। हाँ जीः

पाठी– नानक की प्रभ बेनती प्रभ मिलहु परापति होइ॥
बैसाखु सुहावा तां लगै जा संतु भेटै हरि सोइ॥

मैनेजर साहिब जी– कहते बैसाख का महीना क्या? मनुष्य जन्म उनका सफल है जो सन्तों के पास जाते हैं। वहाँ से नाम जपना सीखते हैं। कौन से सन्त? *संतु भेटै हरि सोइ॥* जो मालिक से मिले हुये हैं। उन सन्तों के पास जाते हैं। ऐसे तो दुनियां सन्तों से भरी पड़ी है। मगर असली सन्त कोई बिरला है। कहते जो मालिक से मिले हुये हैं वो उनकी सेवा में जाते हैं। वहाँ भजन सिमरन करना सीखते हैं। वो जन्म मरण सफल कर गये। हाँ जीः

पाठी– हरि जेठि जुडंदा लोड़ीअै जिसु अगै सभि निवंनि॥
हरि सजण दावणि लगिआ किसै न देई बंनि॥

मैनेजर साहिब जी– अब तीसरा महीना जेठ का आ गया। जेठ का मतलब होता है बड़ा। कहते जेठ का महीना क्या? मनुष्य जन्म पाकर हमें क्या करना चाहिए? किससे जुड़ना चाहिए? कहते हैं उस ताकत से जुड़ना चाहिए जो सबसे बड़ी है। यही पलटू साहिब ने कहा हैः–

बड़ा होऐ सो पूजीऐ संतन कीआ विचार॥

कहते उससे जुड़ना चाहिए, उसकी सेवा करनी चाहिए, उसकी भक्ति करनी चाहिए जो सबसे बड़ी है। जिसका दामन पकड़ने से न भूतों का डर, न प्रेत

का, न यमदूतों का डर, न महाकाल का डर। वो कौन सी है? सच्चा सतगुरु शब्द सरूपी राम जो शब्द रूप में रमा हुआ है। जिसको हम हाजर नाजर जिन्दाराम कहते हें। हाजर नाजर क्या? जो हर वक्त इसके साथ हो। जिन्दा वो ताकत मरणे-जन्मने से परे है। रमी हुई हर वक्त इसके साथ है। जिसको हम राम नाम कहते हैं। जिसकी जोत सब के अन्दर काम कर रही है। जो सब रचना करने वाली है। जिसने देवी-देवते, खण्ड-ब्रह्मण्ड सब कुछ बनाया है। कहते हैं उस ताकत से जुड़ना चाहिए। उसकी भक्ति करनी चाहिए। उसी को गुरु गोविन्द सिंह ने कहा हैः–

जागति जोत जपै निस बासर एक बिना मन नैक न आने।

वो जो जागती जोत सब के अन्दर काम कर रही है, सब को ज़िन्दगी और ताकत दे रही है, वो जपने के काबिल है। उसके बगैर किसी को न माने। उस से जुड़ना चाहिए। अगर उसका दामन पकड़ ले, पलटू साहिब कहते हैं–

लेई तुमारा नाम, ताको बार न बांके।
खुले बंद बै जाऐ, तनिक यमदूत न ताके॥

अगर उसका नाम जपे, कहते हैं आज़ादी से, खुली आज़ादी से अपनी दरगाह में जाते हैं, यमदूत नजदीक ही नहीं आते। धर्मराय के जाना नहीं पड़ता।

ब्रह्म विसनु महेस नाम सुन उठत डराई।
तीन लोक कै बीच फिरै ना आन दुहाई॥

कहते हैं त्रिलोकी तक उसको कोई हाथ लगाने वाला नहीं। अगर वो गुनाह भी कर ले तो सतगुरु बेशक सज़ा दे लेकिन काल के हवाले नहीं करते। कहते हैं उस ताकत से जुड़ना चाहिए हमें। सारी रचना उस शब्द गुरु ने ही की है। उसको तो सब छोड़े बैठे हैं। जो असली चीज़ है उसे तो सब छोड़े बैठे हैं। हाँ जीः

पाठी– माणक मोती नामु प्रभ उन लगै नाही सँनि॥
रंग सभे नाराइणै जेते मनि भावंनि॥

मैनेजर साहिब जी– कहते हैं, परमात्मा का नाम कीमती से कीमती रत्न है। वो ऐसी दौलत है। जिसको न चोर चुरा सकते हैं, न डाकू खोस सकते हैं, न यमदूत खोस सकते हैं, न पानी गला सकता है, न आग जला सकती है, वो सब खुशियाखुशियों का दाता है। सभी इच्छा पूर्ण करने वाला है। उसी को मीरां ने कहा है–

पायो रे मैंने नाम रत्न धन पायो।
जिसको पाये दुख सुख भूले, मन आनन्द रे समायो॥
जिसकी चोरी कबहुँ ना होवे, ऐसो धन मैंने पायो॥
खरचूँ लाख खत्म ना होवे, दिन दिन बढ़त सवाइओ॥

यही कबीर साहिब कहते हैं–

जाकी गाठी नाम है ताके है सब सिध।
कर जोड़े ठाड़े खड़े आठ सिधि नौ निधि॥

सभी रिद्धियां-सिद्धियां, मुक्तियां उसमे हैं। कहते हैं ऊँची से ऊँची दौलत है। कीमती से कीमती है। यह दौलत काम देने वाली है। यह साथ देने वाली है। जितने हम कर्म-धर्म करते हैं वो तो रास्ते में ही लूट लेते हैं। इसको पता ही नहीं। जैसे पुलिस चोर को पकड़ कर ले जाती है। वो कहता है भूख लगी है; वो कहते हैं निकाल पैसे? प्यास लगी है, निकाल पैसे। थाने तक जेब खाली कर देते हैं। इसी तरह कर्म-धर्म भी यमदूत रास्ते में ही लूट लेते हैं:-

कर्म धर्म पाखण्ड जो दीसहि तिन जमु जागाती लूटै॥
निरवाण कीरतनु गावहु करते का निमख सिमरत जितु छूटै॥

निरबाण कीर्तन कहो, सच्चा नाम कहो, शब्द गुरु कहो, ये भक्ति नहीं खोस सकते। चोर को सिपाही पकड़ कर ले जाते हैं। अगर उसके अन्दर विद्या है वो तो निकाल नहीं सकते सिपाही। बस, इसी तरह नाम की भक्ति को नहीं चुरा सकते यमदूत। बाकी सब चुरा लेते हैं रास्ते में ही। भूख-प्यास लगती है अन्दर तड़फता है, वो कहते हैं फलाने कर्म का फल दे दे, फलाने धर्म का फल दे दे। बस, वो देकर खाली हो जाता है। हाँ जी:

पाठी– जो हरि लोड़े सो करे सोई जीअ करंनि॥
जो प्रभि कीते आपणे सेई कहीअहि धनि॥

मैनेजर साहिब जी–ऐसे तो सारी दुनियां शब्द गुरु ने बनाई है, सच्चे नाम ने बनाई है।

'सबदे धरती सबदे आकास। सबदे सबद भइया प्रगास॥'
'नाम के धारे सगले जन्त। नाम के धारे खण्ड ब्रह्मण्ड॥'

सभी दुनिया उसने बनाई है। क्या कुत्ता, क्या बिल्ला, क्या हाथी, क्या घोड़ा, क्या इन्सान, क्या हैवान, क्या देवी, क्या देवता, सभी उसने बनाए हैं। इनमें से अगर ऊँचे से ऊँचा जन्म है तो इन्सान का है। इन्सान में से सबसे

ऊँचा वो है जो सन्तों से ताल्लुक पैदा करते हैं। उनसे पूछ कर नाम जपते हैं। उनमें से ऊँचे वो हैं जिन्होंने नाम जपकर अन्दर सतगुरु को प्रगट कर लिया। कहते वो धन हैं, वो मुबारिक हैं, वो मालिक के हैं। ऐसे तो सभी मालिक के बन्दे हैं पर वो हमेशा के लिए मालिक के बन्दे हैं। वो खास बन्दे हैं। मालिक उनकी सुनता है, मालिक उनके वस में है, उनके काबू में है। बागड़ में एक दफा हम गये। घूमने जा रहे थे बाहर। शाम का वक्त था। हम जा रहे थे उधर से लोग आ रहे थे। खेतों से काम करके आ रहे थे। एक औरत आ रही थी। साथ में मीढ़े का छोटा सा बच्चा था। भेड़ का बच्चा छोटा सा मींढ़ा, छोटा सा बच्चा था। अब वो खिलाती पिलाती थी। भीड़ देखकर वो बच्चा औरत की टांगों में फंसता जाए। उसने कहीं भी नहीं देखा, औरत के पीछे गया। फिर और को, किसी तरफ नहीं देखा उसके पीछे पीछे गया। मस्ताना जी देखकर कहने लगे देखो भई! इस बच्चे ने किसी तरफ नहीं देखा। ये जो खिलाती है इसके पीछे पीछे गया। इस तरह जो मालिक की भक्ति करते हैं, मालिक उनको देखता है। बाकी सारी दुनियां रहती है किसी को नहीं पूछता। जो भक्ति करे वो खास बन्दे हैं, बाकी कोई खास बन्दे नहीं उसके। किसी को नहीं पूछता। भक्ति के बगैर किसी को नहीं पूछता। मालिक उनके पीछे-पीछे फिरता है। हाँ जीः

पाठी– आपण लीआ जे मिलै विछुड़ि किउ रोवँनि॥
साधू संगु परापते नानक रंग माणँनि॥

मैनेजर साहिब जी– ऐसे तो सारी दुनियां ही भक्ति करती है। कोई कर्म-धर्म, कोई मन्दिर पूजता है, कोई कुछ करता है, कोई कुछ करता है। पर कहते ऐसे मालिक नहीं मिलता, ऐसे मालिक नहीं मिलता। अगर हमारी मेहनत करने से, कर्म-धर्म करने से मिलता तो आज तक हम मालिक से बिछुड़े न रहते। मालिक तक पहुँच जाते। कहते हैं उसको मिला देने वाले साधू हैं, सन्त हैं, जो मालिक से मिले हैं। उनके ज़रिये मिल सकता है। जिसने वो रास्ता देखा है वो हमें दिखा सकता है। जो उस रास्ते जाते हैं वो ही हमें दिखा सकते हैं, दूसरे नहीं। उनके ज़रिये मालिक मिल सकता है, बाकी नहीं। यही कबीर साहिब कहते हैंः–

वसतु कहीं ढूडें कहीं, किह विधि आवे हाथ।
कहे कबीर तब पाइअै, जब भेदी लीजे साथ॥

भेदी लीआ साथ कर, दीनी वसतु लखाए।
कोट जनम का पंथ था पल में पहुंचा जाए॥

कहते हैं जहाँ करोड़ों सालों में जाना था वहाँ दिनों में चला जाता है, अगर सही रास्ता हो। सीधा रास्ता हो तो जल्दी पहुँच जाता है। अगर गलत रास्ते में पड़ जाये तो कितना ही दौड़ता जाए दूर ही दूर होता जाता है। हमने जाना हो डबवाली को, चल पड़े सरसे को, चाहे कितना ही दौड़ते जायें दूर ही दूर हो जाऐंगे। सीधे रास्ते पर कदम-कदम भी चलें एक दिन घर पहुँच जाऐंगे। कहते हैं सही रास्ता साधुओं से मिलता है जो अन्दर गये हैं, मालिक के पास पहुँचे हैं। कहते उनके ज़रिये मालिक मिल सकता है और कोई तरीका नहीं। हाँ जीः

पाठी– साधु संगु परापते नानक रंग माणँनि॥
हरि जेठु रंगीला तिसु धणी जिस कै भागु मथँनि॥

मैनेजर साहिब जी–कहते हैं जेठ का महीना क्या? मनुष्य जन्म उनका सफल है, मनुष्य जन्म वो सफल कर गये जिनको कोई कामिल साधू मिल गया। पर कामिल साधू किसे मिलता है? जिसके ऊँचे भाग हैं, कोई पुरानी भक्ति है, मालिक की दरगाह से हुक्म हुआ हो। कहते हैं बगैर हुक्म के पूरा फकीर भी नहीं मिलता। यही हम रोज़ पढ़ते हैंः–

धुरि करमि पाइआ तुधु जिन कउ सि नाम हरि कै लागे॥

जिसको धुर दरगाह से हुक्म हो उसको कामिल साधू मिलता है, वो नाम जपता है।

कहे नानकु तह सुखु होआ तितु घरि अनहद बाजे॥

जो मेहनत करता है, वो आनन्द हासिल करता है। वो अपने घर पहुँचता है। हाँ जीः

पाठी– आसाडु तँपदा तिसु लगै हरि नाहु न जिना पासि॥
जगजीवन पुरखु तिआगि कै माणस सँदी आस॥

मैनेजर साहिब जी–आसाढ़ का महीना गर्मी का महीना होता है। लेकिन जो दुनियां में मौसम की गर्मी है वह तो हम हर साल सहन करते हैं। पंखा चला दिया गर्मी दूर हो गई। बर्फ रख ली गर्मी दूर हो गई। हवादार मकान हुआ गर्मी हट गई। पहाड़ पर चले गये गर्मी से बच गये। छाँव में बैठ गये गर्मी कम हो गई। लेकिन गुरु अर्जुन साहिब का मतलब इस गर्मी से नहीं, बल्कि माँ के पेट में

नौ महीने मल मूत्र में उलटा लटकना, नरकों की आग में जलना, कुत्ते बिल्लियों की योनि में जाना, इस गर्मी से है। बैलों का हाल देख लो कैसे गाड़ी में जोतते हैं, हल जोतते हैं। चलते नहीं तो डण्डे मारते हैं। कई दफा बैठ जाते हैं तो आरा मारते हैं, सोच लो! इस गर्मी से है। कहते जिन्होंने दुनियां से प्यार डाला, विषय विकारों की लज़्ज़तें लीं, बेटी-बेटों में फंस रहे, और धन्धों में फंसे रहे, आसाढ़ की गर्मी उनके लिए है जो नाम नहीं जपते हैं। शांती इसके अन्दर है, बाहर कहीं नहीं। सुख इसके अन्दर है, बाहर कहीं सुख नहीं। सुख नाम के प्रगट करने में है। सतगुरु को अन्दर प्रगट करने में है। सारी दुनियां उल्टे रास्ते पड़ी है। कहते हैं आसाढ़ की गर्मी उनके लिए है जो सुख विषय-विकारों में, पुत्रों-धीओं में, और सिआपों में ढूंढ़ते हैं। सारी दुनियां उल्टे रास्ते पड़ी है। फिर मिले कैसे!

अै मन मुल भूलिजा जासहि पति गावाहि॥
इह जगतु मोहि दूजे विआपिआ गुरमती सचु धिआई॥

कि ऐ मन! सारी दुनियां उल्टे रास्ते जाती है। इज़्ज़त गंवायेगी, यमदूतों के हाथ चढ़ेगी, तू तो ना भूल, तू तो कोई गुरमत अखत्यार कर, किसी कामिल फकीर से नाम जपना सीख। सच्चे सतगुरु को अन्दर प्रगट कर, उस सच्ची ताकत को अन्दर प्रगट कर। सुख के धाम जा, तू तो ना भूल। सो सारी दुनियां ही भूली है, उल्टे रास्ते जाती है। कहते हैं आसाढ़ की गर्मी उनके लिए है जिन्होंने विषय विकारों से प्यार कर रखा है। पुत्र-धीओं की लज़्ज़तों में लगे पड़े हैं, इन्द्रियों के भोगों में लगे पड़े है, चोरीआं-ठगीआं कर रहे हैं, आसाढ़ की गर्मी उनके लिए है। बाहर कहीं सुख नहीं। कहते हैं जो दुनियादारों के पीछे लगे, दुनियां से प्यार किया, पुत्रों-धीआं से प्यार डाला, विषय-विकारों की लज़्ज़तें ली, कहते आसाढ़ की गर्मी उनके लिए है। हाँ जीः

पाठी– दुयै भाइ विगुचीअै गलि पईसु जम की फास॥
जेहा बीजै सो लुणै मथे जो लिखिआसु॥

मैनेजर साहिब जी–सुख इसके अन्दर है, शांती इसके अन्दर है। हमने जाना अन्दर है ये ढूंढ़ती बाहर है। मोहब्बत किसके साथ डाली है? विषय विकारों से, इन्द्रियों के रसों से, कौमों मज़हबों से, रिश्तेदारों से, ज़मीनें जायदादें इकट्ठी कीं। अब उनके लिए चोरीआं-ठगीआं, पुत्रों-धीओं के लिए, अपने जिस्म के लिए, चोरीआं-ठगीआं, रिश्वतें, सौ सिआपे इकट्ठे किए। देशों के लिए एक दूसरे के

खून किये, कौमों के लिए खून किये, सोच लो! साथ कोई भी नहीं गया। फिर क्या हुआ आगे? जिस वक्त मौत आई, यमदूत इसे पकड़ कर ले गये, धर्मराय के दरबार में। धर्मराय धर्म का न्याय करने वाला है। धर्मराय कहता है भाई! यह तेरे कर्मों का लेखा है, अपना हिसाब देख ले फिर इसके कर्मों के अनुसार जहाँ भेजना होता है भेज देता है। नरकों में गया, गन्दी-गन्दी योनियों में गया। इसके किये इसे भोगने पड़े। हाँ जीः

पाठी– रैणि विहाणी पछुताणी उठि चली गई निरास॥
जिन कौ साधु भेटीअै सो दरगह होई खलासु॥

मैनेजर साहिब जी–ये मनुष्य जन्म कीमती से कीमती था। मालिक को मिलने का टाईम था। इस जन्म में इसने क्या करना था? जिस तरह एक औरत दिन में घर का काम करती है और जेठ जेठानी, देवर, सास, ससुर और अन्य रिश्तेदारों की सेवा में भी लगी रहती है। उसको पति से मिलने का समय रात को ही मिलता है। इसी तरह ये जो दस बीस पचास साल की उम्र, ये हमें मालिक के मिलने की रात है। इस समय में इसने क्या करना था? उस औरत की तरह, अपने रोटी के गुजारे के लिए कमा कर, अपने बाल-बच्चे पाल कर, रिश्तेदारों से गुजार कर, मालिक का नाम जपना था। मालिक का नाम जपना था, अगर अब मालिक का नाम ना जपा तो फिर कोई वक्त नहीं इसके लिए! फिर इसके लिए चौरासी तैयार है। युगों के युग बीत गये हम चौरासी में ही भटकते आ रहे हैं। कभी तो हमें आदमी की योनि मिली होगी। उस टाईम नाम न जपा। फिर इसे चौरासी में डाल दिया। टाईम निकल गया। चौरासी के बाद फिर कहीं आदमी की योनि मिली होगी। फिर इसी तरह गुजार गया। इस तरह गुजारता चला गया। कहते युगों के युग बीत गये। कहते फिर बहुत पछताता है मौके पर। फिर युगों के युग बीत जाते हैं। नरकों में जाता है तो युगों के युग नरकों में पड़ा रहता है। स्वर्गों में चला जाए तो युगों के युग स्वर्गों में पड़ा रहता है। फिर कहीं आदमी की योनि मिलती है। फिर कौन सा इतबार है आगे जाकर कर लेगें। इसी तरह गुजारते आए हैं और गुजारते चले जायेंगे। यही गुरु अर्जुन साहिब कहते हैंः–

'जे बेला वक्त विचारीअै तां कित वेला वक्त भगत होइ॥'

अगर बेला वक्त विचारते रहे, हाय कर ले, हाय कर ले, फिर भक्ति करेंगे। कहते फिर नहीं होता। ये वक्त अब है, अब कर लो, कर लो। मौत का क्या

पता है कौन से टाईम आ जाए? कहते जिन्होंने मनुष्य जन्म पाकर किसी कामिल साधू से ताल्लुक डाला, नाम जपना सीखा, नाम जपा, वो दरगाह में जाकर आज़ाद हो गये। अपना जन्म-मरण मुका गये। बाकी इसी तरह आसाढ़ की गर्मी में सड़ते आये और सड़ते चले गये। हाँ जीः

पाठी– करि किरपा प्रभ आपणी तेरे दरसन होइ पिआस॥
प्रभ तुधु धिनु दूजा को नही नानक की अरदासि॥

मैनेजर साहिब जी–गुरु अर्जुन साहिब मालिक आगे बेनती करते हैं कि ऐ मालिक! तूं हमारे पर भी मेहर कर, आसाढ़ की गर्मी से निकाल। हमारा पर्दा खोल दो, दर्शन दो! मैं तेरे चरणों में पड़ा रहूँ। तेरे बगैर मेरा कोई नहीं। यही मेरी बेनती है। हाँ जीः

पाठी– प्रभ तुधु बिनु दूजा को नहीं नानक की अरदासि॥
आसाडु सुहँदा तिसु लगै जिसु मनि हरि चरण निवास॥

मैनेजर साहिब जी–कहते हैं आसाढ़ का महीना क्या? मनुष्य जन्म वो सफल कर गये जिन्होंने कामिल साधू से रास्ता ले कर नाम जपा। मेहनत करके अन्दर सतगुरु के चरणों में गये। सतगुरु के चरणों में निवास हासिल कर लिया, वो जन्म सफल कर गये। बाकी आसाढ़ की गर्मी की तरह सड़ते आये और सड़ते चले गये। हाँ जीः

पाठी– सावणि सरसी कामणी चरण कमल सिउ पिआरु॥
मनु तनु रता सच रंगि इको नाम आधारु॥

मैनेजर साहिब जी–सावन का महीना क्या? सावन के महीने में अक्सर वर्षा शुरू हो जाती है। हवा ठण्डी हो जाती है। लोग घरों से निकल कर बाहर पेड़ों पर झूले झूलते हैं। स्त्रीयां खुशियां मनाती हैं। गुरु अर्जुन साहिब कहते हैं असली खुशी, असली सावन उनका है जिन्होंने अन्दर सतगुरु को प्रगट किया है। उनके रंग में मस्त हैं, अमृत पी रहे हैं। वो सच्ची खुशी हासिल कर गये। वो शांती हासिल कर गये। बाकी जो विषय-विकारों में, झूठे धन्धों में गुजार गये, वो आसाढ़ की गर्मी की तरह सड़ते आये और सड़ते चले गये। हाँ जीः

पाठी– बिखिआ रंग कूड़ाविआ दिसनि सभे छारु॥
हरि अंम्रित बूंद सुहावणी मिलि साधु पीवणहारु॥

मैनेजर साहिब जी–हर एक आदमी, चाहे कोई हिन्दु है, चाहे मुसलमान है, चाहे सिक्ख है, चाहे ईसाई है, चाहे चूहड़ा है, चाहे चमार है, चाहे कर्मी-धर्मी है, चाहे

कसाई है, चाहे हिन्दुस्तान का है, चाहे पाकिस्तान का है, चाहे अमेरिका का है, चाहे अफ्रीका का है; हर एक आदमी के अन्दर अमृत बरस रहा है। मालिक ने इसके लिए रखा है। इसकी जायदाद है। है सब के अन्दर। जैसे हर जगह पानी है; कहीं दस फुट पर, कहीं बीस फुट पर, कहीं सौ फूट पर, कहीं दो सौ फुट पर, है सब जगह। इस तरह हर एक के अन्दर अमृत बरस रहा है। लेकिन उसे पीता कौन है? कहते हैं जिसने किसी कामिल साधू से ताल्लुक पैदा किया, उससे नाम लिया, नाम जपा, अन्दर गया; वो पीता है, बाकी ना। है सबके अन्दर। रखा सब के अन्दर है, मगर वाकिफकार फकीर के ज़रिये पीया जाता है। जब वो अमृत पीता है उसके मुकाबले में कोई लज्जित नहीं। वो ऐसी लज्जित है उसके मुकाबले में दुनियां में कोई लज्जित नहीं।

फरीदा सकर खण्डु निवात गुडु माखिउ मांझा दुधु॥
सभै वसतु मिठीयां रब न पुजनि तुधु॥

उसके मुकाबले में कोई लज़्ज़त नहीं। जब वो पी तो जितनी दुनियां की लज्जितें, सब फीकी लगने लग गई। इधर ख़्याल ही नहीं आता। ये सब कूड़ लगने लग जाता है, ज़हर लगने लगता है। इधर से ताल्लुक टूट गया। हाँ जीः

पाठी– वणु तिणु प्रभ संगि मउलिआ संम्रथ पुरख अपारु॥
हरि मिलणै नो मनु लोचदा करमि मिलावणहारु॥

मैनेजर साहिब जी–कहते हैं जिसने किसी साधू से ताल्लुक डाला, वो अमृत पीया, अन्दर जाकर देखा, क्या? कि वो मालिक जलो-थलो में, ज़र्रे-ज़र्रे में है। उजाड़ों-पहाड़ों में जहाँ जाओ ज़र्रे-ज़र्रे में मालिक दिखाई देने लगता है। अब मालिक आगे बेनती करते हैं कि ऐ मालिक! हमारा भी मन तेरे दर्शनों को लोचता है। तूं हमारे पर भी मेहर कर। हमें भी कोई ऐसा साधू मिला। हम भी आपके पास जा सकें। तेरे दर्शन कर सकें। अन्दर शांती ले सकें। कहते 'करम' फारसी का लफ्ज़ है। इसका मतलब है बख़्शीश। कि तेरी मेहर से बगैर, तेरे करम के बगैर, हमारा पर्दा नहीं खुल सकता, तेरे दर्शन नहीं हो सकते। ये तेरी मेहर ही है जो हम तेरे दर्शन कर सकते हैं! इसलिए तूं हमारे पर भी मेहर कर कि तेरे दर्शन हों। हाँ जीः

पाठी– जिनी सखीए प्रभु पाइआ हँउ तिन कै सद बलिहार॥
नानक हरि जी मइआ करि सबदि सवारणहारु॥

मैनेजर साहिब जी–कहते हैं जिस-जिस पर मालिक ने मेहर की, कोई कामिल

साधू मिलाया, उन्होंने नाम जपा, अन्दर सतगुरु को प्रगट किया, हम उन पर कुर्बान हैं, बार-बार कुर्बान हैं। वो धन हैं, वो मुबारिक हैं। उनका दुनियां में आना सफल है। कहते हम उन पर बार-बार कुर्बान हैं। कहते हैं कि मालिक हमारे पर भी इसी तरह मेहर कर। हमें भी अपना वो रूप दिखा, कौन सा? वो असली रूप है 'शब्द,। उस मालिक का रूप क्या है? 'शब्द'।

तिसु रूप न रेख अनाहदु बाजे सबदु निरंजनि कीआ॥

ताकि हम भी देख लें कि ज़र्रे-ज़र्रे में तूं है।'' हाँ जीः

पाठी– नानक हरि जी मइआ करि सबदि सवारणहारु॥

सावणु तिना सुहागणी जिन रामनामु उरि हार॥

मैनेजर साहिब जी–सावन का महीना क्या? मनुष्य जन्म उन रूहों का मुबारक है जिनके गले में राम नाम का हार है। राम नाम का हार क्या? जो हर वक्त राम नाम से जुड़े रहते हैं, वो लज्जित लेते हैं, वो रस लेते हैं, वो अमृत पीते हैं। कहते हैं वो जन्म सफल कर गये। वो सुख और शांती ले गये। बाकी आसाढ़ की गर्मी की तरह सड़ते आये और सड़ते चले गये। हाँ जीः

पाठी– भादुइ भरमि भुलाणीआ दूजै लगा हेतु॥

लख सीगार बणाइआ कारजि नाही केतु॥

मैनेजर साहिब जी–भादों का लफ्ज़ ''भा'' और 'दो' का मतलब है, दो कहते हैं आग को, 'भा' कहते है भड़की हुई आग। इस महीने में क्या होता है? थोड़े से बादल आए, थोड़ी सी बूंदाबांदी हुई, बादल चले गये। फिर ऐसी गर्मी होती है कि आदमी दुखी हो जाता है। उधर मक्खी, मच्छर बहुत हो जाता है। खेतों में घास पैदा हो जाता है। ये घास निकालता है और तड़फता है वहाँ। कितने तो साधू बन जाते हैं विचारे। भई कौन सिआपा करे ये। फकीर बन जाते हैं, दुखी होकर। सोच लो! कहते भादों का महीना क्या? मनुष्य जन्म पाकर कौन दुखी होते हैं? कौन भरमों में भूले हैं? जो सतगुरु का नाम नहीं जपते। जिन्होंने दुनियां से प्यार डाला, विषय-विकारों की लज्जितों में फंसे रहे। *'भादुइ भरिम भुलाणीआ दूजै लगा हेतु'*। मालिक को छोड़कर इधर-उधर जाए। बाहर इसने अनेकों सूखों के सामान इकट्ठे किये। इनमें शांती नहीं। रात भी अर्ज़ की थी कि एक ने बड़े-बड़े काउच बना लिए। आखिर आगे से आगे, आगे से आगे। कहता अब मुझे इसमें भी शांती नहीं। कहता अब भी शांती नहीं। अगर बाहर के सामानों में शांती होती तो अमीर लोग शांती में रहते। उन जैसी बेचैनी किसी

को भी नहीं। अमरीका सबसे अमीर देश है। उसमें फोर्ड सबसे अमीर आदमी है। वो बेचारा सन्तरे के रस को तरसता मर गया। उसने कहा मुझे कोई शांती दे दो। मेरी सारी जायदाद ले ले पर शांती दे दे। इन चीज़ों में शांती होती तो वो क्यों कहता? सोच लो! इसी तरह अगर भक्ति की ओर आयें। माया में तो है ही नहीं। हज़ारों कर्म धर्म कर लो, हज़ारों पूजा पाठ कर लो अगर अन्दर नाम का रस ना आया तो कौन से काम? मस्ताना जी फरमाते थे कि एक शाहूकार था। उसने लड़की की शादी की। शादी की तो उसका पति मर गया। अब वो इसके लिए क्या करे? अब उसके लिए एक बग़ीचा बना दिया। कोठी बना दी। नौकर चाकर दे दिये, गहने कपड़े, हर एक चीज़ का सुख दे दिया। अब और तो सब सुख हैं, पर पति वाला तो सुख नहीं। इसी तरह कितने ही जप, तप, कर्म, धर्म, भेख बना ले, जब तक अन्दर रस नहीं लेते मालिक से नहीं मिलते तो कौन सा सुख है? कहते हैं कौन दुखी होते हैं? जो मालिक का नाम नहीं जपते, मालिक को अन्दर प्रगट नहीं करते वो दुखी होते हैं। हाँ जीः

पाठी– जितु दिनि देह बिनससी तितु वेलै कहसनि प्रेतु॥
पकड़ि चलाइनि दूत जम किसै न देनी भेतु॥

मैनेजर साहिब जी–अब इसने वक्त गुज़ारा पुत्रों-धीआं में, ज़मीनों-जायदादों को इकट्ठी करने में, और दुनियां के सामान इकट्ठे करने में। जिस वक्त मौत आई किसी को भी पता नहीं लगता चाहे कितने ही पहरेदार खड़े कर दो। पता ही नहीं कौन ले गया, किधर से ले गया? जो घर के लोग सारी उम्र उसकी कमाई खाते रहे, खुशामदें करते रहे, वे ही अब हाथ भी नहीं लगाते कि हमको चिपट न जाये। फिर उसको प्रेत कहते हैं और उससे डरते हैं। सच्चे पातशाह फरमाते थे– आम तो हमारे यह है कि जब इसे दफनाने जाते हैं कोई तो तिनका तोड़ देते हैं, कोई मटका तोड़ देते हैं कि आज से तेरा और मेरा सम्बन्ध खत्म हो गया। सच्चे पातशाह फरमाते थे कि यू. पी. में कई जगह नीम के पत्ते चबाते हैं कि अब तू हमें इतना कड़वा लगता है जितनी कि यह नीम कड़वी है। उस टाईम सबसे ताल्लुक टूट जाता है। कोई नजदीक नहीं आता। हाँ जीः

पाठी– छडि खड़ोते खिनै माहि जिन सिउ लगा हेतु॥
हथ मरोड़ै तनु कपे सिआहहु होआ सेतु॥

मैनेजर साहिब जी–जब मौत आती है, यमदूत जब इसकी रूह को निकालते हैं तो बहुत तकलीफ होती हैः–

जिदं निमाणी कढीअै हडा कूं कड़काइ॥

हड्डीयां कड़कती हैं। रंग इसका काला, पीला हो जाता है। उस बेचारे पर मुसीबत पड़ी होती है। उधर घर वाले कहते हैं कि कहीं रुपया दबाया है तो बता दो! उसको अपनी पड़ी होती है। उनको अपनी पड़ी होती है। ओहो! ओहो! किसी की औरत मरी। कहता मुझे ये भी नहीं बता कर गई कि किसका लेना देना है, बता कर भी नहीं गई। कहते इसका हाल ये है। उस टाईम इसे मुसीबत पड़ी होती है। उनको अपनी पड़ी होती है। हाँ जीः

पाठी– जेहा बीजै सो लुणै करमा संदड़ा खेतु॥
नानक प्रभ सरणागती चरण बोहिथ प्रभ देतु॥

मैनेजर साहिब जी–अब जिन से प्यार पाया था पुत्रों-धीआं से, कौमों-मज़हबों से, और रिश्तेदारों से। उनके लिए चोरीआं, ठगीआं, रिश्वतें सौ सिआपे किये। कत्लों खून कीये। जब मौत आई तो फिर क्या हुआ? अब जो कर्म किये थे भोगने पड़े। नरकों में गया, गन्दी गन्दी योनिओं में गया। अब जो किया था भोगना पड़ा। वहाँ कोई माफी नहीं। अब गुरु अर्जुन साहिब जी मालिक आगे बेनती करते हैं कि ऐ सतगुरु! ऐ मालिक! हम संसार समुद्र में बहे जा रहे हैं। तेरे चरणों का आसरा लेते हैं। और कोई संभालने वाला नहीं। आप हमें, बहे जा रहों को बचा लो। हाँ जीः

पाठी– नानक प्रभ सरणगती चरण बोहिथ प्रभ देत॥
से भादुइ नरकि न पाईअहि गुरु रखण वाला हेतु॥

मैनेजर साहिब जी–कहते हैं भादों का महीना क्या? मनुष्य जन्म पाकर अगर ये सतगुरु की भक्ति करता है, अगर ये सतगुरु की भक्ति करता है तो यमदूत नजदीक ही नहीं आते, नरक नजदीक ही नहीं आता। कोई इसे नरकों में डालने वाला नहीं। अगर ये ठीक अपने सतगुरु की भक्ति करे। अपने सतगुरु की तो कोई नहीं करता। बाहर वालों की तो सभी करते हैं। अपने अन्दर वाले की तो कोई नहीं करता। यमदूत भी अन्दर और सतगुरु भी अन्दर है! अगर उसकी भक्ति करे, तो किसी मौके गिर भी जाए तो यमदूत नजदीक नहीं आते।

जिना सतिगुरु सिउ चितु लाइआ सु खाली कोई नाहि॥
तिन जग की तलब न होवई ना ओइ दुख सहाहि॥
बुरा भला जो गुरु भगत कबहूं नरक न जाइ॥

बगैर गुरु भक्ति, बगैर सतगुरु की भक्ति के कोई छुटकारा नहीं, कोई

बचाव नहीं। हाँ जीः

पाठी– असुनि प्रेम उमाहड़ा किउ मिलीअै हरि जाइ॥
मनि तनि पिआस दरसन घणी कोई आणि मिलावै माइ॥

मैनेजर साहिब जी–आसौज का महीना क्या? कहते हैं मनुष्य जन्म पाकर हमें परमात्मा के मिलने की गहरी प्यास लगी हुई है। उनके मिलाप के लिए तीव्र विरह लगी हुई है। कहते हैं फिर हम क्या करें? अब आगे कहते हैं। हाँ जीः

पाठी– सन्त सहाई प्रेम के हउ तिन कै लागा पाइ॥
विणु प्रभ किउ सुखु पाईअै दूजी नाही जाइ॥

मैनेजर साहिब जी–कहते हैं कि मालिक से मिलाने के लिए सन्त आते हैं। मालिक को मिलाने वाले सन्त हैं। चलो, सन्तों की शरण लो। मालिक उनके वस में है।

रूड़ो ठाकुरु कितै वसि न आवै॥
हरि सो किछु करे जे हरि किआ सतां भावै॥
कीता लोड़नि सोई कराइनि दरि फेरु न कोई पाइदा॥

यही पलटू साहिब कहते हैंः-

राम समीपी सन्त हैं वह जो करें सो होये॥
वह जो करे सो होये हुकम में उनके साहिब॥
सन्त कहे सोइ करें राम ना करते बायब॥

मुसलमान फकीर ले लो, वो भी यही कहते हैंः–

औलिया रा हस्त कुदरत अज़ अल्ला,
तीर जुसतह जुस्ता अरन्दश जे राह।
औलिया इत्तफाले हक्क अंद ऐ पिसर,
हाजरी व गैबो अन्दर नजर॥

कि औलिया अल्लाह को इतनी ताकत है कि जो तीर परमेश्वर की दरगाह से चला है, उसको वह वापिस कर सकते हैं। अब सवाल पैदा हुआ कि वो परमात्मा के शरीक या सांझी होते हैं? तो मौलवी रूम साहिब कहते, नहीं! बल्कि वे परमात्मा के प्यारे पुत्र होते हैं। प्यारा बेटा जो चाहे बाप से करवा सकता है। मालिक प्रेम है। सन्त मालिक के रंग में रंगे होते हैं। उनके अन्दर मालिक का प्रेम ठाठें मारता है। जो उनकी सोहब्बत में जाता है वो भी रंगा जाता है।

महा पवित्र साध का संगु॥ जिस भेटत लागै प्रभु रंगु॥
जो भगतों से प्रीत लगावे॥ सो निश्चय हरि को पावै॥

महात्मा चरणदास कहते हैं कि सब फकीरों का एक ही मत है। ऐसे तो सभी कहते हैं कि मालिक से प्यार करो। सोच लो! ये कीमती बात है। सारी दुनियां ही कहती है कि मालिक से प्यार करो। पर जो चीज़ हमने देखी नहीं उसका प्यार कैसे आए? जो चीज़ हमने देखी नहीं उसका प्यार कैसे आ सकता है। गुरु अर्जुन साहिब कहते हैंः–

नदरी आवै तिसु सिउ मोहु॥ किउ मिलिअै प्रभ अबिनासी तोहि॥
करि किरपा मोहि मारगि पावहु॥ साध संगति के अंचलि लावहु॥

कि जो चीज़ इन आंखों से दिखाई देती है, उससे हमारा प्यार है। तेरे साथ प्यार कैसे करें? हमें भी कोई ऐसा साधू मिलाओ जो तेरे साथ प्यार करना सिखाए। जिसके प्यार से तेरे पास पहुँच सकें। सन्तों का प्यार ही इसे आगे लेकर जाता है। बाकी कोई चीज़ नहीं! बुल्लेशाह ने कहा हैः–

जिचर न इश्क मजाजी लागे सुई ना सीवे बिन धागे।
इश्क मजाजी दाता है। जिस पिच्छों मस्त हो जाता है॥

कि पहले शरीर का प्यार शुरू होता है। वो इसे आगे लेकर जाता है। ये ही ईसा ने कहा हैः–

Love begins in the flesh & ends in the spirit.

कि प्यार पहले जिस्म से शुरू होता है, फिर आत्मा में घुल मिल जाता है। उनका प्यार ही है जो इसे आगे लेकर जाता है। अगर उनका प्यार ही नहीं तो कुछ नहीं। मालिक का रूप अगर दुनियां में है तो सन्त हैं और कोई नहीं।

अलख पुरख की आरसी सन्तों की है देह।
लखा जो चाहे अलख को इन्हीं में लख लेह॥

उनका प्यार ही इसे आगे लेकर जाता है। दुनियां का प्यार दुनियां में लेकर आता है। मालिक का प्यार सन्तों के ज़रिये मिलता है। सन्तों का प्यार आगे मालिक की दरगाह में लेकर जाता है। हाँ जीः

पाठी– जिन्हीं चाखिआ प्रेम रसु से तृपति रहे आघाइ॥
आपु तिआगि बिनती करहि लेहु प्रभू लड़ि लाइ॥

मैनेजर साहिब जी–कहते जो सन्तों के पास गये, उनकी सोहब्बत की, उनके अन्दर मालिक का प्यार बसता है, दुनियां का घटता है। जैसे-जैसे बढ़ता जाता है, दुनियां का घटता जाता है। फिर वो मालिक आगे क्या बेनती करते हैं? कि ऐ मालिक! तूं हमारे प्यार को बढ़ाता जा। हमें और किसी चीज़ की ज़रूरत

नहीं। न तन की ज़रूरत, न दुनियां के विषय विकारों की ज़रूरत, न दुनिया के किसी और सामान की ज़रूरत। एक तेरे प्यार की ज़रूरत है। गुरु अर्जुन साहिब फरमाते हैंः–

राज ना चाहउ मुक्ति ना चाहउ मन प्रीत चरन कमला रे॥

कि तेरे चरणों की प्रित ही चाहिए और कुछ नहीं। यही दादू साहिब कहते हैं किः–

दादू जो कुछ हम को दीआ सो बस तुम्ही लेउ।
तुम बिन मन माने नाही दरस आपना देउ॥

पहले-पहले तो दुनियां का प्यार करता है। पहले तो कहता है भक्ति करूं मालिक की। जब सन्तों के पास आता है प्यार बढ़ता जाता है। बस, फिर कहते ऐ मालिक! तेरी भक्ति करूं। मुझे तूं खाने के लिए रोटी देता रह। जैसे नामदेव ने कहा है। दो सेर आटा दे दे। आध सेर नमक दे दे। एक पाव घी दे दे। एक लवेरी दे दे। एक घोड़ी दे दे। एक बिस्तर दे दे। एक आज्ञाकार औरत दे दे। फिर? फिर जब और प्यार बढ़ जाता है, फिर कहता ये भी झंझट है। ये घोड़ी क्या करनी है? ये गाय भी क्या करनी है? मोल ही ले लेगें थोड़ा घना दूध। फिर कहते ये भी क्या करना है। फिर कहते हैं, जैसे ईसा ने कहा है कि मुझे रोज़ की रोटी ही दे दो। जब यहाँ तक आ जाता है फिर कहता ये भी झंझट है। मालिक! रोटी दे या न दे। ख़्वाहिश तो वही रही। फिर कहता है तेरे सिवाय कुछ नहीं चाहिए। चाहे जिस्म भी जाए, कुछ नहीं चाहिए मुझे। इस तरह सन्तों की सोहब्बत में जाकर प्यार बढ़ता है, इश्क बढ़ता है। कहते हैं जिस जिसने उनकी सोहब्बत की मालिक का प्रेम बढ़ता गया। दुनियां का घटता गया। वो मालिक से कुछ नहीं मांगते कि मालिक तूं एक तूं ही चाहिए और कुछ नहीं। अगर बैकुण्ड तक का ख़्याल भी रह जाए तो भी मालिक नहीं मिलता।

जब लग बैकुण्ड की आस। तब लग होऐ ना चरन निवास॥

कहते हैं वो कुछ भी नहीं मांगते कि मालिका एक तूं ही चाहिए और कोई ख़्वाहिश नहीं। हाँ जीः

पाठी– जो हरि कंति मिलाईआ सि विछुड़ि कतहि न जाइ॥
प्रभ विणु दूजा को नहीं नानक हरि सरणाइ॥

मैनेजर साहिब जी–कहते जिनके अन्दर मालिक का प्रेम बस गया, दुनियां का घट गया। जैसे-जैसे बढ़ता गया, एक दिन मालिक की दरगाह में पहुँच गये,

मालिक की दरगाह में चले गये। उनका जन्म-मरण खत्म हो गया। फिर मालिक से बिछुड़ते नहीं। अब आगे बेनती करते हैं ऐ मालिक! तूं हमारे पर भी मेहर कर। हमें भी अपने साथ मिला लो। कहते हैं तेरी शरण में आए हैं। तेरे वगैर हमारा कौन है? तूं अपना प्यार बख़्श। हाँ जीः

पाठी– प्रभ विणु दूजा को नहीं नानक हरि सरणाइ॥
असू सुखी वसंदीआ जिना मइआ हरि राइ॥

मैनेजर साहिब जी–कहते हैं आसोज का महीना क्या? मनुष्य जन्म उनका सफल है जिन पर सतगुरु ने दया की, मेहर की। कोई कामिल फकीर मिला, उनकी सोहब्बत की। मालिक का प्रेम जाग उठा। मालिक के पास पहुँच गये। वो जन्म सफल कर गये। बाकी सब बर्बाद करके चले गये। हाँ जीः

पाठी– कतिकि करम कमावणे दोसु न काहू जोगु॥
परमेसर ते भुलिआं विआपनि सभे रोग॥

मैनेजर साहिब जी–कार्तिक का महीना क्या? मनुष्य जन्म पाकर, यह जैसे-जैसे कर्म करता है वैसे भोगता है। कहते किसी को दोष न दे, तेरे ही कर्मों का फल है। यह जो ऊंट, गाय, बैल, घोड़े, बनते हैं। आदमियों में ले लो– लगड़े हैं, लूले हैं, कोई अन्धा है, कोई काना है, देख लो! कोई बीमार है; ये सब कर्मों के नतीजे हैं। ये कर्म ही हैं जो हम भोगते फिर रहे हैं। तीस लाख किस्म के वृक्ष हैं। सत्ताइस लाख किस्म के कीड़े पतंगे हैं। चौदह लाख किस्म के पक्षी हैं। नौ लाख किस्म के पानी के जीव हैं। चार लाख किस्म के भूत, प्रेत, किन्नर, यक्ष, गन्धर्व, इन्सान, हैवान, देवी देवता वगैरह हैं। ये सब कर्मों के सिलसिले हैं। ये जो चाँद, सूरज वगैरह ये सब कर्मों के सिलसिलों से योनियां भोग रहे हैं। सब कर्मों के सिलसिले में हैं। कहते हैं सब कर्मों के सिलसिले से यहाँ आते हैं। जिसने भक्ति नहीं की वो सब कर्मों के सिलसिले गन्दी और अच्छी योनियां भोग रहे हैं। हाँ जीः

पाठी– वेमुख होए राम ते लगनि जनम विजोग।
खिन महि कउड़े होइ गए जितड़े माइआ भोग॥

मैनेजर साहिब जी–कहते हैं ये मनुष्य जन्म कीमती से कीमती है। इस जन्म में मालिक को मिलना था। अब ना मिले 'जन्म वियोग' क्या? युगों-युग का वकफा पड़ जाता है। फिर कहीं चौरासी भुगत कर आदमी की योनि मिलती है। फिर भी क्या पता भक्ति करे ना करे, कौन सा पता है? जो सामान इकट्ठे

किये थे– ज़मीनें, जायदादें, करखाने और और। जिस वक्त मौत आती है, छोड़ता है। फिर कहता ओहो! ओहो! मेरे कौन से काम आए? अब तक गफलत में गुजार गया। देखता है ओह मेरे कौन से काम आए? हाय छोड़ चला; क्या करूं? फिर क्या बनता है? महमूद गज़नबी ने हिन्दुस्तान पर सत्रह हमले किये। बहुत सा सोना, चांदी और जवाहरात लूटकर अपने देश ले गया और वहाँ जाकर बहुत खुश हुआ कि मैं बादशाहों से बड़ा बादशाह हूँ। जब आखिर वक्त बीमार हुआ तो हुक्म दिया कि सारा लूट का माल सजाया जाये। कई मीलों में वह दौलत सजाई गई। जब देखी तो रो-रोकर कहता है, हाय! हाय! इसके लिए लाखों बच्चों को अनाथ किया। लाखों औरतों को विधवा बनाया। अब यह मेरे साथ नहीं जाती। यही हाल सारी दुनियां का है। फिर पछताता है कि हाय ये क्या हुआ? अब तो गफलत में गुजार गया। मालिक की भक्ति ना की। फिर दुखः आता है। यही सामान साथ नहीं जाता। आगे फिर यमदूतों के डण्डे खड़े हैं इनके लिए। हाँ जीः

पाठी– विचु न कोई करि सकै किस थै रोवहि रोज॥
कीता किछू न होवई लिखिआ धुरि संजोग॥

मैनेजर साहिब जी–अब जो सामान इकट्ठे किये थे या बच्चों से मुहब्बतें पाईं, कोई भी मदद नहीं कर सकता। अभी अर्ज़ की थी कि जब पाकिस्तान बना, किसी के पुत्र-धी काम आये? ज़मीनें-जायदादें काम आई? कारखाने काम आए?, उनसे पूछ कर देखो? यहाँ ही काम नहीं आए आगे कहाँ से आयेंगे? जब गन्दे-गन्दे कर्म किये तो नरकों में सड़ना पड़ा। गन्दी-गन्दी योनिओं में जाना पड़ा। हाँ जीः

पाठी– बड़भागी मेरा प्रभु मिलै तां उतरहि सभि बिओग॥
नानक कउ प्रभ राखि लेहि मेरे साहिब बंदी मोच॥

मैनेजर साहिब जी– कहते हैं इस मुसीबत के मौके पर अगर इसे कोई कामिल साधू मिल जाये, सतगुरु की शरण मिल जाए; ये नाम जपना शुरू कर दे तो कहते हैं सभी सोच विचार खत्म हो जायें, सब झगड़े मिट जायें। अब मालिक आगे बेनती करते हैं कि ऐ मालिक! तूं बन्दी मोच (छोड़) है, क्या? जेलीयों को आज़ाद करने वाला है। हम चौरासी लाख जीआ-जून की कैद में फंसे पड़े हैं। तूं बन्दी छोड़ है, हमें भी आज़ाद कर ले, हमें भी छुड़ा ले। हाँ जीः

पाठी– नानक कउ प्रभ राखि लेहि मेरे साहिब बंदी मोच॥
कतिक होवै साध संगु बिनसहि सभे सोच॥

मैनेजर साहिब जी–कहते हैं कार्तिक का महीना क्या? मनुष्य जन्म पाकर अगर इसे कामिल साधू मिल जाए, उसकी शरण मिल जाए; ये नाम जपे तो सभी झगड़े मिट जाएं। धर्मराय के जाना ही न पड़े।

धरमराऐ है का कीआ हरिजन सेवक नेड़ि न आवै॥
साध संगि धरमराइ करे सेवा॥

बल्कि वो सेवा करने लग जाता है। एक मुसलमान फकीर हुआ, उसने कहाः–

तुरा बरोजे हिसाब ई अमर शवद्द मालूम।
कि बूद सलतनते बे हिसाब दरवेसी॥

कि जब तेरा हिसाब का दिन आयेगा, धर्मराय के जाना पड़ेगा, (जहाँ लोग धर्मराय के जाते हैं) तुझे पता चलेगा कि धर्मराय को ताकत नहीं कि तेरा हिसाब भी मांग ले। अगर इसे कामिल साधू मिल जाये तो धर्मराय हिसाब भी नहीं मांगता।

सिमरत नामु किलबिख सभि काटे।
धरमराइ के कागर फाटे॥
जो कोई संत सरण के दागी। तिनतै काल दूर होई भागी॥
जम की जाल निकटि नहीं आवे। मारग छाड़ि अलग हो जावे॥

यमदूत नजदीक ही नहीं आते। हाँ जीः

पाठी– मंधिरि माहि सोहंदीआ हरि पिर संगि बैठड़ीआह॥
तिन की सोभा किआ गणी नि साहिबि मेलड़ीआह॥

मैनेजर साहिब जी–माघ का महीना क्या? मुनष्य जन्म पाकर अगर मालिक की सोहब्बत मिल जाए। मालिक कहाँ रहता है? कबीर साहिब कहते हैंः

कबीर मन मेरा पंछी भया उड़कर चढ़ा आकास।
सुरग लोक खाली पड़ा साहिब संतन के पास॥
किरति संयोगी पाऐ भाल।
साध संगति में बसे गोपाल॥

यही एक मुसलमान फकीर ने कहा हैः–

हर के ख़ुआही हम नशीनी बा ख़ुदा।
गो नशीनी अन्दर हज़ूरे औलीआ॥

कि जो कोई कहता है मैं ख़ुदा के साथ बैठा हूँ, तो वो सन्तों के पास बैठे।

हम नशीनी साअते ब औलीआ।
बिहतर अज़ सद साला ताअत बे रिया॥

कि उनकी एक घड़ी की सोहब्बत बाहर की प्रेम से की हुई सौ साल की बन्दग़ी से ज़्यादा है।

गर सवी दूर अज़ हज़ूरे औलीआ।
दर हकीकत दूर गमताई अज़ ख़ुदा॥

जब तू सन्तों-महात्माओं की सोहब्बत से दूर से गया समझो ख़ुदा से दूर हो गया। सो कहते हैं मनुष्य जन्म पाकर अगर इसे कामिल से मिलाप हो गया, नाम जपा, मालिक की दरगाह में चला गया। कहते उनकी शोभा के लिए कोई लफ्ज़ नहीं मिलते। उनकी शोभा का वर्णन हो ही नहीं सकता। वो बहुत ऊँचे भागों वाले हैं। हाँ जीः

पाठी– तनु मनु मउलिआ राम सिउ संगि साध सहेलड़ीआह॥
साध जना ते बाहरी से रहनि इकेलड़ीआह॥

मैनेजर साहिब जी–कहते हैं उन्होंने साधुओं की सोहब्बत में जाकर अपने तन का प्यार छोड़ा, मन के विषय-विकार छोड़े, इन्द्रियों की लज़्ज़तें छोड़ी, अपना तन-मन कुर्बान कर दिया, धन का प्यार छोड़ा, ऐशो-इश्रत सब छोड़ दिये, मालिक को अर्पण कर दिया। कहते हैं वो आज़ाद हो गये। इनसे बरखिलाफ हो गये, जिनको कोई कामिल साधू नहीं मिला। चाहे मालिक अन्दर है; खाली आये और खाली चले गये। जिस वक्त मौत आती है या तो सतगुरु ले जाये (सतगुरु साध के रूप में आता है जिस चोले में सतगुरु बाहर आता है)। उसी रूप में इसे ले जाता है या यमदूत लेकर जाएं। जिनको तो कोई कामिल साधू मिला है, सतगुरु का नाम जपता है, चाहे थोड़ा ही जपता है, उसकी मौत के वक्त सतगुरु आयेगा। उसी रूप में आकर इसे ले जायेगा और वो खुशी-खुशी जायेगा। उसका चेहरा आगे से भी सुन्दर होगा। पता ही नहीं चलता भई ये मरा हुआ है। जिस्म नहीं अकड़ता क्योंकि उनके अन्दर खुशी होती है। जिनको कोई कामिल साधू नहीं मिला, वो रोता पीटता जाता है। जिस्म अकड़ जाता है, बुरा हाल

हो जाता है। कहते उनका कोई साथी नहीं। कोई संभालने वाला नहीं। हाँ जीः

पाठी– तिन दुखु न कबहू उतरै से जम कै वसि पड़ीआह॥
जिनी राविआ प्रभु आपणा से दिसनि नित खड़ीआह॥

मैनेजर साहिब जी–कहते हैं जिन्होंने साधू संग में जाकर मालिक का नाम जपा, मालिक को खुश कर लिया; वो मालिक की दरगाह में पहुँच गये। हर रोज़ मालिक की दरगाह में आते हैं जाते हैं, हर वक्त उनकी लज्जित लेते हैं। हाँ जीः

पाठी– रतन जवेहर लाल हरि कंठि तिना जड़ीआह॥
नानक बांछै धुड़ि तिन प्रभ सरणी दरि पड़ीआह॥

मैनेजर साहिब जी–कहते हैं हीरा, मोती, जवाहरात ये दुनियां की कीमती से कीमती लज़्ज़तें हैं या चीज़ें हैं। दुनियां की कीमती से कीमती चीज़े हैं। अगर इनकी कीमत के हिसाब से उनकी कदर करें साधुओं की, जो मालिक की दरगाह में पहुँच गये, कहते ये कुछ भी कीमत नहीं रखते। क्या? उनकी शोभा हो ही नहीं सकती। कहते हैं हम भी उन साधुओं की शोभा (हमारे सिखाने के लिए कहते हैं) हम भी उन साधुओं की धूड़ मांगते हैं, ठीक हम भी उनके संग में जाकर मालिक की दरगाह में पहुँच जाएं। हम भी ऊँचे हो जाएं, शोभा के लायक हो जाएं। हाँ जीः

पाठी– नानक बांछै धूड़ि तिन प्रभ सरणी दरि पड़ीआह॥
मँधिरि प्रभु आराधणा बहुड़ि न जनमड़ीआह॥

मैनेजर साहिब जी–कहते हैं हम भी उनके चरणों की धूड़ मांगते हैं। उनकी सोहब्बत मांगते हैं। जिन्होंने उनकी सोहब्बत में जाकर मालिक का नाम जपा। मालिक का नाम जपा। वो मालिक की दरगाह में पहुँच गये। उनका जन्म-मरण खत्म हो गया। उनका जन्म-मरण सफल हो गया। हाँ जीः

पाठी– पोखि तखारु न विआपई कंठि मिलिआ हरि नाहु॥
मनु बेधिआ चरनारबिंद दरसनि लगड़ा साहू॥

मैनेजर साहिब जी–पौष का महीना सख़्त सर्दी का महीना होता है। लेकिन गुरु अर्जुन साहिब का अभिप्राय दुनियां की सर्दी से नहीं है। क्योंकि वह तो हम हर साल सहते हैं और उससे बचने के भी उपाय कर लेते हैं। गर्म कपड़े पहन लिए, सर्दी हट गई; धूप में बैठ गये, सर्दी हट गई। परन्तु यहाँ मतलब जन्म-मरण की सर्दी से है। नरकों में जलने की सर्दी से है। कुत्ते, बिल्ले बनने की सर्दी से है। जिस तरह जो स्त्री पति की पार्श्व में है उनको सर्दी कैसी। क्या मतलब?

कि जो रूह भजन सिमरण करके मालिक की दरगाह में पहुँच गई उसे नरक कहाँ? उसे गन्दी-गन्दी योनि कहाँ? वो बेपरवाह के बस में है, उनके चरणों में है। उनके दर्शन करती है, उनके चरणों में निवास करती है। वो हमेशा के सुख में पहुंच गई। सब दुखों से दूर हो गई। दुख उनके नजदीक ही नहीं। हाँ जीः

पाठी– ओट गोविन्द गोपाल राइ सेवा सुआमी लाहु॥
बिखिआ पोहि न सफई मिलि साधू गुण गाहु॥

मैनेजर साहिब जी–कहते हैं उन्होंने भजन सिमरण करके ज़िन्दगी का सच्चा सुख प्राप्त कर लिया। वो हर समय मालिक की ओट में हैं। मालिक की छत्र छाया के नीचे हैं। उनका हर वक्त मिलाप साधुओं से है। साधुओं से मिलकर अपने मालिक के गुण गाते हैं। विषय-विकार, शराब, कबाव, की तरफ ख़्याल ही नहीं जाता। वो हर वक्त ऐसा अमृत पीती है जिसकी लज्जित लाजवाब है। हाँ जीः

पाठी– जह ते उपजी तह मिली सची प्रीति समाहु॥
करु गहि लीनी पारब्रहीम बहुड़ि न बिछुड़ीआहु॥

मैनेजर साहिब जी–यह रूह सतपुरुष की अंश है। यह सचखण्ड अनामी से आकर सोहंग के देश आई। फिर पारब्रह्म देश में आई। फिर ब्रह्म देश से होती हुई दुनिया में आकर फंस गई। अब ये दुखः उठा रही है। जब इसे कोई कामिल साधू मिला, उसने इसे तरीका बताया, इसने मेहनत की। यह जिस रास्ते आई उसी रास्ते वापिस चली गई, अपने घर पहुँच गई। इसका जन्म-मरण खत्म हो गया। बगैर साधुओं के इसे ठीक रास्ता नहीं मिलता। कहते हैं जहाँ से आई थी अगर इसे कामिल साधू मिला, ये वहाँ पहुँच गई। इसका जन्म-मरण खत्म हो गया। फिर इसका आना जाना खत्म हो गया। हाँ जीः

पाठी– बारि जाउ लख बेरीआ हरि सजणु अगम अगाहु॥
सरम पई नाराइणै नानक दरि पईआहु॥

मैनेजर साहिब जी–अब रूह शुक्राना करती अन्दर पहुँच गई कि मेरा पति समस्त खण्डों ब्रह्माण्डों का मालिक है, ऊँचे से ऊँचा है, परे से परे है, अगम है, अगाह है। मैं उसका क्या भजन कर सकती थी। मैं तो उसकी शरण में जा गिरी कि तूं ही बन्दोवस्त करे तो करे। उसने आप ही कामिल साधू मिलाया, आप नाम जपाया। उसे अपने विरद की लाज पड़ी, अपने घर ले गया। हाँ जीः

पाठी– सरम पई नाराइणै नानक दरि पईआहु॥
पोखु सोहंदा सरब सुख जिसु बखसे बेपरवाहु॥

मैनेजर साहिब जी–कहते पौष का महीना क्या? मनुष्य जन्म वो सफल कर गये जिन पर मालिक ने मेहर की। कोई कामिल साधू मिलाया। इसने नाम जपा मालिक की दरगाह में पहुँच गया। बाकी बर्बाद करके चले गये। हाँ जीः

पाठी– माघि मजनु संगि साधुआ धूड़ी करि इसनानु॥
हरि का नामु धिआइ सुणि सभना नो करि दानु॥

मैनेजर साहिब जी–माघ का महीना क्या? माघी का स्नान यहाँ करते हैं न? उसका महत्व समझा जाता है। हिन्दुओं में कोई गंगा जाता है। कोई यमुना जाता है। कोई सरस्वती जाता है। कोई पराग जाता है। कोई कहीं जाता है, कोई कहीं जाता है। इसी तरह सिक्खों में जाने लग गए। कोई अमृतसर, कोई मुक्तसर, कोई तरनतारण, कोई तलवंडी। लेकिन ये बात याद रखने वाली है कि बाहर का कोई भी पानी पापों की मैल नहीं उतार सकता। यह तीर्थ कहाँ से बने? तीर्थ कहाँ बने? जहाँ जहाँ सन्तों ने बैठकर भक्ति की या चोला छोड़ा या जन्म लिया। वो स्थान तीर्थ बन गये। तीर्थों को बनाने वाले सन्त हैं। कबीर साहिब कहते हैंः–

तीरथ नहाते एक फल, सन्त मिले फल चार।
सतिगुरु मिले अनेक फल कहें कबीर विचार॥

कि तीर्थों के नहाने का अगर एक फल है। अगर इसे कोई कामिल सन्त मिल जाए (वो ही तीर्थों को बनाने वाले हैं) तो चौगुणा फल है। अगर उनकी हिदायत के मुताबिक मेहनत करे, अन्दर सतगुरु को प्रगट कर ले तो उनके अनेकों फल हैं। वो कहने सुनने से परे है। अगर बाहर कोई तीर्थ है पापों की मैल उतारने वाला। कौन सा?

सन्त समागम सम कोई तीरथ और नहीं संसार॥
मजनु करत जनम के पातर करत ना लागी बार॥

क्या? सन्तों की सोहब्बत है। बाहर तो तन साफ होगा। सन्तों की सोहब्बत में मन की मैलों का पता लगता है। मन की मैलें साफ हो जाती हैं। तभी गुरु अर्जुन साहिब कहते हैं कि माघी कौन सी कर? ''*माघि मजनु संगि साधुआ धूड़ी करि इसनानु*।'' अगर तूं माघी करनी है, अगर तू माघी का स्नान करना है तो क्या कर? सन्तों के पास जा। उनके चरणों की धूलि में स्नान कर। जो असली धूल है वो और है। हम बाहर की धूल को भी नमस्कार करते हैं पर जो सन्तों की असली धूल है वो इसके अन्दर है। वो कैसे मिलती है? तुलसी साहिब कहते हैंः–

छिन छिन सुरत समार लार दृग्ग के रहो।

कि मिनट-मिनट में सैकण्ड-सैकण्ड से ख़्याल को आँखों के पीछे इकट्ठा करो। सिमरन करो यहाँ बैठकर.....

छिन छिन सुरत समार लार दृग्ग के रहो।

तन मन दर्पण मांज साज सुरत से गहो॥

तन का प्यार छोड़, मन के विषय-विकार छोड़। सभी चीज़ों का ख़्याल छोड़ दे। एक मुसलमान फकीर ने लिखा है कि अगर तू मालिक को मिलना है तो क्या कर? दुनियां के लिए दौड़ना भागना छोड़ दे, विषय-विकार छोड़ दे। सिमरन कर। दीनता और नम्रता अख्यिार कर। ये दीनता और नम्रता से भजन सिमरन करे, ख़्याल को आँखों के पीछे इकट्ठा करे। जब सभी ख़्याल छोड़कर सिमरन करता है, तब सारी दुनियां के ख़्याल निकल जाते हैं।

लगन लगे लख पार सार तत्त पाइआ॥

जब पूरी लग्न से सिमरन किया, अगर एक मिनट भी पूरी लग्न से करे, बस इसका काम बन जाये।

एक निमख जो सिमरन महि जीआ॥

कोटि दिवस लाख सदा थिरु थीआ॥

एक चित जिन इक छिणु धिआइउ॥

काल फास के बीच ना आइउ॥

कहते हैं जब पूरी लग्न से कीया, ख़्याल यहाँ इकट्ठा हुआ तो सार वस्तु आ गई। कौन सी?

अरे हाँ तुलसी सन्त चरन की धूड़ नूर दरसाइआ॥

वहाँ का जो नूर है वो सन्तों के चरणों की धूल है। कहते हैं अगर स्नान करना है तो वो कर। बाहर की धूल को भी नमस्कार करते हैं। पर असली धूल वो है। एक दफा हम गंगानगर गये। आप तो खैर नहीं जानते, पुराने प्रेमी शायद जानते हों। एक करतार सिंह सेठी होता था। पहले-पहले गया। रात को दो बजे मजलिस खत्म हुई। मस्ताना जी अन्दर जाने लगे। जब मस्ताना जी उठे अभी एक कदम चले थे तो उसने जहाँ मस्ताना जी बैठे थे ऐसे मिट्टी इकट्ठी की। मस्ताना जी ने देखा और कहने लगे क्या करता है, भई? कहने लगा चरण धूल लेता हूँ जी। मस्ताना जी कहने लगे देख भई तेरे सामने खड़े हैं। तू नाम रास्ता लेकर जप, ये धूल क्या करेगी? वो धूल अन्दर है, बोलो! फिर उसने मेहनत भी की, आराम से गया मौत के वक्त। सो असली धूल इसके अन्दर

है। बाहर धूल क्या है? हुक्म मानना। जब ये हुक्म मानकर अन्दर जाता है तो सतगुरु नूरी स्वरूप में आता है। वो आगे इसे ले जाता है। आगे दसवें द्वार में असली अमृत है, सच्चा अमृत हैः—

काइआ अन्दरि अमृतसरु साचा मनु पीवै भाइ सुभाई हे॥

वो अमृतसर इसके अन्दर है। वहाँ नाम का पानी है, वो पापों की मैल उतारने वाला है।

अठसठि तीरथ हरिनामु है किलविख काटणहारा॥

तभी उन्होंने कहा है। यही महात्मा चरणदास ने कहा है :-

अठसठि तीरथ तो बिखे बाहर क्यों भटकाय।
चरनदास यों कहत है उलटा ही घर आय॥

वो पराग इसके अन्दर हैः—

इड़ा पिंगुला अउर सुखमना तीनि बसहि इक ठाई॥
बेणी संगमु तह परागु मनु मजनु करे तिथाई॥

कहते हैं माघी यह कर। ये पापों की मैल उतारने वाला है। माघी करनी है तो ये कर। ये माघी है असली अगर देखी जाये कि अन्दर स्नान करे वो पापों की मैल उतारने वाला है। बाकी कोई नहीं। हम रोज़ पढ़ते हैः—

भरीऐ हथु पैरु तनु देह। पाणी धोतै उतरसु खेह॥
मूत पलीती कपड़ु होइ॥ दे साबूणु लईऐ ओहु धोइ॥
भरीऐ मति पापा कै संगि॥ ओहु धोपै नावै कै रंगि॥

कि अगर हाथ पैर मिट्टी से खराब हो जाएं तो पानी से धो ले। अगर ज़्यादा कपड़े खराब हो जायें तो साबुन से धो ले। लेकिन पापों की मैल उतारने के लिए वो नाम का तीर्थ इसके अन्दर है। वो पापों की मैल उतार सकता है। और कोई नहीं। बाहर नहाकर शरीर की मैल जरूर उतर जायेगी। पर ये भी नहीं पता उतरती है या चढ़ती है। सोचो! यहाँ कोई खुशबूदार फूल है या और चीज़ तो हमें खुशबू आयेगी के नहीं। अगर उसके ऊपर गन्दगी फैंक दें, फिर आयेगी? जहाँ महात्माओं ने भक्ति की वहाँ भक्ति-भाव की लहरें हैं। तभी वो तीर्थ बने। अगर वहाँ पर शराबें-कबाबें चलें फिर वो तीर्थ कहाँ रहे? बोलो! कहाँ रहे? सो कहते हैं माघी है तो यह है, क्या?

माघि मजनु संगि साधुआ धूड़ि करि इसनानु॥
हरि का नामु धिआइ सुणि सभना नो करि दानु॥

गुरु नानक साहिब कहते हैंः—

जनु नानक धूड़ि मगै तिसु गुरसिख की,
जो आप जपै अवरह नामु जपावै॥

कहते हैं जो शिष्य आप जपता है और लोगों को भी जपाता है वह धन्य है। मैं उनके चरणों की धूलि माँगता हूँ। कहते हैं आप भी जपे और दूसरों को भी जपाए। उस तीर्थ में नहाये और दूसरे को भी ले जावे। कहते वो माघी है असली। हाँ जीः

पाठी– जनम करमा मलु उतरै मन ते जाइ गुमानु॥
कामि करोधि न मोहीऐ बिनसै लोभ सुआनु॥

मैनेजर साहिब जी–जब ये सन्तों के पास जाता है, वो इसे नाम जपना सिखाते हैं। जैसे जैसे सिमरण करता है दुनियां के ख़्याल निकलते हैं, मालिक का प्यार बढ़ता जाता है।

प्रभ कै सिमरनि मन की मलु जाइ॥ अंम्रितु नामु रिद माहि समाइ॥

और कोई नहीं बाहर मैलें उतारने वाला। वो सिमरन ही मैलें उतारने वाला है, ख़्याल निकालने वाला है। एक मुसलमान फकीर ने लिखा हैः–

चूं शबी खाली तू अज़ ज़िकरे खुदा, राहयाबी दर हरीमे किबरीया॥

कि जब तूं मेहनत करके, मालिक को याद कर करके सब ख़्याल निकाल देगा तो तुझे मालिक की दरगाह का रास्ता मिल जायेगा। जब मेहनत करके आंखों के पीछे ख़्याल इकट्ठा हो जाता है तो यहाँ सतगुरु आता है। वो आगे इसे नाम के तीर्थ में नहाकर आगे साफ करके ले जाता है। उस तीर्थ में नहाकर जन्मों-जन्मों की मैलें (पता नहीं कितने युग बीत गये आत्मा पर मैलें चढ़ती, चढ़ती, चढ़ती गई) सब उतर जाती हैं। वो जन्मों की मैलें उतारने वाला नाम का तीर्थ है। बाकी और कोई नहीं। जब उस तीर्थ में नहाता है, इसके तीन शरीर उस टाईम खत्म हो जाते हैं। तीनों शरीरों से अलग हो जाता है। काम, क्रोध, लोभ, अहंकार, मोह, माया के सब बन्धन छूट जाते हैं। सब ढीले पड़ जाते हैं। सब दूर होकर बैठ जाते हैं, बल्कि काम, क्रोध तो पहले ही निकल कर चले जाते हैं, और कहकर जाते हैं कि हम चले भई अब तेरा राज हो गया। अब तो हम से जबरदस्ती काम करवाते हैं। फिर आप ही दौड़ जाते हैं। हाँ जीः

पाठी– सचै मारगि चलदिआ उसतत करे जहानु॥
अठसठि तीरथ सगल पुँन जीअ दइआ परवानु॥

मैनेजर साहिब जी–अन्दर जाना, परमेश्वर का भजन करना ही सच्चा मार्ग है। कहते हैं अगर तू इस मार्ग पर चले, क्या? ये माघी करे, यह इस्नान करे, यह

रूह साफ करे तो मालिक की दरगाह में चला जाए। सारी दुनियां इसके पीछे लग जाए। यह माघी है अगर करे। यह दया है अगर अपने आप पर करे। बाकी सारी दुनियां जुल्म कर रही है। यह असली दया है।

आपने जीव की कुछ दइआ पालो, चौरासी का फेर बचालो॥

यह दया है। बाकी दया तो इसके लिए फाही है। किसी को देगा, उससे लेगा ये भी बन्धन है। यह दया है अगर कोई करे! चौरासी से निकलने का यही रास्ता है।

दूरलभ देह पाई वडभागी॥ नाम न जपहि ते आतमघाती॥

सारी दुनियां ही अपनी आत्मा का घात कर रही है अगर नाम नहीं जपती। ये मुश्किल से जन्म मिला था। चौरासी लाख जीआ जून भुगत कर, कीड़े, पतंगे, हाथी, घोड़े, नरक भुगत कर फिर कहीं आदमी की योनि मिलती है। यह ऐसे ही बरबाद करके चला गया। अब जो खुद ही घात कर रहा है उसे बचाये कौन? फकीरों ने तो होके दिये। होके मार-मारकर चले गये पर किसी ने सुनी ना। हिन्दुस्तान में अठारह तीर्थ हैं। अगर कोई ये माघी कर ले, किसी भी तीर्थ में जाने की ज़रूरत नहीं। बस असली माघी ये है। हाँ जीः

पाठी– जिस नो देवै दइआ करि सोई पुरखु सुजानु॥
जिना मिलिआ प्रभ आपणा नानक तिन कुरबानु॥

मैनेजर साहिब जी–कहते हैं ये माघी है, ये दया है अगर कोई अपने आप पर करे। पर परमात्मा की बख़्शिश हो उसे मिलती है, किसी के अखत्यार नहीं। ''जिसनु देवै दइआ कर'' जिसको बख़्शे, ये दया करे, ये माघी का स्नान करे। कहते जिन पर ये दया की, जिन्होंने ये माघी की, जिन्होंने इस तरह जन्म-मरण मुकाया, हम भी उन पर कुर्बान हैं, बार बार कुर्बान हैं। हाँ जीः

पाठी– जिना मिलिआ प्रभु आपणा नानक तिन कुरबान॥
माघि सुचे से कांढअहि जिन पूरा गुरु मेहरवानु॥

मैनेजर साहिब जी–कहते हैं जिन्होंने ये माघी की उनकी रूह निर्मल हो गई, अच्छी हो गई। ख़ज़ाने जैसे आगे होते थे, अब तो होते नहीं। (अब रुपयों को भी ऐसे ही देखते हैं खरे और खोटे) रुपयों को, खरे खोटे देखते थे ना? खरे परख कर ख़ज़ाने में रख लेते, खोटे फैंक देते। इसी तरह जिसने ये माघी की, उसकी रूह साफ हो गई। वो मालिक की दरगाह में सच्ची या खरी हो गई। बाकी सभी रद्द करके दूर फैंक दी। बाकी का ये हाल है। बाकी इसी तरह रूड़ती रही। हाँ जीः

पाठी– फलगुणि अनंद उपारजना हरि सजण प्रगटे आई॥
सन्त सहाई राम के करि किरपा दीआ मिलाइ॥

मैनेजर साहिब जी–फाल्गुन का महीना बहार का मौसम होता है। चारों तरफ हरियाली ही हरियाली होती है। कहीं फल लगे हैं, कहीं फूल लगे हैं। लोग फसलें देखकर खुश होते हैं। भई गेहूँ पकने वाले हैं। मेरी फलानी फसल पकने वाली है। देख-देखकर खुश होते हैं। बच्चे पतंग उड़ाते हैं, होली खेलते हैं। बागड़ी डण्डा बजाते हैं, होली खेलते हैं इसी खुशी में। कहते असली खुशी उसकी है जिन्होंने भजन सिमरन करके अन्दर सतगुरु को प्रगट कर लिया है। ये सच्ची होली खेलना है। वो सच्चा फाल्गुन का महीना है। वो जन्म सफल कर गये। पर सुनता कोई नहीं। जगह-जगह ये ही लिखा है। हर महीने में ये ही लिखा है। कहते हैं अगर उनसे पूछें ये आनन्द कैसे हासिल किया? ये खुशी कैसे हासिल की? कैसे मालिक पास पहुँचे? कहते सन्तों के ज़रिये। उनसे प्रेम सीख कर। हाँ जीः

पाठी– सेज सुहावी सरब सुख हुणि दुखा नाही जाइ॥
इछ पुनी बडभागणी वरु पाइआ हरि राइ॥

मैनेजर साहिब जी–कहते हैं जिन्होंने ये माघी की, ये इस्नान किया; उनकी रूह साफ हो गई, मालिक की दरगाह में पहुँच गई। सेज सुहावी, क्या? ऊँची से ऊँची खुशी के देश में, वहाँ कहीं दुख नहीं। दुखों की हद त्रिलोकी तक है। दुखों की हद त्रिलोकी तक है। उस हद में कोई दुख नहीं। वहाँ हमेशा की खुशी ही खुशी है, आनन्द ही आनन्द है, प्रेम ही प्रेम है। कहते हैं सारी इच्छायें पूरी हो गईं, मालिक मिल गया। असली पती जो रूह का है, वो मिल गया। खुशी में पहुँच गई, हमेशा के आनन्द में पहुँच गई। हाँ जीः

पाठी– मिलि सहीआ मगलु गावही गीत गोविंद अलाइ॥
हरि जेहा अवरू न दिसई कोई दूजा लवै न लाइ॥

मैनेजर साहिब जी–जिस तरह कोई इंग्लैण्ड, अमेरिका या किसी और देश में गया हो, और बहुत समय के बाद घर आये तो उसके रिश्तेदारों में से कोई बम्बई जाकर मिलता है, कोई कलकता जाकर मिलता है, कोई कहीं, कोई कहीं। इसी तरह जब रूह असंख्य युगों के बाद कमाई करके यहाँ से सचखण्ड जाती है तो जो वहाँ रहने वाली रूहें हैं, वे इसके विवाह के गीत गाती हैं। वे कहती हैं कि तू धन्य है जो मोह माया का देश छोड़कर आई है। सचखण्ड की रूहें वहाँ खुशीयाँ करती हैं। वो इसे बधाई देती हैं कि तेरे पति जैसा कोई नहीं।

तुझे ऐसी जगह पहुँचा दिया, जहाँ न जन्मना है न मरना है। अब हमेशा के सुख में पहुँच गई। इसके बाद तेरे लिए दुख नहीं। तूं धन्य है। हाँ जीः

पाठी– हलतु हलतु सवारिओनु निहचल दितीअनु जाइ॥
संसार सागर ते रखिअनु बहुड़ि न जनमै धाइ॥

मैनेजर साहिब जी–कहता 'हलतु पलतु क्या? लोक परलोक तेरा सारा सुधर गया। तू ऐसी जगह पहुँच गई जहाँ दोबारा आना-जाना ही नहीं। तेरा जन्म मरण खत्म हो गया। हाँ जीः

पाठी– जिहवा एक अनेक गुण तरे नानक चरणी पाइ॥
फलगुणि नित सलाहीअै जिसनो तिलु न तमाइ॥

मैनेजर साहिब जी–अब रूह प्रार्थना करती है कि ऐ मालिक! तेरे करोड़ों गुण हैं। मेरी ज़बान एक है। तेरे कौन-कौन से गुण गाऊं? इसलिए तेरी शरण लेती हूँ। उसको विरद की लाज पड़ी उसने अपने चरणों में मिला लिया। मैं उसके क्या गुण गा सकती हूँ? ये सब उनकी मेहर है, मेरा कुछ नहीं। जितने भी फकीर गये हैं वो सभी यही कहते हैंः

घाल सिआणा औकत ना मेरी, पूरे गुरु कमाई॥

कि मेरा कुछ नहीं, सब उसकी मेहर है। कहते वहाँ कौन पहुँचता है? किस पर मेहर होती है? जो दुनिया के सभी ख़्याल छोड़े, विषय-विकारों का, तन का प्यार छोड़े, किसी चीज़ की इच्छा न रखे। मालिक आगे कहे, हे मालिक! तूं ही चाहिए। उस पर ये मेहर होती है हाँ जीः

पाठी– जिनि जिनि नामु धिआइआ तिन के काज सरे।
हरि गुरु पूरा आराधिआ दरगह सचि खरे॥

मैनेजर साहिब जी–अब आखिर में जाकर सार करके कहते हैं कि इस दुनियां में आकर जिसे आदमी की योनि मिलि पहले तो वो भागों वाला है। फिर बड़े भागों वाला वो है जिस-जिस ने नाम जपा। (भागों से तो मिली थी ये) जिस-जिसने भी नाम जपा मालिक की दरगाह में पहुँच गए। उनके सभी काम पूरे हो गये। सारी इच्छाएं खत्म हो गई। किसी चीज़ की कमी नहीं रही। मालिक की दरगाह में पहुँच गये। बाकी जिसने नहीं जपा वो बर्बाद करके चले गये। जिसने जप लिया मालिक की दरगाह में पहुँच गये, वो खरे होकर मालिक के ख़ज़ाने में दाखिल हो गये। हाँ जीः

पाठी– सरब सुखा निधि चरण हरि भउजलु बिखमु तरे॥
प्रेम भगति तिन पाईआ बिखिआ नाहि जरे॥

मैनेजर साहिब जी–कहते हैं सभी सुखों का नतीजा क्या है सुख हासिल करने का? वो कौन सी चीज़ है? हम हर रोज़ पढ़ते हैं ''सुख किते ना मिलदा जी सुख सतिगुरु दे चरनी।'' सतगुरु के चरणों से प्यार करना, उसे अन्दर प्रगट करना, बस! ये ही सुखों का साधन है; और कोई नहीं। कहते हैं जिन्होंने सतगुरु से प्यार पाया, सतगुरु की भक्ति की, मालिक की दरगाह में पहुँच गए उनकी सभी ज़रूरतें पूरी हो गईं। पर पहुँचे कौन? कहते हैं मालिक प्रेम है। उसके मिलने का रास्ता भी प्रेम है।

साच कहौं सुन लेहु सभै जिन प्रेम कियो तिनहि प्रभ पाइउ॥

यह प्रेम का सौदा है। प्रेमा भक्ति से पहुँचे हैं दुनियां का ख़्याल छोड़कर। जिसने विषय-विकार छोड़े, तन का प्यार छोड़ा, भजन सिमरन किया, रात को जागे, वो पहुँचे हैं। ये मालिक को प्यार करना है। रात को जागना, कम सोना, कम खाना, नाम जपना जो प्रेमी है जरूर करता है। कहते हैं प्रेमा भक्ति से पहुँचे हैं, ऐसे कोई नहीं गया। जिसने दुनियां के सभी ख़्याल छोड़े, एक मालिक ही मालिक रखा, वो मालिक की दरगाह में गये। उसने सतगुरु के चरण प्रगट कीये। हाँ जीः

पाठी– कूड़ गए दुबिधा नसी पूरन सचि भरे॥
पारब्रह्मु प्रभु सेवदे मन अंदरि एकु धरे॥

मैनेजर साहिब जी–यह दुनियां कूड़ है। जब अन्दर सतगुरु प्रगट हुए तो सभी ख़्याल निकल गये। सभ भ्रम दूर हो गये। एक सतगुरु-सतगुरु ही रह गया। उठते-बैठते, चलते-फिरते, सिवाए सतगुरु के उसका कोई नहीं। कोई चीज़ न रही। वो सोते भी हैं, काम भी करते हैं लेकिन ख़्याल हर वक्त सतगुरु की तरफ रहता है।

सोए बैठे खड़े और ताने। कहे कबीर हम वहीं ठिकाने॥

कहते हैं रहते वहाँ ही हैं। हाँ जीः

पाठी– माह दिवस मूरत भले जिस कउ नदरि करे॥
नानकु मंगै दरस दानु किरपा करहु हरे॥

मैनेजर साहिब जी–कहते हैं चाहे कोई महीना है, कोई घड़ी है, कोई दिन है, वो मुबारिक है जो भक्ति में लग जाए। चाहे बूढ़ा होकर लग जाए तो भी उसकी संभाल होती है। तो भी उसकी संभाल होती है। गुरुनानक साहिब फिर बेनती करते हैं, ऐ मालिक! हमें और कुछ नहीं चाहिए, तेरे दर्शनों की ज़रूरत है। तूं कैसे भी दे, अपने दर्शन दे। हाँ, चलो भई, बस!

धन धन सतगुरु तेरा ही आसरा